

ないとうできないとうできないとうできないとうできないとうできないとうできないとうできないとうできないとうできないとう

श्रीनयविमल-अपरनामाच्छ्यंश्रीमद्ज्ञानविमलसूरिकृतम्

।। श्रीश्रीपालचरित्रम् ।।



सम्पादकाः – पूज्याचार्यश्रीमद्विजयकीर्तियशस्रीश्वराः



પ્રકાશક : *સહસાર્ગ પ્રકાશકાં* C/o. જેન આરાધના ભવન, પાછીયાની પોળ, રીલીફ રોડ, અમદાવાદ-૧. ફોન : પ૩૫૨૦૭૨

॥ जिनदत्तसूरिपुस्तकोद्धारफंड-ग्रंथाङ्क २६॥ ॥ श्री भाषाटीकासहितम् प्राकृत ॥

॥ श्रीपालचरित्रम् ॥

॥ ॐ अर्ह ॥ प्रणम्य परया भक्त्या, यंत्रं श्रीसिद्धिचक्रकं, श्रीश्रीपालचरित्रस्य, व्याख्यानं लोकभाषया ॥ १ ॥ क्रियते इति होषः ॥

अरिहाइ नवपयाइं झाइत्ता हिययकमलमझंमि। सिरि सिद्धचक्रमाहप्पमुत्तमं किंपि जंपेमि॥१॥
अर्थ—श्रीअर्हतादिक नवपदोंको हृदय कमलमें ध्यायके उत्तम श्रीसिद्धचक्र यंत्रराजका माहात्म्य किंचित् कहता हूं॥१॥
अत्थित्थ जम्बुद्दीवे, दाहिणभरहद्ध मिजझमे खंडे। बहुधणधन्नसमिद्धो, मगहादेसो जगपसिद्धो॥२॥
अर्थ—इस जम्बु द्वीपमें दक्षिण भरतार्द्धके मध्यमखंडमें बहुत धन धान्य करके समृद्ध जगतमें प्रसिद्ध मगध नामका
देश है॥२॥

श्रीपा.च. १

जत्थुप्पन्नं सिरि वीरनाह, तित्थं जयंमि वित्थिरयं। तं देसं सिवसेसं, तित्थं भासंति गीयत्था ॥३॥ अर्थ—जिस मगध देशमें श्रीमहावीरस्वामीका तीर्थ उत्पन्न भया और जगत्में विस्तार पाया उस देशको गीतार्थ सिहतम्. तत्थय मगहा देसे, रायगिहनाम पुरवरं अत्थि।वेभार विउल गिरिवर, समलंकिय परिसरपएसं ॥ ४॥

अर्थ—उस मगधदेशमें राजगृह नामका प्रधान नगर है कैसा है नगर वैभारगिरि विपुलगिरि पर्वतोंसे आसपासका भाग शोभित है जिसका ऐसा ॥ ४ ॥

तत्थय सेणिय राओ, रज्जं पालेइ तिजय विरकाओ। वीर जिण चलण भत्तो, विहिअज्जिय तित्थयरग्रत्तो ५

अर्थ—उस राजग्रह नगरमें श्रेणिक नामका राजा राज्य पालता है कैसा है राजा तीन जगत्में प्रसिद्ध है और श्रीमहावीरस्वामीके चरणोंका भक्त है ॥ विधिसे उपार्जनकिया है तीर्थंकर नाम कर्म जिसने ऐसा ॥ ५ ॥

जस्सित्थि पढमपत्ती, नंदानामेण जीइ वरपुत्तो । अभयकुमारो बहुगुणसारो चउबुद्धिभंडारो ॥ ६ ॥

अर्थ—जिस श्रेणिक राजाके पहली रानी नंदा नामकी है उसके प्रधान पुत्र अभयकुमार नामका बहुतगुणोंसे श्रेष्ठ है ॥ और चार बुद्धिका मंडार है ॥ ६ ॥

चेडयनरिंद् धूया, वीया जस्सत्थि चिछणादेवी । जीए असोगचंदो, पुत्तो हछोविहछोय ॥ ७ ॥ अर्थ—जिस श्रेणिक राजाके दूसरी रानी चेडा महाराजकी पुत्री चेठणा नामकी है जिस चेठणाका प्रथम पुत्र अशोकचंद्र कोणिक १ दूसरा हछ २ तीसरा विहछ ३ यह तीन पुत्र हैं ॥ ७ ॥ अन्नाओ अणेगाओ, धारणिपमुहाउ जस्स देवीओ । मेहाइणो अणेगे, पुत्ता पियमाइपयभत्ता ॥८॥ अर्थ-औरभी अनेक धारणी प्रमुख जिस श्रेणिक राजाके रानियां हैं जिन्होंकी कुक्षिसे उत्पन्न भए मेघकुमारादि अनेक पुत्र हैं कैसे हैं पुत्र पिता माताके चरणोंके भक्त हैं ॥ ८ ॥ सो सेणिय नरनाहो, अभय कुमारेण विहिय उच्छाहो। तिहुयण पयड पयावो, पाछइ रज्जं च धम्मं च॥९॥

अर्थ—वह श्रेणिक राजा अभयकुमार करके किया है उत्साह जिसको ऐसा और तीनभुवनमें प्रगट प्रताप जिसका ऐसा राज्य और धर्म पालता है ऐसा ॥ ९ ॥ एयंमि पुणो समए, सुरमहिओ वद्धमाणितत्थयरो । विहरंतो संपत्तो, रायगिहासन्न नयरंमि ॥ १० ॥ अर्थ—इस समयमें देवोंकरके पूजित श्रीमहावीरस्वामी तीर्थंकर विचरते भए राजयहके समीप नगरमें आए ॥ १० ॥ पेसेइ पढम सीसं, जिट्ठं गणहारिणं गुणगरिट्ठं । सिरि गोयमं मुणिंदं, रायग्गिहळोय ळाभत्थं ॥ ११ ॥

अर्थ—तदनंतर भगवान अपने प्रथमशिष्य बड़े गच्छको धारनेवाले ऐसे गणधर गुणोंकरके गरिष्ठ श्रीगौतम मुनीन्द्रको राजग्रह नगरके लोगोंके लाभके अर्थ भेजते भए॥ ११॥ सोलद्ध जिणाएसो, संपत्तो रायगिहपुरोज्जाणे। कइवय मुणि परियरिओ, गोयमसामी समोसरिओ १२ अर्थ—वह गौतमस्वामी तीर्थंकरकी आज्ञा पाकर राजग्रह नगरके उद्यानमें प्राप्त भए कितनेक मुनि हैं साथमें जिन्होंके ऐसे वहां समवसरे ॥ १२॥

तस्सागमणं सोउं,सयलो नरनाह पमुहपुरलोओ। नियनिय रिद्धि समेओ,समागओ झत्ति उज्जाणे॥१३॥ अर्थ—श्रीगौतमस्वामीका आगमन सुनके सर्व राजा प्रमुख नगरके लोग अपनी अपनी ऋद्धिः सहित शीघ

पंचिवहं अभिगमणं, काउं तिपयाहिणा उ दाऊण। पणिमय गोयमचलणे उविवद्घो उचियभूमीए १४ अर्थ—पांच प्रकारका अभिगमन सचित्त द्रव्यका वोसराणा १ अचित्त द्रव्यका नहीं वोसराणा २ उत्तरासन करना ३ अंजलि करना ४ और मन बचन कायाका एकत्व करना यह पांच अभिगमन करके और तीन प्रदक्षिणा देके गौतम स्वामीके चरणोंमें वंदना करके अपने अपने योग्य भूमिपर बैठे ॥ १४ ॥ भयवंपि सजल जलहर, गंभीर सरेण कहिउ माढत्तो । धम्मसरूवं सम्मं, परोवयारिक ति उच्छो ॥१५॥

अर्थ—भगवान गौतमस्वामीभी जलसहित मेघके सदद्या गंभीर स्वरसे सम्यक् धर्मका स्वरूप कहना प्रारंभ किया कैसे हैं भगवान परोपकार करनेकी इच्छाहें जिन्होंकी ॥ ऐसे परोपकार करनेमें तत्पर ॥ १५ ॥ भो महाणुभागा, दुछहं लहिऊण माणुसं जंमं। खित्त कुलाइ पहाणं, गुरु सामग्गिं च पुन्नवसा ॥१६॥ अर्थ—अहो महानुभावो भाग्यवंतो पुन्यके वससे दुर्लभ मनुष्य भव पाके और प्रधान आर्यक्षेत्र कुलादिपायके और सद्गुरुका संयोगपायके ॥ १६ ॥ पंचिवहंपि पमायं, गुरुयावायं विवज्जिउं झत्ति । सद्धम्मकम्मविसए, समुज्जमो होइ कायद्वो ॥ १७ ॥ अर्थ—मद १ विषय २ कषाय ३ निद्रा ४ विकथा ५ ये पांच बहुतकष्टका कारण ऐसा प्रमाद शीघ्र छोड़के सम्यक् धर्मकार्यके विषय उद्यम करना योग्य है ॥ १७ ॥ सो धम्मो चउभेओ, उवइट्ठो सयल्जिणवरिंदेहिं। दाणंसीलं च तवो, भावोवि य तस्सिमे भेया॥१८॥ अर्थ—वह धर्म चार प्रकारका सम्पूर्ण तीर्थंकरोंने कहा है चार भेद यह हैं दान १ शील २ तप ३ भाव ४॥ १८॥ तत्थिव भावेण विणा, दाणं नहु सिद्धिसाहणं होइ। सीलंपि भाव वियलं, विहलं चिय होइ लोगंमि॥१९॥ अर्थ—वहांभी भावविना दान सिद्धिसाधक अर्थात् मोक्ष देनेवाला न होवे निश्चय सीलभी भावरहित लोकमें निष्फलही होवे है ॥ १९॥

भावं विणा तवोवि हु, भवोहिवत्थारकारणं चेव। तम्हा नियभावुचिय, सुविसुद्धो होइ कायवो ॥२०॥ अर्थ—भाविवा तपभी भवसमूहके प्रवाहका विस्तार करनेवालाही है अर्थात् भवश्रमण कारण है मुक्तिका कारण नहीं है। इस कारणसे अपना भावही अतिशय निर्मल करने योग्य है॥ २०॥ भावोवि मणो विसओ, मणं च अइदुज्जयं निरालंबं। तो तस्स नियमणत्थं, किहयं सालंबणं झाणं ॥२१॥ अर्थ—भावभी मनोविषई है और मन आलंबनरहित अत्यन्त दुर्जय है अर्थात् जीतना मुशकिल है इस कार-

णसे मनको वश करनेके अर्थ सालंबन ध्यान कहा है ॥ २१ ॥ आलंबणाणि जइ विहु, बहुप्पयाराणि संति सत्थेसु। तह विहु नवपयझाणं, सुपहाणं विंति जगगुरुणो २२ अर्थ—यद्यपि शास्त्रोंमें बहुतप्रकारके आलंबन कहे हैं तथापि निश्चय करके जगद्भुरु श्रीतीर्थकरदेव नवपदोंका ध्यान अतिशय प्रधान आलंबन कहा है अब नव पदोंके नाम कहे हैं ॥ २२ ॥

अरिहं सिद्धायरिया, उवझाया साहुणो य सम्मत्तं । नाणं चरणं च तवो, इय पयनवगं मुणेयवं ॥२३॥ अर्थ—अरहंत १ सिद्ध २ आचार्य ३ उपाध्याय ४ साधु ५ सम्यक्त्व ६ ज्ञान ७ चारित्र ८ तप ९ यह नवपद का नाम जानना ॥ २३ ॥

तत्थ रिहंतेट्टारसदोस, विमुक्के विसुद्ध नाणमए। पयडियतत्ते नयसुरराष्ट्र झाएह निचंपि ॥ २४ ॥

अर्थ—नव पदोंमें प्रथम पदमें निरंतर अरहंतोंको तुम ध्यावो कैसे अरहंत अठारह दोषरिहत और निर्मल जो ज्ञान हैं वोही है स्वरूप जिन्होंका और प्रगट किया है तत्व जिन्होंने और इन्द्रोंने नमस्कार किया है जिन्होको ऐसे ॥ २४ ॥ पनरसभेय पसिन्दे, सिन्दे घणकम्मवंधणविमुक्ते। सिन्दाणंत चउक्ते, झायह तम्मयमणा सययं॥ ३५॥

अर्थ—अहो भव्यो तुम सिद्धमय है मन ऐसे जिन अजिनादि पन्द्रह भेदोंसे प्रसिद्ध ऐसे सिद्धोंको निरंतर ध्याओ कैसे हैं सिद्ध कर्मबंधनसे रहित और निष्पन्न हुआ है अनंत चतुष्क ज्ञान १ दर्शन २ सम्यक्त्व ३ अकर्ण वीर्य

पंचायारपवित्ते, विसुद्ध सिद्धंत देसणुज्जुत्ते । परउवयारिक्रपरे, निच्चं झाएह सूरिवरे ॥ २६ ॥

अर्थ—अहो भव्यो तुम निरंतर आचार्योंको ध्यावो कैसे आचार्य ज्ञानाचार १ दर्शनाचार २ चारित्राचार ३ तपा-चार ४ वीर्याचार ५ ये पांच आचारसे पवित्र निर्मल और विशुद्ध सिद्धान्त जिनागमकी जो देशना उसमें उद्यमवंत और परोपकारही एक प्रधान है जिन्होंके उसमें तत्पर ऐसे ॥ २६ ॥

गणतत्तीसु निउत्ते, सुत्तत्थझाणंमि उज्जुत्ते । सझाए लीणमणे, सम्मं झाएह उवझाए ॥ २७ ॥ अर्थ—अहो भन्यो तुम सम्यक जैसे होवे वैसा उपाध्यायोंकों ध्यावो कैसे उपाध्याय गच्छकी त्रिधः सारणा

श्रीपाल- वारणा २ चोयणा २ पिडचोयनामें अधिकारी और सूत्रार्थका अध्ययन करानेमें उद्यमवंत स्वाध्यायमें लगा है मन कि चरितम् सवासु कम्मभूमिसु, विहरंते गुणगणे हि संजुत्ते । गुत्ते मुत्ते झायह, मुणिराए निट्टिय कसाए ॥२८॥ क्षे अर्थ—अहो भव्यो तुम सर्व कर्मभूमिमें पांच ५ भरत ५ ऐरवत पांच महाविदेह इन १५ क्षेत्रोंमें विचरते क्षे मुनि राजोंको ध्यावो कैसे मुनिराज गुणोंके समूहोंसे गुक्त ३ गुप्तिसहित सर्वसंगरहित दूर किया है कषाय जिन्होंने सबन्नु पणीयागम, पयडिय तत्तत्थ सद्दहण रूवं। दंसण रयण पईवं, निच्चं धारेह मणभवणे ॥ २९ ॥ अर्थ—अहो भव्यो सर्वज्ञोंने कहे सिद्धान्तोंमें प्रगट किया तत्वरूप अर्थ उन्होंका जो श्रद्धान वह है स्वरूप जिसका ऐसा सम्यक्त्वरूप रत्नदीपक निरंतर मनमंदिरमें धारो ॥ २९ ॥ जीवाजीवाइ पयत्थ, सत्थ तत्ताववोह रूवं च । नाणं सवयुणाणं, मूळं सिक्खेह विणएण ॥ ३० ॥ अर्थ—अहो भन्यो जीवाजीवादिक पदार्थोंका समूह उन्होंका जो तत्वावबोध तत्वज्ञान स्वरूप जिसका ऐसा ज्ञान विनय करके तुम सीखो कैसा है ज्ञान सर्व गुणोंका मूल कारण है।। ३०॥ असुह किरियाण चाओ, सुहासु किरियासु जोय अप्पमाओ। तं चारित्तं उत्तम, गुणज्जुतं पालह निरुत्तं ३१

अर्थ—जो अशुभक्रिया पापव्यापारोंका त्याग और शुभक्रिया निरवद्यव्यापारोंमें अप्रमाद प्रमाद नहीं करना कि वह चारित्र तुम पालो कैसा चारित्र उत्तम गुणों करके युक्त और कैसा निरुक्त पदभंजनसे निष्पन्न भया सो कहते हैं चयनाम ८ कर्मका संचय रिक्त खाली होय जिससे वह चारित्र कहिये॥ ३१॥ घणकम्म तमोभरहरण, भाणु भूयं दुवालसंगधरं। नवरमकसायतावं चरेह सम्मं तवो कम्मं॥ ३२॥ अर्थ-अहो भव्यो तुम अच्छी तरहसे तप किया अंगीकार करो कैसा है तप घनकर्म मजबूत ज्ञानावरणी आदि कर्मही अंधकारका समूह उसके दूर करनेमें सूर्यसमान और कैसा तप बारह अंगका धारनेवाला तपका १२ भेद होनेसे लोकमें १२ सूर्यरूढ़ होनेसे परंतु सूर्य ताप करनेवाला है कषायरहित तप तापरहित है।। ३२॥ एयाई नवपयाई, जिनवरधम्मंमि सारभूयाई। कछाणकारणाई, विहिणा आराहियवाइ॥ ३३॥ अर्थ-यह नव पद श्रीतीर्थंकरके कहेहुए धर्ममें सारभूत है इसी कारणसे कल्याणके करनेवाले हैं इस लिए विधिःसे तुमको आराधना योग्य है ॥ ३३ ॥ अन्नं च एएहिं नव पएहिं, सिद्धं सिरि सिद्धचक्कमाउत्तो। आराहंतो संतो, सिरि सिरिपाल्चव लहइ सुहं ३४ अर्थ-और भी सुनो ये नव पदोंकरके निष्पन्न श्रीसिद्धचक्रको उपयोगयुक्त आराधता भया श्रीश्रीपालनामके राजाके जैसा मनुष्य सुख पाता है ॥ ३४ ॥

श्रीपाल-चिरतम् ॥ ५॥ ॥ ४॥ तो पुच्छइ मगहेसो, को एसो मुणिवरिंद् सिरिपालो। कहंतेण सिद्धचक्कं, आराहिय पावियं सुक्खं ३५ अर्थ—वाद गौतमस्वामीके उपदेशके अनंतर मगधदेशका स्वामी श्रेणिक राजा प्रश्न करे हे मुनिवरेन्द्र यह श्रीपाल कौन उन श्रीपालराजाने श्रीसिद्धचक्कको आराधके कैसे सुख पाया ॥ ३५ ॥ तो भणइ मुणी निसुणसु, नरवर अक्खाणयं इमं रम्मं। सिरि सिद्धचक्क माहप्प, सुंद्रं परमचुज्जकरं ॥३६॥ अर्थ—तव गौतमस्वामी बोले हे राजेन्द्र हे श्रेणिक महाराज ये श्रीपाल राजासम्बन्धी मनोज्ञ कथानक श्रीसिद्ध- कक्षमाहात्म्यकरके सुंदर उत्कृष्ट आश्चर्य करनेवाला सुन ॥ ३६ ॥ तथाहि इहेव भरह खित्ते दाहिण खंडंमि अत्थिसुपसिद्धो। सविद्व कयपवेसो, मालवनामेण वरदेसो ३७ अर्थ—वही दिखाते है इसी भरतक्षेत्रके दक्षिणार्धमें मालवनामका सुप्रसिद्ध प्रधान देश है कैसा है मालवदेश सर्वऋद्धिःने किया है प्रवेश जिसमें ऐसा ॥ ३७॥ सोय केरिसो, पए पए जत्थ सुग्रत्ति ग्रुत्ता, जोगप्पवेसा इव संनिवेसा। पए पए जत्थ अगंजणीया, कुडुंवमेला इव तुंगसेला ॥ ३८ ॥ अर्थ—जिस मालव देशमें पगपगमें याने ठिकाने ठिकाने वाडोंकरके वेष्टित याने वीटाहुआ ऐसे सम्निवेण नाम

गांव है किसके जैसा योगमें है प्रवेश जिन्होंका ऐसे योगियोंके जैसा जिस कारणसे योगीभी मनोगुऱ्यादिकसे गुप्त होवे है और जिस देशमें ठिकाने २ नहीं उहुंघे जाय ऐसे ऊंचे पर्वत हैं कुटुम्बमिलापके जैसे ॥ ३८ ॥

पए पए जत्थ रसाउलाओ, पणंगणाओब तरंगिणीओ।

पए पए जत्थ सुहंकराओ, ग्रणवलीउव वणावलीओ ॥ ३९ ॥

अर्थ—जिस देशमें ठिकाने २ जलसेभरी हुई निदयां हैं किसके जैसी वेश्याओंके जैसी वेश्याभी श्टंगाररससे आकुल होवे है और जिस देशमें सुलकारी वनोंकी श्रेणी है किसके जैसी गुणोंकी श्रेणीके जैसी गुणोंकी श्रेणीभी सुल करनेवाली होवे है ॥ ३९॥

> पए पए जच्छ सवाणियाणि, महापुराणीव महासराणि । पए पए जत्थ सगोरसाणि, सुहीमुहाणीव सुगोउलाणि॥ ४०॥

अर्थ—जिस देशमें ठिकाने २ पानीसे भरे हुए बड़े सरोवर हैं किसके जैसे महानगरके जैसे बड़े नगरभी वानियों करके सहित होवे हैं और जिस देशमें ठिकाने २ शोभन गौकुल हैं दही दूधसहित हैं किसके सदश पंडितोंके मुखके सदश पंडितोंके मुखके सदश पंडितोंके मुखके सदश पंडितोंके मुखभी गो नाम वाणीके रससहित होवे हैं ॥ ४० ॥ तत्थय मालवदेसे, अकय पवेसे दुकाल डमरेहिं । अत्थि पुरीपोराणा, उज्जेणी नाम सुप्पहाणा ॥ ४१ ॥

11 8 11

अर्थ— उस मालवदेशमें पुराणी उज्जैनी नामकी अतिशयप्रधान नगरी है कैसा है मालवदेश दुर्भिक्ष और उमर नाम बलात्कारसे परद्रव्य हरना यह दुःकाल डमर इन दोनोंने नहीं प्रवेश किया है जिसमें ऐसा ॥ ४१ ॥

सायकेरिसा अणेगसो जत्थ पयावईओ, नरुत्तमाणं च न जत्थ संखा। महेसरा जत्थ गिहे गिहेसु, सचीवरा जत्थ समग्गलोया॥ ४२॥

अर्थ—वह उज्जैनी नगरी कैसी है जिस नगरीमें अनेक प्रजापित हैं छोकमें तो एकही प्रजापित ब्रह्मा प्रसिद्ध है उस नगरीमें प्रजा नाम संततिके अनेक स्वामी हैं और जिस नगरीमें पुरुषोत्तमोंकी संख्या नहीं है छोकमें तो एकही पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण प्रसिद्ध है और वहां बहुत उत्तम पुरुष है और जिस नगरीमें घर २ में महेश्वर नाम महर्धिक है लोकमें तो एकही महेश्वर प्रसिद्ध है और जिस नगरीमें सम्पूर्ण लोग सचीवर हैं लोकमें तो एकही इन्द्राणीका वर इन्द्र प्रसिद्ध है और वहां तो सब लोग वस्त्रसिहत हैं॥ ४२॥

घरे घरे जत्थ रमंतिगोरी,रंभासिरीओय पए पएय।वणे वणे याविअणेगरंभा,रईय पीई विय ठाण ठाणे४३

अर्थ—जिस नगरीमें घर २ में गौरियों जिनका रज नहीं देखा गया है ऐसी कन्या कीड़ा करे है लोकमें तो एकही गौरी पार्वती कैलासपर्वतपर क्रीड़ा करती भई प्रसिद्ध है उस नगरमें तो घर २ में गौरिया हैं ॥ लोकमें तो एकही ॥ ६॥ श्रीलक्ष्मी कृष्णकी स्त्री है और जिस नगरीमें तो ठिकाने २ लक्ष्मी हैं लोकमें तो एकही रंभा देवाङ्गना प्रसिद्ध है और

उस नगरीमें तो बनोमें अनेक केलियोंके वृक्ष हैं और जहां रित प्रीति ठिकाने २ है लोकमें रित कामदेवकी स्त्री और प्रीति देवाङ्गना एक २ है वहां तो सर्वत्र परस्पर राग और प्रीति है ॥ ४३ ॥ तीसे पुरीइ सुरवरपुरीइ, अहियाइ वन्नणं काउं। जइ निउणबुद्धिकिलओ, सक्कगुरू चेव सक्केइ ॥ ४४ ॥ अर्थ—इन्द्रकी नगरीसे अधिक उस उज्जैनी नगरीका वर्णन करनेको जो निपुणबुद्धिः सिहत कोई समर्थ होवे तब बृहस्पितिः ही समर्थ होवे और नहीं लोकरूढिसे बृहस्पितः इन्द्रका गुरू कहा जावे है ॥ ४४ ॥ तत्थित्थि पुह्विपालो पयपालो, नामओ य गुणओ य । जस्स पयावो सोमो, भीमोवि य सिट्टदुट्टेसु ॥४५॥ अर्थ—उस नगरीमें प्रजापाल नामका राजा है वह नामसे और गुणसे प्रजापालही है प्रजां पालयतीति प्रजापालः ऐसी व्युत्पत्तिः होनेसे और कैसा है राजा जिसका प्रताप सज्जनोंमें सौम्य है और दुष्टोंमें भयंकर है ॥ ४५ ॥ तस्स वरोहे बहुदेहसोह, अवहरिय गोरिगवेवि । अच्चंतं मणहरणे, निउणाओ दुन्नि दोवीओ ॥ ४६॥ अर्थ—उस राजाके अंतःपुरमें दो रानी पितका मनरंजनकरनेमें अत्यन्त निपुण हैं कैसी रानियां हैं शरीरकी शोभा करके पार्वतीका गर्व हरण किया है जिन्होंने ऐसी दो देवी विशेष करके अन्तेवरमें सौभाग्यवती हैं ॥ ४६॥ सोहग्ग लडह देहा, एगा सोहग्गसुंदरीनामा! वीया य रूवसुंदरी, नामा रूवेण रइतुस्ला॥ ४७॥

श्रीपा.च. २

श्रीपाल-चिरतम् ॥ ७॥ अर्थ—उन दो देवियोंका नाम कहे हैं उनमें एक सौभाग्यसंदरी दूसरी रूपसंदरी उन्होंमें पहली रानी सौभाग्यसे संदर है देह जिसका ऐसी और दूसरी रितके जैसी ॥ ४७ ॥ पढमा माहेसरकुल, संभूया तेण मिच्छिदिष्टिति । बीया सावगध्या, तेणं सा सम्मिदिष्टिति ॥ ४८ ॥ अर्थ—उन दोनोंमें पहली सौभाग्यसंदरी रानी महेश्वरीके कुलमें उत्पन्न भई है इस कारणसे मिथ्या विपरीत है हि जिसकी ऐसी मिथ्यादृष्टनीथी दूसरी श्रावककी पुत्री होनेसे रूपसंदरी रानी समीचीन है दृष्टि जिसकी ऐसी सम्यक् दृष्टिनी थी ॥ ४८ ॥ सम्यक् दृष्टिनी थी॥ ४८॥
ताओ सिरसवयाओ, समसोहग्गाओ सिरसरूवाओ। सावत्ते वि हु पायं, परूप्परं पीतिकिळियाओ॥४९॥
अर्थ—वह दोनो रानी कैसी है सदद्य है यौवनअवस्था जिन्होंकी, और सदद्य है सौभाग्य जिन्होंका, और सरीखा रूप सौंदर्य जिन्होंका, और सपत्नीका भाव रहतेभी निश्चय बहुछता करके परस्पर प्रीति सहित रहती थी॥ ४९॥
नवरं ताण मणट्टिय, धम्मसरूवं वियारयंताणं। दूरेण विसंवाओ, विसपीऊसेहिं सारित्थो॥ ५०॥
अर्थ—इतना विशेष है कि अपने मनमें रहाहुआ धर्मका स्वरूप विचारते दोनों रानियोंके अत्यन्त विसंवाद याने विवाद होता था कैसा विसंवाद जहर अमृतके सदृश परस्पर विरुद्ध होनेसे ॥ ५०॥ है ताओ य रमंतीओ, नव नव लीलाहिं नरवरेण समं।थोवंतरंमि समए, दोवि सगब्भाओ जायाओ॥५१॥

अर्थ—वह दोनों रानियां राजाके साथ नवीन २ लीला करके अपूर्व २ क्रीड़ासे रमती भई थोड़ा है अंतर जिसमें ऐसी गर्भवती हुई ॥ ५१ ॥ समयंमि पसूयाओ, जायाओ कन्नगाउ दोहिंपि । नरनाहो वि सहरिसो, वद्धावणयं करावेइ ॥ ५२ ॥ अर्थ—दोनों रानियोंके गर्भस्थितिके पूर्ण कालमें कन्यायें भई राजाने हर्षसिहत वधाई कराई ॥ ५२ ॥ सोहग्गसुंदरी नंदणाइ, सुरसुंदरित्ति वरनाम । वीयाइ मयणसुंदरि, नामं च ठवेइ नरनाहो ॥ ५३ ॥ अर्थ—राजा सौभाग्यसुंदरीकी पुत्रीका सुरसुंदरी ऐसा प्रधान नाम दिया और दूसरी रूपसुंदरी रानीकी पुत्रीका मदनसुंदरी ऐसा नाम स्थापा ॥ ५३ ॥

समए समप्पियाओ, ताओ सिवधम्मजिणमय विऊणं। अज्झावयाण रन्ना, सिवभूति सुबुद्धि नामाणं ५४

अर्थ—अध्ययन कालमें दोनों कन्याओंको शिवधर्म जैनधर्मका जाननेवाला शिवभूति और सुबुद्धि नाम पाठकोंको पढानेके वास्ते राजाने सोंपी ॥ ५४ ॥

सुरसुंदरी य सिक्खइ, लेहियं गणियं च लक्खणं छंदं । कब्वमलंकारजुयं, तक्कं च पुराण सिमईओ ॥५५॥

अर्थ—सुरसुंदरी कन्या पहले लिखनेकी कला सीखें और गणित कला सीखें तदनंतर वस्तुओंका लक्षण और व्याक-रण सीखें तथा छंदशास्त्र और अलंकार सिहत काव्यशास्त्र सीखें और तर्कशास्त्र तथा पुराणस्मृति सीखें ॥ ५५ ॥ 11 6 11

सिक्खेइ भरहसत्थं, गीयं नट्टं च जोइस तिगिच्छं। विजंमंतंतंतं, हरमेहल चित्तकम्माइं ॥ ५६ ॥ क्षिणाटीका अर्थ—और भरतशास्त्र याने नाट्यशास्त्र सीखें तथा गीतगान और नाचना सीखें तथा ज्योतिषशास्त्र और रोगकी सिहतम्. चिकित्सारूप वैद्यकशास्त्र और विद्या मंत्र तंत्र सीखें तथा चित्रकला सीखें ॥ ५६ ॥ अन्नाइं वि कुंटलविटलाइं, करलाघवाइ कम्माइं । सत्थाइं सिविखयाइं, चित्तचमुक्कारजणयाइं ॥५०॥ अर्थ—सुरसुंदरीने औरभी कुंटलविंटल कर्म नाम कार्मण वशीकरणादि सीखें और करलाघवादिक याने हथफेरी वगैरहः कर्म सीखें औरभी लोगोंके चित्तमें चमत्कार करनेवाले शास्त्र सीखे ॥ ५७ ॥ सा काविकला तं किंपि, कोसलं तं च नित्थि विन्नाणं। जंसिक्खियं न तीए, पन्ना अभिओगजोगेण॥५८॥ अर्थ—वह कोई कला नहीं है और ऐसा कोई कौशस्य निपुणत्व नहीं है ऐसा कोई विज्ञान चातुर्थ नहीं है जो सुरसुंदरी कन्याने बुद्धि और उद्यमके योगसे नहीं सीखा॥ ५८॥ सविसेसं गीयाइसु, निउणा वीणाविणोय लीणा सा। सुरसुंद्री वियद्वा, जाया पत्ता य तारुन्नं ॥ ५९ ॥ है अर्थ—विशेष करके गीतादिक कलामें निपुण विचक्षण भइ और वीणाके विनोदमें लगा है मन जिसका ऐसी सुर- सुंद्री विचक्षण भई और यौवन अवस्था प्राप्त भई ॥ ५९ ॥ कि जारिसओ होइगुरू, तारिसउ होइ सीसगुणजोगो। इनुचिय सा मिच्छा, दिट्टि उक्किटुद्प्पा य ॥६०॥ कि

अर्थ—जैसा गुरू होवे वैसाही प्रायः शिष्यमें गुणका सम्बन्ध होवे इस कारणसे सुरसुंदरी कन्या मिध्यादृष्टिनी और उत्कृष्ट अभिमान युक्त है मन जिसका ऐसी भई ॥ ६० ॥ तह मयणसुंदरी विहु, एयाओ कलाओ लीलमित्तेण। सिक्खेइ विमलपन्ना, धन्ना विणएण संपन्ना ॥६१॥

अर्थ—तैसेही मदनसुंदरीभी यह कही भई छेखनादि कला लीलामात्रसे पढ़ती भई कैसी है मदनसुंदरी निर्मल है बुद्धि जिसकी और धन्या है धर्म धनको जिसने पाया है और विनय युक्त है ॥ ६१ ॥

जिणमयनिउणेण झावएण,सा मयणसुंद्रीबाला। तह सिक्ख्विया जह, जिणमयंमि कुसलत्तणं पत्ता ६२

अर्थ-जिनमत विषयमें निपुण अध्यापकने मदनसुंदरी कन्याको वैसी सिखाई कि जिससे जैनधर्मके पदार्थीमें

एगासत्ता दुविहो नओ य, कालत्तयं गइचउकं । पंचेव अत्थिकाया, द्वछकं च सत्तनया ॥ ६३ ॥

अर्थ—सर्व पदार्थीमें एकही सत्ता अस्तित्व है और दो प्रकारका नय द्रव्यास्तिक १ पर्यायास्तिक २ तथा काल ३ भूत १ वर्तमान २ भविष्यत् और गति ४ नरकगति तिर्यञ्चगति मनुष्यगति देवगति तथापांच अस्तिकाय धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ आकाद्यास्तिकाय ३ पुद्गलास्तिकाय ४ जीवास्तिकाय और ६ द्रव्य धर्मास्तिकायादि ५ और छट्ठा काल और ७ नय नैगम १ संग्रह २ व्यवहार ३ ऋजुसूत्र ४ द्याब्द ५ समभिरूढ़ ६ एवंभूत ७ ॥ ६३ ॥

अट्ठेवय कम्माइं, नवतत्ताइं च दसविहो धम्मो। एगारसपिडमाओ, बारसवयाइं गिहीणं च॥ ६४॥ अर्थ—ज्ञानावरणी १ दर्शनावरणी २ वेदिनी ३ मोहनी ४ आयु ५ नाम ६ गोत्र ७ अंतराय ८ ये कर्म आठ हैं जीवाजीवादि नवतत्व क्षमामार्दवादि दशप्रकारका यतिधर्म दर्शनादि ११ श्रावककी प्रतिमा और स्थूलप्राणातिपात विरमणादि १२ व्रत ॥ ६४॥ इचाइ वियाराचार, सारकुसलत्तणं च संपत्ता । अन्ने सुहुमवियारेवि, मुणइ सा निययनामं च ॥ ६५ ॥ अर्थ—मदनसुंदरी कन्या इत्यादि विचार आचारोका रहस्यभूतपदार्थोमें कुशलपना प्राप्त भई औरभी इन्होंसे भिन्न सुक्ष्मविचारोंको अपने नामके जैसा जाने ॥ ६५ ॥ कम्माणं मुल्लुत्तर, पयडीओ गणइ मुणइ कम्मठिइं । जाणइ कम्मविवागं, बंधोद्यदीरणं संतं ॥ ६६ ॥

अर्थ—और मदनसुंदरी कन्या कर्मोंकी ८ मूल प्रकृति तथा १५८ उत्तर प्रकृति गिने और कर्मोंकी स्थिति ३० कोड़ाकोड़ सागरादिक जाने और कर्मोंका विपाक श्रुभ अशुभ फलरूप जाने और कर्मोंका बंध, उदय, उदीरणा सत्ताका स्वरूप जाने ॥ ६६ ॥

जीसे सो उवज्झाओ, संतो दंतो जिइंदिओ धीरो । जिणमयरओ सुबुद्धि, सा किं न हु होइ तस्सीला ६७ 🥻 अर्थ—जिसका वह सुबुद्धि नाम श्रावक उपाध्याय है वा मदनसुंदरी कन्या गुरुके तुल्य स्वभाववाली क्या न होवे

अपि तु होवेही ॥ कैसा है पाठक क्षमायुक्त तथा मनको दमनेवाला जितेन्द्रिय धैर्यवान, बुद्धिवान् जिन मतमें रक्त ऐसा जिसका गुरु वा वैसी गुणवती कैसे न होवे ॥ ६७ ॥ संयल कलागम कुसला, निम्मल सम्मत्त सीलगुण कलिया। लज्जा सज्जा सा मयण, सुंदरी जुद्दणं पत्ता॥ अर्थ-मदनसुंदरी कन्या यौवन अवस्था प्राप्त भई कैसी है सम्पूर्णकलाशास्त्रोंमें निपुण है और निर्मल सम्यक्तव शील गुणोंसे युक्त लज्जासे परिपूर्ण ऐसी मदनसुंदरी कन्या वाल्य अवस्थाको छोड़के यौवन अवस्था पाई ॥ ६८ ॥ अन्न दिणे अिंक अविभाग सहानिविद्वेण नरवरिंदेण। अज्झावय सहियाओ, अणावियाओ कुमारीओ॥६९॥ 🕻 अर्थ-अन्य दिनके विषय अंदरकी सभामें बैठा हुआ राजाने पाठक सहित दोनों कुमरियोंको अपने पासमें बुलाई ६९ विणओणयाओ ताओ, सरूव लावन्न क्खोहिय सहाओ। विणिवेसिया उ रन्ना, नेहेणं उभयपासेसु॥७०॥ अर्थ—विनयसे नम्र और अपने रूप लावण्यसे चमत्कार प्राप्त किया है सभाके लोकोको जिन्होंने ऐसी दोनों कन्याकू राजाने स्नेहसे अपने दोनों तरफ पासमें बैठाई ॥ ७० ॥ हरिसवसेणं राया, तासिं बुद्धी परिक्खणनिमित्तं। एगं देई समस्सापयं, दुन्हं पि समकालं ॥ ७१ ॥ अर्थ—राजा हर्षित होके दोनों कन्याकी बुद्धिकी परीक्षाके निमित्त दोनों कन्याको समकाल नाम एकसमय एक समस्या पद देवे ॥ ७१ ॥

11 20 11

यथा ''पुन्निहें लब्भइ एहु," तो तक्कालं अइचंचलाए। अचंतगव गहिलाए, सुरसुंदरीए भिणयं, हुंहुं पूरेमि निसुणेह ॥ ७२॥ अर्थ—यह समस्या पद है (पुन्निहें लब्भइ एहु) पुण्यसे यह मिले है समस्या पद दियों के अनन्तर तत्काल सुर-सुंदरी कन्या बोली अहो मैं इस समस्याको पूरी करूं आप सुनो कैसी सुरसुंदरी है अतिशय चपल याने चंचल है और अत्यन्त गर्भसे गहली है॥ ७२॥

यथा धनु जुवण सुवियह्वपण, रोगरहिय नियदेहु । मणवछह मेळावडउ, पुन्नहिं ळब्भइ एहु ॥ ७३ ॥ अर्थ—धन यौवन विचक्षणपना तथा रोगरहित अपना शरीर तथा मनोवछभ प्यारा जो पुरषादि उन्होंके साथ सम्बन्ध ये वस्तुसमूह पुण्यसे मिळे है ॥ ७३ ॥

तं सुणिय निवोतुट्टो, पसंसए साहु साहु उवज्झाओ।जेणेसा सिक्खविया, परिसावि भणेइ सच्चिमणं ७४ अर्थ—सुरसुंदरीका बचन सुनके राजा संतुष्टमान भए इस प्रकारसे प्रशंसा करते भए अहो इसका उपाध्याय पढ़ा-नेवाला गुरू बहुत अच्छा है जिसने इस पुत्रीको ऐसी सिखाई पढ़ाई तब सभाके लोग बोले हे महाराज यह सत्य है इसमें बिल्कुल झूठ नहीं है ॥ ७४ ॥

र्की इसमें बिल्कुल झूठ नहीं है ॥ ७४ ॥ दें तोरन्ना आइट्टा, मयणा वि हु पूरए तं समस्सं । जिणवयणरया संता, दंता ससहावसारित्थं ॥७५॥

अर्थ—बाद राजाकी आज्ञासे मदनसुंदरीभी उस समस्याको पूर्ण करे कैसी है मदनसुंदरी जिनवचनोंमें रक्त और शान्त उपसमयुक्त दान्त नाम इन्द्रिय दमयुक्त और कैसी समस्या अपने स्वभाव सरीखी ॥ ७५ ॥ यथा विणय विवेय पसण्णमणुं, सीलसुनिम्मल देहु। परमप्पह मेलावडो, पुण्णहिं लब्भइ एहु ॥ ७६॥

अर्थ—विनय पूज्यादिकमें वन्दन नमस्कारादिरूप विवेक वस्तुओंका भेद जानना प्रसन्नमनः मनका निर्मेळपना तथा ब्रह्मचर्यसे अत्यन्त उज्वलद्यारीर पाना और परमपथ मोक्ष मार्गके साथ सम्बन्ध होना इतनी वस्तु पुण्यसे मिले हैं॥ ७६॥

तो तीए उवज्झाओ, माया वि य हरिसिया न उण सेसा,। जेण तत्तोवएसो, नकुणइ हरिसं कुदिट्टीणं ७७

अर्थ—समस्या पूर्ण किये अनन्तर मदनसुंदरीका पाठक हिंपत भया और माताभी हिंपत भई परन्तु और राजा-दिक लोगोंने हर्ष नहीं पाया इस कारणसे तत्वका उपदेश मिथ्यात्वी लोगोंको हर्ष नहीं करे है उसका बचन तत्वउप-देशरूप है राजादिक तो बाह्य दृष्टि है इस लिए सुनके हर्ष नहीं पाया कहा है गुणिनि गुणज्ञो रमते ॥ ७७॥

इओय कुरुजंगलंमिदेसे, संखपुरी नाम पुरवरी अस्थि। जापच्छा विक्खाया, जाया अहिछत्ता नामेणं ७८

अर्थ—इधरसे इसके बाद जो भया सो कहते हैं कुरुजंगल नाम देशमें शंखपुरी नामकी प्रधान नगरी है वह नगरी कितने कालके अनन्तर अहिछत्रा नामसे प्रसिद्ध भई ॥ ७८ ॥

तत्थित्थि महीपालो, कालो इव वेरियाण दिमयारी। पइविरसं सो गच्छइ, उज्जैणि निवस्स सेवाए॥७९॥ क्षिण्य अर्थ—उस शंखपुरी नामा नगरीमें शत्रुओं के कालके जैसा दिमतारी नामका राजा है वह राजा प्रतिवर्ष उज्जैनी सिहतम्. नगरीके राजाकी सेवाके लिये आता है॥ ७९॥ अन्नदिणे तप्पुत्तो, अरिद्मणो नाम तारतारुन्नो। संपत्तो पियठाणे, उज्जैणि रायसेवाए॥ ८०॥ अर्थ—अन्य दिनमें दमितारी राजाका पुत्र अरिदमन कुमर राजाकी सेवाके वास्ते उज्जैनी आया कैसा है अरिदमन कुमर उद्घट तारुण्य यौवन है जिसका ॥ ८० ॥ तं च निवपणमणत्थं, समागयं तत्थ दिवरूवधरं। सुरसुंद्री निरिक्खइ, तिक्ख कडक्खेहिं ताडंति॥८१॥ अर्थ—उसवक्त राजाको नमस्कार करनेके छिए सभामें आया दिव्यरूपधारनेवाला अद्भुत सौंदर्य है जिसका ऐसा अरिदमन कुमरको सुरसुंदरी राजकन्या तीखे कटाक्ष नेत्र प्रान्तभागोंसे ताड़ती देखे॥ ८१॥ तत्थेव थिरनिवेसियदिट्टी, दिट्टा निवेण सा वाला। भिणयाय कहसु वच्छे, तुज्झवरो केरिसो होउ ॥८२॥ अर्थ—उस कुमरमें निश्चल स्थापित करी है दृष्टि जिसने ऐसी सुरसुंदरी कन्याको राजाने देखी और कहा हे वत्से तैं कह तेरे कैसा भर्तार होवे॥ ८२॥ तोतीए हिट्राए, धिट्राए मुक्कलोयलजाए। भणियं तायपसाया, जइ लब्भइ मग्गियं कहवि ॥८३॥

अर्थ—तदनन्तर हर्षित भई धृष्टत्वयुक्त ऐसी तथा छोड़ी है लोकलाज जिसने ऐसी सुरसुंदरी बोली पिताके प्रसा-दसे जो कोई प्रकारसे मुखसे मांगा हुआही मिले है ॥ ८३ ॥

ता सबकला कुसलो, तरुणो वररूव पुण्ण लावन्नो। एरिसओ होउ वरो, अहवा ताओ चिय पमाणं॥८४॥

अर्थ—तब सर्व कलामें कुशल चतुर और यौवन अवस्थामें रहा हुआ प्रधानरूप आकृतिसे पवित्र लावण्य सौंदर्य जिसका ऐसा ये आगे रहा हुआ पुरुष भर्तार होओ अथवा पिता जो देवे वही वर प्रमाण है ॥ ८४ ॥

जेणं ताय तुमं चिय, सेवयजणमण समीहियत्थाणं। पूरणपवणो दीससि, पचक्को कप्प रुक्खुद्व॥ ८५॥ अर्थ-अब सुरसुंदरी अपनी इष्टसिद्धिके लिए पिताकी स्तुति करे है हेपिताजी जिसकारणसे आपही सेवक लोगोंके मनोवांछित कार्य करनेमें तत्पर दीखतेहो किसके सदद्य साक्षात् कल्पवृक्षके सदद्य ॥ ८५॥

तो तुट्ठो नरनाहो, दिट्टिनिवेसेण नायतीइमणे।पभणेइ होउ वच्छे, एस अरिद्मणो वरो तुझ ॥८६॥ अर्थ—तब राजा सुरसुंदरीका बचन सुननेसे संतुष्टमान भया और बोला, हेवत्से यह अरिद्मन कुमार तेरा वर होओ कैसा है राजा कुमरमें दृष्टि स्थापनेसे जाना है कुमरीका मन जिसने ॥८६॥ तोसयल सभालोओ,पभणइ नरनाह एस संजोगो।अइ सोहणोहिवल्ली,पूगतरूणं व निब्भंतं॥८७॥

अर्थ — उसके अनन्तर सम्पूर्ण सभाके लोग बोले हे महाराज यह इन्होंका संयोग निःसंदेह अत्यन्त शोभनीय मया है किसके जैसा नागरवेल और सुपारीके वृक्ष जैसा जैसे नागरवेल सुपारीका संयोग है वैसा इन्होंका मी संयोग शोभन है ॥ ८७ ॥ अह मयणसुंदरी विहु, रन्ना नेहेण पुच्छिया वच्छे। केरिसओ तुझवरो, कीरउ मह कहसु अविलंबं ॥८८॥ अर्थ — अथ नाम सुरसुंदरीके वर प्राप्तिके अनन्तर राजाने मदनसुंदरीसेभी स्नेहसे पूछा हे पुत्रि तेंभिकहैं तेरे कैसा भर्तार में करूं मेरे आगे विलंबरहित जैसा होवे वैसा कहो ॥ ८८ ॥ सा पुण जिणवयणवियारसार, संजणिय निम्मल विवेया। लजा गुणिकस्तजा, अहोमुही जा न जंपेइ ८९ अर्थ — जिन वचनोंके विचारसारसे उत्पन्न भया है निर्मल विवेक जिसको ऐसी इसवास्ते लजा गुणोंमें एक सज्ज नाम तत्पर ऐसी मदनसुंदरी नींचा किया है मुख जिसने ऐसी जितने नहीं बोले ॥ ८९ ॥

ताव निरदेण पुणो, पुट्टा साभणइ ईसिहसिऊणं। ताय विवेय समेओ, संपुच्छिस तंसि किमज़ुत्तं॥९०॥ अर्थ—उतने राजाने और पूछा तब मदनसुंदरी थोड़ी हसके राजासे कहने छगी हे पिताजी आप विवेकसहित हो यह अयुक्त मेरेसें क्या पूछो हो विवेकयुक्त आपको मेरेको यह पूछना अयुक्त है यह भाव है ॥ ९०॥ जेण कुल बालियाओ, नकहंति हवेउ एस मज्झ वरो। जो किर पिऊहिं दिन्नो, सो चेव पमाणयवृत्ति ९१

अर्थ—किस कारणसे सो कहते हैं जिस कारणसे कुलवालिका नाम सुकुलमें उत्पन्न भई कन्या ऐसा नहीं कहे मेरे यह भर्तार होवो जो निश्चय मातापिताका दिया वर होवे वही प्रमाण करना ॥ ९१ ॥ अम्मा पिउणोवि निमित्तमित्त, मेवेह वरपयाणंमि । पायं पुवनिबद्धो, संबंधो होइ जीवाणं ॥ ९२ ॥ अर्थ-इस संसारमें कन्याओं के वरप्रदानमें माता पिताभी निमित्त मात्रही है परन्तु तात्विक कारण नहीं है प्राये जिनोंने पूर्वभवमें जिसके साथ सम्बन्ध रचा हो उसकेही साथ यहां सम्बन्ध होवे है ॥ ९२ ॥ जंजेण जया जारिसमुविज्यं होइ कम्म सुहमसुहं। तं तारिसं तया से, संपज्जइ दोरियनिबद्धं॥ ९३॥ अर्थ—जो जिस प्राणिने जिस कालमें जैसा ग्रुभाग्रुभ कर्म उपार्जन किया होवे उस प्राणिके उस कालमें अर्थात् उदयकालमें वैसाही कर्म उदय आता है कैसा वह डोरीसे बंधाहोय वैसा॥ ९३॥ जाकन्ना बहुपुन्ना, दिन्ना कुकुलेवि सा हवइ सुहिया। जा होइ हीणपुन्ना, सुकुले दिन्नावि सा दुहिया ९४ अर्थ—जो कन्या बहुत पुण्यवाली होवे वह कुत्सित कुलमें अर्थात् दिन्नादिकुलमें दी भई सुखिनी होवे हैं और जो हीनपुण्यनी होवे वह अच्छे कुलमें दी भई दुःखी होवे है ॥ ९४ ॥ ता ताय नायतत्तस्स, तुज्झ नो जुज्झए इमोगद्वो । जं मज्झकयपसाया,पसायओ सुहदुहे छोए ॥ ९५ ॥ 🐉 अर्थ—इस कारणसे हे पिताजी ! तत्वके जाननेवाछे आप हो आपको ऐसा गर्व करना युक्त नहीं है जो मेरा किया

श्रीपा.च. ३

श्रीपाल-हुआ प्रसाद अप्रसादसे लोकमें सुख दुःख होवे हैं मेरे किए हुए प्रसादसे सुख और अप्रसादसें दुःख यह गर्व आपको माषाटीका-चरितम् करना उचित नहीं ॥ ९५ ॥

करना उचित नहीं ॥ ९५ ॥ जो होइ पुन्न बलिओ, तस्स तुमं ताय लहु पसीएसि । जो पुण पुन्नविहूणो, तस्स तुमं नो पसीएसि ॥९६॥ अर्थ—जो पुरुष पुण्यसे बलवान् होवे उसपर आप जल्दी प्रसन्न होवो हो और पुण्यहीन होवे है उसपर आप नहीं

प्रसन्न होवो हो ॥ ९६ ॥

भवियवया १ सहावो, २ द्वाईया सहाइणो वावि । पायं पुवोविज्ञयकम्माणुगया फलं दिंति ॥९७॥ अर्थ—भवितव्यता १ स्वभाव २ और द्रव्य १ क्षेत्र २ काल ३ भाव ४ इत्यादिक सहाय करनेवालाभी बहुलता करके पूर्व भवमें उपार्जन किया कर्मोंके अनुगत उन्होंसे मिला हुआही फल देते हैं उन्होंसे अलग नहीं ॥ ९७॥ तो दुम्मिओ य राया, भणेइ रे तं सि महपसाएण। बत्थालंकाराई, पहिरंती कीसि मं भणिस ॥९८॥

अर्थ—उसके अनन्तर राजा मनमें उदास हुआ पुत्रीसे कहे अरे तें मेरे प्रसादसे वस्त्र अलंकारादि नानाप्रकारका अद्भुत नैपत्थ भूषणादि पहरती है और पूर्वोक्त कैसा कहती है ॥ ९८ ॥ हिसऊण भणइ मयणा, कयसुकयवसेण तुज्झ गेहंमि । उप्पन्ना ताय ! अहं, तेणं माणेमि सुक्खाइं ॥९९॥

पभणेइ सहालोओ, सामिय! किमियं मुणेइ मुद्धमई । तं चेव कप्परुक्खो, तुट्टो रुट्टो कयंतोय ॥३॥

अर्थ-तब मदनसुंदरी हसके कहे हे पिताजी! पूर्व भवमें किया सुकृतके वशसे मैं तुझारे घरमें उत्पन्न भई हूं और पुवक्यं सुक्यं चिय, जीवाणं सुक्खकारणं होइ। दुक्यं च क्यं दुक्खाण, कारणं होइ निब्भंतं॥ १००॥ अर्थ—हे पिताजी! जीवोंके पूर्वभवमें उपार्जन किया सुकृत पुण्यही सुखका कारण होवे है और पूर्वभवमें किया हुआ पापही दुःखोंका कारण होता है॥ १००॥ न सुरासुरेहिं नो नरवरेहिं, नो बुद्धिबलसमिद्धेहिं। कहवि खलिजइ इंतो, सुहासुहो कम्मपरिणामो ॥१॥ अर्थ—उदय आता हुआ शुभाशुभ कर्मीका परिणाम कोई प्रकारसे देव दानव नहीं दूर करसकते हैं और राजाभी नहीं हटा सकते हैं बुद्धिबल समृद्धभी दूर नहीं कर सकते हैं ॥ १॥ तो रुट्टो नरनाहो, अहो अहो अप्पपुन्निया एसा। मज्झकयं किंपि गुणं, नो मन्नइ दुवियङ्घा य॥२॥ अर्थ—मदनसुंदरीका बचन सुनके बाद राजा कोघातुर भया और इस प्रकारते बोला अहो अहो लोगो यह कन्या अल्पपुण्यवाली है दुर्विदग्धा याने चातुर्यरहित है इसी कारणसे मेरा किया हुआ गुण कुछभी नहीं

श्रीपालचरितम्
॥ १४॥

अर्थ—वाद समाके लोग कहे हे स्वामिन्! यह वाला मुग्धमती भोली है क्या जाने आप संतुष्ट भए वांछित फल देनेसे कल्पवृक्षके जैसे हो और कोधातुर भए यमराजके तुल्य हो शीघ्र निग्रह करनेसे ॥ ३॥

मयणा भणेइ धिन्दी, धणलविमत्तिथणो इमे सबे । जाणंतािव हु अलियं, मुहण्पियं चेव जंपंति॥४॥

अर्थ—यह सभाके लोगोंका वचन मुनके मदनमुंदरी बोली इन सभाके लोगोंको धिकार होवो धनका लवमात्रकी अभिलाषा करते हुए जानतेभी मिथ्या वचन मुखपिय बोलते हैं ॥ ४॥

जइ ताय! तुह पसाया, सेवयलोया हवंति सबेवि। सुहिया ता समसेवा, निरया किं दुक्खिया एगे ॥५॥

अर्थ—हे पिताजी! जो आपके प्रसादसे सबे सेवक लोग सुखी होते हैं तब तुल्य सेवामें तत्पर ऐसे कितनेक सेवक लोग दुखी कैसे सब सुखीही होना चाहिये ॥ ५॥

तम्हा जे तुम्हाणं, रुच्चइ सो ताय मज्झ होउ वरो। जइ अत्थि मज्झ पुन्नं, ता होही निग्गुणोवि गुणी ॥६॥

अर्थ—तिस कारणसे हे पिताजी! जो आपको रुचे वह मेरा वरहोओ जो मेरे पुण्य है तो आपका दियाहुआ वर निर्णुणीमी गुणवान् होगा॥ ६॥

जइ पुण पुन्नविहीणा, ताय! अहं ताव सुंदरोवि वरो। होही असुंदरुचिय, नूणं मह कम्मदोसेणं॥७॥

॥ १४॥

अर्थ-और हे पिताजी ! जो मैं पुण्यविहीनहूं तो आपका दिया भया सुंदर वरभी निश्चय मेरे कर्मदोषसे असुंदरही तो गाढयरं राया, रुट्टो चिंतेइ दुवियह्वाए । एयाइ कओ लहुओ, अहं तओ वैरिणी एसा ॥ ८ ॥ अर्थ—तदनंतर राजा अत्पर्थ नाराज हुआ विचारे क्या विचारे सो कहते हैं अज्ञानवती इस पुत्रीने मेरेको हलका किया इस कारणसे यह मेरी वैरिणी है पुत्री नहीं है।। ८।। रोसेण विवडभिउडी,भीसणवयणं पळोविऊणनिवं । दक्खो भणेइ मंती, सामिय रइवाडिया समओ ९ अर्थ-कोधसे विकरालभकुटीसे भयानक मुखजिसका ऐसे राजाको देखके अवसरका जाननेवाला चतुर मंत्री कहे हे स्वामिन्! राजवाड़ीका समय है अर्थात् बगीचे जानेका वक्त है॥ ९॥ रोसेण धमधमंतो, नरनाहो तुरयरयणमारूढो । सामंतमंतिसहिओ, विणिग्गओ रायवाडीए ॥१०॥ अर्थ—तब रोषसे धमधमा हुआ राजा घोड़ेपर सवार होके मंत्री सामंतोंसें परिवरा हुआ राजबाड़ी चला ॥ १०॥ जाव पुराओ वाहिं, निग्गच्छइ नरवरो सपरिवारो । ता पुरओ जणवंदं, पिच्छइ साडंबरिमयंतं ॥११॥ 🐉 अर्थ—जितने राजा परिवार सहित नगरसे बाहिर निकल्ठे उतने आगे आडंबर सहित मनुष्योंका समूह आता हुआ

श्रीपाल-चरितम् ॥ १५॥ श्रीपाल-चरितम् ॥ १५॥ श्रीपाल-चरितम् ॥ १५॥ श्रीपाल-चरितम् ।। १५॥ श्रीपाल-चरितम् ।। १५॥ श्रीपाल-चरितम् । सहतम् ।। १५॥ स्विक्त्रम् ।। १५॥ स्विक्त्रम् ।। १५॥ स्विक्त्रम् ।। १५॥ अर्थ—हे स्वामिन् ! सातसे पुरुष नवीन यौवन अवस्था जिन्होंकी अर्थात् जवान पराक्रमसहित ऐसे दुष्टकोढ़रोगसे

पीड़ित ये सब इकट्ठे मिले हैं ॥ १३ ॥

प्गो य ताण बालो, मिलिओ उंबरवाहिगहियंगो। सो तेहिं परिग्गहिओ, उंबरराणुत्ति कयनामो॥१४॥
अर्थ—और उन कुष्ठी पुरुषोंकों एक बालक ? मिला है कैसा है बालक उम्बर व्याधि कुष्ठ रोग विशेषसे गृहीत है
अंग जिसका ऐसे बालकको कुष्ठी पुरुषोंने उम्बरराणा ऐसा नाम करके अपना स्वामी किया है॥ १४॥
वरवेसिरिमारूठो, तयदोसी छत्तधारओ तस्स। गयनासा चमरधरा, घिणि २ सद्दा य अग्गपहा॥ १५॥
अर्थ—वह बालक प्रधान खन्नरनी पर चढ़ा हुआ है श्वेतकुष्ठी पुरुष उम्बरराणेके छत्रधारक है गतनासा पुरुष चमर धारणेवाले है रोगके वश्चसे विण २ ऐसा है शब्द जिन्होंका ऐसे मनुष्य उसके आगे चलनेवाले हैं॥ १५॥

गयकन्ना घंटकरा, मंडलवइ अंगरक्लगा तस्स । दहुल थईयाइत्तो, गलियंगुलि नामओ मंती ॥१६॥ अर्थ—गल गए हैं कान जिन्होंके ऐसे पुरुष घंटा बजानेवाले हैं रक्त मंडल रोगवाले पुरुष उम्बरराणेके अंगरक्षक हैं दादके रोगवाले पुरुष ताम्बूल धारनेवाले हैं और गलितअंगुलि नामका मंत्री है ॥ १६ ॥ केवि पसूइयवाया, कच्छा द्दे(ब्मे)िहं केवि विकराला। केवि विउंचियपामा, समन्निया सेवगा तस्स १७ अर्थ—उस उम्बर राजाके कितनेक सेवक वातरोग युक्त हैं और कितनेक सेवकोंकी कक्षा दादोंसे विकराल है कितनेक पामसहित हैं विचर्चिका जातिकी पाम उस करके सहित हैं॥ १७॥ एवं सो क्रुट्टियपेडएण, परिवेढिओ महीवीढे। रायकुलेसु भमंतो, मुहमग्गियदाणं पगिन्हेइ ॥१८॥ अर्थ—इस प्रकारसे वह उम्बर राजा कोड़ियोंके समूहसे चौतर्फसे परिवरा हुआ पृथ्वीतलपर फिरता हुआ राजा छोगोंके घरोंमें मुखमार्गित दान छेता है ॥ १८ ॥ सो एसो आगच्छइ, नरवर! आढंवरेण संजुत्तो । तामग्गमिणं मुत्तुं, गच्छह अन्नं दिसं तुब्भे ॥१९॥ अर्थ—हे महाराज! वह यह उम्बर राजा आडंबर सहित आता है इस लिए इस मार्गको छोड़के और दिशि तरफ, आप चर्छे ॥ १९॥ तो बलिओ नरनाहो, अन्नाइ दिसाइ जाव ताव पुरो। तं पेडयंपि तीए, दिसाइ बलियं तुरियं तुरियं॥२०॥ 🕏

अपिएल चिरतम् । १६॥ अर्थ—तदनंतर राजा जितने और दिशि तरफ चल्ले जतने आगे कोहियोंका पेड़ाभी जल्दी २ उसी दिशातरफ पलटा ॥ २०॥ राया भणेइ मंतिं, पुरओ गंतूणिमे निवारेसु । मुहमग्गियंपि दाउं, जेणेसिं दंसणं न सुहं ॥ २१॥ अर्थ—तब राजा मंत्रीसे कहे तुम आगे जाके इन्होको हटाव जो मांगे सो देके इस कारणसे इन कोहियोंका दर्शन अच्छा नहीं है॥ २१॥ जा तं करेइ मंती, गलियंगुलिनामओ दुयं ताव। नरवर पुरओ ठाउं, एवं भणिउं समाढत्तो ॥ २२॥ अर्थ—जितने राजाका बचन मंत्री करे उतने गलितांगुलि नामका मंत्री शीघ राजाके आगे आके खड़ा रहके इस प्रकारसे कहना ग्रुरू किया॥ २२॥

सामिय! अम्हाण पहू, उंबरनामेण राणओ एसो। सव्वत्थिव मिन्निज्जइ, गुरुएहिं दाणमाणेहिं ॥२३॥ अर्थ—हे स्वामिन्! यह हमारा स्वामी उम्बर राजा सब ठिकाने बहुत दानमानसे माना जावे है राजादिक लोग सत्कार करे है ॥ २३॥ तेणऽम्हाणं धण कणय,चीरपमुहेहिं कीरइ न किंपि। एयस्स पसाएणं, अम्हे सवेवि अइसुहिणो ॥२४॥

अर्थ-इस कारणसे हमारे धन, स्वर्ण वस्त्रादिकसे कुछभी कार्य नहीं है इस उम्बर राजाके प्रसादसे हम सब अतिशय सुखी हैं ॥ २४ ॥

किंच। एगो नाह! समितथ, अम्ह मणिंचितिओ वियप्पुत्ति। जइ लहइ राणओ राणियंति ता सुंदरंहोइ २५ ता नरनाह ! पसायं, काऊणं देहि कन्नगं एगं । अवरेणं कणगकप्पड, दाणेणं तुम्ह पज्जत्तं ॥ २६ ॥ अर्थ—इस कारणसे हे महाराज ! प्रसन्न होके एक कन्या देवो और सोना वस्त्र वगैरह देनेसे सरा और पदार्थसें हमारे कार्य नहीं है ॥ २६॥

तो भणइ रायमंती, अहो अजुत्तं विमग्गि अंतुमए। को देइ नियं धूयं, क्रुट्टकिलिट्टस्स जाणंतो ॥२७॥ अर्थ—तव राजाका मंत्री कहे अहो तुमने अयुक्त मांगा कोढ़ रोगसे क्लेशयुक्त पुरुषको जानता भया कौन पुरुष

अपनी पुत्री देवे अपि तु कोई नहीं देवे ॥ २७॥

गिलयंगुलिणा भिणयं, अम्हेहिं सुया निवस्सिमा कित्ती। जं किरमालवराया, करेइ नो पत्थणाभंगं ॥ २८॥ अर्थ—यह राजाके मंत्रवीका बचन सुनके गिलतांगुल मंत्रीने कहा हमने राजाकी ऐसी कीर्ति सुनीथी कि मालविद्याका राजा किसीकीभी प्रार्थनाका भंग नहीं करे है जो कोईभी वस्तु मागे उसको देता है ॥ २८॥

श्रीपाल-चरितम्

तो सा निम्मलिकत्ती, हारिजाउ अज्ञ नरवरिंद्स्स। अहवा दिजाउ काविहु, धूया कुकुले वि संभूया ॥२९॥ भाषाटीका-अर्थ—तिस कारणसे हम यहां आए हैं परन्तु आज राजाकी निर्मल कीर्ति हारीजावे है अथवा कुत्सितकुलमें क्ष्मितम्. उत्पन्न भईभी कोई कन्या देओ तब कीर्ति बनी रहेगी॥ २९॥

पभणेइ नरवरिंदो, दाहिस्सइ तुम्ह कन्नगा एगा । कोकिर हारइ कित्तिं, इत्तियमित्तेण कज्जेण ॥३०॥

अर्थ-तब राजा कहे तुमको एक कन्या हम देवेंगे निश्चय इतने कार्यके वास्ते बहुत प्रयत्नसे कीर्ति उत्पन्न करी जावे हैं सो कौन हारे॥ ३०॥

चिंतेइ मणे राया, कोवानळजिळयनिम्मळिववेगो । नियधूयं अरिभूयं, तं दाहिस्सामि एयस्स ॥ ३१ ॥

अर्थ-कोधाग्निसे जला है निर्मलविवेक जिसका ऐसा राजा विचारे क्या विचारे सो कहते हैं मैं शत्रुके जैसी अपनी कन्याको इस कोहियेको दुंगा ॥ ३१ ॥

सहसा बलिऊण तओ, नियंआवासंमि आगओ राया। बुह्यावइ तं मयणा, सुंद्रिनामं नियं धूयं ॥३२॥

अर्थ—अकस्मात् उसी ठिकानेसे पीछा पलटके राजा अपने प्रासादमें आके मदनसुंदरी अपनी पुत्रीको बुलाके ॥३२॥ 🎇 ॥ १७॥

हं अज्जवि जइ मन्नसि, मज्झपसायस्स संभवं सुक्खं। ता उत्तमं वरं ते, परिणाविय देमि भूरिधणं॥३३॥

अर्थ—क्या कहे सो कहते हैं हुं यह अनादरमें है अनादरसे राजा बोछे अरे तैं अवीभी जो मेरे प्रसादसे उत्पन्न भया सुख मानती है तो मैं तेरेको उत्तम वर परणाके बहुत धन देऊं ॥ ३३ ॥

जइ पुण नियकम्मं चिय, मन्नसि ता तुज्झ कम्मुणाणीओ। एसो कुट्टियराणो, होउ वरो किं वियप्पेण ३४ अर्थ—जो फिर अपने कर्महीको तैं मानती है तो तेरा कर्मोंने लाया हुआ यह कुछी तेरा वरराज होवो यहां विचा-

हसिऊण भणइ वाला, आणीओ मज्झकम्मणा जो उ।सो चेव मह पमाणं, राओ वा रंकजाओ वा ॥३५॥ अर्थ—यह राजाका बचन सुनके मदनसुंदरी बाला हसके कहे जो मेरा कर्म लाया है वही वर मेरे प्रमाण है राजा

कोबंधेणं रन्ना, सो उंबरराणओ समाहूओ। भणिओ य तुमिमीए, कम्माणीओसि होसु वरो ॥३६॥ अर्थ—यह कन्याका बचन सुनके कोधान्ध राजाने उम्बर राजको अपने पासमें बुठाया और कहा क्या कहा सो कहते हैं तुमको इस कन्याके कर्म ठाए हैं इस छिए इसका भर्तार होवो॥ ३६॥ तेणुत्तं नो जुत्तं, नरवर! बुत्तुं पि तुज्झ इय वयणं। को कणयरयणमाळं, बंधइ कागस्स कंठंमि ॥३७॥

श्रीपाल-चरितम् ॥ १८॥

अर्थ—यह राजाका बचन सुनके उम्बर राजा बोला हे महाराज! आपको ऐसा बचन कहनाभी युक्त नहीं है काग निंदनीय पक्षीके कंठमें सोनेरलकी माला कौन पहरावे अर्थात् में कागके तुल्य हूं और कन्या सोनेरलकी मालाके सहतम् ।। १८॥

एगमहं पुवकयं, कम्मं मुंजेमि एरिसमणज्झं। अवरं च कहमिमीए, जम्मं बोलेमि जाणंतो ॥३८॥
अर्थ—हे महाराज! एकतो मैं ऐसा अनार्य पूर्वभवमें कर्म किया सो भोगवता हूं और जानता भया इस उत्तम कन्याका जन्म कैसे डुवोऊं मेरेको यह कार्य करना युक्त नहीं है ॥ ३८॥
ता भो नरवर! जइ देसि, कावि ता देसु मज्झ अणुरूवं। दासिविलासिणिध्यं, नो वा ते होउ कल्लाणं ३९
अर्थ—इस कारणसे हे राजन! जो कोईभी कन्या देते हो तो मेरे योग्य दासी विलासिनीकी पुत्री देवो अथवा ऐसी
कोई न होवे तो तुम्हारे कल्याण होवो मेरे इस कार्यसे सरा॥ ३९॥ तो भणइ नरविरंदो, भो भो महनंदिणी इमा किंपि। नो मज्झकयं मन्नइ, नियकम्मं चेव मन्नेइ ॥४०॥ अर्थ—तब राजा बोले भो भो उम्बरराज! यह मेरी पुत्री मेरा किया हुआ उपकार कुछभी नहीं मानती है केवल अपने कर्महीको प्रमाण करती है ॥ ४०॥ तेणं चिय कम्मेणं, आणीओ तंसि चेव जीइ वरो। जइ सा नियकम्मफलं, पावइ ता अम्ह को दोसो ४१

अर्थ— उसीही कर्मने इनका भर्तार होनेको तुमको यहां प्राप्त किया है जो यह मेरी पुत्री अपने कर्मका फल पावे तो हमारा क्या दोष है ॥ ४१ ॥ तं सोऊणं बाला, उट्टित्ता झत्ति उंवरस्स करं। गिन्हइ निययकरेणं, विवाहलग्गं व साहंती ॥४२॥ अर्थ—वह राजाका बचन सुनके मदनसुंदरी कन्या उम्बर राजाका हाथ शीघ्र अपने हाथसे ग्रहण करे क्या करती होवे जैसी मानो विवाह लग्न साधती होवे वैसी ॥ ४२॥ सामंतमंतिअंतेउरीउ, वारंति तहवि सा बाला । सरयससिसरिसवयणा, भणइ एसुच्चिय पमाणं ॥४३॥ अर्थ—सामंत मंत्री लोग और अंतेवरकी स्त्रियां मना करे हैं तौभी शरद ऋतुके चंद्रके जैसा है मुख जिसका ऐसी मदनसुंदरी मेरे यही वर प्रमाण है औरसे कार्य नहीं है ऐसा बोली ॥ ४३॥ एगत्तो माउलओ, एगत्तो रुप्यसुंदरी माया। एगत्तो परिवारो, रुयइ अहो केरिसमजुत्तं॥ ४४॥ अर्थ—उस अवसरमें एकदिशिमें मदनसुंदरीका मामा पुण्यपाल रोवे एकदिशिमें मदनसुंदरीकी माता रूपसुंदरी रानी रोवे एक तरफ़ उन्होंके परिवारके लोग रोवे अहो यह कैसा अयुक्त कार्य हुआ ऐसा विचारते भए ॥ ४४ ॥ तहिव न नियकोवाओ,वलेइ राया अईव कठिणमणो। मयणावि मुणियतत्ता,निय सत्ताओ न पचलेइ ४५

श्रीपा.च. ४

श्रीपाल-चिरतम् ॥ १९॥ श्रीपाल-चिरतम् ॥ १९॥ श्रीपाल-तं वेसिरमारोविय, जा चिला उंवरो नियय ठाणं। ता भणइ नयरलोओ, अहो अजुत्तं अजुत्तंति ॥ ४६॥ अर्थ—तदनंतर उम्बर राणा उस कुमरीको खचरनीपर चढ़ाके वहांसे अपने स्थान चला उस समय नगरके लोग इस प्रकारसे बोले अहो यह कार्य अयुक्त भया ॥ ४६॥ इस प्रकारस बाल अहा यह काय अयुक्त मया अयुक्त मया ॥ ४५ ॥
एगे भणंति धिद्धी, रायाणं जेणिमंकयमजुत्तं । अन्ने भणंति धिद्धी, एयंअइदुविणीयंति ॥ ४७ ॥
अर्थ—उस अवसर कई लोग कहे राजाको धिक्कार होवो धिक्कार होवो जिस कारणसे राजाने यह अयुक्तकार्य किया और लोग ऐसे बोले इस दुर्विनीत कन्याको धिक्कार होवो जिसने पिताके बचन नहीं अंगीकार किए ॥ ४७ ॥
केवि निंदंति जणणिं, तीए निंदंति केवि उवज्झायं। केवि निंदंति दिव्वं, जिणधम्मं केवि निंदंति ॥४८॥
अर्थ—और उस वक्तमें कईक लोग कन्याकी माताकी निंदा करे इसकी माताने सिखावन अच्छी नहीं दियी और कईक लोग उपाध्यायकी निंदा करे अच्छी पढ़ाई नहीं कितने लोग कहें इसका भाग्यही ऐसा है और कितनेक जैन धर्मकी निंदा करें जैनी कर्महीं कुंमानते हैं ॥ ४८ ॥ धर्मकी निंदा करें जैनी कर्महीं कुंमानते हैं ॥ ४८ ॥ तहिव हु वियसियवयणा, मयणा तेणुंवरेण सह जंती । नकुणइ मणेविसायं, सम्मं धम्मं वियाणंती ॥४९॥ 🐒

Acharva Shri Kailassagarsuri Gvanmandir

अर्थ—तथापि निश्चय है मनमें जिसके ऐसी मदनसुंदरी कन्या उम्बर राजाके साथ जाती भई विकस्वर मान है मुख जिसका ऐसी मनमें दुःख नहीं करे कैसी है मयना सुंदरी सम्यक् धर्मको जाननेवाली है इससे ॥ ४९ ॥ उंवरपिरवारेणं, मिलिएणं हरिसनिब्भरंगेणं । नियपहुणो भत्तेणं, विवाहिकचाइं विहियाइं ॥ ५० ॥ अर्थ—बाद इकट्ठा हुआ उम्बरका परिवारने विवाह कार्य किए कैसा है उम्बरका परिवार हर्षसे भरा है अंग जिन्होंका और अपने स्वामीका भक्त है ॥ ५० ॥ इतो रन्ना सुरसुंदरीइ, वीवाहणत्थमुवज्झाओ । पुट्टो सोहणलग्गं, सोपभणइ राय ! निसुणेसु ॥ ५१॥ अर्थ—इधरसे राजाने सुरसुंदरी कन्याका विवाह करनेके लिए उपाध्यायको सम्यक् लग्न पूछा तव उपाध्याय बोला हे महाराज आप सुनो ॥ ५१॥

अर्जं चिय दिणसुद्धी, अत्थि परं सोहणं गयं लग्गं। तइया जइया मयणाइ, तीय कुट्टियकरो गहिओ ५२ अर्थ—आजही दिनशुद्धि है यह सम्पूर्ण दिन शुद्ध है परंतु केवल शोभन लग्न तो तव गया जब मदनसुंदरीने कोढ़ी उम्बर राणेका कर ग्रहण किया॥ ५२॥

राया भणेइ हुंहुं, नाओ लग्गस्स तस्स परमत्थो । अहुणाविहु नियधूयं, एयं परिणावइस्सामि ॥ ५३ ॥ 🎉

श्रीपाल-चरितम्
॥ २०॥
श्रीपाल-चरितम्
॥ २०॥
श्रीपाल-चरितम्
॥ २०॥
श्रीपाल-चरितम्
॥ २०॥
श्रीपाल-चरितम्
। अर्थ—तदनंतर राजाकी आज्ञासे हर्षित मंत्री अमात्योंने विवाह उत्सव प्रारंभ किया कैसा विवाह पर्व क्षणमात्रमें करीगई है सामग्री जिसकी ॥ ५४ ॥

तं च केरिसं उसियतोरणपयडपडायं, विज्ञारतूरगहीरनिनायं। नचिरचारुविलासिणिघद्दं, जयजयसद्दकरंतसुभद्दं ॥ ५५ ॥

पदंसुयघडओलिजमालं, क्रूरकपूरतंबोलविसालं । धवलदियंतसुवासिणिवग्गं, बुह्वपुरंधिकहियविहिमग्गं ॥ ५६॥

अर्थ—तथा नानाप्रकारके वर्णवाले उत्तम वस्त्रोंसे रचा है मंडप जिसमें तथा कूरादि नाम मिष्टान्नादि भोजनके ऊपर कपूर कस्तूरी सहित ताम्बूल दियाजाय जिसमें और सुवासिनी और बहुवां धवल मंगल गावें हैं जिसमें तथा वृद्धा पुत्र दोहिता दोहितियोंका परिवारवाली सधवस्त्रियोंने विवाहका विधिमार्ग कहा है जिसमें ॥ ५६ ॥ मग्गणजणदिज्ञंतसुदाणं, सयणसुवासिणिकयसम्माणं ।

मग्गणजणदिज्ञतसुदाणं, सयणसुवासिणिकयसम्माणं । महळवायचउप्फळळोयं, जणजणवयमणिजणियपमोयं ॥ ५७ ॥

अर्थ—तथा याचक लोगोंको शोभन दान दिया जावे जिसमें और अपने सम्बन्धी लोग और सुवासिनियोंका सन्मान बहुमान किया है जिसमें मृदंगोंका बजाना उससे बहुत लोग इकट्ठे हुए है जिसमें नगरके लोग और देशके लोगोंके मनमें किया है प्रमोद हर्ष जिसमें ऐसा ॥ ५७ ॥

कारियसुरसुंद्रिसिणगारं, सिंगारियअरिदमणकुमारं। हथलेवइमंडलविहिचंगं, करमोयणकरिदाणसुरंगं॥ ५८॥

अर्थ—तथा सुरसुंदरी कन्याको श्रंगार कराया है जिसमें और अरिदमन कुमरको वस्त्र भूषणोंसे अलंकृत किया है जिसमें और पाणिग्रहणके समयमें ब्राह्मण करके किया जाय मंडलविधि लोक प्रसिद्ध उस करके रमणीक तथा करमो-चन समयमें राजाने हाथी घोड़े वगेरेह दान दिया उस करके सुंदर ॥ ५८॥

श्रीपाल-चिरतम् ॥ २१॥ १ विहियविवाहो, अरिदमणो लखहयगयसणाहो । सुरसुंद्रीसमेओ, जा निगच्छइ पुरवरीओ ॥५९॥ अर्थ—उक्त प्रकारसे किया है विवाह जिसका और पाया है घोड़ा हाथी उन्हों करके सहित और सुरसुंद्री अपनी स्त्री समेत हाथीपर सवार होके अरिदमन कुमर जितने उज्जैनीसे निकले अर्थात् रवाने होवे ॥ ५९ ॥ ता भणइ सयललोओ, अहोणुरूवो इमाणसंजोगो। धन्ना एसा सुरसुंद्री य, जीए वरो एसो ॥६०॥ अर्थ—उतने सर्व नगरके लोग याने बहुतसे लोग कहे अहो यह आश्चर्य है इन कुमार कन्याका अनुरूप योग्य सम्बन्ध भया है यह सुरसुंदरी कन्या धन्य है जिसका यह अरिदमन कुमर भर्तार हुआ ॥ ६० ॥ केवि पसंसंति निवं, केविवरं केवि सुंद्रिंकन्नं । केवि तिए उवज्झायं, केवि पसंसंति सिवधम्मं ॥६१॥ अर्थ—और उस अवसरमें कईक लोग राजाकी प्रशंसा करे कितनेक लोग कुमरकी प्रशंसा करे कईक लोग सुरसुं-दरी कन्याकी शोभा करे कितनेक लोग कन्याकी माताकी और उपाध्यायकी प्रशंसा करे कईक लोग शिवधर्मकी सुरसुंद्रि सम्माणं, मयणाइ विडंबणं जणोदट्टं । सिवसासणप्पसंसं, जिणसासणिंदणं कुणइ ॥६२॥ १००० अर्थ—उस अवसरमें सुरसुंद्री राजकन्याका सन्मान सत्कार देखके और मदनसुंद्रीकी विड़ंबना देखके बहिर्दृष्टि है। हो से होय वैसा शिवशासनकी प्रशंसा और जैनशासनकी निंदा करे ॥६२॥

इओय नियपेडयस्स मज्झे, रयणीए उंबरेण सा मयणा। भिणया भहे निसुणसु, इमं अज्जुत्तं कयं रन्ना ६३ अर्थ—इधरसे अपना पेड़ा समुदायमें रात्रिमें उम्बरराजाने मदनसुंदरीसे इस प्रकारसे कहा हे शोभने तें सुन राजा तेरे पिताने यह अयुक्त किया विगड़ा हुआ शरीर जिसका ऐसा मैं हूं मेरेकूं दी ऐसा भाव है॥ ६३॥ तहिव न किंपि विणट्टं, अज्जवि तं गच्छ कमवि नररयणं। जेणं होइ न विहुळं, एयं तुहु रूविनम्माणं ६४ अर्थ—तथापि कुछभी नहीं बिगड़ा है अवीभी तें कोई श्रेष्ठ पुरुष पास जा अर्थात् कोई निरोगी पुरुषको अंगीकार कर जिससे तेरे यह रूपकी रचना निष्फल न होवे॥ ६४॥ इह पेडयस्स मज्झे, तुज्झिव चिट्ठंतिआइ नो कुसलं। पायं कुसंगजणियं, मज्झ वि जायं इमं कुट्ठं ॥६५॥ अर्थ—इस समुदायमें रहती भई तेरेको कुशल नहीं है कैसे सो कहते हैं बहुत करके मेरेभी यह कोढ़ उत्पन्न भया है सो तेरे कभी न होजाय॥ ६५॥ तो तीए मयणाए, नयणंसुयनीरकछुसवयणाए।पइपाएसु निवेसियसिराइ, भणियं इमं वयणं ॥६६॥ अर्थ—तदनंतर मदनसुंदरीने यह वक्ष्यमाण बचन कहा कैसी मदनसुंदरी नेत्रोंमें जो आंसूका जल उससे मैला हुआ है मुख जिसका ऐसी और कैसी भर्तारके चरणोंमें स्थापा है मस्तक जिसने ऐसी क्या बोली सो

श्रीपालचिरतम्
॥ २२॥

सामिय! सबं मह आइसेसु, किंचेरिसं पुणो वयणं। नो भिणयं जं दूह, वेइ मह माणसं एयं ॥ ६७॥
अर्थ—हे स्वामिन मेरेको और सब कार्यकी आज्ञा करो किंतु ऐसा बचन और नहीं कहना कैसे सो कहते हैं जिस कारणसे यह वचन मेरे मनको दुःखावे है ॥ ६७॥
अग्नं च पदमं महिलाजम्मं, केरिसयं तंपि होइ जइ लोए। सीलिविहूणं नूणं, ता जाणह कंजियं कुहियं ६८
अर्थ—औरभी सुनो पहले खीका जन्म अशुद्धही है वह खीका जन्म जो लोकमें ब्रह्मचर्य रहित होवे तव निश्चय
अर्थ—औरभी सुनो पहले खीका जन्म अशुद्धही है वह खीका जन्म जो लोकमें ब्रह्मचर्य रहित होवे तव निश्चय
अर्थ—जिस कारण खियोंके शीलमें सहसमं। सीलं जीवियसिरसं, सीलाओ न सुंदरं किंपि॥ ६९॥
अर्थ—जिस कारण खियोंके शीलसे अधिक कुछभी सुंदर नहीं है॥ ६९॥
ता सामिय! आमरणं, मह सरणं तंसि चेव नो अन्नो। इय निच्छियं वियाणह, अवरं जं होइ तं होउ ७०
अर्थ—इस कारणसे हे खामिन मरणपर्यंत मेरे आपहीका शरणा है और कोई शरणा नहीं है यह निश्चय युक्त
आप जानो और जो होनेवाला है सो होवो॥ ७०॥
एवं तीए अइनिचलाइ, दढसत्तिपरकणिनिमितं। सहसा सहस्सिकरणो, उदयाचल चूलियं पत्तो॥७१॥

अर्थ—कहे प्रकारसे अत्यन्त निश्चल उस मदनसुंदरीका जो दृढ़ सत्त्व धेर्य देखनेके निमित्त होवे वैसा अकस्मात् सहस्रकिरण सूर्य उदयाचल निषध पर्वतकी चूलिका शिखा उसपर प्राप्त भया अर्थात् सूर्योदय भया ॥ ७१ ॥ मयणाए वयणेणं, सो उंवरराणओ पभायमी । तीए समं तुरंतो, पत्तो सिरिरिसहभवणंमि ॥ ७२ ॥ अर्थ—तब मदनसुंदरीके बचनसे उम्बरराजा प्रभातमें अपनी स्त्रीसहित शीघ २ चलता हुआ श्री ऋषभदेव आणंदपुलइअंगेहिं, तेहिं दोहिंवि नमंसिओ सामी। मयणा जिणमयनिउणा, एवं थोउं समाढत्ता ॥७३॥ अर्थ—आनंद हर्षसे रोमोद्गम युक्त शरीर जिन्होंका ऐसे वधूवर दोनों श्री ऋषभदेव स्वामीको नमस्कार किया बाद जैन धर्ममें निपुण ऐसी मदनसुंदरी वक्ष्यमाण प्रकारसे स्तुति करनी प्रारंभ करी ॥ ७३ ॥ भत्तिबभरनिमरसुरिंद्विंद!,वंदियपय पढमजिणिंद्चंद!। चंदुज्जलकेवलिकित्तपूर,पूरियभुवणंतरवेरिसूर! अर्थ-भक्तिके समूहसे नम्र नमनेका स्वभाव जिन्होंका ऐसे देवेन्द्रोंका समूह उन्हों करके वंदित है चरण कमल जिन्होंका ऐसे हेप्रथमजिनेन्द्रचन्द्र चन्द्रके जैसा आल्हाद करनेवाला और चन्द्रके जैसा उज्वल धवल सम्पूर्ण जो कीर्तिका पूर नाम यशका समूह उस करके पूरित भरा हुआ तीन लोक जिस करके उसका सम्बोधन हे चन्द्रो० और अंतरंग शत्रु काम कोधादिकके जीतनेमे सूर उसका संबोधन ॥ ७४॥

श्रीपाल-चरितम्

॥ २३ ॥

सूरूव हरियतमतिमिरदेव, देवासुरखेयरविहियसेव । सेवागयगयमयरायपाय, पायडियपणामह कयपसाव ॥ ७५ ॥

अर्थ—और सूर्यके जैसा दूर किया है अज्ञानरूप अंधकार जिसने और वैमानिकादि देव भवनपत्यादि असुर और विद्याधर उन्होंने करी है सेवा जिसकी ऐसा हे देव! सेवाके वास्ते आया और गया है मद जिन्होंका ऐसे जो राजा लोग उन्हों करके नमस्कार किया है चरणोंमें जिन्होंके ऐसा हे सेवा०? और किया है प्रसाद जिसने हे कृतप्रसाद!॥७५॥

सायरसमसमयामयनिवास, वासवग्रहगोयरग्रणविकास। कासुज्जलसंजमसीललील, लीलाइ विहियमोहावहील॥ ७६॥

अर्थ—समुद्रके तुल्य समता अमृतके निवास इन्द्र गुरु लोकोक्तिसे बृहस्पतिः उसके विषयभूत है गुणोंका विस्तार जिन्होंका उसका सम्बोधन हे वासव० इत्यादि और कास तृणविशेष उसके सदृश संयम शील चारित्र स्वभावकी लीला जिसके ऐसा और लीलामात्रसे किया है मोहनीय कर्मका अनादर जिन्होंने ऐसे ॥ ७६ ॥

> हीलापरजंतुसुअकयसाव, सावयजणजणियाणंदभाव। भावलयअलंकिय रिसहनाह, नाहत्तणु करि हरि दुक्खदाह॥ ७७॥

भाषाटीका-सहितम्.

11 23 11

अर्थ—हीलनाही प्रधान जिन्होंके ऐसे जीव उन्होंपर नहीं किया है आक्रोश जिन्होंने और श्रावक लोगोंको उत्पन्न किया है आनंदका उदय जिन्होंने और भा नाम प्रभा उसका मंडल उस करके शोभित उसका सम्बोधन हे ? भा वलय० पूर्वोक्त विशेषणसहित हे ऋषभनाथ आप मेरे योग क्षेम करो मेरे दुःख दाह दूर करो ॥ ७७ ॥ इय रिसहजिणेसर भुवणदिणेसर, तिजयविजयसिरिपाल पहो । मयणाहिय सामिय? सिवगइगामिय, मणहमणोरह पूरिमहो॥ ७८॥ अर्थ-इस कहे प्रकारसे हे ऋषभजिनेश्वर हे भुवनदिनेश्वर छोकमें सूर्यसदृश तीनजगतकी विजयछक्ष्मीको पाछने-वाला हे प्रभो हे कामका शत्रु हे स्वामिन् हे शिवगति गामिन् मेरे मनके मनोरथोंको पूर्ण करो यह तात्पर्यार्थ है और श्टेषार्थ यह है तीन जगत्में विजय जिसका ऐसे श्रीपालका प्रभु उसका सम्बोधन तथा मदनसुंदरीका हित करनेवाला उसका सम्बोधन हे मदनाहित ! ॥ ७८ ॥ एवं समाहिलीणा, मयणा जा थुणइ ताव जिणकंठा। करट्टियफलेण सहिया, उच्छलिया कुसुमवरमाला

अर्थ—इस प्रकारसे समाधि चित्तकी एकाग्रतामें लगा हुआ है मन जिसका ऐसी मदनसुंदरी जितने स्तुति करे उतने भगवानके कंठसे हाथमें रहा हुआ विजोरेका फलसहित प्रधान पुष्पोंकी माला उछली ॥ ७९ ॥ 🖔 मयणा वयणाओ उंबरेण, सहसत्ति तं फलं गहियं । मयणाइ सयंमाला, गहिया आणंदियमणाए ॥८०॥ 🖇

अर्थ—उस समय मदनसुंदरीके बचनसे उम्बर रानेने शीघ्र वह फल ग्रहण किया आनंदयुक्त मनजिसका ऐसी मदनसुंदरीने स्वयं माला ग्रहण करी ॥ ८० ॥
भिणयं च तीइ सामिय, फिट्टिस्सइ एस तुम्ह तणुरोगो। जेणेसो संजोगो, जाओ जिणवरकयपसाओ ८१ अर्थ—और मदनसुंदरीने कहा हे स्वामिन यह आपके शरीरका रोग चला जायगा अर्थात् मिट जायगा जिस कारणसे यह संयोग जिनवर श्री ऋषभदेव स्वामीने किया है प्रसाद जिसमें ऐसा भया है इससे जाना जाय है यह अर्थ है ॥८१॥ तत्तो मयणा पइणा,—सहिया मुणिचंदगुरुसमीवंमि। पत्ता पमुइयचित्ता, भत्तीए नमइ तस्स पए ॥८२॥

अर्थ—तदनन्तर मदनसुंदरी अपने भर्तार सहित मुनिचन्द्र नामके गुरूके पासमें गई तब हर्षित है चित्तजिसका ऐसी मदनसुंदरी गुरूके चरण कमलोंमें भक्तिसे नमस्कार किया ॥ ८२॥ अर्थ—तदनन्तर मदनसुंदरी अपने भतीर सहित मुनिचन्द्र नामक गुरूक पासम गई तब हायत है चित्ताजसका ऐसी मदनसुंदरी गुरूके चरण कमलोंमें भक्तिसे नमस्कार किया ॥ ८२ ॥
गुरुणो य तया करुणा, परित्तचित्ता कहंति भवियाणं। गंभीरसजलजलहरसरेण, धम्मस्स फल मेवं ॥८३॥
अर्थ—तब दयासे व्याप्त है चित्त जिन्होंका ऐसे गुरू भव्य जीवोंके आगे सजल मेघके जैसी गंभीर ध्वनिकरके

वक्ष्यमाण प्रकार करके धर्मका फल कहे ॥ ८३ ॥

सुमाणुसत्तं सुकुलं सुरूवं, सोहग्गमारुग्गमतुच्छमाउं। रिक्टिं च विद्धिं च पहुत्तिकत्ती, पुन्नप्पसाएण लहंति सत्ता ॥ ८४ ॥

अर्थ—िकस प्रकारसे धर्म कहे सो कहते हैं अहो भव्यो शोभन मनुष्यपनो और उत्तम कुल वहांभी शोभनरूप आकृति पांच इन्द्रिय पटु प्रगट वहांभी सब लोगोंको वल्लभ होना और निरोगता बड़ा आयुः और सम्पदा और वृद्धिः पुत्रादि परिवार और स्वामीपना कीर्ति इतनी वस्तुवां पुन्यके प्रसादसे धर्मके प्रभावसे प्राणी पावे है ॥ ८४॥ इचाइदेसणंते, गुरुणो पुच्छंति परिचियं मयणं । वच्छे कोऽयं धन्नो, वरलक्खणलिखय सुपुन्नो ? ८५ अर्थ—इत्यादि देशनाके अंतमें गुरूने अपनी परचित मदनसुंदरीसे पूछा हे वत्से यह तेरे आगे रहा हुआ धन्य प्रशंसनीय और प्रधान लक्षणोंसहित शोभन पुण्य जिसका ऐसा कौन पुरुष है ॥ ८५ ॥ मयणाइ रुयंतीए, कहिओ सवोवि निययवुत्तंतो। विन्नत्तं च न अन्नं, भयवं ? मह किंपि अत्थि दुहं ८६ अर्थ-तब मदनसुंदरी रोती भई सबही अपना वृत्तान्त कहा और वीनती किया हे भगवान हे पूज्य मेरेको और कुछभी दुःख नहीं है ॥ ८६॥ एवं चिय मह दुक्खं, जं मिच्छादिट्टिणो इमे लोया। निंदंति जिणह धम्मं, सिवधम्मं चेव संसंति ॥८७॥ अर्थ—िकंतु यही बड़ा दुःख है जो मिथ्यादृष्टि यह लोग जैनधर्मकी निंदा करे है मिथ्या धर्मकी प्रशंसा करे है ॥ ८७॥ ता पहु कुणह पसायं, किंपि उवायं कहेह मह पइणो। जेणेस दुटुवाही, जाइ खयं लोयवायं च॥ ८८॥ एवं चिय मह दुक्खं, जं मिच्छादिट्टिणो इमे लोया। निंदंति जिणह धम्मं, सिवधम्मं चेव संसंति ॥८७॥ अर्थ—किंतु यही बड़ा दुःख है जो मिथ्यादृष्टि यह लोग जैनधर्मकी निंदा करे है मिथ्या धर्मकी प्रशंसा

..... - t.

अर्थ—तिस कारणसे हे प्रभो हे स्वामिन् आप प्रसाद करो प्रसन्न होवो कोई उपाय कहो जिससे मेरे पतीका यह अभाषाटीका-कोहरोग क्षय होवे और लोकापवादभी क्षय होवे अर्थात् व्याधिका क्षय क्या होवे लोगोंमें जो निंदा होवे उसका नादा सिहतम्.

हाजाय ॥ ८८ ॥

प्रमणेइ गुरू भद्दे !, साहूणं न कप्पए हु सावजं । किहउं किंपि तिगिच्छं, विज्झं मंतं च तंतं च ॥८९॥

अर्थ—तव गुरू कहे हे भद्रे साधुओंको कुछभी सावद्य दोष सिहत वस्तु कहना नहीं कल्पे क्या सो कहते हैं

चिकित्सा वैद्यकशास्त्र और विद्या मंत्र तंत्र यह सावद्य साधुओंको नहीं कहना ॥ ८९ ॥

तहिव अणवज्जमेगं, समित्थि आराहणं नवपयाणं । इयलोइयपारलोइय,—सुहाण मूलं जिणुदिटुं ॥९०॥

अर्थ—तथापि एक नवपदोंका आराधन निर्दोष है कैसा वह इसभव परभवके सुखोंका मूल कारण है और कैसा

है श्री तीर्थंकरोंने कहा है ॥ ९०॥

अरिहं सिद्धायरिया, उवझाया साहुणो य सम्मत्तं। नाणं चरणं च तवो, इयपयनवगं परमतत्तं ॥९१॥ अर्थ—नवपदोंका नाम कहते हैं अरहंत १ सिद्ध २ आचार्य ३ उपाध्याय ४ साधु ५ सम्यक्त्व ६ ज्ञान ७ चारित्र ८ तप ९ ये नवपद उत्कृष्ट तत्व वर्ते है ॥ ९१ ॥

गयण मकलियायंतं, उद्घाहसरं सनायबिंदुकलं । सपणवबीयाणाहय, मंतसरं सरह पीढंमि ॥ ९६॥

एएहिं नवपएहिं रहियं, अन्नं न अत्थि परमत्थं । एएसुच्चिय जिणसासणस्स, सवस्स अवयारो ॥९२॥ अर्थ—इन नवपदों करके रहित और परमार्थ तात्विक अर्थ नहीं है ये नवपदोंमें सर्व जिनशासनका अवत-जेकिर सिद्धा सिझ्झंति, जेय जे यावि सिझ्झइस्संति । ते सबेवि हु नवपयझाणेणं चेव निब्भंति ॥९३॥ अर्थ—निश्चय जे जीव अतीत कालमें सिद्ध भया अर्थात् मुक्तिगया और जे वर्तमानकालमें सिद्ध होते हैं और अनागत कालमें ये मोक्ष जावेंगे वह सर्व नव पदोंके ध्यानसेही होंगे नव पदोंके ध्यानसिवाय नहीं ॥ ९३॥ एएसिं च पयाणं, पयमेगयरं च परमभत्तीए। आराहिऊण णेगे, संपत्ता तिजयसामित्तं ॥९४॥ अर्थ—और इन नव पदोंमें एक पदभी परम भक्ति करके आराधन करके अनेकजीव तीनजगत्का स्वामित्व प्राप्त भए है सकल कर्मके क्षय होनेसे तीन भवनका स्वामी भया ॥ ९४॥ प्राप्त भए है सकल कमेंके क्षय होनेसे तीन भवनका स्वामी भया ॥ ९४ ॥
एएहिं नवपएहिं, सिद्धं सिरिसिद्धचक्कमेयं जं। तस्सुद्धारो एसो, पुवायरिएहिं निद्दिष्टो ॥ ९५ ॥
अर्थ—इन नवपदोंसे सिद्ध याने निष्पन्न जो यह सिद्धचक्र नामका यन्त्र राजका उद्धार पूर्वाचार्योंने कहा है ॥९५॥
गयण मकलियायंतं, उद्घाहसरं सनायबिंदुकलं। सपणवबीयाणाह्य, मंतसरं सरह पीढंमि ॥ ९६॥

अर्थ—अब ग्रंथकार ग्यारह ११ गाथासे सिद्धचक्रका उद्धार विधिः कहते हैं गयण इत्यादि यहां गगनादि संज्ञा के मापाटीका-मंत्र शास्त्रोंसे जानना वहां गगनशब्दसे हू ऐसा अक्षर कहा जावे यन्त्रके सर्व मध्यभागमें हू ऐसा अक्षर स्मरण करो सिहतम्. यहां स्मरणहीका अधिकार है स्मरणकी शक्ति न होवे तो पदस्थ ध्यान साधनेके लिए मनोज्ञ द्रव्योंसे पट्टादिकमें लिख-नाभी पूर्वाचार्योंका आमनाय है ऐसा आगेभी विचारना वहां पहले अकार अक्षरकी कलिका व्याकरण संज्ञा मई वक्त ऽ ऐसा अक्षररूप जूस करके सिहत हुकार लिखना ऽहू ऐसा भया यह गगनवीज कहा जावे कैसा गगनवीज ऊपर नीचे रेफसहित ८ हिऐसा भया और कैसा नाद अर्ध चंद्राकारके ऊपर बिंदु सहित अर्ह्ह ऐसा भया और ओंकार हींकार और अनाहत कुंडलाकार सहित आम्नाय यह है अहीं यह बीज ओंकारके उदरमें स्थापे यह बीज हींकारके उदरमें स्थापना बाद हींकारका ईकार स्वरकी रेखा घुमाके दो कुंडलाकार अनाहत करके तीनों बीजको बीटना और कैसा बीज चौतर्फ स्वर जिसके अ आ इ ई ड ऊ ऋ ऋ ऌ ऌ ए ऐ ओ औ अं अः ये सोलह अंतमें स्वर हैं जिसके ऐसा मूल पीठमें ध्याओ ॥ ९६ ॥ झायह अडदलवलए, सपणवमायाइएसुवाहंते। सिद्धाइए दिसासु, विदिसासु दंसणाईए॥ ९७॥
अर्थ—अथ पीठलिखके उसके पासमें गोलमंडल लिखे उसके ऊपर आठ पांखडीका कमल लिखे उन्होंमें चार दिशाके पत्रमें ओम् हीं सिद्धेभ्यः स्वाहा पूर्व दिशिमें १ ओम् हीं आचार्येभ्यः स्वाहा दक्षिणमें २ ओम् हीं उपाध्या- येभ्यः स्वाहा पश्चिममें २ ओम् हीं सर्व साधुभ्यः स्वाहा उत्तरमें ४ इसीतरह विदिशामें दर्शनादि चार पद ध्याओ लिख-

नेका विधि यह है ओं हीं दर्शनाय स्वाहा अग्नि कोणमें १ ओम् ही ज्ञानाय स्वाहा नैऋतमें २ ओ हीं चारित्राय स्वाहा वायव्यमें २ ओम् हीं तपसे स्वाहा ईशानमें ४ इस क्रमसे लिखे यह अष्टदल पहला वलय भया ॥ ९७ ॥ वीयवलयंमि अडदिसि, दलेसु साणाहए सरह वग्गे । अंतरदलेसु अट्टसु, झायह परिमट्टिपढमपए ९८

अर्थ—प्रथम वलयके बाहर सोलह पाखड़ीका कमल मंडलाकार लिखे वहां दूसरे वलयमें आठ एकांतिरत दिग्र दलमें अनाहत बीजसिहत आठ वर्ग अ १ क २ च २ ट ४ त ५ प ६ य ७ श ८ यह आठ वर्ग क्रमसे लिखके स्मरण करो पहले वर्गमें सोलह वर्ण है कवर्गादिक पांचोंमें प्रत्येक पांच २ वर्ण है अन्तिम दो वर्गमें चार २ वर्ण है बाद आठ वर्गोंके अंतर पत्रोंमें परमेष्ठी पद ओम् नमो अरिहंताणं ध्यावो यह दूसरा वलय हुआ ॥ ९८ ॥ तइयवलएवि अडिदिस, दिप्पंत अणाहएहिं अंतरिए। पायाहिणेण तिहि, पंतियाहिं झाएह लिखिएए १९९

अर्थ—तीसरे वल्रयमेंभी आठ दिशामें आठ अनाहत लिखे दोनोंके अंतरमें दो २ लब्धि पद ऐसे आठ अंतरोंमें सोल्ह लब्धि पद पहली पंक्तिमें एवं सोलहही दूसरी पंक्तिमें और सोलहही तीसरी पंक्तिमें इस प्रकारसे दीप्यमान आठ अनाहतोंके अंतरमें प्रदक्षिणा करके तीन पंक्ति करके ४८ लब्धि पद तुम ध्यावो ॥ १९९ ॥

ते पणववीयअरिहं, नमोजिणाणंति एवमाईया । अडयालीसंणेया, सम्मं सुगुरूवएसेणं ॥ २०० ॥ अर्थ—लब्धिपद ओंकार हींकार ८ईं ऐसा सिद्ध बीज पूर्वक नमोजिणाणं ऐसा पद ओम् हीं ८ईं नमोजिणाणं

श्रीपाल- इत्यादि अड़तालीस पद सम्यक् सुगुरूके उपदेशसे जानना इन्होंका नाम और माहात्म्य लिब्धकल्पशास्त्रसे जानना चिरितम् हुं तो आराधन विधिः विना लिखनेमें दोष है ॥ २००॥

तं तिग्रणेणं माया,-वीएणं सुद्धसेयवण्णेणं। परिवेढिऊण परहीइ, तस्स ग्रुरुपायए नमह ॥ २०१॥ अर्थ—वह पीठादि लिब्धपद पर्यंत त्रिगुण श्वेतवर्ण हींकारसे चौतर्फ वीटके परिधिमें आव गुरु पादुकाको नमस्कार करो यहां यह भाव है सर्व यन्त्रके ऊपर हींकार लिखके उसके ईकारसे तीनवलय देके चौथा आधावलयके अंतमें कौं ऐसा अक्षर लिखे उसकी परिधिमें आठ गुरु पादुका चरणन्यास लिखे॥ २०१॥

अरिहं सिद्धगणीणं, गुरुपरमादिट्टणंतसुगुरूणं । दुरणंताण गुरूण य, सपणववीयाओ ताओ य ॥२०२॥

अर्थ-अब आठ गुरुपादुका कहते हैं अर्हत पादुका १ सिद्ध पादुका २ आचार्य पादुका ३ उपाध्याय पादुका ४ परमगुरुपादुका ५ अदृष्टगुरुपादुका ६ अनंतगुरुपादुका ७ अनंतानंतगुरुपादुका ८ यह आठ गुरु पादुका ओम् हीँ युक्त लिखना ओम् हीँ ऽईत् पादुकाभ्यो नमः ऐसे सब लिखना ॥ २०२ ॥

रेहादुगकयकलसा,-गारामियमंडलंव तं सरह, चउदिसि विदिशि कमेणं, जयाइजंभाइकयसेवं ॥२०३॥ 🖔 अर्थ—दो रेखा यन्त्रके ऊपर वाम दक्षिण निकली परस्पर लगा हुआ अंतभाग जिन्होंका ऐसी दो रेखा करके

किया है कलसाकार अमृत मंडलके जैसा स्मरण करो अर्थात् कलसाकार लिखे पूर्वादि चारिदशामें जया १ विजया २ जयंती ३ अपराजिता ४ और अग्निआदि चार विदिशामें जंभा १ थंभा २ मोहा ३ गंधा ४ इन्होंनें करी है सेवा जिसकी ॥ २०३ ॥

सिरिविमलसामिपमुहा,-हिट्ठायगसयल देवदेवीणं। सुहगुरु मुहाओ जाणिय, ताण पयाणं कुणह झाणं ४ अर्थ—श्री विमलस्वामी सौधर्म देव लोकमें रहनेवाला श्री सिद्धचक्रका अधिष्ठायक प्रमुख समस्त देव और चक्रे-श्वरी वगैरेह देवियां उन्होंका ध्यान गुरूके मुखसे जानके मंत्रपदोंका ध्यान करो इन्होंका नाम कलसाकार यन्त्रके ऊपर चौतर्फ लिखे ओम् हीँ विमलस्वामिने नमः इत्यादि॥ २०४॥

तं विजादेविसासण,-सुरसासणदेविसेवियदुपासं। मूलगहं कंठणिहिं, चउपडिहारं च चउवीरं॥२०५॥

अर्थ—अब दो गाथाका व्याख्यान कहते हैं वह श्री सिद्धचक्रयन्त्रराज पूजनेवाले मनुष्योंका मनोवांछित पूरता है कैसा है रोहिण्यादि विद्या देवी सोलह और गौमुखयक्षादि २४ शासन देव चक्रेश्वर्यादि २४ शासन देवी इन्होंसे सेवित है वाम दक्षिण पार्श्व भाग जिसका और कैसा है श्री सिद्धचक्र कलसके मूलमें सूर्यादि नव ग्रह है जिसके और कंठमें नैसर्पादि नव निधान है जिसके नैसर्प १ पांडुक २ पिंगल ३ सर्वरत्नक ४ महापद्म ५ काल ६ महाकाल ७ माणव ८ शंखक ९ तथा ४ प्रतिहार कुमुद १ अंजन २ वामन ३ पुष्पदंत ४ है जिसके तथा ४ वीर मानभद्म १ पूर्ण-

श्रीपाल-चरितम् ॥ २८॥ विस्तिवालिखत्तवालेहिं, सेवियं धरणिमंडलपइटुं। पूर्यताण नराणं, नूणं पूरेइ मणइटुं॥ २०६॥ अर्थ—यन्त्रके दक्षिण दिशिमें लिखे शासन देवी यन्त्रके वाम दिशिमें लिखे और कलसाकार चक्रकी पड़घीके नीचे ओम् आदित्यायनमः इत्यादि नव ग्रहोंका नाम लिखे कंटमें नवनिधान ओम् नैसर्पकाय नमः इत्यादि लिखे तथा

चार दिशामें क्रमसे कुमुद १ अंजन २ वामन ३ पुष्पदंत ४ लिखे तथा माणभद्रादि ४ वीर लिखे ५ दिक्पाल १० इन्द्र १ अग्नि २ यम ३ नैऋत ४ वरुण ५ वायु ६ कुबेर ७ ईशान ८ ब्रह्म ९ नाग १० इन्हों करके और क्षेत्रपाल करके प्रसिद्ध सेवित और पृथ्वीपीठपर प्रतिष्ठ रहा हुआ दश दिग्पालोंमें ८ दिग्पालोंको पूर्वादि क्रमसे लिखना ओम् इन्द्रायनमः इत्यादि ऊर्ध्व दिशामें ओम् ब्रह्मणेनमः, अधो दिशामें ओम् नागायनमः, अपने जीवने तरफमें यन्त्रके कोनेमें ओम् क्षेत्रपालायनमः लिखे इसके लिखनेमें सम्यक्विधिः आम्नायजाननेवालों के मुखसे अथवा लिखित यन्त्रसे जानना ॥ २०६॥

एयं च सिद्धचकं, किह्यं विज्ञाणुवायपरमत्थं । नाएण जेण सहसा, सिज्झंति महंतसिद्धीओ ॥२०७॥ क्रिं चे सिद्धचकं विद्यानुवादनामक दशम पूर्वका परमार्थरूप रहस्यभूत है जिसके जाननेसे अकस्मात् शीघ क्रिं अणिमादि बड़ी सिद्धियों सिद्ध होवे है ॥ २०७॥

एयं च विमलधवलं, जो झायइ सुकझाणजोएण। तवसंजमेण जुत्तो, सो पावइ निजरं विउलं ॥२०८॥ अर्थ—यह निर्मल उज्वल श्री सिद्धचकको जो पुरुष उज्वल ध्यान व्यापारसे ध्यावे वह पुरुष विपुल नाम विस्तीर्ण निर्जरा पावे अर्थात् बहुत कर्मका क्षय करे कैसा वह पुरुष तप संयम सिहत ऐसा ॥ २०८ ॥ अक्लयसुक्खो मुक्खो, जस्स पसाएण लम्भए तस्स । झाणेणं अन्नाओ, सिद्धीओ हुंति किंचुज्जं ॥२०९॥ अर्थ—अक्षय सुल जिसमें ऐसा मोक्ष श्रीसिद्धचकके प्रसादसे प्राणी पाते हैं सिद्धचकके ध्यानसे और सिद्धियां होवे इनमें क्या आश्चर्य है ॥ २०९॥ एयं च परमतत्तं, परमरहस्सं च परममंतं च । परमत्थं परमपयं, पन्नत्तं परमपुरिसेहिं ॥ २१० ॥ अर्थ—यह सिद्धचक्र उत्कृष्ट तत्व है और परम रहस्य गोप्य है और परम मंत्र है परमार्थ है और उत्कृष्ट स्थान है और परमपुरुष तीर्थंकरोंने कहा है ॥ २१० ॥ तत्तो तिजयपसिद्धं, अट्टमहासिद्धिदायगं सुद्धं । सिरिसिद्धचक्रमेयं, आराहह परमभत्तीए ॥ २११ ॥ अर्थ—तिस कारणसे अहो भव्यो तीन जगत्में प्रसिद्ध अणिमादि आठ सिद्धियोंका देनेवाला शुद्ध निर्मल ऐसा श्री सिद्धचक्र उत्कृष्ट भक्तिसे आराधन करो अर्थात् सेवना करो ॥ २११ ॥

श्रीपाल-चरितम् ॥ २९॥ विसने ऐसे मनुष्य इस सिद्ध चक्रके आराधक होते हैं और जो विपरीत गुणवाला कामकोधादि युक्त वह पुरुष इस सिद्धचक्रका विराधक होते हैं। २१२॥ तम्हा एयस्साराहगेण, एगंतसंतिचित्तेणं। निम्मलसीलगुणेणं, मुणिणा गिहिणा वि होयवं॥ २१३॥ अर्थ—इस कारणसे इस सिद्धचकका आराधक मुनिः और प्रहस्थकोभी ऐसा होना कैसा सो कहते हैं एकान्त निश्चय करके शान्त विकार रहित चित्त जिसका और निर्मल शील गुण जिसका ऐसा॥ ११३॥ जो होइ दुट्टचित्तो, एयस्साराहगोवि होऊण। तस्स न सिज्झइ एयं, किंतु अवायं कुणइ नूणं॥ २१४॥ अर्थ—जो पुरुष इसका आराधकभी होके दुष्टचित्तवाला हो उस पुरुषके यह सिद्धचक नहीं सिद्ध होवे किंतु निश्चय कष्टकारी होवे अर्थात् कष्ट पावे॥ २१४॥ जो पुण एयस्साराहगस्स, उवरिंमि सुद्धचित्तस्स । चिंतइ किंपि विरूवं, तं नूणं होइ तस्सेव ॥२१५॥ किंपि अर्थ—शुद्ध चित्त है जिसका वह शुद्ध चित्तवाला सिद्धचक्रके आराधक पुरुषके उपर कोई दुष्ट पुरुष कुछभी अशुभ विचार वह अशुभ विचाराहुआ निश्चय उसी विचारनेवाले पुरुषके उपर पड़े ॥ २१५ ॥

एएण कारणेणं, पसन्नचित्तेण सुद्धसीलेण । आराहणिज्ञमेयं, सम्मं तवकम्मविहिपुर्व ॥ २१६ ॥ अर्थ—इस कारणसे प्रसन्न निर्मल चित्त जिसका वह और शुद्धशील जिसका ऐसे पुरुषको यह सिद्धचक सम्यक् तप कर्म विधिपूर्वक आराधना तप यहां आबिल होवे है और विधिः पूजन ध्यानादि सम्बन्धी तत् पूर्वक ॥ २१६॥ आसोयसेयअट्टमिदिणाओ, आरंभिऊणमेयस्स । अट्टविहपूर्यपुर्व, आयामे कुणह अट्ट दिणे ॥ २१७ ॥ अर्थ-आसौज शुदि अष्टमीके दिनसे प्रारंभ करके इस सिद्धचक्रकी अष्टप्रकारी पूजा करके आठदिनतक अहो भव्यो आंबिलका तप करो यद्यपि मूलविधिःसे अष्टमीके दिनसे तप करना कहा है परन्तु वर्तमानमें पूर्वाचार्योंकी आ चरणासे सप्तमीसे किया जावे है ऐसा जानना ॥ २१७॥ नवमंमि दिणे पंचामएण, न्हवणं इमस्त काऊणं।पूर्यं च वित्थरेणं, आयंविलमेव कायवं॥ २१८॥ अर्थ—नवमे दिन सिद्धचक्रका दही दूध घी, जल, शर्करा स्वरूप पंचामृतसे स्नात्रकराके और विस्तारसे पूजा करके आंबिलही करना ॥ २१८ ॥
एवं चित्तेवि तहा, पुणोपुणोऽहाहियाण नवगेणं । एगासीए आयंविलाण, एयं हवइ पुत्रं ॥ २१९ ॥
अर्थ—इस प्रकारसे चैत्र महीनेमेंभी करना इसी प्रकारसे वारंवार करनेसे नव अट्ठाई होनेसे ८१ इक्क्यासी आविलों
करके यह तप पूर्ण होने है ॥ २१९ ॥

श्रीपाल-चरितम् ॥ ३०॥ ॥ ३०॥ व्या प्राप्त प्र एवं च तवोकम्मं, सम्मं जो कुणइ सुद्धभावेणं । सयलसुरासुरनरवर,-रिद्धीउ न दुछहा तस्स ॥ २२१ ॥ अर्थ—जो प्राणी यह तप अनुष्ठान अच्छी तरहसे ग्रुद्ध भावसे करे उस प्राणीको सर्व देवेन्द्र नरेन्द्रकी सम्पदा दुर्लभ नहीं है किंतु सुलभही है ॥ २२१ ॥ एयंमि कए न हु दुटुकुटु,—खयजरभगंदराईया। पहवंति महारोगा, पुबुप्पन्नावि नासंति ॥ २२२ ॥ अर्थ—यह सिद्धचक आराधनरूप तपकर्म करनेसे दुष्ट कोढ़ १ क्षय २ ज्वर ३ भगंदरादि ४ महारोग नहींही उत्पन्न होवे और पूर्वोत्पन्न रोग नष्ट होवे ॥ २२२ ॥ दासत्तं पेसत्तं, विकलतं दोहगत्तमंधत्तं । देहकुलजुंगियत्तं, न होइ एयस्स करणेणं ॥ २२३ ॥

अर्थ—इस तपके करनेवाले मनुष्यके दासपना न याने होवे नौकर न होवे कलाहीनपना, दुरभाग्यपना और अनिष्ट-पना आंधा काणापना द्यारीर दूषितपना और जातिकुलादि दूषितपना यह इसलोकमें परलोकमें नहीं होवे है ॥ २२३ ॥ नारीणिव दोहग्गं, विसकन्नत्तं कुरंडरंडत्तं । वंझत्तं मयवच्छत्तणं च, न हवेइ कइयावि ॥ २२४ ॥

अर्थ-स्त्रियोंकेभी यह दोष कभी नहीं होवे कौनसे दोष सो कहते हैं दुर्भागनीपना भर्तारके अनिष्ट और विष कन्या तथा कुरुक्षण स्त्रीपना तथा विधवापना तथा वंध्यापना तथा मृतवत्सापना यह दोष न होवे ॥ २२४ ॥

किं बहुणा जीवाणं, एयस्स पसायओ सयाकालं। मणवंछियत्थिसिद्धी, हवेइ नित्थित्थ संदेहो ॥ २२५॥ अर्थ—ज्यादा कहने करके क्या जीवोंके इस सिद्धचक्रके प्रसादसे सर्व कालमें मनोवांछित अर्थकी सिद्धि होवे है इसमें संशय नहीं है॥ २२५॥

एवं तेसिं सिरि सिद्धचक, माहप्पमुत्तमं कहिउं। सावयसमुदायस्सवि, ग्रुरुणो एवं उवइसंति ॥ २२६॥ अर्थ—इस प्रकारसे श्रीपाल मदनसंदरीके आगे उत्तम प्रधान श्रीसिद्धचक्रका माहात्म्य कहके श्रावक समुदाय श्रद्धालु संघकोभी ग्रुरुः वक्षमाण प्रकारसे उपदेश देवे॥ २२६॥ एएहिं उत्तमेहिं, लिक्खज्जइ लक्खणेहिं एस नरो। जिणसासणस्स नूणं, अचिरेण प्रभावगो होही २२७

अर्थ—यह उत्तम लक्षणों करके जाना जावे हैं यह मनुष्य निश्चय थोड़े कालसे जिन शासनकी प्रभावना करने- भिभाषाटीका-वाला होगा ऐसा ॥ २२७ ॥ तम्हा तुम्हं जुज्जइ, एसिं साहिमयाण वच्छछं । काउं जेण जिणिदेहिं, विश्वयं उत्तमं एयं ॥२२८॥ अर्थ—इस कारणसे तुम्हारेको इन साधिमयोंका वात्सल्य करना युक्त है इस कारणसे तीर्थंकरोंने साधिमयोंका वात्सल्य प्रधान वर्णन किया है ॥ २२८ ॥ तो तुट्ठेहिं तेहिं, सुसावएहिं वरंमि ठाणंमि । ते ठाविऊण दिन्नं, धणकणवत्थाइयं सवं ॥ २२९ ॥ अर्थ—तदनंतर श्रीगुरूके उपदेशसे संतोष पाए हुए सुश्रावकोंने श्रीपाल मदनसुंदरीको प्रधान आवास घर वगै-रह रहनेको दिया धन धान्य वस्तादि सर्व वस्तु देते भए ॥ २२९ ॥ न य तं करेइ माया, नेव पिया नेव बंधुवग्गो य । जं वच्छछं साहिम्मयाण, सुस्सावओ कुणइ ॥२३०॥ अर्थ—वह वात्सल्य माता नहीं करे पिताभी नहीं करसके और भाइयोंका समुदायभी नहीं करे जो वात्सल्य साधिमें सुश्रावक करे है ॥ २३० ॥ तत्थ द्विओ सो कुमरो, मयणावयणेण गुरुवएसेणं । सिक्खेइ सिद्धचक्कपसिद्धपूयाविहं सम्मं ॥ २३१ ॥

अर्थ-वहां रहा हुआ श्रीपाल कुमर मदनसुंदरीके बचनसे तथा गुरूके उपदेशसे श्री सिद्धचकका प्रसिद्ध पूजा विधिका सम्यक अभ्यास करे ॥ २३१ ॥

अह अन्न दिणे आसोय,-सेयअटुमितिहीइ सुमुहुत्ते। मयणासिहओ कुमरो, आरंभइ सिद्धचक्कतवं २३२ है अर्थ—उसके अनंतर अन्य दिन आश्विन सुदि ८ अष्टमीके दिन शुभ मुहूर्तमें मदनसुंदरी सहित श्रीपालकुमर श्री सिद्धचकका तप प्रारंभ करे॥ २३२॥

पढमं तणुमणसुद्धीं, काऊण जिणालए जिणचं च। सिरिसिद्धचक्कपूयं, अट्ठपयारं कुणइ विहिणा ॥२३३॥ अर्थ—पहले शरीर और अन्तःकरणकी शुद्धि करके और जिनमंदिरमें श्री तीर्थंकरकी पूजा करके श्री सिद्ध विककी अष्ट प्रकारी पूजा करे॥ २३३॥

एवं कयिविहिपूओ, पच्चक्खाणं करेइ आयामं। आणंद्पुलइअंगो, जाओ सो पढमिद्वसे वि ॥ २३४॥ अर्थ—इस प्रकारसे करी है विधिसे पूजा जिसने ऐसा श्रीपालकुमर आंविलका पच्चक्खान करे पहले दिवसमेंभी आनंदसे रोमोद्गम युक्त अंग जिसका ऐसा भया॥ २३४॥ वीयदिणे सिवसेसं, संजाओ तस्स रोगउवसामो। एवं दिवसे दिवसे, रोगखए वहुए भावो ॥ २३५॥

श्रीपाल-चिरतम् ॥ ३२॥ अर्थ—दूसरे दिनमें श्रीपाल कुमरके विशेष करके रोगका उपशम हुआ इस प्रकारसे दिन २ में रोगका क्षय होनेसे शुभ परिणामकी वृद्धि होवे॥ २३५॥ अह नवमे दिवसंमी, पूर्य काऊण वित्थरविहीए। पंचामएण न्हवणं, करेइ सिरिसिखचक्कस्स ॥ २३६॥ अर्थ—बाद नवमे दिनमें विस्तारविधिसे श्री जिनपूजा करके पंचामृतसे श्री सिद्धचक्रयंत्रराजका विस्तारसे स्नात्र महोत्सव करे॥ २३६॥

न्हवणूसवंिम विहिए, तेणं संतीजलेण सबंगं। संसित्तो सो क्रमरो, जाओ सहसत्ति दिवतण् ॥ २३७॥ अर्थ—श्री सिद्धचक्रका स्नात्रमहोत्सव करनेपर उस शान्ति जलसे सर्वशरीरसींचा अर्थात् वह जल शरीरमें लगाया तव वह कुमर अकस्मात् मनोहर अद्भुत दिव्य शरीर जिसका ऐसा भया ॥ २३७॥ सबेसिं संजायं, अच्छरियं तस्स दंसणे जाव। ताव गुरू भणइ अहो, एयस्स किमेयमच्छरियं ॥२३८॥

अर्थ—वैसा रूप श्रीपालका देखनेसे जितने सब लोगोंको आश्चर्य भया उतने गुरू कहे अहो लोगो यह कुछभी हैं। आश्चर्य नहीं है किंतु॥ २३८॥

इमिणा जलेण सबे, दोसा गहभूयसाइणीपमुहा । नासंति तक्खणेणं, भवियाणं सुद्धभावाणं ॥ २३९॥ 🦹

अर्थ—इस शांति जल करके निर्मल मनपरिणामवाले भन्योंके ग्रह, भूत, शांकिनी प्रमुख सर्व दोष वतकालही नष्ट होवे हैं ॥ २३९ ॥

खयकुटुजरभगंदर-भूया वायाविसूइयाईया । जे केवि दुटुरोगा, ते सबे जंति उवसामं ॥ २४० ॥ अर्थ-क्षय, कुष्ट, ज्वर, भगंदर तथा वायु रोग और विश्चिका अजीर्णादिक जे केइ दुष्ट रोग वह सर्व उपशम

होवे है अर्थात् शान्त होवे है ॥ २४० ॥

जलजलणसप्पसावय,-भयाइं विसवेयणा उ ईईओ। दुपयचउप्पय मारीउ, नेव पहवंति लोयंमि ॥४१॥ अर्थ—जल, अग्नि, सर्प, स्वापद, सिंहादिकोंसे भय तथा विषवेदना जहरसे भई पीड़ा तथा ईति नाम उत्पात तथा मनुष्य तिर्यक्षोंके मरीका उपद्रव लोकमें नहीं होवे॥ २४१॥

वंझाणिव हुंति सुया, निंदूणिव नंदणा य नंदंति । फिट्टंति पुटदोसा, दोहग्गं नासड् असेसं ॥२४२॥ क्रिं—वंध्या स्त्रियोंकेमी पुत्र होवे मृतवत्सारोगवाली स्त्रियोंके पुत्र बड़े होवे तथा उदर दोष नष्ट होवे और सम्पूर्ण दुर्भाग्य दूर होवे ॥ २४२ ॥

इचाइ पभावं निसुणिऊण, दट्टण तं च पचक्खं। लोया महप्पमोया, संति जलं छिंति सविसेसं॥४३॥

श्रापाल-चरितम्

श्री सिद्धचकके स्नात्र जलका इत्यादि प्रभाव सुनके और प्रत्यक्ष प्रभाव देखके महान हर्ष जिन्होंको ऐसे लोग विशेष करके शांति जल ग्रहण करके अपने २ घरमें लेजाके छांटा विमारों शांति जल लगाया उससे अच्छे भए ॥२४२॥ तं कुट्टिपेडयं पि हु, तज्जलसंसित्तगत्तमचिरेण । उवसंतप्पायरुअं, जायं धममंमि सरुई च ॥ २४४ ॥ अर्थ—वह कोढ़ी मनुष्योंका समुदायभी शांति जलको अपने शरीरमें लगाया तव थोड़े कालमें उपशांत प्राय रोग भया और धममें रुचि अभिलाषा बढ़ी अर्थात् धममें रुचिवाले भए ॥ २४४ ॥ मयणा पइणो निरुवमरूवं च निरूविऊण साणंदा। पभणेइ पइं सामिय, एसो सबो ग्ररुपसाओ ॥४५॥ अर्थ—और मदनसुंदरी अपने पतिका निरुपम अतिअद्धत रूप देखके आनंद सिहत भई श्रीपालकुमरकों कहे हे स्वामिन यह सर्व श्रीगुरु महाराजका प्रसाद है ॥ २४५ ॥ मायपियसुयसहोयर, पमुहावि छुणंति तं न उवयारं । जं निकारणकरुणा, परो ग्रुरू छुणइ जीवाणं ॥४६॥ अर्थ—माता, पिता, पुत्र, भाई प्रमुख प्रहणसे औरभी स्वजनवगैरह यह सर्व वह उपकार नहीं करसके है वह उपकार जीवोंका निष्कारण करुणा प्रधान जिन्होंके ऐसे ग्रुरू करे हैं ॥ २४६ ॥ तं जिणधम्मगुरूणं, माहप्पं मुणिय निरुवमं छुमरो । देवे ग्रुरुमि धम्मे, जाओ एगंतभित्तिपरो ॥ २४७ ॥

भाषाटीका• सहितम्•

11 33 11

अर्थ—जिन, धर्म, गुरू इन्होंका सर्वोत्कृष्ट माहात्म्य जानके कुमर श्रीपाल देव वीतराग १ गुरू शुद्धसाधु २ धर्म सर्वज्ञका कहा हुआ निश्चयसे इन्होंकी भक्तिमें तत्पर हुआ ॥ २४७ ॥

धम्मपसाएणं चिय, जहजह माणंति तत्थ सुक्खाइं। ते दंपईउ तह तह, धम्मंमि समुज्जमा निच्चं॥२४८॥ क्रिं—वहां उज्जैनीमें रहते हुए स्त्री भर्तार धर्मके प्रसादसेही जैसे २ सुखभोगवे वैसा २ सद्धर्मके विषय निरंतर उद्यम करे ॥ २४८ ॥

अह अन्नया उ ते जिणहराओ, जा नीहरंति ता पुरओ। पिक्खंति अद्धवुर्ड्डि, एगं नारिं समुहिमंतिं ॥२४९॥ अर्थ—उसके अनंतर स्त्री भर्तार श्रीपाल मदनसुंदरी अन्य दिनमें जितने जिनमंदिरसे बाहिर निकले उतने आगे एक अर्थ वृद्धा स्त्रीको सामने आती भई देखी ॥ २४९॥

तं पणिमिऊण कुमरो, पभणइ रोमंचकंचुइज्जंतो। अहो अणब्भा बुट्टी, संजाया जणिपदंसणओ ॥२५०॥ अर्थ—उस स्त्रीको नमस्कार करके श्रीपाल कुमर आनन्दसे रोमोद्गम युक्त इस प्रकारसे बोला अहो आज माताके दर्शनसे बादल विना वर्षात भया ॥ २५०॥

श्रीपालचिरतम्
॥ ३४॥
॥ ३४॥
अर्थ—मदनसुंदरीमी अपने भर्तारकी माता जानके जितने नमस्कार करे उतने कुमर कहे हे माताजी यह यत्यक्ष
जो देखा जाय है यह सर्व इस आपकी वहूका प्रभाव है॥ २५१॥
साणंदा सा आसीस,-दाणपुवं सुयं च वहुयं च। अभिनंदिऊण प्रभणइ, तइयाहं वच्छ! तं मुनुं॥ ५२॥
अर्थ—कुमरकी माता आनंद सहित होके आशीर्वाद देने पूर्वक पुत्र और पुत्रकी वहूकी प्रशंसा करके कहने लगी
अपना वृतान्तसो कहते है हे वत्स उस वक्तमें में तेरेको यहां रखके ॥ २५२॥
कोसंबीए बिजं सोऊणं, जाव तत्थ वच्चामि। ता तत्थ जिणाययणे, दिट्ठो एगो मुणिवरिंदो ॥२५३॥
कौसांबी नगरीमें सब रोगको मिटानेवाला वैद्यको सुनके जितने वहां जाऊं उतने उस नगरीमें एक मुनिवरिन्द्रको देखा कैसा है मुनीन्द्र सो कहते हैं॥ २५३॥

अथ—कुमरका माता आनद साहत हाक आशावाद दन पूर्वक पुत्र और पुत्रकी बहुकी प्रशंसा करके कहने लगी अपना वृतान्तसो कहते हैं हे वत्स उस वक्तमें में तेरेको यहां रखके ॥ २५२ ॥ कोसंबीए बिजं सोऊणं, जाव तत्थ वच्चािम । ता तत्थ जिणाययणे, दिट्ठो एगो मुणिवरिंदो ॥२५३॥ कौसांबी नगरीमें एक मुनिवरिन्द्रको देखा कैसा है मुनीन्द्र सो कहते हैं ॥ २५३ ॥ खंतो दंतो संतो, उवउत्तो गुत्तिमुत्तिसंयुत्तो । करुणारसप्पहाणो, अवितहनाणो गुणिनहाणो ॥ २५४ ॥ अर्थ—क्षमायुक्त दान्त नाम जितेन्द्रिय शान्तरस युक्त उपयोगवान मन वचन कावाकी गुति सहित और निर्लोभी और करुणारस प्रधान जिसके तथा सत्य ज्ञान जिसका इसीसे गुणोंका निधान ॥ २५४ ॥ धम्मं वागरमाणो, पत्थावे निमय सो मए पुट्ठो । भयवं किं मह पुत्तो, कयावि होही निरुयगत्तो ॥५५॥

अर्थ—इस प्रकारका वह मुनीन्द्र धर्मका स्वरूप कहताथा तब अवसर पायके नमस्कार करके मैंने प्रश्न किया हे भगवन् मैं प्रश्न करती हूं मेरा पुत्र कब निरोग होगा रोगरहित शरीर जिसका ऐसा ॥ २५५ ॥ तेण मुणिंदेणुत्तं, भद्दे सो तुझ नंदणो तत्थ । तेणं चिय कुट्टियपेडएण, दट्टूण संगहिओ ॥ २५६ ॥ अर्थ—तब उस मुनिन्द्रने कहा हे भद्रे हे पुत्रि तेरे पुत्रको उज्जैनीमें उन कोढ़ी मनुष्योंने देखके ग्रहण किया अपने विहिओ उंबरराणुत्ति, नियपहू लख्लोयसम्माणो। संपइ मालवनरवइ,-घूयापाणप्पिओ जाओ ॥२५७॥ अर्थ—बाद उन कोढ़ी पुरुषोंने तेरे पुत्रका उम्बर राणा ऐसा नाम करके अपना स्वामी किया है वह तेरा पुत्र लोकोंमें सत्कारपाया है इस वक्त मैं मालवदेशका राजा प्रजापालकी पुत्री मदनसुंदरीका प्राणप्रिय अर्थात् भर्तार रायसुयावयणेणं, गुरूवइट्टं स सिद्धवरचकं । आराहिऊण सम्मं, संजाओ कणयसमकाओ ॥ २५८ ॥ अर्थ—वह तेरा पुत्र राजपुत्री मदनसुंदरीके वचनसे श्री गुरूका कहा हुआ सिद्धचक्रयंत्रराजको विधिःसे आराधके सोनेके सदश शरीर जिसका ऐसा स्वर्णवर्ण देह भया है ॥ २५८ ॥ सो य साहिम्मएहिं, पूरियविहवो सुधम्मकम्मपरो । अच्छइ उज्जेणीए, घरणीइ समन्निओ सुहिओ २५९

अर्थ—वह तेरा पुत्र इस वक्त अपनी स्त्रीसहित उज्जैनीमें रहता है कैसा है वह साधिमयोंने पूर्ण किया है स्वर्णादि द्रव्य जिसको और शोभन धर्म कार्य वही है प्रधान जिसके ऐसा और ख़ल भया है जिसके ऐसा ख़ली रहता है ॥५९॥ तं सोऊणं हरिसियचित्ताहं वच्छ! इत्थ संपत्ता। दिट्टोसि बहुसहिओ, जुन्हाइ सिसव कयहरिसो ॥६०॥ अर्थ—वैसा गुरूका बचन सुनके हे वत्स में हिंपित चित्त भई ऐसी यहां प्राप्त भई हूं इस समयमें चन्द्रमाकी जांदनी सिहत चन्द्रके जैसा वहुसहित तुमको देखा है यहां कुमरको चन्द्रकी उपमा और बहुको चांदनी रात्रिकी उपमा कैसा है तें किया है हर्ण जिसने ऐसा ॥ २६० ॥ ता वच्छ? तुमं बहुया, सिहओ जय जीव नंद चिरकालं। एसुच्चिय जिणधम्मो, जावज्जीवं च महसरणं२६१ अर्थ—तिस कारणसे हे पुत्र तें बहुसहित बहुतकालतक जयवन्ता होय सर्वोत्कृष्ट वर्त चिरंजीव रहो समृद्धि प्राप्त होवो इस जिनधर्मका जावज्जीव मेरेभी शरणा है ॥ २६१ ॥ जिणरायपायपउमं, निमऊणं वंदिऊण सुगुरुं च। तिन्निवि करंति धम्मं, सम्मं जिणधम्मविहिनिउणा २६२ अर्थ—तदनंतर माता पुत्र बहु यह तीन जीव श्री जिनेन्द्र देवका दर्शन करके और श्री सुगुरू महाराजको वन्दना करके सम्यक् धर्म करते हुए रहे कैसे हैं तीनों जिन धर्ममें निपुण है ॥ २६२ ॥ ते अन्नदिणे जिणवरपूर्यं, काऊण अंगअग्गमयं। भावच्यं करिता, देवे वंदंति उवउत्ता ॥ २६३ ॥

For Private and Personal Use Only

अर्थ—वे तीनों जणा अन्य दिनमें श्री तीर्थंकरकी अंगपूजा और अग्रपूजा करके भावपूजा उपयोगसहित करते हैं अर्थात् देववंदना करते भए उस वक्त क्या भया सो कहते हैं ॥ २६३ ॥ इओ य धूयादुहेण सा, रूप्पसुंदरी रूसिऊण सह रन्ना। नियभायपुण्णपालस्स, मंदिरे अच्छइ ससोया ॥ अर्थ—इध्रसे पुत्रीके दुःखसे रूप्पसुंदरी रानी राजाके साथ रूसके अर्थात् नाराज होके अपना भाई पुन्यपालके

घरमें जाके शोकसहित रहीं ॥ २६४ ॥

वीसारिऊण सोयं, सिणयं सिणयं जिणुत्तवयणेहिं । जिग्गयिचत्तविवेया, समागया चेइयहरंमि २६५ अर्थ—वह रूपसुंदरी रानी धीरे २ शोकको दूर करके तीर्थंकरके कहे हुए वचनोंसे जाव्रत हुआ है चित्तमें निर्मल विवेक जिसके ऐसी जिनमंदिर आई ॥ २६५ ॥

जा पिक्खइ सा पुरओ, तं कुमरं देववंदणापउणं। निउणं निरुवमरूवं, पच्चक्खं सुरकुमारव(रंव) ॥२६६॥ अर्थ—वह रूपसुंदरी रानी जितने आगे उस कुमरको देखे कैसा है कुमर देववंदनामें लगा है मन जिसका और विचक्षण उपमारहित रूप आकृति सौंदर्य जिसका और प्रत्यक्ष देवकुमारके सदद्य ऐसा ॥ २६६॥ तप्पुट्टीइ ठियाओ, जणणी जायाउ ताव तस्सेव। दृष्टूण रुप्पसुंदरी, राणी चिंतेइ चित्तंमि ॥२६७॥

अर्थ—उतने कुमरके पीछे रही भई कुमरकी माता और स्त्रीको देखके रूपसुंदरी रानी मनमें विचारती भई क्या कि भाषाटीका-विचारा सो कहते हैं ॥ २६७ ॥

विचारा सो कहते हैं ॥ २६७ ॥
ही एसा का उहुया, वहुया दीसेइ मज्झ पुत्तिसमा। जाविन उणं निरिक्खइ, उवलक्खइ ताव तं मयणं ६८
अर्थ—हि यह विचारमें है रानी विचारती है मेरी पुत्रीके सहश यह छोटी वह कौन दीखती है ऐसा विचारके
जितने अच्छी तरहसे देखे उतने उसको मदनसुंदरी है ऐसा जाने ॥ २६८ ॥
नूणं मयणा एसा, लग्गा एयस्स कस्सवि नरस्स । पुट्टीइ छुट्टियं तं, मुनूणं चत्तसइमग्गा ॥ २६९ ॥
अर्थ—तव उसके अनन्तर इस प्रकारसे विचारे निश्चय यह मदनसुंदरी मेरी पुत्री उस छुटी पुरुषको छोड़के सतीके
मार्गका त्याग किया है जिसने ऐसी यह कोई पुरुषके पीछे लगी है ऐसा जाना जाय है ॥ २६९ ॥
मयणा जिणमयनिउणा, संभाविज्ञइ न एरिसं तीए। भवनाडयंमि अहवा, ही ही किंकिं न संभवइ ॥७०॥
अर्थ—मदनसुंदरी जिनमतमें निपुण वर्ते है उससे ऐसा अकार्यका करना नहीं संभवे अथवा ही ही इति अतिवेदे भव नाटकमें जीवोंके क्या २ नहीं संभवे अपि तु सर्व संभवे है ॥ २७० ॥
विहियं कुले कलंकं, आणीयं दूसणं च जिणधम्मे । जीए तीइ सुयाए, न मुयाए तारिसं दुक्खं ॥२७१॥
अर्थ—जिसने कुलमें कलंक लगाया जिन धर्मपर दूषण प्राप्त किया वह पुत्री मरजाती तो वैसा दुःख नहीं होता ॥७१॥

जारिसमेरिस असमंजसेण, चरिएण जीवयंतीए । जायं मज्झ इमीए, धूयाइ कलंकभूयाए ॥२७२॥ क्रिं अर्थ—जैसा दुःख ऐसा अयोग्य आचरण करनेसे कलंकभूत पुत्री जीवती भईसे मेरेको उत्पन्न भया कि जिसने अपने पतिको छोड़के अन्य पुरुषको अंगीकार किया ॥ २७२॥ एवं चिंतंती रुप्पसुंदरी, दुक्खपूरपडिपुण्णा । करुणसरं रोयंती, भणेइ एयारिसं वयणं ॥ २७३ ॥ अर्थ—इस प्रकारसे विचारती भई दुःखके पूरसे भरी भई रुप्पसुंदरी रानीभी करुणा स्वरसे रोती भई जैसा होय वैसा ऐसा बचन बोली ॥ २७३ ॥ धिद्धी अहो अकर्जा, निवडउ वर्जा च मज्झ कुच्छीए। जत्थुप्पन्नावि वियक्खणावि, ही एरिसं कुणइ २७४ अर्थ—अहो इति आश्चर्ये इस अकार्यको धिक्कार होवो घिकार होवो और मेरी कुक्षि नाम उदरमें वज्र पड़ो इस मेरी कुक्षिमें उत्पन्न भईमी और विचक्षण होके ऐसा अकार्य करे है ॥ २७४॥ तं सोऊणं मयणा, जा पिक्खइ रुप्पसुंदरी जणणिं। रुयमाणिं ता नाओ, तीए जणणीअभिप्पाओ ॥२७५॥ अर्थ-ऐसा बचन सुनके मदनसुंदरी जितने अपनी माताको रोती भई देखे उतने मदनसुंदरीने अपनी माताका अभिप्राय मनका विचार जाना ॥ २७५॥

श्रीपाल चरितम् ॥ ३७॥ चिअ वंदणं समग्गं, काऊणं मयणसुंदरी जणिं। कर वंदणेण वंदिय, वियसियवयणा भणइ एवं २७६ अर्थ—तदनंतर मदनसुंदरी संपूर्ण चैत्य वंदना करके अपनी माताको हाथजोड़के प्रणाम करके विकस्वरमान मुख जिसका ऐसी कहा जायगा जिसका स्वरूप ऐसा वचन बोली ॥ २७६ ॥ अम्मो ? हरिसट्टाणे, कीस विसाओ विहिज्जए एवं, । जं एसो नीरोगो, जाओ जामाउओ तुम्हं ॥२७७॥ अर्थ—सो कहते हैं हे माताजी हर्षके ठिकाने दुःख कैसा करो हो जिसकारणसे यह तुम्हारा जमाई निरोग भया है इसलिए यहां हर्ष करना युक्त है ऐसा भाव है ॥ २७७॥ अन्नं च जं वियप्पह, तं जइ पुवाइ पछिमदिसाए, उग्गमइ कहिव भाणू, तहिव न एयं नियसुयाए २७८ अर्थ—और जो अकार्यका आचरण छक्षण अपनी पुत्रीका विचारो हो वह तो जो सूर्य पूर्वदिशिको छोड़के पश्चिम दिशिमें ऊगे तथापि तुम्हारी पुत्रीसे नहीं होवे अर्थात् मदनसुंदरीसे अकार्य कभी होवे नहीं ॥ २७८ ॥ कुमरजणणीवि जंपइ, सुंद्रि? मा कुणसु एरिसं चित्ते। तुज्झ सुयाइ पभावा, मज्झ सुओ सुंद्रो जाओ ॥ अर्थ—तब कुमरकी माताभी बोली हे सुंदरि तुम अपने मनमें ऐसा विचार करना नहीं जिस कारणसे तुम्हारी पुत्रीके प्रभावसे यह मेरा पुत्र ऐसा सुंदर भया है ॥ २७९॥ धन्नासि तुमं जीए, कुच्छीए इत्थिरयणमुप्पन्नं। एरिसमसरिससीलप्प-भावचिंतामणिसरिच्छं ॥२८०॥

भाषाटीका[.] सहितम्.

11 36 11

अर्थ—हे सुंदरि तुम धन्य हो जिसकी कुक्षिमें ऐसा स्त्रीरल उत्पन्न भया है कैसा सो कहते हैं असदश अनुपम उप-मारहित जो ब्रह्मचर्य उसके प्रभावसे चिंतामणि रलके तुल्य है ॥ २८० ॥

हरिसवसेणं सा रुप्प-सुंदरी पुच्छए किमेयंति। मयणावि सुविहिनिउणा, पभणइ एयारिसं वयणं॥२८१॥ अर्थ—ऐसा वचन सुनके रुप्पसुंदरी रानी हर्षके वशसे कुमरकी माताको ऐसा पूछा यह क्या कृतान्त है तब विधिको जाननेवाली मदनसुंदरी इस प्रकारसे बोली॥ २८१॥

चेइयहरंमि वत्ता,-लावंमि कए निसीहियाभंगो। होइ तओ मह गेहे, वचह साहेमिमं सबं॥ २८२॥

अर्थ—क्या बोली सो कहते हैं चैत्यघर जिनमंदिरमें वार्तालाप करनेसे निसहीका भंग होवे है तिसकारणसे आप मेरे घर चलो जिससे मैं यह सर्व वृत्तान्त कहूं ॥ २८२ ॥

मरे घर चलो जिससे में यह सर्वे वृत्तान्त कहूं ॥ २८२ ॥ तत्तो गंतूण गिहं, मयणाए साहिओ समग्गोवि । सिरिसिद्धचक्रमाहप्प,-संजुओ निययवुत्तंतो ॥ २८३ ॥ अर्थ—बादमें घर जाके मदनसुंदरीने सब अपना वृत्तान्त कहा कैसा है वृतान्त श्री सिद्धचक्रका जो माहात्म्य उस करके सहित है॥ २८३॥

तं सोऊणं तुट्टा, रुप्पा पुच्छेइ क्रमरजणिंपि। वंसुप्पत्तिं तुह नंदणस्स, सहि ? सोउमिच्छामि ॥२८४॥

श्रीपाल-चिरतम् ॥ ३८॥ अर्थ—वह अपने जमाईका वृत्तान्त सुनके संतोष प्राप्त भई रुप्पसुंदरी रानी कुमरकी मातासे पूछे, सो कैसे, कहते हैं हे सखि हे सम्वधनि तुम्हारे पुत्रकी वंशोत्पत्ति सुननेकी इच्छा है किस वंशमें उत्पन्न भया है ॥ २८४॥ प्रभणेइ कुमरमाया, अंगादेसंमि अत्थि सुपिसद्धा। वेरिहिं कयअकंपा, चंपानामेण वरनयरी ॥ २८५॥ अर्थ—अब कुमरकी माता कहती है अंग नाम देशमें अतिशय प्रसिद्ध चंपा नामकी प्रधान नगरी है वैरियोंनें नहीं किया है कंप जिसको ऐसी॥ २८५॥ तत्थ य अरिकरिसीहो, सीहरहो नाम नरवरो अस्थि । तस्स पिया कमलपहा, कुंकुणनरनाहलहुभइणी ॥ अर्थ—उस चंपानगरीमें वैरीही हाथी उन्होंको भगानेमें सिंहके जैसा सिंहरथ नामका राजा है सामान्यसे वर्तमा-नका निर्देश किया है अन्यथा सिंहरथ राजा होता भया उस राजाके कुंकणदेशके राजाकी छोटी वहिन कमलप्रभा नामकी रानी है ॥ २८६॥ तीए अपुत्तियाए, चिरेण वरसुविणसूइओ पुत्तो । जाओ जिणयाणंदो, वद्धावणयं च कारवियं ॥२८७॥ अर्थ—नहीं विद्यमान पुत्र जिसके ऐसी रानीके बहुत कालसे प्रधान स्वप्त सूचित पुत्र भया कैसा पुत्र उत्पन्न किया है आनंद जिसने ऐसा राजाने वधाई कराई ॥ २८७ ॥ पभणोइ तओ राया, अम्हमणाहाइ रायलच्छीए।पालणखमो इमो ता, हवेउ नामेण सिरिपालो ॥२८८॥

अर्थ—तदनंतर राजा कहे हमारी अनाथ राज्य लक्ष्मीको पालनेमें समर्थ है इस लिए इस कुमरका नाम श्रीपाल कुमर ऐसा होवो इस कहने कर उस कुमरका नाम श्रीपाल ऐसा स्थापा ॥ २८८ ॥ सो सिरिपालो वालो, जाओ जा वरिसजुयलपरियाओ। ता नरनाहो सूलेण, झित्त पंचत्तमणुपत्तो ॥२८९॥ अर्थ—वह श्रीपाल बालक जितने २ वर्षका भया उतने उसका पिता सिंहरथ राजाने ग्रूल रोगसे शीघ मरण पाया ८९ कमलप्पमा रुयंती, मइसायरमंतिणा निवारित्ता। धाई उच्छंगठिओ, सिरिपालो छाविओ रज्जे ॥ २९०॥ अर्थ—तब रोती भई कमलप्रभा रानीको मितसागर मंत्री मनाकरके धाय माताकी गोदीसे श्रीपालबालककों लेके राज्यमें स्थापा॥ २९०॥ जं बालस्सवि सिरिपाल-नाम रन्नो पवित्तया आणा। सवत्थिव तो पच्छा, निवमयकिचंपि कारवियं॥२९१॥

बालोवि महीपालो, रज्जं पालेइ मंतिसुत्तेण । मंतीहिं सवत्थिवि, रज्जं रिक्खज्जए लोए ॥ २९२ ॥ अर्थ—बालकभी श्रीपाल राजा मंत्रवीकी व्यवस्थासे राज्य पाले यह अर्थ युक्त है जिस कारणसे सर्वत्र लोकमें मंत्रियों करके राज्यकी रक्षा करी जावे है कहाभी है मंत्रिहीनो भवेद् राजा तस्य राज्यं विनश्यित इति वचनात् २९२

अर्थ—जो बालकभी श्रीपाल नाम राजाकी आज्ञा सर्वत्र प्रवर्ताई बाद राजाका मृतक कार्य अग्निसंसकारादि कराया ९१

कड़वयदिणपज्जंते, बालयपित्तिज्जओ अजियसेणो। परिगहभेयं काउं, मंतइ निवमंति बहणत्थं ॥२९३॥ अर्थ—कितने दिनोंके बाद बालक श्रीपाल राजाका पितृब्य काका अजितसेन राजा परिवारका भेद करके राजा और मंत्रवीको मारनेका विचार करे ॥ २९३॥ तं जाणिऊण मंति, किहओ कमलप्पभाइ सवंपि। विश्लवइ देवि ? जह तह, रिक्खज्जसु नंदणं निययं ९४ अर्थ—मंत्री वह विचार जानके कमलप्रभा रानीको सब वृतान्त कहके विनती करी हे देवी हे महारानी यथा तथा जिस तिस प्रकार करके अपने पुत्रकी रक्षा करो ॥ २९४॥ जीवंतेण सुएणं, होही रज्जं पुणोवि निष्मंतं। ता गच्छ इमं घित्तुं, कत्थवि अहयंपि नासिस्सं ॥२९५॥ 🖔 अर्थ—पुत्र जीता रहेगा तो औरमी निसंदेह राज्य होगा इसलिए इस बालकको लेके कहीं चलीजाओ मैंभी यहांसे तत्तो कमला घित्तूण, नंद्णं निग्गया निसिमुहंमि। मा होउ मंतभेओत्ति, सबहा चत्तपरिवारा ॥२९६॥ अर्थ—तदनंतर कमलप्रभा रानी पुत्रको लेके संध्या समयमें निकली कैसी रानी इस विचारको कोई जानो मत ऐसा विचारके सर्वथा दास्यादि परिवारका त्याग किया जिसने ऐसी एकाकिनी निकली॥ २९६॥ निवभजा सुकुमाला, वहियबो नंद्णो निसा कसिणा। चंकमणं चरणेहिं, ही ही विहिविलसियं विसमं ९७

अर्थ—राजाकी रानी है इस कारणसे सुकुमार शरीरवाली है और पुत्रको गोदीमें उठाके चलना होवे है तथा रात्रि अंधारी है और पगोंसे चलना है रथादिक सवारीके अभावसे इतनी आपदा एक वक्तमें पाई ही ही यह खेदकी बात है विधिका विलास अतिविषम है ॥ २९७ ॥

िय मरणं रज सिरी, नासो एगागिणित्तमरितासो। रयणीिव विहायंती, हा संपइ कत्थ विच्चस्तं ॥२९८॥ अर्थ—मार्गमें चलती भई कमलप्रभा विचार करे भर्तारका मरण राज्यलक्ष्मीका नाश एकािकनीपना और वैरीका नास रात्रि जाती भई अर्थात् प्रभात होता भया दिखताहै हा इति खेदे अब कहां जाऊं॥ २९८॥ इचाइ चिंतयंती, जा वच्चइ अग्गओ पभायंमि। ता फिट्टाए मिलियं, कुट्टियनरपेडयं एगं॥ २९९॥ अर्थ—इलादि विचारती भई जितनें आगे चलती है उतने प्रभात समयमें एक कोढ़ी मनुष्योंका पेड़ा यानें समूह विना विचाराही मिला अर्थात् अकस्मात् मिला॥ २९९॥

तं दट्टणं कमला, निरुवमरूवा महग्घआहरणा। अबला वालिकसुया, भयकंपिर तणुलया रुयइ॥३००॥

अर्थ—उन कुष्टी मनुष्योंके समुदायको देखके भयसे कांपती भई कमलप्रभा रोती भई कैसी है कमलप्रभा निरुपम अद्भुत है रूप जिसका और बहुत कीमतके आभरण हैं जिसके पासमें, और स्त्री होनेसे अवला है और वालक एक पुत्र है जिसके ऐसी ॥ ३०० ॥

श्रीपाल-चिरतम् ॥ ४०॥ ते रुयमाणि द्हुं, पेडयपुरिसा भणंति करुणाए। भद्दे कहेसु अम्हं, काऽसि तुमं कीस वीहेसि ॥३०१॥ अर्थ—तब कोढ़ियोंके पेड़ेका मनुष्यों नें उस रानीको रोती भई देखके करुणासे बोले हे भद्रे तैं हमसे कह तें कौन है और कैसे डरती है॥ ३०१॥ तीए नियबंधूणिव, कहिओ सबोवि निययनुत्तंतो। तेहिं च सा सभइणिव, सम्ममासासिया एवं ॥२॥

और कैसे डरती है ॥ ३०१ ॥
तीए नियबंधूणिव, किहुओ सद्योवि निययवुत्तंतो । तेहिं च सा सभइणिव, सम्ममासासिया एवं ॥२॥
अर्थ—बादमें उस रानीने अपने भाइयोंके जैसा सर्व अपना हतान्त कहा उन्होंसे, और उन्होंने उस रानीको अपनी
बिहनके जैसी समझके और वश्यमाण प्रकार करके आश्यसना दिया कैसे सो कहते हैं ॥ ३०२ ॥
मा कस्सवि कुणसु भयं, अम्हे सबे सहोयरा तुज्झ । एआइ वेसरीए, आरूढा चलसु वीसत्था ॥३०३॥

अर्थ—हे भगिनी तेरेको किसीकाभी भय नहीं करना जिस कारणसे हम सब तेरे भाई हैं इस खचरनीपर बैठी हुई विश्वास युक्त सुलसे चलो ॥ २०२॥

तत्तो जा सा वरवेसरीए, चिंडया पडेण पिहियंगी । पेडयमज्झंमि ठिया, नियपुत्तजुया सुहं वयइ ॥४॥ अर्थ—तदनंतर कमलप्रभा रानी प्रधान वेशरणी नाम खचरनीपर वैठी भई और वस्त्रसे जिसका शरीर ढका है और कोढ़ियोंके पेडेके मध्यमें रही भई अपनें पुत्र सिहत सुखसे चलती है ॥ ३०४॥

तापत्ता वेरिभड़ा, उष्भड़सत्थेहिं भीसणायारा। पुच्छंति पेड्यं भो, दिट्ठा किं राणिया एगा ॥ ३०५॥ अर्थ—उतने वैरी अजितसेन राजाका सुभट आके कोढ़ी मनुष्योंके वृन्दसे पूछे अहो तुमने क्या एकरानी देखी कैसे हैं सुभट उद्घट शस्त्रों करके भयंकर है आकार जिन्होंका ऐसे ॥ ३०५॥ पेड्यपुरिसेहिं तओ, भणियं भो अत्थि अम्हसत्थंमि। रउताणियावि नूणं, जइ कर्जं ता पिनन्हेह ३०६ अर्थ—तदनंतर कोढ़ी पेटकके मनुष्योंने कहा अहो सुभटो हमारे साथमें निश्चय पामा नामकी रानी है जो तुम्हारे पामसे कार्य होवे तो अच्छी तरहसे छेवो॥ ३०६॥ पामस काय हाव ता अच्छा तरहस छवा ॥ ३०६ ॥
एगेण भडेण तओ, नायं भणियं च दिंति मे पामं । सवं दिज्जइ संतं, तो कुट्ठभएण ते नट्ठा ॥३००॥
अर्थ—तदनंतर एक सुभटने जाना और कहा यह कोढ़ी मनुष्य है पामा देवे है युक्त है यह जिसकारणसे सर्व विद्यमान होवे सो दिया जावे है बाद कोढ़के भयसे वह सर्व सुभट भाग गए ॥ ३००॥ तेहिं गएहिं कमला, कमेण पत्ता सुहेण उज्जेणि । तत्थ ट्ठिया य सपुत्ता पेडयमन्नत्थ संपत्तं ॥ ३०८॥ अर्थ—बाद उन सुभटोंके जानेसे कमलप्रभा रानी कमसे चलती भई उज्जैनी नगरी सुखसे प्राप्त भई और पुत्रसहित उज्जेनी नगरीमें रही कोढ़ियोंका पेडा तो और कहीं चला गया ॥ ३०८॥ मृसणधणेण तणओ, जा विहिओ तीइ जुवणाभिमुहो। ता कम्मदोसवसओ, उंवररोगेणसो गहिओ३०९

अर्थ—बाद उस कमलप्रभाने गहना वेचके उस द्रव्यसे अपने पुत्रको यौवन अवस्था प्राप्त किया उतने पूर्वकृत कर्म दोषके वद्यसे उस बालकके उंवर कोढ़ विशेष रोग भया ॥ ३०९ ॥ वहुएहिंपि कएहिं, उवयारेहिं गुणो न से जाओ । कमलप्पहा अदन्ना, जणं जणं पुच्छए ताव ॥३१०॥ अर्थ—बहुत उपाय करनेसेभी वह रोग नहीं मिटा तब कमलप्रभा रानी अधीर भई हरएक मनुष्यसे रोग जानेका उपाय पूछे ॥ ३१० ॥ केणवि कहियं तीसे, कोसंबीए समित्थि वरिवजो । जो अट्ठारसजाई, कुटुस्स हरेइ निष्भंतं ॥ ३११॥ अर्थ—जतने किसी पुरुषने कमलप्रभासे कहा कौशाम्बी नगरीमें अटारह जातिका कुष्ट रोग मिटानेवाला प्रधान

केणिव किह्यं तीसे, कोसंबीए समित्थि वरिवजो । जो अट्ठारसजाई, कुट्टस्स हरेइ निष्मंतं ॥३११॥ अर्थ—जतने किसी पुरुषने कमलप्रभासे कहा कौशाम्बी नगरीमें अठारह जातिका कुष्ट रोग मिटानेवाला प्रधान वैद्य है निसंदेह सब रोगोंको मिटाता है ॥ ३११॥ कमला पुत्तं पाडोसियाण, सम्मं भलाविऊण सयं । विज्ञस्स आणणत्थं, पत्ता कोसंविनयरीए ॥३१२॥ अर्थ—तब कमलप्रभा रानी अपने पुत्रको पाड़ोंसियोंको बोलाकर अर्थात् सौंपके आप वैद्यको बुलानेके वास्ते कौशाम्बी नगरी प्राप्त भई ॥ ३१२॥ तं विज्ञं तित्थगयं, पिडक्खमाणी चिरं ठियातत्थ । मुणिवयणाओ मुणिऊण, पुत्तसुर्स्ड इहं पत्ता ॥३१३॥

अर्थ—उस वैद्यको तीर्थयात्रा गया भया सुनके कमलप्रभा रानी वैद्यकी वाट देखती भई कौशाम्बी नगरीमें बहुत कालतक रही पीछे मुनिके बचनसे पुत्रकी खबर जानके यहां आई ॥ ३१३ ॥

साऽहं कमळा सो एस मज्झ, पुत्तुत्तमो सिरिपाळो । जाओ तुज्झ सुयाए, नाहो सदत्थ विक्खाओ ॥१४॥

अर्थ—वह कमलप्रभा मैं हूं वह यह मेरा पुत्रोत्तम श्रीपाल कुमर है जो तुम्हारी पुत्रीका भर्तार भया है और सर्वत्र लोकमें प्रसिद्ध भया है ॥ ३१४ ॥

सीहरहरायजायं, नाउं जामाउयं तओ रुप्पा । साणंदं अभिणंदइ, संसइ पुन्नं च धूयाए ॥ ३१५ ॥

अर्थ—तदनंतर रुप्पसुंदरी रानी सिंहरथ राजाके पुत्रको जमाई जानके आनंदसहित जैसा होय वैसा पुत्रीके पुण्यकी अनुमोदना करे याने पुत्रीके पुण्यकी प्रशंसा करे ॥ ३१५॥

गंत्रण गिहं रुप्पा, कहेइ तं भायपुन्नपालस्स । सोऽवि सहरिसो कुमरं, सकुटुंबं नेइ नियगेहं ॥ ३१६ ॥

अर्थ—तदनंतर रुप्पसुंदरी रानी अपने घर जाके अपने भाई पुण्यपालके आगे वह वृत्तान्त कहे तब पुण्यपालभी हर्षसहित मातादि कुटुंबसहित कुमरको अपने घर लावे॥ ३१६॥

अप्पेइ वरावासं, पूरइ धणधन्नकंचणाईयं । तत्थऽच्छइ सिरिपालो, दोगंदुकदेवलीलाए ॥ ३१७ ॥

अर्थ—प्रधान आवास रहनेके वास्ते देवे तथा धन धान्य कांचन वगैरहः सर्व वस्तु पूर्ण करे श्रीपाल कुमर उस आवासमें दोगंदुक त्रायिखंशक इन्द्रके पुरोहित स्थानीय देवोंके जैसी लीला करके रहे ॥ ३१७ ॥ अन्नदिणे तस्सावास,-पाससेरीइ निग्गओ राया । पिक्खइ गवक्खसंठिय,-कुमरं मयणाइ संजुत्तं॥३१८॥ अर्थ—अन्य दिनमें श्रीपालके आवासके पासमें सेरी मार्ग विशेष उस मार्गसे राजा निकला उस आवासके गोख- हेमें मदनसुंदरीसहित श्रीपाल कुमरको बैठा भया देखा सेरी यह देशी शब्द है ॥ ३१८ ॥ तो सहसा नरनाहो, मयणं दट्टूण चिंतए एवं । मयणाइ मयणवसगाइ, मह कुलं मइलियं नूणं ॥३१९॥ अर्थ—तदनंतर राजा प्रजापाल अकस्मात मदनसुंदरीको देखके इस प्रकारसे विचारिकया, कामके वसपड़ी भई मदनसुंदरीने निश्चय मेरे कुलको मलीन किया ॥ ३१९॥

इकं मए अजुत्तं, कोवंधेणं तया कयं वीयं । कामंधाइ इमीए, विहियं ही ही अजुत्तयरं ॥ ३२० ॥ अर्थ—उस अवसरमें एक तो मैंने कोपान्ध होके अयुक्त किया जो कोढ़िएको अपनी पुत्री दी और दूसरा इसने कामान्ध होके ही ही इति खेदे अयुक्ततर अतिशय अयुक्त किया जिसने अपने पतिको छोड़के अन्य पति अंगीकार किया ॥ ३२० ॥

एवं जायविसायस्स, तस्स रन्नो सुपुण्णपालेण । विन्नतं तं सवं, धूयाचरियं सअच्छरियं ॥ ३२१ ॥

अर्थ—एवं उक्तप्रकार करके उत्पन्न भया है दुःख जिसको ऐसे राजाके आगे शोभन पुण्यपालने वह सर्व पुत्रीका चिरत कहा कैसा है चिरत आश्चर्य सिहत वर्ते ऐसा ॥ ३२१ ॥ तं सोऊणं राया, विम्हियचित्तो गओ तमावासं । पणओ य कुमारेणं, मयणासिहिएण विणएणं ॥३२२॥ अर्थ—वह पुत्रीका चरित सुनके आश्चर्य पाया चित जिसका ऐसा भया थका मदनसुंदरीके आवासमें गया मदनसुंदरी सिहत श्रीपाल कुमरने विनयसे नमस्कार किया और सिंहासनपर बैठाया ॥ ३२२ ॥ लज्जाऽणओ निर्देतो, पभणइ धिद्धी ममं गयविवेयं । जं दृष्पसप्पविसमुच्छिएण, कयमेरिसमकजं ॥३२३॥ अर्थ—लज्जासे नम्न भए राजा बोले गया विवेक जिसका ऐसे मेरेको धिकार होवो धिकार होवो जिस कारणसे अभिमानरूप सर्प उसका विष स्तन्ध्यालक्षण उससे मूर्च्छत होके मैंने ऐसा अकार्य किया ॥ ३२३॥ वच्छे ! धन्नासि तुमं, कयपुन्ना तंसि तंसि सविवेया । तं चेव मुणियतत्ता, जीए एयारिसं सत्तं ॥३२४॥ अर्थ—हे पुत्री तें धन्य है और कृतपुण्य है तें विवेक सिहत है तथा जाना है तत्व जिसने ऐसी तेंही है जिसका ऐसा सत्व धैर्य है ॥ ३२४॥

उद्धरियं मज्झकुलं, उद्धरिया जीइ निययजणणीवि। उद्धरिओ जिणधम्मो, सा धन्ना तंसि परमिका

श्रीपाल-चरितम् ॥ ४३ ॥

अर्थ—हे पुत्री जिसने मेरे कुलका उद्धार किया और जिसने अपनी माताका उद्धार किया और जिनधर्मका उद्धार किया अर्थात् जिनधर्मको शोभा प्राप्त किया ऐसी एक तैं ही धन्य है ॥ ३२५ ॥ अन्नाणतमंधेणं, दुद्धरहंकारगयिववेगेणं । जो अवराहो तइया, कओ मए तं खमसु वच्छे ॥ ३२६ ॥ अर्थ—अज्ञान ही अंधकार उससे आंधा उस करके और दुर्धर जो अहंकार उससे गया है विवेक जिसका ऐसे मैंने उस वक्तमें जो तेरा अपराध किया वह क्षमा कर ॥ ३२६ ॥ विणओणया य मयणा, भणेइ मा ताय कुणसु मणखेयं। एयं मह कम्मवसेण चेव, सबंपि संजायं ॥२०॥ अर्थ—इस प्रकारसे राजाने वचन कहां के बाद विनयसे नम्न ऐसी मदनसुंदरी बोली हे पिताजी मनमें खेद मतकरो यह सर्व मेरे कर्मके वश्चसेही भया है यहां थोडाभी आपका दोष नहीं है ॥ ३२७॥ नो देई कोइ कस्सवि, सुक्खं दुख्लं च निच्छओ एसो। निययं चेव समजियमुवभुंजइ जंतुणा कम्मं ॥२८॥ अर्थ—हे तात यह निश्चय है कोई किसीको सुख या दुःख नहीं देवे है किंतु जीव अपना किया हुआ कर्मही भोगवे मा वहउ कोइ गवं, जं किर कर्जं मए कयं होइ। सुरवरकयंपि कर्जं, कम्मवसा होइ विवरीयं ॥३२९॥ 🏋

भाषाटीका-सहितम्

11 88 11

अर्थ—निश्चय मेरा किया हुआ कार्य होता है ऐसा कोई गर्व मत धारो जिसकारणसे इन्द्रादिकका भी कार्य कर्मके वससे विपरीत होता है ॥ ३२९ ॥

ता ताय जिणुत्तं तत्त, मुत्तमं मुणसु जेण नाएणं। नज्जइ कम्मजियाणं, वलाबलं बंधमुक्खं च ॥३०॥ अर्थ—तिस कारण से हे पिताजी तीर्थंकरका कहा हुआ तत्व उत्तम जानो जिसके जाननेसे कर्म और जीवों का बलाबल जाना जावे है कत्थिव जीवो वलीओ कत्थिव कम्माइं हुंति विलयाई कभी जीव बलवान होता है कभी कम्मं बलवान होते हैं जीव अनंत बली है और कर्म महाबली है और बंध मोक्ष जाना जाता है ॥ ३३०॥

तत्तो धम्मं पडिविज्जिरुण, राया भणेइ संतुट्ठो । सीहरहरायतणओ, जं जामाया मए लद्धो ॥३३१॥ अर्थ—तदनंतर राजा धर्म अंगीकार करके संतुष्टमान होके बोले जो मैंने सिंहरथराजाका पुत्र जमाई पाया ॥३३१॥ तं पत्थरिमत्तकए, हत्थंमि पसारियंमि सहसत्ति । चिडिओ अचितिओ चिय, नूणं चिंतामणी एसो ॥३२॥ अर्थ—वह पाषाण मात्र ग्रहणनिमित्त हाथप्रसारण करनेसे अकस्मात निश्चय विना विचाराही यह चिंतामणि रत्त हाथमें आया ॥ ३३२ ॥

💃 जामाइयं च धूयं, आरोविय गयवरंमि नरनाहो। महया महेण गिहमाणिऊण, सम्माणइ धणेहिं॥३३॥ 💃

अर्थ—तदनंतर राजा जमाई श्रीपाल और पुत्री मदन-सुंदरी इन दोनोंको प्रधान हाथीपर बैठाके बड़े उत्सवके साथ अपने घर लाकरके वहुत प्रकारका द्रव्योंकरके सत्कार करे ॥ ३३३ ॥ जायं च साहु वायं, मयणाए सत्तसीलकलियाए, । जिणसासणप्पभावो, सयले नयरिम्म वित्थिरिओ ३४ अर्थ—तव सत्वसील घेर्य ब्रह्मचर्य करके युक्त मदनसुंदरीका साधुवाद भया यह महासती है ऐसी प्रसिद्धि भई तथा जिनशासनका प्रभाव सर्व नगरमें विस्तार पाया ॥ ३३४ ॥ अन्नदिणे सिरिपालो, हयगयरहसुहडपरियरसमेओ । चिडिओ रयवाडीए, पद्मक्खो सुरकुमारु ॥३५॥ अर्थ—अन्यदिनमें श्रीपालकुमर घोड़ा हाथी रथ सुभटोंका परिवार सिहत प्रत्यक्ष देवकुमारके जैसा राजवाड़ी चला अर्थात् वगीचे कीड़ा करनेको जाता है ॥ ३३५ ॥ अथात् बनाच काड़ा करनका जाता है। र र र । लोए य सप्पमोए, पिक्खंते चडिंव चंद्सालासु । गामिछएण केणिव, नागरिओ पुच्छिओ कोवि ॥३३६॥ अर्थ—तब हर्ष सहित लोग चन्द्रशाला घरके ऊपरकी भूमिपर चढ़के कुमरको देखरहे हैं उतने किसी प्रामीण मनुष्यने कोई नगरवासी पुरुषसे पूछा ॥ ३३६॥ भो भो कहेसु को एस, जाइ लीलाइ रायतणउव!। नागरिओ भणइ अहो, नरवरजामाउओ एसो ॥३०॥

अर्थ—अहो अहो तैं कहः राजकुमर सददा लीला करके यह कौन जावे है ऐसा ग्रामीणने पूछनेसे नागरिक बोला अहो यह राजाका जमाई है ॥ ३३० ॥ तं सोऊण कुमारो, सहसा सरताडिओव विच्छाओ। जाओ विलिऊण समागओय, गेहंमि सविसाओ ३८ अर्थ—वह नागरिकका वचन सुनके कुमर अकस्मात् वाणसे ताडितके जैसा उदासभया और विषाद सहित वहां- सेही पलटकर अपने घर आया ॥ ३३८ ॥

तं तारिसं च जणणी, दडूण समाकुला भणइ एवं, किं अज्ज वत्थ ! कोवि हु, तुह अंगे वाहए बाही ॥३३९॥ किं अर्थ—तब माता कुमरका वैसा उदास मुखदेखके व्याकुल भई इस प्रकारसे कहे हे वत्स आज तेरे शरीरमें क्या

किं वा आखंडलसरिस, तुज्झ केणावि खंडिया आणा। अहवा अघडंतोवि हु, पराभवो केणवि कओ ते ४० अर्थ—अथवा हे आखंडल सहग्र हे इन्द्रतुल्य हे पुत्र तेरी आज्ञा क्या किसी पुरुषने खंडन करी अथवा अघटमान भी निश्चय तेरा अनादर किसीने किया जिससे तें ऐसा देखनेमें आवे है।। ३४०॥ किंवा कन्नारयणं, किंपि हु हियए खडुकए तुज्झ। घरणीकओ अविणओ, सो मयणाए न संभवइ॥४१॥

अर्थ—अथवा कोई कन्या रत्न तेरे हृदयमें खटके है तथा अपनी स्त्रीका कीया हुआ अविनय भया है वह तो मदनसंदरीमें नहीं संभवे है ॥ ३४१ ॥
केणावि कारणेणं, चिंतातुरमित्थ तुह मणं नूणं । जेणं तुह मुहकमलं, विच्छायं दीसई वच्छ ॥३४२॥
अर्थ—लिश्यय कोई कारण करके तेरा मन चिंतातुर है जिसकारणसे हे वत्स तेरा मुहकमलं उदास दीखता है ॥३४२॥
अर्थ—कुमर बोला हे माताजी इन कारणोंमें एकभी यहां कारण नहीं है किंतु कारण और है वह तुम सुनो ॥३४॥
अर्थ—इस नगरमें मैं अपने गुणोंसे प्रसिद्ध नहीं भयाहं और पिताके नामसे भी विख्यात नहीं भयाहं और तुम्हारे
जुणोंसे मी प्रसिद्ध नहीं पाई है किंतु में यहां सुसरेके नामसे प्रसिद्ध भयाहं ॥ ३४४॥
तं पुण अहमाहमत्तकारणं विज्ञयं सुपुरिसोहें । तत्तुचिय मझमणं, दूमिज्ज सुसुरवासेणं ॥ ३४५॥
अर्थ—वह जो सुसरेके नामसे प्रसिद्ध होना सो तो अधमाधमका कारण है जिस कारणसे कहा है उत्तमाः स्वगुणैः ख्याताः मध्यमाश्च पितुर्गुणैः । अधमाः मातुरुः ख्याताः श्वशुरेणाधमाधमाः ॥ १॥ इस बचनसे इसीकारणसे सत् पुरुविने मना किया है स्वसुरेके घरमें रहनेसे मेरा मन उदास होता है ॥ ३४५॥

तो भिणयं जणणीए, बहुसिन्नं मेलिऊण चउरंगं। गिन्हसु नियपियरजं, मह हिययं कुणसु निस्सछं॥४६॥ अर्थ—तब माता बोली हे पुत्र चार अंगजिसके ऐसी हाथी घोड़ा वगैरेहः बहुत सैन्य एकट्टी करके अपने पिताका राज्य ग्रहणकर और मेरा हृदय निश्चल्य कर ॥ ३४६॥ राज्य ग्रहणकर आर मरा हृदय । नशल्य कर ॥ २४५ ॥
कुमरेणुत्तं सुसुरयबलेण, जं गिएहणं सरज्जस्स । तं च महच्चिय दूमेइ, मज्झचित्तं ध्रुवं अम्मो ॥३४७॥
अर्थ—कुमरने कहा हे माताजी सुसरेके बलसे जो अपना राज्य लेना वह निश्चय मेरे मनको उदास करे है ॥३४७॥
ता जइ सभुयज्जिय सिरिबलेण, गिन्हामि पेइयं रज्जं। ता होइ मझ चित्तंमि, निवुई अन्नहा नेव ॥ ४८॥
अर्थ—तिसकारणसे अपना भुजोंसें उपार्जितकीभई लक्ष्मीके वलसे अपने पिताका राज्य ग्रहण करूं तब मेरे
चित्तमें निवृत्ति होवे अन्यथा और प्रकारसे सुल होवे नहीं ॥ ३४८॥
तत्तो गंत्त्णमहं, कत्थिव देसंतरिम इिक्कलो । अज्जियलिच्छिचलेणं, लहुं गहिस्सामि पियरजं ॥ ४९॥
अर्थ—तिस कारणसे में एकाकी कहांभी देशान्तरमे जाके लक्ष्मी उपार्जनकरके जल्दी पिताका राज्य ग्रहण
करूंगा ॥ ३४९॥ तं पइ जंपइ जणणी, वालो सरलोसि तंसि सुकुमालो, । देसंतरेसु भमणं, विसमं दुक्खावहं चेव ॥३५०॥ 🏌

अधि—उस श्रीपालको माता कहे हे पुत्र तें वालक है और सरल है सुकुमार तेरा श्रारीर है देशान्तरोंमें फिरना तो कितन है इसी कारणसे दुःखकारक है ॥ ३५० ॥
तो कुमरो जणणीं पइ, जंपइ मा माइ ! एरिसं भणसु । ताविचय विसमत्तं, जाव न धीरा पवज्रांति ॥५१॥ अर्थ—उसके वाद मातासे कहे हे अंब हे माताजी ऐसा वचन मतकहो कार्यमात्रका विषमपना तवतकही है जवतक वैर्यवान पुरुष नही अंगीकार करे ॥ ३५१ ॥
पभणइ पुणोऽवि माया, वच्छय ! अह्मे सहागमिस्सामो। को अह्मं पिंडवंधो, तुमं विणा इत्थ ठाणंमि ॥५२ अर्थ—औरभी माता कहे हे वत्स हम तुम्हारे साथ आवेंगी यहां तेरे विना हमारे रहनेका क्या कारण है अपितु अर्थ — औरभी माता कहे हे वत्स हम तुम्हारे साथ आवेंगी यहां तेरे विना हमारे रहनेका क्या कारण है अपितु अर्थ — कुमरो कहेइ अम्मो ! तुम्हेहिं सहागयाहिं सवत्थ । न भवामि मुकळपओ, ता तुम्हे रहह इत्थेव ॥५३॥ अर्थ — कुमर बोला हे माताजी आप साथमें आवो तो मेरे सर्वत्र पग बन्धन होवे सर्वत्र मोकला पग नहीं होवे इस वास्ते यहांही रहो ॥ ३५३ ॥
मयणा भणेइ सामिय ! तुम्हं अणुगामिणी भविस्सामि,। भारंपि हु किंपि अहं, न किरस्सं देहलायुव॥५४॥

अर्थ—तब मदनसुंदरी बोली हे स्वामिन् में आपके अनुगामिनी पीछे २ चऌंगी निश्चय कुछभी भार नहीं करूंगी है रारीरकी छाया सददा चऌंगी ॥ ३५४॥

शरारको छाया सदद्य चळूगो ॥ ३५४ ॥ कुमरेणुत्तं उत्तमधम्मपरे, देवि! मज्झ वयणेणं । नियसस्सूसुस्सूसण,—परा तुमं रहसु इत्थेव ॥५५॥ अर्थ—कुमर बोला हे उत्तमधर्मतत्पर हे देवि मेरे वचनसे तैं अपनी सासूकी सेवा प्रधान जिसके ऐसी भई थकी

मयणाह पइपवासं, सइओ इच्छंति कहिव नो तहिव । तुम्हं आएसुच्चिय, महप्पमाणं परं नाह ! ॥५६॥ अर्थ—तब मदनसुंदरी कहे सती सुजीला स्त्रियों कोईप्रकारसे अपने पतिका विदेश गमन नहीं वांछती है तथापि मेरे तो आपकी आज्ञाही प्रमाण है ॥ ३५६॥

मेरे तो आपकी आज्ञाही प्रमाण है ॥ ३५६ ॥
अरिहंताइपयाइं, खणंपि न मणाउ मिल्हियद्वाइं। नियजणिं च सरिज्ञसु, कइयावि हु मंपि नियदासीं ॥
अर्थ—आप अर्हतादि नवपद क्षण मात्रभी अपने मनसे दूर करना नहीं और अपनी माताको याद करना कोई वक्त
में दासी हूं मेरेकोभी याद करना ॥ ३५७ ॥
जणणी वि तस्स नाऊण, निच्छयं तिलयमंगलं काउं। पभणइ तुह सेयत्थं, नवपयज्झाणं करिस्समहं ३५८

अर्थ—अथ माताभी श्रीपालकुमरका विदेश जानेमें निश्चय जानके तिलक मंगल करके कहती भई हेपुत्र तुम्हारे किल्याणके वास्ते में नवपदोंका ध्यान करूंगी ॥ ३५८ ॥ मयणा भणेइ अहयंपि, नाह! निच्चंपि निच्चलमणेणं। कल्लाणकारणाइं, झाइस्सं ते नवपयाइं ॥३५९॥ अर्थ—मदनसुंदरी बोली हे नाथ मैंभी निरंतर निश्चलमन करके एकाग्रचित्त करके आपके कल्याणका कारण

नवपदोंका स्मरण ध्यान करूंगी ॥ ३५९ ॥

नवपदाका स्मरण ध्यान करूगा ॥ ३५९ ॥ तेणं मयणावयणा,-मएण सित्तो निमत्तु माइपए। संभासिऊण दइयं, सिरिपालो गहियकरवालो ॥३६०॥ अर्थ—मदनसुंदरीके वचनामृतसे सींचा हुआ श्रीपालकुमर माताके चरणकमलोमें नमस्कार करके मदनसुंदरीके साथ भाषण करके तलवारलेके ॥ ३६० ॥

साथ भाषण करके तलवारलेके ॥ ३६० ॥

निम्मलवारणमंडल-मंडियससिचारपाणसुपवेसे।तच्चरणपढमकमणं,-कमेण चल्लेइ गेहाओ जुम्मं॥३६१॥

अर्थ—निर्मल जो वारुणमंडल जलमंडल उसकरके मंडित जो शशिचारपाण चंद्रनाड़ि संचारि वायु उसका शोभन

प्रवेश होनेसे अर्थात् वामस्वररूप चंद्रनाड़ि वहतांथका उसी पगको प्रथम रखने करके ऐसे क्रमसे घरसे चले युग्म है ॥३६१॥

सोगामागरपुरपट्टणेसु को ऊहलाइं पिक्खंतो। निब्भयचित्तो पंचाणणुव, गिरिपरिसरं पत्तो॥ ३६२॥

अर्थ—वह श्रीपाल कुमर ग्राम आकर पुर पत्तनोंमें कौतूहल देखता हुआ पंचानन सिंहके जैसा निर्भय चित्त जिसका ऐसा भयाथका एक पर्वतके पासमें पहुंचा ॥ ३६२ ॥ तत्थ य एगंमि वणे, नंदणवणसरिससरसपुष्फफले । कोइलकलरवरम्मं, तरुपंतिं जा निहालेइ ॥३६३॥ अर्थ—वहां पर्वतके समीपदेशमें एक वनमें वृक्षोंकी पंक्ति यानें श्रेणी जितने देखे कैसा है वन नंदनवनसदृश- सरस पुष्पफल है जिसमें कैसी है वृक्षोंकी पंक्ति कोयलोंकी मधुर धुनि करके रमणीक है ॥ ३६३॥ ता चारुचंपयतले, आसीणं पवररूवनेवत्थं। एगं सुंदरपुरिसं, पिक्खइ मंतं च झायंतं॥ ३६४॥ अर्थ—उतने मनोहर चंपक वृक्षके नीचे रहा हुआ और प्रधानरूप आकृति वेष जिसका ऐसा एक पुरुष मंत्र ध्याता

सो जाव समत्तीए, विणयपरो पुच्छिओ कुमारेण। कोसि तुमं किं झायसि, एगागी किं च इत्थ वणे ३६५ अर्थ—वह पुरुष जाप समाप्ति होनेपर विनयमें तत्परभया उसको कुमरने पूछा तैं कौन है क्या ध्यावे है और इस-वनमें एकाकी क्यों रहा है ॥ ३६५ ॥

तेणुत्तं गुरुदत्ता विज्ञा, मह अत्थि सा मए जविया। परमुत्तरसाहगमंतरेण, सा मे न सिज्झेइ ॥३६६॥ 🖔

श्रीपाल-चिरतम् ॥ ४८॥ जइ तं होसि महायस! मह उत्तरसाहगो कहिव अजा। ताहं होमि कयत्थो, विज्ञा सिद्धीइ निब्भंतं॥३६७॥ अर्थ—हे महायशस्विन् जो तै कोई प्रकारसे मेरा उत्तर साधक होवे तो मैं निसंदेह सिद्धभई है विद्या जिसकी ऐसा होजाऊं॥ ३६७॥ ऐसा होजाऊं ॥ ३६७ ॥
तत्तो कुमरकएणं, साहज्जेणं स साहगो पुरिसो । लीलाइ सिद्धविज्ञो, जाओ एगाइ रयणीए ॥३६८॥
अर्थ—तदनंतर कुमरने किया सहाय करके वह साधकपुरुष लीलाकरके एकरात्रिमें सिद्ध होगई है विद्याजिसकी
ऐसा भया ॥ ३६८ ॥ तत्तो साहगपुरिसेण, तेण कुमरस्स ओसहीजुअलं। पिंडउवयारस्स कए, दाऊणं भिणयमेयं च ॥३६९॥ क्ष्री—विद्यासिद्धभयोंके वाद उस साधक पुरुषने पीछा उपकार करनेके लिए कुमरको २ (दो) औषधिः देके यह कहा ॥ ३६९॥ जल तारिणी अ एगा, परसत्थिनिवारिणी तहा बीया । एयाउ ओसहीओ, तिधाउमठियाउ धारिज्ञा ३७०

अर्थ—क्या कहा सो कहते हैं इन औषधियों एक औषधिः जलतारिणी है और दूसरी औषधिः परशस्त्रनिवारिणी है ये दोनों औषधिः सोना रूपा तांवा इन धातुमें मढवाके भुजामें तुम धारण करो ॥ ३७० ॥ कुमरेण समं सो विज्झासाहगो, जाइ गिरिनियंबंमि। ता तत्थधाउवाइय,-पुरिसेहिं एरिसं भणिओ॥३७१॥ अर्थ—वह विद्यासाधकपुरुष कुमरके साथ जितने पर्वतका किनारा वहां जावे इतने धातुवादिपुरुषोंने ऐसा

देव! तुम्ह दंसिएणं, कप्पपमाणेण साहयंताणं। केणावि कारणेणं, अम्हाण न होइ रससिद्धी ॥३७२॥ अर्थ—हे देव अन्यदर्शित कल्पप्रमाणे साधतां रससिद्धी करतां हमारे कोई प्रकारसे रससिद्धी नाम स्वर्णीत्पादक रसकी सिद्धी नहीं होती है ॥ ३७२ ॥

कुमरेण तओ भणियं, भो मह दिट्टीइ साहह इमंति।ता तेहिं तहाविहिए, जाया कछाणरसिखी ॥३७३॥ अर्थ—तव कुमरने कहा अहोपुरुषो मेरी दृष्टिके आगे यह रस साधो वाद उन्होंने उसी प्रकारसे किया करनेसे कल्याण रसनाम स्वर्णरसकी सिद्धि भई॥ ३७३॥ काऊण कंचणं साहगेहिं, भणियं कुमार! अम्हाणं। जंजाया रसिखी, तुम्हाणं सो पसाओति॥३७४॥

अर्थ—वादमें साधकपुरुषोने स्वर्णसिद्धि करके और बोछे हे कुमार हमारे यह स्वर्णरसकी सिद्धी भई सो अपका प्रसाद है ॥ ३७४ ॥
ता गिणह कणगमेयं, नो गिणहइ निष्पिहो कुमारो य । तहिव हु अलयंतस्सवि, कंपि हु वंधंति ते बत्थे ३७५ अर्थ—तिस कारणसे यह सोना आप छेवो परन्तु कुमर निस्प्रही है नहीं छेवे तौभी नहीं छेता थकांभी कुमरके वस्त्रमें साधकपुरुष कितनाक सोना बांधे ॥ ३७५ ॥
तत्तो कुमरो पत्तो, कमेण भरुयच्छनामयं नयरं । कणगवएण गिणहइ, वत्थालंकारसत्थाइं ॥ ३७६ ॥
अर्थ—तदनंतर श्रीपालकुमर भृगुकच्छ (भरुवच्छ)नगर पहुंचा वहां सोना वेचके वस्त्र अलंकार शस्त्रादि यहणकरे ३७६ काऊण धाउमिद्धं, ओसहिजुयलं च वंधइ भुयंमि । लीलाइ भमइ नयरे, सच्छंदं सुरकुमारुव ॥३७९॥
अर्थ—और औषि जुगल तीन धातुमें महवाके भुजामें बांधे बाद कुमर देवकुमरके जैसी लीला करके स्वइच्छासे नगरमें कीड़ाकरे ॥३७७॥

इओ य कोसंवीनयरीए, धवलो नामेण वाणिओ अत्थि। सो बहुधणुत्ति लोए, कुवेरनामेण विक्खाओ ७८ क्रिं अर्थ—इधरसे कोशाम्बीनाम नगरीमें धवल नामका वानियाहै वह धवल बहुत धन जिसके इस कारणसे लोकमें क्रिं॥ ४९॥ कुवेरनाम करके प्रसिद्ध भयाहै॥ ३७८॥

Acharva Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अर्थ—और जहाज कैसे हैं बहुत चामर छत्र सिरिकरी जहाजका आभरण विशेष ध्वजा और प्रधानमुकुट इन्हों करके कियाहै झंगार जिन्होंका ऐसे और सढ नाम बडा वस्त्र मई उपकरण विशेष वायु देनेमें प्रसिद्ध और बड़े २ रस्से और सारनंगर लोहमय जहाजको खड़ारखनेका उपकरण और जहाजकी रक्षाके उपकरण भेरी दुंदुभी इन्हों करके करीहै शोभा जिन्होकी ऐसे ॥ ३८७ ॥

जलसंवलइंधणसंगहेण, ते पूरिऊण सुमुहुत्ते । धवलो य सपरिवारो चडिओ चालावए जाव ॥ ३८८ ॥ अर्थ—जल संवल इन्धनोंका संग्रह करके उन जहाजोंको पूर्ण करके अच्छे मुहूर्तमें धवल सार्थवाह परिवार सहित जहाजपर चढा और जितने जहाजोंकोचलावे ॥ ३८८ ॥

ताव वलीसुवि दिज्जंतयासु, वज्जंततारतूरेसु । निज्जामएहिं पोया, चालिज्जंतावि न चलंति ॥ ३८९ ॥ अर्थ—उतने देव देवियोंको बलिदान देता थकां ऊंचेस्वरसे वादित्र बजानेसे और निर्यामक जहाजोके चलाने वालोंने जहाज चलाए तौभी जहाज नहीं चले।। ३८९॥

जहाज चलाए तामा जहाज नहा चल ॥ ३८९ ॥ तत्तो सो संजाओ, धवलो चिंताइ तीइ कालमुहो। उत्तरिय गओ नयरिं, पुच्छइ सींकोत्तरिं चेगं ॥३९०॥ अर्थ—तदनंतर वह धवलक चिंताकरके स्याममुख होगया तब जहाजसे उतरके धवलसेट नगरीमें गया और एक सिकोत्तरी स्त्रीसे पूछा ॥ ३९० ॥

श्रीपाल-चिरतम्
॥ ५१॥
अर्थ—वह सिकोत्तरी स्त्री बोली यह तेरे जहाज देवताने संभित किए हैं ३२ लक्षणा पुरुषको देवताको बलिदान देनेसे जहाज चलेंगे और उपाय करनेसे नहीं चलेंगे॥ ३९१॥
तत्तो धवलो सुमहम्ध,-वत्थु भिट्टाइ तोसिऊण निवं। विन्नवइ देवअंग, वलिकजे दिज्जउ नरं मे॥३९२॥
अर्थ—तदनंतर धवल सार्थपति बहुत कीमतका भेटनालेके राजाके पासमें गया भेटनादेके राजाको संतोष उत्पन्न
करके बीनतीकरे हेदेव एकमनुष्य देवताको बलिदानके वास्ते देओ॥ ३९२॥ रन्ना भणियं जो होइ कोवि, विदेसिऊ अणाहो य । तं गिन्ह जहिच्छाए,अन्नो पुण नो गहेयद्वो ॥३९३॥ 🎖 अर्थ—तव राजा वोले जो कोई परदेशमें रहनेवाला अनाथ स्वामीरहित जिसके पीछे पुकार करनेवाला कोई नहीं 🖔 अर्थ—तव राजा बाल जा काइ परदशम रहनवाला जनाय स्वानाराख्त जिन्न गुल उत्तर परियास आवे ऐसा मनुष्य होवे उसको तुम अपनी इच्छासे लेलेओ और कोई नहीं लेना ॥ ३९३ ॥ तत्तो धवलस्स भडा, जाव गवेसंति तारिसं पुरिसं। ता सिरिपालो कुमरो, विदेसिओ जाणिओ तेहिं ३९४ अर्थ—तदनंतर धवलसेटका सुभट जितने वसे पुरुषकी गवेषणाकरे उतने उन्होंने श्रीपालकुमरको परदेशी वत्तीसलक्खणधरो, कहिओ धवलस्स तेहिं पुरिसेहिं। धवलेण पुणो राया,-एसो गहिओ य तग्गहणे ३९५ 🥻

वहुकणयकोडिगाहिय,-कयाणगो णेगवाणिउत्तेहिं। सहिओ सो सत्थवाई, भरुयच्छे आगओ अत्थि ३७९ क्षे — बहुत करोड़ों सोनयोंका किरयाना जिसने ग्रहण कियाहैं ऐसा और अनेक वानियोंके पुत्रो सहित वह सार्थवाह भरौंच नगरमें आयाहै ॥ ३७९॥ जाओ य तत्थ लाहो, पवरो सो तहवि द्वलोहेणं । परकूलगमणपउणो, पग्रणइ बहुजाणवत्ताइं ॥३८०॥ अर्थ—उस भरौचनगरमें बहुत लाभ भयाहै तौभी वह सार्थपति द्रव्यके लोभसे परकूलनाम समुद्रके परतट जानेके लिए तत्पर भया बहुत जहाज तय्यार करे ॥ ३८० ॥ मिज्झमजुंगो एगो, सोलसवरक्र्वएहिं कयसोहो। चतारि य लहुजुंगा, चउचउक्र्वेहिं परिकलिया॥३८१॥ अर्थ—उन जहाजोंमें एक मध्यमजुंगनामका जहाज सोलहप्रधान क्रूपकत्तम्भोंकरके करीहै जिसकी शोभा ऐसाहै और चार लघुजुंगनामके जहाजहें चार २ कूपत्तम्भों करके सहित है ॥ ३८१॥ वडसफरपवहणाणं, एगसयं वेडियाण अट्ठसयं,। चउरासी दोणाणं, चउसट्ठी वेगडाणं च ॥३८२॥ अर्थ—वृहत सफर नामका जहाज एकसौहै वेड़िका नामका जहाज १०८ हैं द्रोण जहाजविशेष ८४ हैं वेगड़ नामका जहाजविशेष ६४ है ॥ ३८२ ॥ सिछाणं चउपन्ना, अवात्ताणं च तह्य पंचासा । पणतीसं च खुरप्पा, एवं सयपंचबोहित्था ॥ ३८३ ॥

श्रीपाल-चिरतम् ॥ ५०॥ अर्थ—सिछनामका जहाज ५४ है आवर्तनामका जहाज ५० हैं और श्वरप्र नामका जहाज ३५ हैं इस प्रकारसे ५०० हैं अप्र नास्तिम् जहाज तथ्यार किए हैं ॥ ३८३ ॥ गहिऊण निवाएसं, भिरया विविहेहिं ते कयाणेहिं । नाखुइयमालिमेहिं, अहिट्ठिया वाणिउत्तेहिं ॥३८४॥ अर्थ—राजाकी आज्ञालेके वह जहाज नानाप्रकारके किरियानोंसे भरेहैं और नाखुयिक (नाखवा) और मालिम जहाजके अधिकारीओं करके तथा वणिक पुत्रों करके अधिष्ठित नाम आश्रित हैं ॥ ३८४॥ मरजीवएहिं गब्भिछएहिं, खुछासएहिं खेलेहिं । सुंकणिएहिं सययं, कयजालवणीविहिविसेसा ॥३८५॥ अर्थ—समुद्रके जलमें प्रवेशकरके वस्तु निकाले वह मरजीवक कहे जावें और गब्भिक्षकनाम खलासीलोग और खेल और सुंकाणिक अपने २ जहाज सम्बन्धी व्यापारके अधिकारियो करके निरंतर कियाहै साचवण विधि विशेष जिन्होंमें नाणाविहसत्थविहत्थहत्थ,-सुहडाणद्ससहस्सेहिं। धवलस्स सेवगेहिं, रिवखजंता पयत्तेणं ॥३८६॥ अर्थ—और वह जहाज कैसेहैं अनेक प्रकारके शस्त्रों करके व्याकुल्हें हाथ जिन्होंके ऐसे दसहजार सुभट धवल सेठके सेवकों करके प्रयत्नसे रक्षा करी गईहै जिन्होंकी ॥३८६॥ बहुचमरछत्तसिकरि,-धयवडवरमउडविहियसिंगारा।सढदोर सारनंगर,-पक्खरभेरीहिं कयसोहा॥३८७॥

सभट शुगाल समृहके जैसा भाग गया ॥ ३९९ ॥

अर्थ—उन पुरुषोंने बत्तीस लक्षणका धारनेवाला श्रीपालकुमारको देखके धवलसेठसे कहा तब धवलसेठने उसको पकड़नेके लिए अर्थात् श्रीपालकुमरको पकड़नेके लिए और राजाकी आज्ञा लिया ॥ ३९५ ॥ सो सिरिपालो चउहदयंमि, लीलाइ संनिविट्ठोवि । धवलभडेहिं उब्भडसत्थेहिं, झित्त आक्खितो ३९६ अर्थ—तब वह श्रीपालकुमर बजारमें लीलासे बैठाहै तथापि उद्भट शस्त्रवाले धवलसेठके सुभटोंने शीघ प्रेरणा किया ३९६ रेरे तुरियं चल्लसु रुट्टो तुह अज्ञ धवलसत्थवई । तं देवयाबलीए, दिज्झिस मा कहिस नो कहियं ॥ ३९० ॥ अर्थ—कैसे आक्षेप कियासो कहते हैं अरे २ तें जल्दीचल आज तेरेपर धवल सार्थवाह नाराज हुआहै तेरेको देव-ताके लिए बलिदान देगा नकारा करना नहीं ॥ ३९० ॥ त्राक लिए बलिदान देगी नकारों करना नहां ॥ २८०॥ कुमरेणुत्तं रे रे, देह बिलं तेण धवलपसुणावि । पंचाणणेण कत्थिवि, किं केणवि दिज्झए हु बली ॥३९८॥ अर्थ—तव कुमर बोला अरे २ पामरो तुझारास्वामी धवल पश्चहै उसकाही बिल्दान देओ कारण सर्वत्र दुर्बल पश्चकाही बिल्दान दिया जावेहै परंतु सिंहका बिल्दान कहीं भी नहीं दिया जावेहै ॥ ३९८॥ तत्तो पयडंति भडा, किंपि बलं जाव ताव कुमरकयं । सोऊण सीहनायं, गोमाउ गणुव ते नट्टा ॥३९९॥ अर्थ—तदनंतर जितने धवलसेठके सुभट कुछ बल प्रगटकरें उतने कुमरका कियाभया सिंहनाद सुनकर वे धवलके

भाषाटीकाअर्थ—धवलसेटकी प्रेरणासे राजानेभी धवलका कार्य सिद्ध होनेके लिए अपनी सेना भेजी वह सेनाभी कुमरने
अर्थ अपने नष्ट होगयाहै प्रताप जिसका ऐसी करी ॥ ४०० ॥
धवलाएसेण भड़ा, नरवइसिन्नेण संजुया कुमरं । वेढंति तिपंतीहिं, मायावीयंव रेहाहिं ॥ ४०१ ॥
अर्थ—धवलकी आज्ञासे सुभट राजाकी सेनाके सुभटों सहित श्रीपालकुमरको तीन पंक्तिसे वीटा अर्थात् चारो
तरफ तीन घेरादिया किसके जैसा तीनरेखा करके वीटा हुआं मायावीज हीँकारके सहश्र ॥ ४०१ ॥
धवलो भणेइ रे रे, एयं इत्थेव सत्थिछन्नतणुं । देह बलिं जेणेसा, संतुस्सइ देवया अज्ञ ॥ ४०२ ॥
अर्थ—तब धवलसेट बोला अरे २ सुभटो इस पुरुषको इसी ठिकाने शस्त्रोंसे शरीर छेदके बलिदान देओ जिसकारणसे आज यह देवता संतुष्टमान होवे ॥ ४०२ ॥ ताण भडाणं सरिसिछ-भछखग्गाइया न लग्गंति । कुमरसरीरंमि अहो, महोसहीणं पभावृत्ति ॥४०३॥ अर्थ—उन राजा और धवल सम्बन्धि सुभटोंका वाण सिछ भाला खड़ादि अर्थात् वाण बच्छीं भाला तलवार वगैरह अस्त्रोंका प्रहार कुमरके शरीरमें नहीं लगे वहां हेतु यहहै महौषधियोंका प्रभाव आश्चर्यकारी है ॥ ४०३॥ कुमरेण पुणो तेसिं, केसिंपि हु केसकन्ननासाओ । छुणियाउ नियसरेहिं, करुणाइ न जीवियं हरियं ४०४

अर्थ—और कुमरने राजा और धवल सेठके कितने सुभटोंका केस कान नासिका वगैरह अवयव अपने वाणसे काटा परंतु दयासे किसीका जीवतव्य नहीं लिया अर्थात किसीको मारा नहीं ॥ ४०४॥

तं पासिऊण धवलो, चिंतइ एसो न माणुसो नूणं। खयरो व सुरवरो वा, कोइ इमोऽणप्पमाहप्पो ४०५ अर्थ—ऐसे श्रीपाल कुमरको देखके धवलसेठने विचार किया निश्चय यह मनुष्य नहींहै किंतु बहुत माहात्म्य जिसका ऐसा यह कोई विद्याधर अथवा देवहै महानहै प्रभावजिसका ऐसा॥ ४०५॥

काऊण अंजिल मत्थयंमि, तो विन्नवेइ तं धवलो । देव तुममेरिसीए, सत्तीए कोवि खयरोऽसि ॥४०६॥

अर्थ-तदनंतर धवलसेठ मस्तकमें अंजिलीकरके श्रीपालकुमरको विनतीकरे हे देव हे महाराज आपऐसी शक्तिसे

ता मह कुणसु पसायं, थंभियवेडीण मोयणोवायं। किंपि हु करेह जेणं, उवयारकरा हु सप्पुरिसा ४०७ अर्थ—जिस कारणसे मेरेपर प्रसन्नहोके मेरा जहाज स्तंभितभयाहै इन्होंके चलानेका उपाय करो जिस कारणसे सत्पुरुष निश्चय उपकार करनेवाले होवेहैं॥ ४०७॥

अर्थ- एव्यय उपकार करनवाल हावह ॥ ४०७ ॥ कुमरेणुत्तं जइ तुह, मोयाविज्ञंति जाणवत्ताइं । ता किं लब्भइ सोवि हु, भणेइ दीणारलक्खंति ॥४०८॥ अर्थ-कुमरने कहा जो तुझारा जहाज चलावे तो क्यापावे तब धवलसेठ बोला १ लाख सोनियया देउं ॥ ४०८ ॥

For Private and Personal Use Only

श्रीपालचरितम्
॥ ५३॥

अर्थ—उसके वाद कुमर विकस्वरमानमुख जिसका ऐसा और लोगोंसे परिवरा हुआ अर्थात् बहुत लोग जिसके साथमें है ऐसा चले धवलसेट सहित आगेके जहाजपर चढ़ा॥ ४०९॥

निजामएसु नियनिय,-पवहणवावारकरणपवणेसु । कयनयपयझाणेणं, मुका हक्का कुमारेणं॥ ४१०॥

अर्थ—तब निर्यामक जहाज चलाने वालोंने अपना २ जहाज चलानेमें तत्पर होनेसे कियाहै नवपदोंका ध्यान जिसने ऐसे श्रीपालकुमरने उंचे स्वरसे हक्कारव किया अर्थात् हाक भरी॥ ४१०॥

स्रोऊण कुमरहकं, सहसा सा खुददेवया नट्ठा। चिलयाइं पवहणाइं, वद्धावणयं च संजायं॥ ४११॥

अर्थ—कुमरकी करीभई हक्का सुनके अकस्मात् वह क्षुद्रदेवता दुष्टदेवी भागगई और जहाज चले वधाई भई॥४१९॥ वर्जात भेरिभुंगल,-पमुहाउज्झाइं गुहिरसहाइं। नचंति निहयाओ, महुरं गिर्जात गीयाइं॥ ४१२॥ अर्थ—तथा भेरी भुंगल प्रमुख दुंदुभि वगैरहः, वादित्रोंका गंभीर शब्दहै ऐसे वादित्र बजाए जावे हैं और नांचने-वाली स्त्रियां नांचतीहैं और मधुर गीतध्विन होवेहै ॥ ४१२॥ तं अच्छरियं दुंदु, धवलो चिंतेइ एस जइ होइ। अम्ह सहाओ कहमवि, ता विग्धं होइ न कयावि॥४१३॥

अर्थ—वह आश्चर्य देखके धवलसेट मनमें विचारे जो यह पुरुष कोई प्रकारसे हमारे सहाई होवे तो कोईवक्त कोई ठिकानेभी विघ्न नहीं होवे ॥ ४१३ ॥ इय चिंतिऊण धवलो, तं दीणाराण सयसहस्सं च। दाऊण विणयपणओ, भणेइ भो भो महाभाग! ४१४ अर्थ—इस प्रकारसे विचारके धवलसेट लाख सोनयिया कुमरको देके नम्र होके नमस्कार करके कुमरसे इस प्रकारसे बोला भोभो महाभाग हे महाभाग्यवान ॥ ४१४ ॥

दीणारसहसइकिकमित्तयं, विस्तिजीवणं दाउं। संगहिया संति मए, दससहसभडा ससोंडीरा ॥४१५॥

अर्थ—एक २ हजार सोनयिया एक वर्षका जीवन याने आजीवका देके मैंने सौंडीर पराक्रम सहित दसहजार सुभ-टोंका संग्रह कियाहै अर्थात् दसहजार सिपाही रक्खेहैं ॥ ४१५ ॥ जइ तं पि हु ओल्रग्गं, गिन्हिस ता कहसु जीवणं तुज्झ। कित्तियमित्तं दिजाइ, जेण तुमं गरुयमाहप्पो ४१६ अर्थ—्जो तुम सेवा अंगीकार करो हो तो तुम्हारा जीवन कहो तुमको कितना द्रव्य देवें जिस कारण तुम बड़े

प्रभाव वाले हो ॥ ४१६ ॥

प्रभाव वाले हो ॥ ४१६ ॥ हसिऊण भणइ कुमरो, जित्तियमित्तं इमेसिं सबैसिं । दिन्नं जीवणवित्तं, तित्तियमित्तं ममिकस ॥४१७॥

अर्थ—यह सेठका वचन सुनके कुमर थोंड़ा हसके बोला इन सब सुभटोंको जीविकाका जितना द्रव्य देते हो उतना मेरेको चाहिए ॥ ४१० ॥
तो सहसा विम्हिअओ, लिक्खं गणिऊण चिंतए सिट्टी । दीणारकोडि एगा, सबेसिं जीवणं अत्थि ४१८ अर्थ—तदनंतर धवलसेठ आश्चर्यपायाहुआ शीघ्र सोनयियोंकी संख्या गिनके विचार करे सब सुभटोंका एक करोड़ सोनयिया होवेहै ॥ ४१८ ॥

एगो मग्गइ कोडिं, अहह अजुत्तं विमग्गियं नूणं। एएसिं किं अहियं, सिज्झिस्सइ कज्जममुणाऽवि ४१९ अर्थ—यह अकेला करोड़ सोनियया मांगताहै अहह इति खेदे खेदकी बातहै इसने अयुक्त मांगा निश्चय यह अकेला दसहजार सुभटोंसे जादा क्या कार्य करेगा॥ ४१९॥

दसहजार सुभटोंसे जादा क्या कार्य करेगा ॥ ४१९ ॥ इय चिंतिऊण धवलेणुत्तं, जझ कुमर! दससहस्साइं । गिन्हिस ता देमि अहं, जं पुण कोडी तयं कूडं ४२० अर्थ—ऐसा विचारके धवलसेट बोला हे कुमार जो वर्षका दसहजार सोनियया लेओ तो मैं देऊं और जो तुमने करोड़ सोनियया मांगा सो तो मिथ्याहै ॥ ४२० ॥ कुमरेणुत्तं मह तायतुळ्ञ, तुह जीवणेण नो कज्जं । किंतु अहं देसंतर,-गंतुमणो एमि तुह सत्थे ॥४२१॥

Acharva Shri Kailassagarsuri Gvanmandir

अर्थ—तब कुमरने कहा हेताततुल्य पितासदृश आपके पास जीविकाका द्रव्य लेनेसे कोई प्रयोजन नहीं है किंतु हैं देशान्तर जानेवालाहूं इसवास्ते में तुम्हारे साथमें आऊं ॥ ४२१ ॥ जइ भाडएण चडणं, देसि ममं हरसिओ तओ सिट्टी । मग्गेइ भाडयं पइमासं, दीणारसयमेगं ॥४२२॥ अर्थ—जो भाड़ालेके मेरेको जहाजमें बैठाओ तो भें तुम्हारे साथमें आऊं तदनंतर सेठ हर्षित होके एक २ महीनेका सौ २ सोनयिया भाडा मांगे ॥ ४२२ ॥ तं दाऊणं चिं कुमरे मूलिह्नवाहणे तस्स । भेरीउ ताडियाओ, पत्थाणे रयणदीवस्स ॥ ४२३ ॥ अर्थ—वह भाड़ा देके श्रीपालकुमर सेठके मूल जहाजमें बैठा रत्नद्वीपके सन्मुख चलनेकेवास्ते भेरी बजाई गई ॥४२३॥ हकारिजंति सढे, तह विड्डजंति सिकयाओ य । चालिजंते सुकाणयाइं, आउछयाइं च ॥ ४२४ ॥ अर्थ—उस वक्तमें षढ वस्त्र मई जहाजका उपकरण विशेषवायुपूरणेके लिए जहाजपर प्रसारण किया जावे तथा छींका रज्जमई चढ़नेका उपकरण विशेष चढ़नेकेवास्ते बांधा जावे तथा सोंकानक जहाजोंके अग्रभागवर्ती ऊर्घ्व काष्ठ चाडु विशेष चलाए जावें आबुह्नकानि काष्ठमई चलानेके उपकरण चलाए जावें ॥ ४२४ ॥ एगे मवंति धुवमंडलं च, एगे हरंति घामत्तं । एगे मवंति वेलं, एगे मग्गं पलोयंति ॥ ४२५ ॥

श्रीमः च १०

श्रीपाल-चिरतम् ॥ ५५॥ अर्थ—और उसवक्तमें कितनेक जहाजके चलाने वाले ध्रुवके तारेका मंडल देखे उससे दिशाओंका प्रमाण करे और कईक अंदर प्रवेशिकया जलको निकाले कईक काष्ठप्रयोगसे समुद्रकी वेलाका प्रमाण करे और कितनेक मार्ग जोवे ॥४२५॥ कत्थिव द्ढुं मगरं, एगे वायंति दुकलुकाइं। एगे य अग्गितिल्लं, खिवंति लहुढिंकलीयाहिं॥ ४२६॥ अर्थ—कोई प्रदेशमें मकर महामत्सविशेषको देखके कईक मनुष्य दुक्कलुक्क नामका चर्मसे महा हुआ वादित्र विशेष बजावे और कितनेक लोग लघुढिंकिलिका पात्र विशेषमें अग्नि जलाके तेल डाले ऐसा करनेसे वादित्रका शब्द सुनके अग्निज्वाला देखके मगरमच्छ दूर चले जावें ॥ ४२६ ॥ चोराण वाहणाइं, दहुं निययाइं पक्खरिजांति । पंजरिएहिं भडेहिं, चोरा दूरे गमिजांति ॥ ४२७ ॥ अर्थ—और कोई प्रदेशमें चोरोंका जहाज देखके जहाजके ऊपर पिजरेमें बैठेहुए पुरुष अपने जहाजके सुभटोंको तयार करें तब वीर पुरुषोंको देखके चोर दूरसे चलेजाव ॥ ४२७ ॥ उग्गमणं अत्थमणं, रिवणो दीसेइ जलिहमज्झंमि । वडवानलपज्जलिया, दिसाउ दीसंति रयणीसु ४२८ अर्थ—और उस वक्तमें सूर्यका उदय अस्त यह दोनों समुद्रके अंदरही देखाजावे तथा रात्रिमें वडवानलअग्निविशेष तयार करें तब वीर पुरुषोंको देखके चोर दूरसे चलेजावें ॥ ४२७ ॥ करके दिशाएं जलती भई देखनेमें आवें ॥ ४२८ ॥ एवं बिहाइं कोऊहलाइं, पिक्खंतओ समुद्दस्स । जा वच्चइ क्रमरवरो, ता पंजरिओ भणइ एवं ॥४२९॥ 🐒

अर्थ—इस प्रकारके समुद्रके कौतूहलनाम कौतुक देखता हुआ जितने कुमरश्रेष्ठ श्रीपाल चले हैं उतने जपर पींजरेमें रहा हुआ पुरुष वक्षमाण प्रकारसे बोला ॥ ४२९ ॥
भो भो जइ जलइंधण-पमुहेहिं किंपि अस्थि तुद्धाणं। कर्जा ता कहह फुटं, बवरकूलं समणुपत्तं ॥४३०॥
अर्थ—अहो लोगो जो तुम्हारे जल इन्धन प्रमुखसे कुछभी कार्य होवे तो प्रगट कहो जिस कारणसे वबर कूल
नामका बंदर आया है रह्नद्वीप हालमें दूर है ॥ ४३० ॥
संजतिएहिं भणियं, ववरकूलस्स मंदिराभिमुहं। वचह जेण जलाई, गिन्हामो मा विलंबेह ॥ ४३१ ॥
अर्थ—ऐसा वचन सुनके सांयात्रिक जहाजके वाणियोंने कहा वबरकूलबंदर के सामने चलो जिससे जलादिक
लेवें इसमें देरी करना नहीं ॥ ४३१ ॥

पत्ताय तत्थ लोया, सपमोया उत्तरंति भूमीए । दससहसभडसमेओ, धवलोवि ठिओ तडमहीए ४३२ क्ष्मे—उस बंदरमें जहाज पहुंचे लोक हर्षसहित जहाजोंसे उत्तरे पृथ्वीपर तब दसहजार सुभटों करके सहित धवल सेठ समुद्रके तटकी भूमिपर रहा ॥ ४३२ ॥ इत्थंतरंमि तेसिं, हलवोलं सुणिय आगया तत्थ । बद्वररायनिउत्ता, मंदिरलागत्थिणो पुरिसा ॥४३३॥

अर्थ—इस अवसरमें उन जहाजोंके मनुष्योंकी हलवोलनाम अव्यक्तध्विन सुनके उस प्रदेशमें वबर राजाने अधिकारितम् ।। पह ॥ पह ॥ पह ॥ अर्थ—लागा मांगते भए राजपुरुषोंको जितने सेठ लागा नहीं देवे उतने उनपुरुषोंने महाकाल नामका वबर कूलके राजाके पासमें जाके कहा तब राजा उन्होंकी प्ररणासे प्रेरित भया ॥ ४३४ ॥ अर्थ—लागा मांगते भए राजपुरुषोंको जितने सेठ लागा नहीं देवे उतने उनपुरुषोंने महाकाल नामका वबर कूलके राजाके पासमें जाके कहा तब राजा उन्होंकी प्ररणासे प्रेरित भया ॥ ४३४ ॥ अर्थ—उसके बाद बहुत सैन्य जिसके ऐसा महाकालराजा उस वंदरमें आके लागा मांगे परंतु धवलसेठ पाधरे पगे लागा नहीं देवे सुभटोंकी युद्धके वास्ते प्ररणा करे ॥ ४३५ ॥ तो धवलभडाउब्भड,–सत्था सहसत्ति बबरभडेहिं। जुज्झंति जओ लोए, मरंति पचारिया सुहडा ४३६ 🐇 अर्थ—तदनंतर धवलकेसुभट उद्घट भयजनक शस्त्र जिन्होंके पासमे ऐसे शीघ तत्काल वबर राजाके सुभटोंके 🕻 साथ युद्धकरे जिस कारणसे छोकमें सुभट पौरष उत्पादक वचनोंसे प्रेरा हुआ अपने स्वामीके सामने प्राणोंका त्याग करे है अर्थात् मरते हैं ॥ ४३६ ॥ करे हैं अथात् मरत है ॥ ४३६ ॥ पढमं धवलभडेहिं, भग्गं महकालभडवलं सयलं । तो महकालनिवेणं, उट्टवियं सबलतुरएणं ॥४३७॥ 🥻

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra

अर्थ—तब पहले धवलसेठके सुभटोंने महाकाल राजाके सुभटोंका बल नाम सैन्यको भगाया तदनंतर महाकाल राजा बलवान घोड़ेपर सवार होके आपसंग्रामके वास्ते आया ॥ ४३७ ॥ नट्ठं धवलभडेहिं, ववरवइतेयमसहमाणेहिं । पयचारी जुज्झंतो, धवलो पुण पाडिओ बद्धो ॥ ४३८ ॥

अर्थ—तब वबरपति वबरकूलका स्वामी राजाकातेज नहीं सहते हुए धवलके सुभट दशोंदिशमें भागे बाद प्यादल युद्ध करता हुआ धवलसेठको पृथ्वीपर गिराके बांधा ॥ ४३८ ॥

तं बंधिऊण रुक्खे, राया सुहडे निओइऊण निए। सत्थस्स रक्खणत्थं, सयं च चलिओ पुराभिमुहं ४३९ अर्थ—राजा महाकाल उसधवल सेठको वृक्षमें बंधवाके सार्थकी रक्षाकेलिए अपने सुभटोंको वहां रखके आप

इत्थंतरंमि कुमरो, धवलं वुह्णावए कहसु इन्हिं। ते सुहडा कत्थगया, जेसिं दिन्ना तए कोडी ॥४४०॥ अर्थ—इसअवसरमें श्रीपालकुमर धवलसेठसे बोला अहो धवल तुमकहो इसवक्त तुम्हारे सुभट कहां गए जिन्होंको तुम करोड़ सोनयिय्या देते थे॥ ४४०॥ धवलो भणेइ भो भो, खयंमि किं कुणसि खारपक्खेवं। किं वा दृह्वाणुवरिं, फोडयदाणकियं कुणसि ४४१

अर्थ—तब धवलसेट कहे भोकुमर घावके ऊपर खारकाप्रक्षेप क्या करो हो अथवा जले हुएके ऊपर क्या जलाओ हो यह आप जैसों के अयुक्त है ॥ ४४१ ॥ तो कुमरो भणइ फुडं अज्जिव जइ कोवि तुज्झ सबस्सं। वालेइ तस्स किंदेसिं, मज्झ साहेसु तं सबं ४४२ अर्थ—तदनंतर कुमर प्रगट कहे कि भो श्रेष्ठिन् जो अभीभी तुझारा सर्वस्व पीछा लेआवे तो उसको तुम क्या देओ सो सत्य मेरेसे कहो ॥ ४४२ ॥ अर्थ—तदनंतर कुमर प्रगट कह कर कर के देशों सो सत्य मेरेसे कहो ॥ ४४२ ॥ धवलों भणेइ न हु संभवेइ, एवं तहावि तस्स अहं । देमि सबस अद्धं, इत्थ पमाणं परमपुरिसो ॥४४३॥ अर्थ—तब धवलसेठ बोला निश्चय ऐसा नहीं संभवे गया हुआ पीछा कहांसे आवे तौभी जो मेरा सर्वस्व पीछा लेखावे उसकों में आधाधन देवं इसमें परमपुरुष परमेश्वरही प्रमाण है अर्थात् साक्षीभृत है ॥ ४४३॥ तो कुमरो धणुहकरों, अंसेसुणुबद्धउभयतूणीओं । बुह्यावइ महकालं, पिट्ठी गंतूण इकिह्यों ॥ ४४४॥ किस्में विसके तथा कांधोंके पीछे बांधा है बाणोंका भाथड़ा जिसने ऐसा कुमर एकाकी पीछे जाके महाकाल राजाको बुलावे ॥ ४४४ ॥ पीछे जाके महाकाल राजाको बुलावे ॥ ४४४ ॥ भो बबरदेसाहिव, एवं गंतुं न लब्भए इन्हिं । ता बलिऊण वलं मे, पिक्खसु खणमित्तमिकस्स ॥४४५॥

अर्थ—इस प्रकारसे कहके कुमर अपने धनुषको आस्फालनकरके बाणोंके समूहकी वर्षात करता भया राजाके तो वबरसुहडेहिं, बिहिओ सरमंडवो गयणमग्गे। तहिव न लग्गइ अंगे, इक्कोवि सरो कुमारस्स ॥४४९॥ 🧗

अर्थ—कैसे बुलावे सो कहते हैं भो वबर देशाधिप इस वक्तमें इस प्रकारसे तुम नहीं जा सकोगे इसलिए एकवेर पिछा पलटकर क्षणमात्र मेरा हाथ देखो अर्थात् मेरा बल देखो ॥ ४४५ ॥ तो विलओ महकालो, पमणइ वालोसि दंसणीओसि । वररूवलक्खणधरो, मुहियाइ मरेसि किं इको ॥ अर्थ—तब महाकाल राजा पीछा पलटके कुमरसें कहे तै बालकहै तै देखनेयोग्य है रूपलक्षणप्रधानहे तेरा अर्थात् प्रधान रूप लक्षणका धारनेवाला ऐसा तें एकाकी व्यर्थ निकम्मा क्यों मरता है ॥ ४४६ ॥ कुमरोवि भणइ नरवर, इय वयणाडंवरेण काउरिसा। भज्जंति तुह सरेहिंवि, महहिययं कंपए नेव ॥४४७॥ अर्थ—तब कुमरभी कहे हे नरवर हे महाराज यह वचनके आडंवरसे कायर पुरुष भागते हैं मेरा हृदयतो तुह्यारे वाणोंसेभी नहीं कांपे इस वास्ते वृथा वचनका आडंवर मतकरो मेरा हाथ देखो ॥ ४४०॥ इय भणिऊण कुमरो, अप्फालेऊण धणुमहारयणं,। मिछं(ल्हं)तो सरनियरं, पाडइ केउं नरिंद्स्स ४४८

अर्थ—बादमें वबर देशाधिपके सुभटोंने आकाशमार्गमें बाणोंका मंडप किया याने इतने बाण चलाए कि जिससे बाणोंका मंडप होगया तथापि कुमरके शरीरमें एकभी बाण नहीं लगे ॥ ४४९ ॥ कुमरसरेहिं ताडिय,—देहा ते वबराहिवइसुहडा । केवि हु पडंति केवि हु, भिडंति नासंति केवि पुणो ४५० अर्थ—कुमरके बाणोंसे ताडित देहजिन्होंका ऐसे वह वबर राजाके सुभट कितनेक पड़े याने गिरे और कितनोका शरीर आपसमें मिले और कितनेक भाग गए ॥ ४५० ॥

शरार आपसम मिल और कितनेक भाग गए॥ ४५०॥ महकालोवि नरिंदो, मिल्लइ सयहत्थियं सहत्थेण। सोवि न लग्गइ ओसहि,-पभावओ कुमरअंगंमि ४५१ अर्थ—महाकाल राजाभी अपने हाथसे शस्त्रको चलावे वह भी शस्त्र औषधिके प्रभावसे कुमरके शरीरमें नहीं

तो वेगेणं कुमरो, गहिउं सयहत्थियं तयं चेव । अप्फालिऊण पाडइ, भूमीए बवराहिवईं ॥ ४५२॥ अर्थ—उसके बाद कुमर राजाके हाथको शस्त्रलेके और आस्फालन करके याने राजाके सामने फेंकके वबराधि- पतिको पृथ्वीपर गिरावे ॥ ४५२॥ तं बंधिऊण कुमरो, आणइ जा निययसत्थपासंमि । तं दट्ढं ते नट्ढा, सत्थाहिवरक्खगा पुरिसा ॥४५३॥

अर्थ—बादमें उन राजोको बांधके कुमर जितने अपने सथवाड़ेके पास लावे उतने अपने राजाको बंधा हुआ देखके सथवाड़ेकी रक्षाके वास्ते जो पुरुष रक्खे थे वह पुरुष भाग गए ॥ ४५३ ॥

भवलो बंधविमुको, खग्गं घित्रूण धावए सिग्घं । महकालमारणत्थं, सिरिपालो तं निवारेइ ॥ ४५४॥ अर्थ—अब धवल्होठ बंधनसे रहित हुआ खड़्गलेके महाकाल राजाको मारनेके वास्ते जल्दी दौढ़े तब श्रीपाल कुमर धवल्सेठको मनाकरे ॥ ४५४॥

गेहागयं च सरणागयं च वद्धं च रोगपिरभूयं । नस्संतं बुड्ढं वालयं च, न हणंति सप्पुरिसा ॥ ४५५॥ अर्थ—क्या कहके मनाकरे सो कहते हैं अहो सेठ अपने घर आया १ द्वारणे आया २ और बंधाहुआ ३ और रोगसे पीडित ४ और भागता हुआ ५ तथा वृद्ध नाम जरासे पीड़ित ६ और बालक इतने वैरी होवे तथापि सत्पुरुष नहीं मारे ऐसे नीतिके वचनसे यह राजाभी अपने घर आया है और बंधाहुआ है इसलिए अवध्य है अर्थात् मारने योग्य नहीं है॥ ४५५॥

योग्य नहीं है ॥ ४५५ ॥ जे दससहस्ससुहडा, बवरसुहडेहिं ताडिया नट्टा । तेसिं रुट्टो सिट्टी, जीवणवित्तीउ भंजेइ ॥ ४५६ ॥ अर्थ—जे दसहजार सुभट वबरराजाके सुभटोंसे ताड़े हुए भागगएथे उन्होंपर धवलसेठ नाराज होके उन्होंकी

श्रीपाल-चिरतम् ॥ ५९॥ श्रीपाल-चार वह सर्वही सुभट अन्यत्र आजीवीका नहीं पातेहुवे श्रीपालकुमरके विनाही मृल्य सेवक भए तब कुमरने उन सुभटोंको अपने भागमें आए भए जहाजोंका अधिकारी किया ॥ ४५७॥ स्यमेव महाकालं, वधाओ मोइऊण सिरिपालो । नियभागपवहणाणं, वत्थाईहिं तमचेइ ॥ ४५८॥ अर्थ—बाद श्रीपालकुमर आपही महाकाल राजाको बन्धनसे छुड़वाके अपने भागमें आए जहाजोंमें लेजाके वस्त्र आभूषणोंसे सत्कार करे।। ४५८॥ ुःः, उन्तरण विवयवंतिण ॥ ४५९ ॥

पुष्ण जन सुभटाको प्रधानवस्त्र पहराके संतोष उत्पन्न करके राजा सम्बन्धी सुभटोंको

पुष्ण आर महाकाल राजाका विशेष सत्कार किया ॥ ४५९ ॥

महकालोवि हु दृहुण, तस्स कुमारस्स तारिसं चिरयं। चित्ते चमिकओ तं, अब्भत्थइ विणयवयणोहिं ४६०

अर्थ—महाकालराजाभी उस कुमरका वैसा आश्चर्यकारी चिरत आचार देखके चित्तमें चमत्कार प्राप्त भया ऐसी

कुमरसे विनययुक्त वचनोंसे प्रार्थना करे ॥ ४६० ॥

पुरिसुत्तम ? महनयंरं, नियचरणेहिं तुमं पवित्तेहिं। अम्हेवि जेण तुम्हं, नियभित्तं किंपि दंसेमो ॥ ४६१ ॥ अर्थ—हे पुरुषोत्तम तुम अपने चरणोंसे मेरा नगर पवित्र करो जिस कारणसे हमभी तुझारी भक्ति करें अपनी भक्ति दिखावें ॥ ४६१ ॥ कुमरो दिक्खन्निनिही, जा मन्नइ ता पुणो धवलसीट्टी। वारेइ घणं कुमरं, सबस्थिव संकिया पावा ४६२ कुमरो दिक्खन्निनिही, जा मन्नइ ता पुणो धवलसीट्ठी। वारेइ घणं कुमरं, सवत्थिव संकिया पावा ४६२ अर्थ—दाक्षिण्य परिचत्तानुकूल उसका निधान कुमर जितने राजाके वचन अंगीकार करे उतने धवलसेट कुमरको बहुत मना करे हे कुमर शत्रुके घरमें सर्वथा नहीं जाना इत्यादि वचनोंसे, किस कारणसें सो कहते है जिसकारणसे दुष्ट प्राणियोंको सर्व ठिकाने शंका रहती है उत्तम निःशंक रहते हैं॥ ४६२॥ वारंतस्सिवि धवलस्स, तस्स कुमरो समस्थपरिवारो । पत्तो महकालपुरं, तोरणमंचाइकयसोहं ॥ ४६३॥ अर्थ—धवलसेठ मनाकरतेभी अर्थात् धवलसेठका वचन नहीं मानके सर्वपरिवार सहित कुमर महाकाल राजाके नगरमें पहुंचा कैसा नगर तोरण मंचादिकसे करी है शोभा जिसकी ऐसा ॥ ४६३॥ महकालों तं कुमरं, भत्तीइ नियासणंमि ठावित्ता । पभणेइ इमं रज्जं, महपाणावि हु तहायत्ता ॥४६४॥ अर्थ—अथ महाकाल राजाभी कुमरको भक्तिसे अपने सिंहासनपर बैठाके विशेष आदरके साथ कहे यह राज्य तुम्हारे आधीन है जादा कहनेकर क्या निश्चय मेरे प्राणभी तुझारे आधीन हैं ॥ ४६४ ॥

श्रीपालचरितम्
॥ ६०॥
श्रीपालचरितम्
॥ ६०॥
श्रीपालचरितम्
॥ ६०॥
श्रीपालक्रमारेण मणियमहं, विदेसिओ तह अनायकुलसीलो, । तस्स कहं नियकन्ना दिज्जइ सम्मं वियारेसु १६६
अर्थ-कुमरने कहा मैं परदेशी हूं और मेरा कुलाचार तुमने नहीं जाना है अर्थात् अज्ञात कुलशील मेरेको अपनी
कन्या कैसे देते हो हेमहाराज कन्या प्रदानमें अच्छी तरहसे विचार करना ॥ ४६६ ॥
पमणेइ महाकालो, आयारेणावि तुह कुलं नायं। न य कारणे वि एसो, कुणसु इमं पत्थणं सहलं १६७
अर्थ-इस प्रकारसे कुमरने कहा तथापि महाकाल राजा बोले हमने आचारसेभी आपका कुल जाना है और अपना विदेशीपना जो कहा उसपर कहते हैं कन्या परदेशीको नही देना ऐसा नियम नहीं है इसलिए यह हमारी
प्रार्थना सफल करो ॥ ४६७ ॥ आमिति कुमारेणं भणिए, महया महूसवेण निवो। परिणावइ नियधूयं, देइ सिरिं भूरिवित्थारं ॥४६८॥ अर्थ—तब कुमरने राजाका वचन अंगीकार किया बड़े उत्सवके साथ महाकाल राजा अपनी पुत्रीको पर्णावे बहुत विस्तार जिसका ऐसी लक्ष्मी देवे ॥ ४६८॥

नवनाडयाइं दाइज्झयंमि, दाऊण चारुवत्थेहिं । परिहावइ परिवारं, कुमरेण सहागयं सयस्रं ॥ ४६९ ॥ अर्थ—पाणिग्रहणके समयमें बहूवरके देने योग्य पदार्थ देते नवनाटक देके कुमरके साथमें आयाहुआ सब परिवा-रको प्रधान पटकूल रेशमी वस्त्र वगेरेह पहरावे अर्थात् देवे ॥ ४६९ ॥

एगं च महाजुंगं, वाहणरयणं च मंदिरे पत्तं । काऊण कुमरसिहओ रायावि समागओ तत्थ ॥४७०॥ अर्थ--और एक महाजुंगनामका प्रधान जहाजपात्र बंदरमें प्राप्तकरके कुमर सहित राजाभी उस बंदरमें आए ॥४७०॥

अथ—और एक महाजुगनामका प्रधान जहाजपात्र बदरम प्राप्तकरक कुमर सहित राजाभी उस बदरमें आए ॥४७०॥ सिट्ठीवि महाजुंगं, दंहुं चउसिट्ठिक्क्वयसणाहं। मिणकंचणपिडिपुन्नं, चिंतइ निययंमि हिययंमि ॥४७१॥ अर्थ—तब धवलसेटभी ६४ कूपसम्भों करके सित और मिणरत और सोने करके भराहुआ ऐसा महाजुंग नामका जहाजको देखके अपने मनमें विचार करे॥ ४७१॥ अहह किमेयं जायं, जं एसो मज्झ सेवगसमाणो। सामित्तिममंपत्तो, भाडयिमत्तं न मे दाही॥४७२॥ अर्थ—क्या विचारे सो कहते हैं अहह इतिखेदे यह क्या होगया जिस कारणसे यह श्रीपाल मेरे सेवकके समान था इस वक्तमें स्वामी होगया अब मेरेको भाड़ाभी नहीं देवेगा॥ ४७२॥ इय चिंतिय सो जायइ, कुमरं गयमासभाडयं सोवि। दावेइ दसगुणं तं, ही केरिसमंतरं तेसिं॥४७३॥ इय चिंतिय सो जायइ, कुमरं गयमासभाडयं सोवि। दावेइ दसगुणं तं, ही केरिसमंतरं तेसिं॥४७३॥

अर्थ—ऐसा विचारके वह धवलसेट कुमरके पास जाके भाडा मांगा तब कुमरभी दसगुना भाड़ा दिलावे हि यह अश्वर्थमें है शास्त्रकार कहते हैं कुमर और सेट इनदोनोंके आपसमें कितना अंतर है अर्थात् बहुत अंतर है ॥ ४७३ ॥ आरोविऊण कुमरं, तत्थ महापवहणे सपरिवारं । मुकलाविऊण धूयं, महकालो जाइ नियनयिरं ४७४ अर्थ—बाद महाकाल राजा उस महाजुंग जहाजपर परिवार सिहत कुमरको चढ़ाके पुत्रीका मुकलावा करके मुकलावा यह देशी वचन है कुमरीकों भौला करके राजा अपनी नगरी जावें ॥ ४७४ ॥ पोएण जणा जलिं, लंघिय पावंति रयणदीवं तं । जह संजमेण मुणिणो, संसारं तरिय सिवठाणं ४७५ अर्थ—लोक जहाजोंसे समुद्रको उल्लंघके रलद्वीप पहुंचे यहां दृष्टांत कहते हैं जैसे मुनि संयमसे संसार समुद्रको तिरके शिवस्थान मुक्तिपद पाते हैं वैसा ॥ ४७५॥ अर्थ—वे द्वीपमें तट मंदिरमें जहाजोंको नंगर गिराके खड़े करके जहाजों के अंदरसे कियाणा उतारके पट मंडप- याने तंबुओंमें रक्खे ॥ ४७६ ॥ कुमरोवि सपरिवारो, पडवंसावासमज्झमासीणो । पिक्खेइ नाडयाइं, विमाणमज्झट्टियसुरुव ॥४७७॥

अर्थ—श्रीपाल कुमरमी अपने परिवार सहित तंबुओं में रहा हुआ सिंहासन पर बैठा हुआ नाटक देखे किसकेजैसा कि विमानमें रहा हुआ देवके जैसा ॥ ४७७ ॥

सेट्ठिवि तंमि दीवे, बहुलाभं मुणिय विन्नवइ कुमरं।देव नियवाहणाणं, कयाणगे किं न विकेह ॥४७८॥ अर्थ—धवल सेठभी उस द्वीपमें बहुत लाभ जानके कुमरसे वीनती करे हे देव हे महाराज अपने जहाजोंका कियाना कैसे नही वेचते हो ॥ ४७८ ॥

तो भणइ कुमारो ताय, अम्हतुम्हाण अंतरं नित्थि । तं चिय कयाणगाणं, जं जाणिस तं करिजासु ४७९ अर्थ—तदनंतर कुमरकहे हे तात सदृश हमारे तुम्हारे अंतर नहीं है क्रियाणोंकी व्यवस्था जैसी तुमजानोहो वैसी

हिट्ठो सिट्ठी चिंतइ, हुं हुं नियजाणियं करिस्सामि।जेण कयविकओ चिय,वणिणो चिंतामणिं बिंति ४८०

अर्थ—यह श्रीपालका वचन सुनके सेठ बहुत खुशी हुआ विचारे अब मैं अपना जाना हुआ करूंगा जिस कारणसे वाणियोंके क्रय विक्रय चिंतामणि वांछित अर्थ साधक रत्नके सदृश लोक कहते हैं ॥ ४८० ॥ इत्तो य कोवि पुरिसो, सुरसरिसो चारुरूवनेवत्थो । सुपसन्ननयणवयणो, उत्तमहयरयणमारूढो ४८१

अर्थ—इधरसे कोई पुरुष देवसदशरूपआकृति वेष मनोहर जिसका ऐसा, नेत्र और मुल अतिशयपसन्नहिष्त जिसका प्रांत घोड़ेपर सवार हुआ ऐसा ॥ ४८१ ॥ वहुपरिअरपरिअरिओ, पत्तो कुमरस्स गुडुरदुवारं। पिक्खेद नाडयं जा, तो सो कुमरेण आहूओ ॥४८२॥ अर्थ—और बहुत परिवारसे परवरा हुआ ऐसा कुमरके तंबूका दरवाजा वहां प्राप्त हुआ जितने नाटक देखे उतने कुमरने उसपुरुषको अपने पासमें बुळवाया ॥ ४८२ ॥ युग्मं सो कयकुमरपणामो, आसणदाणेण ळद्धसम्माणो । विणयपरो वीसत्थो, उवविट्ठो कुमरपायंमि ॥ अर्थ—वह पुरुष किया है नमस्कार जिसने ऐसा तथा आसन देनेसे पाया है सन्मान जिसने और विनयमें ततपर विश्वास युक्त स्वस्थ चित्त जिसका ऐसा कुमरके पासमें वैद्या ॥ ४८२ ॥ युग्मं सो व्याप्त सिन्ध सहस्य वह नाटक क्षणमात्र देखके विचार करे इस ठीळाकरके यह कोई राजकुमर है ऐसा जाना जावे है ॥ ४८४ ॥ यकंमि नाडए सो, पुट्टो कुमरेण कोसि भद्द तुमं । कत्थ पुरे तुह वासो, दिट्टं अच्छेरयं किंपि ॥ ४८५ ॥

अर्थ—अथ नाटक पूर्ण होनेसे उस पुरुषको कुमरने पूछा हे भद्र तें कौन है किस नगरमें तुम्हारा निवास है और

सो जंपइ विणयपरो, कुमरं पइ देव ? इत्थ दीवंमि । सेलोत्थि रयणसाणू , बलयागारेण गुरुसिहरो ४८६ अर्थ—इस प्रकारसे कुमरके पूछनेसे वह पुरुष विनयमें ततपर होके कुमरसे कहे हे देव हे महाराज इस द्वीपमें कड़े के जैसी गोल आकृति ऐसा रत्नसानु नामका बहुत हैं शिखर जिसके ऐसा पर्वत है ॥ ४८६ ॥ तम्मज्झ कयनिवेसा, अत्थि पुरी रयणसंचयानाम । तं पालइ विज्ञाहर,-राया सिरिकणयकेउत्ति ४८७

अर्थ—उस पर्वतके मध्यभागमे करी रचना जिसकी ऐसी रत्नसंचया नामकी नगरी है उस नगरीको श्रीकनककेतु नाम विद्याधर राजा पाछे है अर्थात् रक्षाकरे है ॥ ४८७॥

तस्सित्थि कणयमाला, नाम पिया तीइ कुच्छिसंभूया। कणयपह कणयसेहर, कणयज्झय कणयरुइपुत्ता॥
अर्थ—उस राजाके कनकमाला नामकी रानी है उसकी कुक्षिसे उत्पन्न भए कनकप्रभ १ कनकरोखर २ कनक
ध्वज ३ कनकरुचि ४ इन नामके चार पुत्र हैं॥ ४८८॥

तेसिं च उवरि एगा, पुत्ती नामेण मयणमंजूसा। सयलकलापारीणा, अइरइरूवा मुणियतत्ता ॥४८९॥ 🎇

श्रीपाल-चिरतम् ॥ ६३॥ अर्थ—और उन चार पुत्रोंके ऊपर मदनमंजूसा नामकी एक पुत्री है कैसी है सम्पूर्ण कलाका पारपाया जिसने और सिहतम्. सिहतम्. अर्थ—उस नगरीमें एक जिनदेवनामका श्रावक है उसका जिनदास नामका में पुत्रहूं आश्चर्य अब मैं कहूं सो

सिरिकणयकेउरन्नो, पियामहेणित्थ कारियं अत्थि । गिरिसिहरसिरोरयणं, भवणं सिरिरिसहनाहस्स ॥ अर्थ—श्रीकनककेतू राजाका पितामह दादाने इस पर्वतके शिखरपर रत्न जैसा श्रीऋषभदेव स्वामीका मंदिर बनवाया है ॥ ४९१ ॥

तं च केरिसं, संतमणोरहतुगं, उत्तमनरचरियनिम्मलविसालं। दायारसुजसंधवलं, रविमंडलद्लियतमपडलं ॥ ४९२ ॥

अर्थ—सत्पुरुषोंका मनोरथ उंचा होवे है वैसा वह मंदिर उंचा है और उत्तमपुरुषोंके चरित्र जैसा वह मंदिर के निर्मल और विशाल है तथा दातारके जसके जैसा वह मंदिर धवला है सूर्यमंडलके जैसा अंधकार जिसने दूरिकया है ऐसा वह मंदिर है ॥ ४९२ ॥

तम्मज्झे रिसहेसर, पडिमा कणयमणिनिम्मिया अत्थि । तिहुयणजणमणजणिया,-णंदा नवचंद्छेहव्व ॥ अर्थ—उस मंदिरमें सोने और मणिरत्नसेंवनीभई श्रीऋषभदेवस्वामिकी प्रतिमा है कैसी है प्रतिमा नवीन चन्द्रमाकी रेलाके जैसी तीनभवनके लोकोंके मनमें उत्पन्न किया है आनन्द हर्ष जिसने ऐसी ॥ ४९३॥ तं सो खेयरराया, निच्चं अचेइ भत्तिसंयुत्तो । लोओवि सप्पमोओ, नमेइ पूएइ झाएइ ॥ ४९४ ॥ अर्थ—वह विद्याधरोंका राजा भक्तिसहित उस जिन प्रतिमाकी नित्यपूजा करे है नगरमें रहनेवाले लोगभी हर्षसहि-तहोके उस प्रतिमाको नमस्कार करे है पूजाकरे है ध्यावे है ॥ ४९४॥ सा नरवरस्स धूया, विसेसओ तत्थ भत्तिसंजुत्ता । अट्ठपयारं पूर्यं, करेइ निच्चं तिसंज्झासु ॥ ४९५ ॥ अर्थ-वह पहले कही मदनमंजूषानामकी राजकुमरी विशेष भक्ति संयुक्त उस जिनमंदिरमें तीनों संध्यामें निरंतर अष्टप्रकारी पूजाकरे है ॥ ४९५ ॥ अन्नदिणे विहिनिउणा, सा नरवरनंदिणी सपरिवारा। कयविहिवित्थरपूर्या, भावजुया वंदए देवे ॥९६॥ क्रि अर्थ—अन्यदिनमें विधिमें निपुण चतुर वह राजकुमरी परिवारसहित विस्तारविधिसे करी पूजा जिसने ऐसी और शुभभावयुक्त देवनंदना करे ॥ ४९६ ॥

श्रीपाल-घरितम् ॥ ६४॥ श्रीपाल-उत्ते राजाभी पूजाविधि देखता हुआ उस जिनमंदिरमें आया विशेष पूजाके देखनेसे हर्षसे रोमराजी जिसकी विकस्वर मानभई ऐसा मनमें इसप्रकारसे विचारे ॥ ४९७॥ अहो अपुद्वा पूया, रइया एयाइ मज्झ धूयाए। अहो अपुद्वं च नियं, विद्वाणं दंसियमिमीए॥४९८॥ अर्थ—जैसे राजा विचारे सो कहते हैं अहो इति आश्चर्ये इस मेरी पुत्रीने अपूर्व पूजा रची ऐसी पूजा पहले कभी भी नहीं देखी और यहभी आश्चर्य है इस पुत्रीने अपूर्व अपना विज्ञान कलामें कुशल पणा दिखाया॥ ४९८॥ एसा धन्ना कयपुन्निया य, जीए जिणिंदपूयाए। एरिसओ सुहभावो, दीसइ सरलो अ सुहहावो ४९९ अर्थ—यह मेरी पुत्री धन्या है और किया है पुन्य जिसने ऐसी कृतपुन्या है जिसका श्रीतीर्थंकरकी पूजामें ऐसा ग्रुभ भाव वर्ते है और जिसका सरल, शोभन स्वभाव है ॥ ४९९॥ थिरियापभावणाकोसलत्त,-भत्तीसुतित्थसेवाहिं । सालंकारिममीए, नज्जइ चित्तंमि संमत्तं ॥ ५०० ॥
अर्थ—जिनधर्ममें स्थिरपना १ प्रभावना धर्मको शोभाप्राप्तकरना २ कुशलल जिनप्रवचनमें निपुणपना ३ भक्ति
तीर्थंकरादिकमें अंतरंगप्रीति ४ सुतीर्थसेवा स्थावर जंगम शोभनतीर्थकी सेवा ५ इन पांच अलंकारों करके इसके
चित्रमें सम्यक्त्व अलंकार सहितवर्ते है ॥ ५०० ॥

ता एयाए एयारिसीइ, ध्र्याइ हवइ जइ कहिव । अणुरूवो कोइवरो, ता मज्झ मणो सही होइ ॥५०१॥
अर्थ—तिसकारणसे ऐसी मेरी पुत्री के योग्य जो कोई भर्तारहोवे तब मेरे मनमें सुलहोवे ॥ ५०१ ॥
एवं नियध्याए, वरचिंतासछसछिओ राया । अच्छइ खणं निसन्नो, सुन्नमणो झाणळीणुव ॥५०२॥
अर्थ—इस प्रकारसे अपनी पुत्रीके वरकी चिंतारूप सल्यसे सिंहतभया सल्य युक्त राजा क्षणमात्र उसी विचारमें हीनमन जिसका ऐसा शून्यमन होके बैठा ॥ ५०२ ॥
सावि हु निरंद्ध्या, पूर्यं काउण विहियतिपणामा । नीसरइ जाव पिच्छम, पएहिं जिणगब्भगेहाओ ५०३
अर्थ—वह राजकुमरीभी पूजाकरके किया है तीनप्रणाम नमस्कार जिसने ऐसी जितने मूळगुंभारेसे पीछे पगोंसे बाहर निकछे ॥ ५०३ ॥ बाहर निकलं ॥ ५०३ ॥
तिकालं तह मिलियं, तदारकवाडसंपुडं कहिव,। जहविलएणिव केणिव, पणुिल्लियं उग्घडइ नेव ॥५०४॥
अर्थ—उतने ततकाल उस जिनमंदिरके दरवजेका कपाट कोई प्रकारसे वैसामिला अर्थात् बन्ध होगया जैसे कोई बलवान पुरुषकी प्रेरणासेभी नहीं खुले अर्थात् उघड़े नहीं ॥ ५०४॥
तत्तो सा निवधूया, अप्पं निंदेइ गरुयसंतावा। हा हा अहं ह्यासा, िकं कयपावा असुहभावा ॥५०५॥ श्रीपाल-चरितम्

अर्थ—उसके अनन्तर वह राजपुत्री बहुत संताप जिसके ऐसीभई अपने आत्माकी निंदाकरे किया पाप जिसने ऐसी अञ्चल भाववाली मैं हूं ॥ ५०५ ॥ अधुम भाववाला मह ॥ ५०५ ॥
जेण मए पावाए, पमायलग्गाइ मंद्रभग्गाए । संकरकयाइ प्र्याइ, दंसणं खणमिव नलद्धं ॥ ५०६ ॥
अर्थ—जिस कारणकरके में पापनी प्रमादमें लगीभई और मन्द्रभागिनीने संकरभाव शुभाश्चभ रूप मिश्रभावसे
पूजाकरी जिससे प्रभुका दर्शन क्षणमात्रभी नहीं पाया ॥ ५०६ ॥
ही ही अहं अहन्ना, अन्नाणवसेण कम्मदोसेण । आसायणंपि काहं, किंपि धुवं वंचिया तेण ॥ ५०७ ॥
अर्थ—हि इति खेदे खेद्से कहती है में अधन्य हं अज्ञानके वशसे कर्मके दोषसे कोई आशातना विराधनाकरी है इस कारणसे निश्चय मैं ठगी गई हूं ॥ ५०७॥ एवं ममावराहं, खमसु तुमं नाह कुणसु सुपसायं। मह पुन्नविहीणाए, दीणाए दंसणं देसु॥ ५०८॥ अर्थ—हे नाथ यह मेरा अपराध क्षमाकरो आप सुष्ठुनाम शोभन प्रसाद नाम अनुब्रह प्रसन्नताकरो पुन्यविहीन दीन मेंह्रं ऐसी मेरेको दर्शन देओ॥ ५०८॥ ्रिदोन मेह एसा मरका दशन दआ ॥ ५०८ ॥ एवं तं रुयमाणि, दृह्णं नंदणिं भणइ राया । वच्छे(वत्थे)तुहावराहो, नित्थ इमो किं तु मह दोसो ५०९ अर्थ—इस प्रकारसे रोती भई पुत्रीको देखको राजा कहे हे वत्से यह तेरा अपराध नही है किंतु मेरा दोष है ॥५०९॥

भाषाटी**का-**सहितम्-

11 84 11

जं जिणहरमझगओ, तुहकयपूर्यं निरिक्खमाणोवि। जाओऽहं सुन्नमणो, तुहवरचिंताइ खणिमकं ५१० अर्थ—कैसे सोकि जो मैं जिनमंदिरमें आया हुआ तेरी करीभई पूजा देखता हुआभी तेरे वरकी चिंता करके एक क्षणमात्रतक शून्यमन होगया॥ ५१०॥ तीए य मणोणेगत्तरूव,-आसायणाइ फलमेयं। संजायं तेण अहं, नियावराहं वियक्केमि॥ ५११॥ अर्थ—उसमनसे अनेक प्रकारकी आशातना होती है उस आशातनाका यह जिनमंदिरका द्वार बंधभया यह फल हुआ उस कारणसे मैं अपना अपराध विचारूं हूं॥ ५११॥ देवो य वीयराओ, नेवं रूसेइ कहिव किंतु इमं। जिणभवणाहिट्टायग,-कयमपसायं मुणसु वच्छे ५१२ देवो य वीयराओ, नेवं रूसेइ कहिव किंतु इमं। जिणभवणाहिट्टायग,-कयमपसायं मुणसु वच्छे ५१२ अर्थ—देवतो वीतराग है कोई प्रकारसे नहीं नाराज होवे किंतु हे पुत्रि यह जिनमंदिरके अधिष्ठायक देवका किया हुआ अप्रसाद अप्रसन्नपना तें जान,॥ ५१२॥ तत्तो नरेहिं आणाविऊण, बलिकुसमचंद्णाईयं । कप्पूराग्रुरुमयनाहि,-धूवरूवं च वरभोगं ॥५१३॥ अर्थ—उसके अनन्तर पूजाके निमित्त पुष्प चंदनादि सेवक लोगोंके पाससे मंगवाके और कपूर अगर कस्तूरी प्रमुख्या प्रधान भोगदेवयोग्य द्रव्य मंगवाके ॥ ५१३॥

श्रीपाल-चरितम्

। ६६ ॥

राया ध्र्याईजुओ, ध्र्वकडुच्छेहिं कुणइ भोगविहिं। निम्मलिचत्तो निचल,-गत्तो तत्थेव उवविद्वो ५१४ क्षे—राजा पुत्री सहित ध्रूपधानोंमें भोगविधिः नामध्रूपदानादि विधिः करे कैसा है राजा निर्मल है चित्तजिसका और निश्चल शरीर जिसका ऐसा जिनमंदिरमें बैठा॥ ५१४॥
युग्मं, उववासितगंजायं, ध्रूयासिहयस्स नरविदंस्स। तो रंगमंडवोवि हु, रंगं नो जणइ जणिहयए॥
अर्थ—जिनमंदिरमें ध्रूपदानादि विधिः करते पुत्रीसिहत राजाके तीनउपवास भया तब रंगमंडपभी लोगोंके मनमें राग नहीं उत्पन्न करे ॥ ५१५ ॥ सामंतमंतिपरिगह,-पउरजणेसुवि विसन्नचित्तेसु । उवविद्वेसु निरंतर,-जलंतिद्प्पंतदीवेसु ॥ ५१६ ॥ ृ अर्थ—सामंत और मत्रवी और परिवार और नगरमें रहने वालेलोग खेदातुर भया है चित्तजिन्होंका तथा निरंतर दीपक जलरहे हैं उसवक्तमें ॥ ५१६ ॥ केवि हु दियंति कन्नाइ, दूसणं केवि नरविरंदस्स । एवं बहुप्पयारं, परप्पराळावमुहरजणे ॥ ५१७॥ केवि हु दियंति कन्नाइ, दूसणं केवि नरविरंदस्स । एवं बहुप्पयारं, परप्पराळावमुहरजणे ॥ ५१७॥ अर्थ—कईक लोग कन्याको दूषण देवे और कितनेक राजाको दूषण देवें इसप्रकारसे यथा तथा लोगोंका परस्पर भाषण होनेसे लोगदुर्मुख हुआ इच्छामे आवे ऐसा बोले ॥ ५१७॥ तहयाए रयणीए, पच्छिमजामंमि निज्झुणिसहाए । सहसत्ति गयणवाणी, संजाया एरिसी तत्थ ॥

i.,

n 88 n

अर्थ—तीसरी रात्रिके चौथे प्रहरमें ध्विन निकली अर्थात् उस रंगमंडपमें अकस्मात् ऐसी आकाशवाणी भई ॥५१८॥ दोस न कोइ हुमारियह, नरवर दोस न कोइ। जिणकारिण जिणहरु जिख्यो, तं निसुणउ सहु कोइ॥ अर्थ—वह वाणी दोहा छन्दोसे कहते हैं यहां कुमरीका दोष कोई नहीं है और राजाकाभी दोष नहीं है जिस कारण सबलोग सुनो॥ ५१९॥ तं सोऊणं वाला, संजाया हरिसजणियरोमंचा। रायावि हु साणंदो, संजाओ तेण वयणेण॥ ५२०॥ अर्थ—तदनंतर देववाणी सुनके राजकन्या हर्षित भई रोमराजी जिसकी विकस्वरमान भई राजाभी उसवाणी से आनंद सहितभए ॥ ५२० ॥ लोयावि सप्पमोया, जाया सवेवि चिंतयंति अहो। किं कारणं किहस्सइ! तत्तो वाणी पुणो जाया ५२१ अर्थ—लोकभी हर्षसिहत हुआ ऐसा सब विचारे अहो यह आश्चर्य है क्या कारण कहेगा बाद और वाणी भई॥ जसु नरिद्दिहिं होइसइ, जिणहरु मुक्कदुवारु। सोइज मयणमंजूसियह, होइसइ भत्तारु॥५२२॥ अर्थ—जिस मनुष्यके देखनेसे जिनमंदिरका दरवाजा उघड़ेगा अर्थात् खुलेगा वहही नररत्न मदनमंजूषा राजपुत्री का भर्तार होगा॥ ५२२॥ गाढयरं तो तुट्टा, सबे चिंतंति कस्सिमा वाणी। एवं च कया होही, तत्तो जाया पुणो वाणी॥५२३॥

श्रीपाल चरितम्

। ६७ ॥

अर्थ—तदनंतर सबलोग अत्यन्त संतुष्टमान हुआ विचारे किसकी यह वाणी है और कब वह पुरुष आवेगा और कब जिन मंदिरका दरवाजा खुलेगा ऐसा विचारों के अनन्तर और वाणी भई ॥ ५२३ ॥ सिरिरिसहेसर ओलगिणि, हुउं चक्केसिरिदेवि । मासब्भंतार तसु नरह, आविसु निच्छइ लेवि ॥ ५२४ ॥ अर्थ—श्री ऋषभदेवस्वामीकी सेवाकरनेवाली में चकेश्वरी देवी हूं १ महीनेमें उस पुरुषको लेके निश्चय आऊंगी २२४ इत्थंतरंमि जायं, विहाणयं विज्ञयाइं तूराइं । रायावि सपरिवारो, समुद्विओ नियगिहं पत्तो ॥ ५२५ ॥ अर्थ—इस अवसरमें प्रभातहोगया प्रभातयोग्य वादित्र वजे राजाभी परिवारसिहत अपने घरगए ॥ ५२५ ॥ तत्तो कयगिहपडिमा,-पूयाइविहीहिं पारणं विहियं । सवत्थिवि वित्थरया, सा वत्ता लोयमज्झांमि ॥२६॥ अर्थ—तदनंतर घरदेरासरमें जिनप्रतिमाकी विधिः से पूजाकरके पुत्रीसहित राजाने तीनउपवासका पारणाकिया वह वार्ता सबलोकमें प्रसिद्धभई है ॥ ५२६ ॥ आवंति तओ लोया,सपमोया जिणहरस्स दारंमि । अणउग्घडिए तंमिवि, पुणोवि गच्छंति सविसाया २७ अर्थ—तदनंतरलोक हर्षसहित जिनमंदिर जावे मंदिरका दरवज्ञा बन्ध देखके विषादसहित हुआ पीछा अपने ठिकाने जावे ॥ ५२७ ॥ अर्थ—तदनंतरलोक हर्षसहित जिनमंदिर जावे मंदिरका दरवज्ञा बन्ध देखके विषादसहित हुआ पीछा अपने हिकाने जावे ॥ ५२७॥ तं जिणहरस्स दारं, केणवि नो सिकयं उघाडेउं। किंतु कओ बहुएहिंवि उग्घाडो निययकम्माणं २८

भाषाटीका-सहितम्-

11 69 11

अर्थ—वह जिनमंदिरका दरवज्जा कोई उघाड़नेको समर्थ नहीं हुआ किंतु बहुतलोकोंने अपना भाग्य उघाड़नेका उपाय किया परन्तु किसीका भाग्य उघड़ा नहीं ॥ ५२८ ॥ एवं च तस्स चेईहरस्स, ढंकियदुवारदेसस्स । संजाओ किंचूणो मासो, एयं तमच्छरियं ॥ २९ ॥ अर्थ—इस प्रकारसे जिनमंदिरका दरवजा बन्धहोनेको आज कुछ कम एक महीना हुआ है यह आश्चर्य है ॥५२९॥ जइ पुण पुरिसुत्तम,? तंसि चेव तं जिणहरस्सवरदारं । उग्घाडेसि धुवंतो, मिलिया चक्केसरीवाणी ॥३०॥ अर्थ—हे पुरुषोत्तम जो फेर तुमही उस जिनमंदिरका दरवज्जा उघाडो तो निश्चय चकेश्वरीकी वाणी मिले ॥५३०॥ तो तं कुणसु महायस,? जिणभवणुग्घाडणं तुरियमेव। उग्घडिए तंमि जओ, अम्हाणवि उग्घडइ पुन्नं ३१ अर्थ—तिसकारणसे हे महायशस्त्रिन् आप जिनमंदिरका दरवज्जा जल्दी उघाड़ो इसमें यलकरो जिसकारणसे जिन मंदिरके उघड़नेसे हमारा पुन्य उघड़े है ॥ ५३१॥ तत्तो कुमरो तुरियं, तुरयारूढो पयंपए सिट्टिं, । आगच्छसु ताय? तुमंपि, जिणहरं जेण गच्छामो ५३२ र्ह् अर्थ—उसके अनन्तर कुमर घोडेपर सवारहोकर शीघ्र धवल सेठसेकहे हे पितासदश हेसेठ तुमभी आओ जिससे जिनमंदिर जावें ॥ ५३२ ॥

श्रीपालबरितम्
॥ ६८॥
तो सिद्धी कुमरं पइ, जंपइ तुभ्मे अवेयणा जेण, मुझह अणि विया निचं निक्खीणकम्माणो ॥५३३॥
अर्थ—तदनंतर सेट कुमरसे कहे आप अवेदन है नहीं विद्यमान है वेदन विचार जिन्होंको ऐसे किसकारणसे सो
सिहतम्.

अर्थ—तदनंतर सेट कुमरसे कहे आप अवेदन है नहीं विद्यमान है वेदन विचार जिन्होंको ऐसे किसकारणसे सो
सिहतम्.

नूणं तुझाणंपिव, अझोवि न तारिसा इहच्छामो, गच्छ तुमं चिय अझो, नियकजाइं करिस्सामो॥५३४॥
अर्थ—निश्चय आपके जैसा हमभी इसवक्त निक्षीणकर्मा नहीं कमायाहुआ खानेवाला नहीं रहें इसिल्ए आपही
जाओ हमतो हमारा कार्य करेंगे॥ ५३४॥
तो धवल्ठं मुत्तणं, अझो सबोवि सत्थपरिवारो,। चिल्ठओ कुमरेण समं, पत्तो जिणभवणपासंमि॥५३५॥
अर्थ—वाद धवल सेटको छोडके और सब परिवार कुमरके साथमें चला तब कुमर जिनमंदिरके पासमें पहुंचा ५३५
कुमरो मणेइ मो भो, पिहु पिहु गच्छेह जिणवरदुवारं, जेण फुडं जाणिजाइ, सो दारुग्चाडओ पुरिसो ५३६
अर्थ—तब कुमर कहे अहो लोगो तुम अलग अलग जिनमंदिरमें जाओ जिससे प्रगट दरवजा उधाड़नेवाला पुरुष
जाननेमें आवे॥ ५३६॥
तो जंपइ परिवारो, मा सामिय? प्रिसं समाइससु,। किं सूरमंतरेणं, पिडवोहइ कोवि कमलवणं ५३७

अर्थ—तदनंतर परिवारके लोग कहें हे स्वामिन् ऐसी आज्ञा मतदेओ जिस कारणसे सूर्य विना क्या कोई कमलोका कि विन विकस्वरमान करे है अपितु नहीं करे ॥ ५३७ ॥

सिसमंडलं विणा किं, कमुयवणुह्णासणं कुणइ कोवि, । किंच वसंतेण विणा, वणराइं कोवि मंडेइ ५३८ अर्थ—तथा चन्द्रमाके मंडलविना क्या कोई कुमुदोंके वनको विकस्वरमान करसके है अपितु कोई नहीं करसके और वसंतऋतु विना वनराजिको कौन प्रफुछित करसके किंतु कोई नहीं करसके ॥ ५३८॥

किं सहकारेण विणा, उग्घाडइ कोवि कोइलाकंठं, । ता देव तं दुवारं, तुमं विणा केण उग्घडइ ५३९

अर्थ—तथा आमेकी मांजरिवना कोयलका कंठ कौन उघाडसके है किंतु कोई नहीं उघाडसके तिसकारणसे यह जिन मंदिरका दरवजा आपिवना कौन उघाड़े अर्थात् कोई नहीं उघाड़े ॥ ५३९ ॥ तो कुमरो तुरयाई, मोइत्ता विहिय उत्तरासंगो, कयिनस्तिहीसहो, सीहदुवारंमि पविसेइ ॥ ५४० ॥ अर्थ—तदनंतर, कुमर घोड़ेसे उत्तरके कियाहै उत्तरासन जिसने ऐसा उच्चारणिकया है निसहीका शब्द जिसने ऐसा वैत्यका सिंहद्वार नाम प्रथमद्वारमें प्रवेशकरे ॥ ५४० ॥

जा जाइ मंडवंतो, क्रमरो उप्फ्रह्मनयणमुहकमलो, ता कयकिंकाररवं, अररिजुयं झत्ति उग्घडियं॥५४१॥

श्रीपाल-चरितम् ॥ ६९ ॥ अर्थ—अब कुमर विकस्वरमान है नेत्र और मुखकमल जिसका ऐसा जितने मंडपके अंदर जावे उतने किया है किंकारव शब्द जिसने ऐसा कपाट युग्म दोनों कपाट जल्दी उघड़े ॥ ५४१ ॥ सो तत्थ रिसहनाहं, बत्थालंकारघुसिणकयपूयं, अिमलाणकुसुमदामं, वंदिय ढोएइ फलमउलं ॥५४२॥ अर्थ—वह श्रीपालकुमार उसजिनमंदिरमें श्रीऋषभदेवस्वामी देवाधिदेवको नमस्कार करके सर्वोत्कृष्ट फल चढावे कैसे हैं श्रीऋषभदेवस्वामी उत्तमवस्त्र और अलंकार आभूषण करके और केसरकरके करी है पूजा जिन्होंकी और विकस्वर मान फूलोंकी माला कंठमें है जिन्होंक ऐसे ॥ ५४२ ॥ इत्थंतरंमि राया, धूयासहिओ समागओ तत्थ,। अच्छरियकारिचरियं, पिच्छइ कुमरं निहुयनिहुयं ५४३ अर्थ—इस अवसरमें कनककेतुराजा पुत्रीसहित उस जिनमंदिरमें आयाभया आश्चर्यकारी चरित्र आचार जिसका ऐसे कुमरको निश्चल दृष्टिसे देखे ॥ ५४३॥ कुमरोऽिव हरिसवसओ, पंचंगपणामलीढमहिवीढो। सिरसंठियकरकमलो,रिसहिजिणिंदं थुणइ एवं ५४४ क्ष्मे—कुमरभी हर्षके वद्यासे पंचांगप्रणामकरके पृथ्वीका स्पर्ध किया है जिसने मस्तकमें अर्थात् ललाटदेशमें अंजिल करी है जिसने ऐसा कहाजाय प्रकारसे श्रीऋषभदेवस्वामी की स्तुति करे॥ ५४४॥ सिरिसिखचक्कनवपय,-महस्लपढिमिस्लपयमयं जिणिंद।असुरिंदसुरिंदिच्चय,-पयपंकय नाह! तुज्झनमो ४५

11 80 11

For Private and Personal Use Only

अर्थ-श्रीसिद्धचक्रमें जे नवपद उन्होंमें वड़ा जो प्रथमपद वह स्वरूप जिसका ऐसा उसका सम्बोधन हे श्रीसिद्ध० हे जिनेन्द्र और चमर बिलन्द्र आदि असुरेन्द्र सौधर्म ईशानादि सुरेन्द्र उप लक्षणसे नागेन्द्रादिककाभी ग्रहण है इन्हों करके पूजित है चरण कमल जिन्होंका ऐसे आपको नमस्कार होवे ॥ ५४५ ॥

सिरिरिसहेसरसामिय, कामियफळदाणकप्पतरुकप्य!। कंद्प्पद्प्पगंजण, भवभंजण देव तुज्झ नमो ॥ ५४६ ॥

अर्थ— हे श्रीऋषभेश्वरस्वामी वांछितफलदेनेमें कल्पवृक्षके सदृश और कंदर्पनामकामकां जो अभिमान उसको मर्दन करनेवाले हे भवभंजन हे देव आपको नमस्कार होवो ॥ ५४६॥

सिरिनाभिनामकुलगर,-कुलकमलुह्यासपरमहंससम, । असमतमतमोभर,-हरणिकपईव तुज्झ नमो ४७

अर्थ—श्रीनामिनाम जो कुलगर उनोका जो कुलरूपकमल उसको विकास करनेमें उत्कृष्ट सूर्यसदद्य उसका सम्बोधन हे श्रीनाभि० और नहीं विद्यमान है तुल्य जिसके ऐसा अज्ञानरूप अंधकारकासमूह उसके हरनेमे अद्वितीय प्रदीप समान ऐसा हे देव आपके लिए नमस्कार होवो ॥ ५४७॥

सिरि मरुदेवासामिणि,-उद्रद्रीद्रियकेसरिकिसोर?। घोरभुयदंडखंडिय,-पयंडमोहस्स तुज्झ नमो५४८

श्रीपाल-चरितम्

अर्थ-श्रीमरुदेवी स्वामिनीका उदरही गुफा उसमें निर्भय केसरी सिंहके वालक सददा और प्रचंड भुजदंड करके खंडित किया हैं दुर्घर मोहको जिसने ऐसा हे देव आपके अर्थ नमस्कार होवो ॥ ५४८ ॥ इक्खागुवंसभूसण,-गयदूसण दुरियमयगलमइंद, चंदसमवयण वियसिय,-नीलुप्पलनयण तुज्झनमो ॥ अर्थ-हे इक्ष्वाकुवंद्यभूषण और गए हैं दूषण जिससे ऐसे हेगत दूषण और पापही मदोत्कट हाथी उन्होंके हटानेंमें सिंहके जैसा और चन्द्रके तुल्य मुखजिसका और विकसित नीलकमलके सददा नेत्रजिन्होंके ऐसे हे प्रभो आपको कञ्चाणकारणुत्तम,-तत्तकणयकलससरिससंठाण ?। कंठट्टियकलकुंतल,-नीलुप्पलकलिय तुज्झ नमो ५० अर्थ—कल्याणका कारण जो उत्तम तपा हुआ सोना उसका जो कलदा उसके सदृश संस्थान आकार जिन्होंका उसका सम्बोधन और कंठमें रहे हुए मनोहर पांचवीमुट्ठी सम्बन्धी केश वह ही नीलोत्पल उन्हों करके युक्त अर्थात् कलशके कंठमें नीलोत्पल कमल होते हैं वैसा प्रभुके कंठमें बाल शोभते हैं ऐसे आपको नमस्कार होवो ॥ ५५०॥ आईसर जोईसर,-लयगयमणलक्खलिखयसरूव, भवकूवपडियजंतुतारण,-जिणनाह तुज्झ नमो॥५१॥

अर्थ—हे आदीश्वर और योगीश्वरोंके लयगत मनसे जाना जाय स्वरूप जिसका उसका सम्बोधन हे योगीश्वर० और भवरूप कूपमें गिरते हुए प्राणियोंको तारनेवाले ऐसे हे जिननाथ आपको नमस्कार होवो ॥ ५५१ ॥

भाषाटीका-सहितम्.

11 00 11

सिरिसिद्धसेलमंडन, दुहखंडण खयररायनयपाय। सयलमहसिद्धिदायग, जिणनायग होउ तुज्झ नमो ॥ ५२ ॥

अर्थ—हे श्रीसिद्धशैल शत्रुंजयगिरिका मंडन और विद्याधर राजाने नमस्कार किया है चरणोंमें जिसके और मेरेको सर्व सिद्धीके देनेवाले ऐसे हे जिननायक आपको नमस्कार होवो ॥ ५५२ ॥ तुज्झ नमो तुज्झ नमो, तुज्झ नमो देव तुज्झ चेव नमो, पणयसुररयणसेहर,-रुइरंजियपाय तुज्झ नमो॥

अर्थ-आपको नमस्कार हो आपके लिए नमस्कार हो आपके अर्थ नमस्कार हो हे देव आपहीको नमस्कार होवो और अतिशय नमस्कार किया देवोंने उन्होके रह्नोंके शेखरोकी दीप्ति करके रंजित है चरणकमल जिन्होंका ऐसे हेदेव आपको नमस्कार होवो ॥ ५५३ ॥

> इति स्तवनं, रायावि सुयासहिओ, निसुणंतो कुमरविहिय। संथवणं, आणंद्पुलइअंगो, जाओ अमिएण सित्तुव ॥ ५५४ ॥

अर्थ—यह स्तुति करी तब पुत्रीसहित राजाभी कुमरकी करी भई स्तुति सुनता हुआ आनंदसे रोमोद्गम युक्त अंग जिसका ऐसा भया अमृतसे सींचा हुआ होय वैसा ॥ ५५४॥

अपालचरितम्
॥ ७१ ॥

अर्थ — कुमरी विजिणं निमं उं, सीसंमि निवेसिऊण जिणसेसं, । विहमंडवंमि करवंदणेण, वंदेइ नरनाहं ५५५ अर्थ — कुमरी तीर्थंकरोंको नमस्कार करके और अपने मस्तकपर प्रभुका निर्माल्य पुष्पादिक रखके वाहिरके मंडपमें राजाको नमस्कार करे अर्थात् हाथजोडके प्रणाम करे ॥ ५५५ ॥

नरनाहों अभिणंदिय, तं पभणइ वच्छ जह तए भवणं, उम्घाडियं तहा नियचरियं, -िप हु अम्ह पयडेसु ५६ अर्थ — राजा श्रीपालको आशीर्वादसे संतोषितकरके बोले हे वत्स जैसा तुमने जिनमंदिर उघाडा वैसा अपना चरिन्तभी हमारे सामने प्रगट कहो अर्थात् कुलादिक कहो ॥ ५५६ ॥

नियनामंपि हु न जंपंति, उत्तमा ता कहेमि कह चरियं, । इय जा चिंतइ कुमरो, ता पत्तो चारणमुणिंदो ॥ अर्थ — हु यह निश्चयमें है उत्तम पुरुष अपने मुखसे अपना नामभी नहीं कहे है तो में अपना चरित्र कैसे कहं ऐसा जितने कुमर विचारे उतने वहां आकाशमार्गसे चारण मुनीन्द्र आए ॥ ५५७ ॥

सो वंदिऊण देवे, उवविद्वो जाव ताव तं निमंउ । उविविद्वेसु निवाइसु, चारणसमणो कहइ धम्मं ५५८ अर्थ — वह चारणलिधमान साधु देववंदना करके जितने बैठे उतने राजादिक उन साधुको नमस्कार करके सामने वैठे तब चारणलिधमान श्रमण राजादिक लोगोंके आगे धर्म कहने लगे ॥ ५५८ ॥

भो भो महाणुभावा, सम्मं धम्मं करेह जिणकहियं। जइ वंछह कछाणं, इहलोए तहय परलोए ५५९ सखकी इच्छा करते हो ॥ ५५९ ॥

धम्मो जिणेहिं कहिओ, तत्ततिगाराहणामओ रम्मो,। तत्ततिगं पुण भणियं, देवो य गुरू य धम्मो य॥

अर्थ—तीर्थंकरोंने तीनतत्वकी आरानधारूप रमणीक मनोज्ञ धर्म कहा है तीनतत्व देव १ गुरू २ धर्म ३ देवतत्व गुरूतत्व २ धर्मतत्व ३ यह है ॥ ५६० ॥

इिकक्स उ भेया, नेया कमसो दु तिन्नि चत्तारि । तत्थऽरिहंता सिद्धा, दो भेया देवतत्तस्स ॥५६१॥ अर्थ—और एक एक तत्वका क्रमसे २-३-४ भेद जानना देवतत्वके २ भेद गुरुतत्वके ३ भेद और धर्मतत्वके ४ भेद वहां देवतत्वके २ भेद अरहंत १ सिद्ध २ ॥ ५६१ ॥ आयरियउवज्झाया, सुसाहुणो चेव तिन्नि गुरुभेया । दंसणनाणचरित्तं, तवो य धम्मस्स चउभेया ५६२ अर्थ—आचार्य १ उपाध्याय २ सुसाधु ३ यह तीन गुरुतत्वके भेद जानो । तथा दर्शन सम्यक्त्व १ ज्ञान तत्वका अवबोध २ विरतिरूप चारित्र ३ अनशनादि तप ४ यह धर्म तत्वका चार भेद है ॥ ५६२ ॥

For Private and Personal Use Only

श्रीपाल-चरितम् अर्थ—यह नवपदोंमें जिनशासनका सरवस्त्र याने सर्वसार अवतीर्ण है तिस कारणसें अहो भन्यो तुम यह पद परम भक्तिसे आराधन करो अर्थात् सेवो ॥ ५६३ ॥

जहा जियंतरंगारिजणे सुनाणे, सुपाडिहेराइसयप्पहाणे.। संदेहसंदोहरयं हरंते, झाएह निचंपि जिणेरिहंते ॥ ५६४ ॥

अर्थ—जीता अंतरंगशत्रु कामकोधादि जिन्होंने और प्रधान ज्ञान जिन्होंका तथा शोभन अशोक वृक्षादि प्रातिहार्य अतिशयों करके प्रधान ऐसे और संशयोंका जो समूह वही रज धूिल उसको दूर करनेवाले ऐसे अरहन्तोंको निरंतर [']ध्यावो ॥ ५६४ ॥

दुट्टदुकम्मावरणप्पमुके, अणंतनाणाइसिरीचउके । समग्गलोगग्गपयप्पसिद्धे, झाएह निचंपि मणंमि सिद्धे ॥ ५६५॥

अर्थ—दुष्ट आठकर्मही आवरणों करके प्रकर्षपने करके मुक्त अनंत ज्ञानादिलक्ष्मीचतुष्क है जिन्होंके अनंतज्ञान १ अनंतदर्शन २ अनंतसुल ३ अनंतअकर्णवीर्य ४ इन्हों करके युक्त तथा सम्पूर्णलोकका ऊपरका स्थान वहां प्रसिद्ध सिद्धपना प्राप्तभया ऐसे सिद्धोंको तुम निरंतर मनमे ध्यावो ॥ ५६५ ॥

न तं सुहं देइ पिया न माया, जं दिंति जीवाणिह सूरिपाया, ।

तम्हा हु ते चेव सया महेह, जं मुक्खसुक्खाइं लहुं लहेह ॥ ५६६ ॥ अर्थ—इस संसारमें जीवोंको जो सुख मातापिता नहीं देवे है वह सुख आचार्य देवेहै ऐसा आचार्योंको तुम निरंतर पूजो जिससे मोक्षसुख शीघ पावो ॥ ५६६ ॥

सुतत्थसंवेगमयस्सुएणं, सन्नीरखीरामयविस्सुएणं, । पीणंति जे ते उवझायराए, झाएह निचंपि कयप्पसाए॥ ५६७॥

अर्थ—उपाध्याह सूत्रार्थ संवेगमय श्रुत करके भव्यजीवोंको तृप्तकरे है उन उपाध्याय राजको निरंतर तुम ध्यावो है सुत्रमीठे पानीके जैसा अर्थ दूधके जैसा संवेगमयश्रुतको अमृतकी उपमा है कैसे हैं उपाध्याय राज किया है प्रसाद अनुग्रह जिन्होंने ऐसे ॥ ५६० ॥

खंते य दंते य सुगुत्तिगुत्ते, मुत्ते पसंते गुणजोगगुत्ते,। गयप्पमाए हयमोहमाए, ज्झाएह निच्चं मुणिरायपाए ॥ ५६८ ॥

अर्थ—क्षमायुक्त दमयुक्त नाम इन्द्रियमनको दमनेवाले मनोगुप्त्यादि गुप्त और मुक्त निर्लोभी प्रशान्त नाम शान्त रस श्रीपा.च.१३ १६ युक्त गुणोंके सम्बन्ध सहित गया मदादि प्रमाद जिन्होंसे मोहमाया रहित ऐसे मुनिराजोंको तुम निरंतर ध्यावो ॥ ५६८ ॥

श्रीपाल-चरितम्

॥ ७३ ॥

जं द्वछकाइसु सद्दहाणं, तं दंसणं सवयुणप्पहाणं, । कुग्गाहवाही उ वयंति जेण, जहा विसुद्धेण रसायणेण ॥ ५६९ ॥

अर्थ—जो षड़ द्रव्यादिकका श्रद्धान वह दर्शन नाम धर्म सर्व गुणोंमें प्रधान वर्ते है जिस सम्यक् दर्शन करके कुग्राह हठवाद ही रोग दूर होते है जैसे निर्मल रसायन करके, यह भाव है जरा व्याधिको मिटानेवाला औषध रसायन कहा जावे है उस रसायनसे जैसा सबरोग अच्छे होवे हैं वैसा ॥ ५६९ ॥

नाणं पहाणं नयचकसिद्धं, तत्तावबोहिकमयं पसिद्धं। धरेह चित्तावसहे फ़रंतं, माणिकदीवुव तमोहरंतं॥ ५७०॥

अर्थ—नैगमादि नयोंका चक्रनाम समूह उसकरके सिद्ध निष्पन्न और तत्वज्ञानही है एक स्वरूप जिसका ऐसा सर्वत्र प्रसिद्ध प्रधान ऐसा ज्ञान अपने मनमंदिरमें धारो कैसा ज्ञान देदीप्यमान माणिक्य दीपकके जैसा अज्ञानरूप अंधकारको दूर करनेवाला ॥ ५७०॥

> सुसंवरं मोहनिरोहसारं, पंचप्पयारं विगयाइयारं । मूलोत्तराणेगग्रणं पवित्तं, पालेह निचंपि हु सच्चरित्तं ॥ ५७१ ॥

भाषाटीका-सहितम्.

11 Ept 11

अर्थ—अहो भव्यो शोभन संवर है जिसमें तथा मोहका निरोधही है श्रेष्ठ जिसमें ऐसा और सामायकादि पांच-भेद है जिसका और गया अतिचार जिससे ऐसा और मूलउत्तररूप अनेकगुण हैं जिसमें मूलगुण प्राणातिपात विरम-णादिक चरणसत्तरी और उत्तर गुण पिंडविशुद्धादि करणसत्तरी इन्हो करके पवित्र ऐसा सत्चारित्र निरंतर

बज्झं तहाभिंतरभेयमेयं, कयाइदुब्भेयकुकम्मभेयं, दुक्खक्खयत्थं कयपावनासं, तवं तवेहागमयं निरासं ॥ ५७२ ॥

अर्थ—अहो भव्यो तुम यह बाह्य अभ्यंतर भेद है जिसका ऐसा तप तपो कैसा है तप अतिशय दुर्भेद कुकर्मोंका किदारण किया जिन्होंने ऐसा इसी कारणसे किया है पापका नाश जिसने और कैसा तप गई आशा जिससे ऐसा तपकरो दुःख क्षय करनेकेवास्ते ॥ ५७२ ॥

एयाइं जे केवि नवप्पयाइं, आराहणंतिद्रफलप्पयाइं।

लहंति ते सुक्खपरंपराणं, सिरिं सिरीपालनरेसरुव ॥ ५७३ ॥ अर्थ—जे कोई जीव यह वांछित फल देनेवाले ऐसे नवपदोंकी आराधना करे वह श्रीपाल राजाके जैसी सुखकी परंपरा और लक्ष्मी पावे ॥ ५७३ ॥

श्रीपाल-चिरतम् अर्थ—तव राजा पूछे हे भगवान कौन श्रीपाल तव मुनिवरिंद हाथकी संज्ञासे दिखावे यह तुम्हारे पासमें बैठा— हुआ श्रीपाल है ॥ ५७४ ॥ हुना जानाल हु ॥ ५७४ ॥ तं नाऊणं राया, सपमोओ विन्नवेइ मुणिरायं, भयवं ? करेह पयडं, एयस्स सरूवमम्हाणं ॥ ५७५ ॥ अर्थ—राजा उनको श्रीपाल जानके हर्षसहित मुनिराजसे वीनंती करे हे भगवन् इन्होंका स्वरूप हमारे आगे प्रगट करो ॥ ५७५ ॥ तत्तो चारणसमणेण, तेण आमूलचूलमेयस्स । किहयं ताव चिरत्तं, जिणभुवणुग्घाडणं जाव ॥५७६॥ अर्थ—वाद चारण श्रमणने श्रीपाल कुमरका सर्व चिरत जिनमंदिर उघाडा वहां तक कहा ॥ ५७६॥ इत्तोवि परं एसो, परिणितोणेगरायकन्नाओ । पियरजे उविवद्धो, होही रायाहिराओति ॥ ५७७॥ अर्थ—तिसके अनंतरभी यह श्रीपाल कुमर अनेक राजकन्याओंका पाणियहण करके पिताके राज्यमें वैठा भया राजाधिराज होगा अर्थात् राजालोगोंमें वडा राजा होगा ॥ ५७७॥ तत्थ सिरिसिद्धचकं, विहिणा आराहिऊण भत्तीए । पाविस्सइ सग्गसुहं, कमेण अपवग्गसुक्खं च ५७८

अर्थ—उस महाराज अवस्थामें श्रीसिद्धचक्रका विधिसे आराधन करके देवलोकका सुख पावेगा क्रमसे मोक्षसुख

तत्तो एस महप्पा, महप्पभावो महायसो धन्नो। कयपुन्नो महभागो, संजाओ नवपयपसाया ॥५७९॥ अर्थ—तिसकारणसे यह महात्मा महाप्रभावजिसका और महायश जिसका ऐसा धन्य और किया हे पुन्य जिसने ऐसा कृतपुण्य महाभाग्य जिसका ऐसा महाभाग नवपदोंके प्रसादसे भया ॥५७९॥

जो कोइ महापावो, एयस्सुवरिंपि किंपि पडिकूलं। करिही सचिय लहिही, तकालं चेव तस्स फलं ५८० अर्थ—जो कोई महापापी पुरुष श्रीपालकुमरके ऊपर कुछभी प्रतिकूल विरुद्धकरेगा उसका फल वह करनेवाला ततकाल पावेगा ॥ ५८० ॥

एयस्स सिद्धसिरीसिद्धचक,—नवपयपसायपत्तस्स । धुवमावयावि होही, ग्रुरुसंपयकारणं चेव ॥५८१॥ अर्थ—सिद्ध याने निष्पन्न श्रीसिद्धचक्र उसमें जो नवपद उन्होंका जो प्रसाद पात्र ऐसा यह श्रीपाल इसके निश्चय आपदाभी बहुत सम्पदाकी कारण होगी ॥ ५८१॥

एवं चेव कहंतो, संपत्तो मुणिवरो गयणमग्गे। लोओ अ सप्पमोओ, जाओ नरनाहपामुक्खो ॥ ५८२॥ 🐉 अर्थ—इस प्रकारसे कहता हुवा मुनिवरिन्द्र आकाश मार्गसे अन्यत्र गए राजादिक लोक आनंद सहित भए॥ ५८२॥ 🐒

तकालं चिय कुमरस्स, तस्स दाऊण मयणमंजूसं। काऊण य सामिगं, सयलंपि विवाहपवस्स ॥५८३॥ अर्थ—मुनिराज गयोंके अनन्तर राजा तत्कालही श्रीपाल कुमरको अपनी कन्या मदनमंजूसा देके और विवाह उत्सवकी सर्व सामग्री तय्यार करके॥ ५८३॥ तस्स भवणस्स पुरओ, मिलिए सयलंमि नयरलोयंमि। महया महेण रन्ना, पाणिग्गहणंपि कारवियं ५८४॥ अर्थ—उस जिन मंदिरके आगे सर्व नगरके लोग मिलनेसे वड़े उत्सवके साथ पाणिग्रहण कराया॥ ५८४॥ दिन्नाइं बहुविहाइं, मिणिकंचणरयणभूसणाईणि। दिन्ना य हयगयावि य, दिन्नो य सुसारपरिवारो ५८५ अर्थ—बहुत प्रकारके मिणरत्न जडे हुए ऐसे सोनेरत्नोके भूषणदिए और घोडा हाथी बहुतसे दिए सार परिवार दिया५८५ दिन्नो य वरावासो, तत्थ ठिओ दोहिं वरकलत्तेहिं। सहिओ कुमारराओ, जाओ सबस्थ विकखाओ ५८६ अर्थ—ंप्रधान आवास प्रासाद रहेनेके वाले दिया उस आवासमें रहा हुआ दोय स्त्रियों सहित राजकुमार सर्वत्र प्रसिद्ध भया॥ ५८६॥ निचंपि तंमि चेइयहरंमि, कुमरो करेइ साणंदो । पूयापभावणाहिं, सहलं नियरिद्धिवित्थारं ॥ ५८७ ॥ अर्थ—निरंतर उस जिनमंदिरमें कुमार आनंद सहित पूजा प्रभावनादिक करके अपनी समृद्धिका विस्तार क्रिक्छकरे ॥ ५८७ ॥

अह चित्तमासअट्टाहियाओ, विहियाओ तत्थ विहिपुवं। सिरिसिद्धचकपूर्या-विहीवि आराहिओ तेण ॥ ५८८ ॥

अर्थ—तदनंतर श्रीपाल कुमरने उस नगरीमें विधिपूर्वक चैत्रमासकी अट्टाई करी सिद्धचक्रकी पूजा विधिसे आराधन करी ॥ ५८८ ॥

> अन्नदिणे तस्स जिणालयस्स, सुबलाणयंमि आसीणो। राया कुमारसहिओ, कारावइ जाव जिणमहिमं ॥ ५८९ ॥

अर्थ—अन्य दिनमें उस जिनमंदिरका बलानक नाम लोगोके बैठनेका मंडप वहां कुमरसहित राजा बैठे हैं जितने भगवानका महिमा करावे है ॥ ५८९ ॥

ता दंडपासिएणं विन्नत्तो, देव ? सत्थवणिएणं । एगेण दाणभंगं, काओ आणावि तुह भग्गा ॥ ५९०॥ अर्थ—उतने कोटवालने आके राजासे वीनती कही हे देव हे महाराज एक सार्थ वाणिएने दाण भंग किया अर्थात् महसूलकी चोरी करी इसलिए आपकी आज्ञाका भंग किया है॥ ५९०॥ सो अत्थि मए बद्धो, एसो को तस्स सासणाएसो । राया भणेइ आणा,—भंगे पाणा हरिजंति॥ ५९१॥

अर्थ—उस सार्थ वाणिएको मैंने बांधा है उसके लिए क्या आज्ञा है क्या शिक्षा दी जाने तब राजा बोले आज्ञा भंग करे उसका प्राण लेना ॥ ५९१ ॥

अर्थ—ऐसा राजाका वचन सुनके कुमर कहे हे महाराज इस जिनमंदिरकी भूमिमें रहे हुए मारनेकी आज्ञा मत देओ जिस कारणसे जिनमंदिरमें सदोषवचन कहनेमेंभी महादोष होवे हैं ॥ ५९२ ॥

तो राया छोडाविय, आणावइ जाव निययपासंमि । तं दृढूणं कुमरो, उवलक्खइ धवलसत्थवइ ॥५९३॥

अर्थ—तदनंतर राजा उसको छुडवाके जितने अपने पासमें बुलवावे उतने कुमर श्रीपाल देखके धवल सार्थ वाहको पहिचाने यह तो धवल सार्थवाह है ऐसा जाने ॥ ५९३ ॥

पहिचाने यह तो धवल सार्थवाह है ऐसा जाने ॥ ५९३ ॥ चिंतइ मणे कुमारो, अहह कहं एरिसंपि संजायं । अहवा लोहवसेणं, जीवाणं किं न संभवइ ॥ ५९४ ॥ अर्थ—कुमर मनमें विचारे अहह इति खेदे ऐसा अकार्य कैसे भया अथवा जीवोंके लोभके वशसे क्या २ नहीं संभवे है अर्थात् सब अकार्य संभवे है ॥ ५९४ ॥ तं नियजणयसमाणं, कहिउं मोआविओ नरिंदाओ । उवयारपरो कुमरो, विसज्जए निययठाणे य ॥५९५॥

अर्थ—उसके अनंतर उपकार करनेमें तत्पर कुमर उस धवल सेठको अपने पिताके समान कहके याने यहमेरे पिताके तुल्य है ऐसा कहके राजासे छुड़ाया और अपने ठिकाने जानेकी आज्ञा दिलाई ॥ ५९५ ॥ अह अन्न दिणे कुमरो, विन्नत्तो ? वाणिएण एगेण। सामिय पूरियपोया, अम्हे सबेवि संविहया ५९६ अर्थ—अथ अन्य दिनमें एक वानिएने कुमरसे वीनती किया हे स्वामिन् हे महाराज कियाणोंसे जहाज भरे हैं यहांसे चलनेके वास्ते सब लोग तथ्यार हुए है अर्थात् जो कियाणा लाएथे वह सब यहां बेचा है यहां सम्बन्धी कियाणा खरीदकर जहाज तथ्यार किए हैं हम लोग देश जानेके वास्ते तथ्यार भए हैं ॥ ५९६ ॥ तो जह चिय कुसलेणं, अम्हे तुम्हेहिं आणिया इहयं।

तह नियदेसंमि पुणो, सामिय तुरियं पराणेह ॥ ५९७ ॥

अर्थ—तिस कारणसे जैसे आप कुशलसे हमको यहां लाएहो उसी प्रकारसे हे स्वामिन अपने देश शीघ्र पहुंचाओ ॥५९७॥ है तो कुमरो नरनाहं, आपुच्छइ निअयदेसगमणत्थं। कह कहिंव सो विसज्जइ, काऊणं गुरुयसम्माणं ५९८ अर्थ—तदनंतर कुमर राजासे अपने देश जानेके लिए पूछे तब राजा बहुत सत्कार करके देश जानेकी आज्ञा

🧯 दाउं सुयाइसिक्खं, कुमरस्स भलाविऊण धूयं च।पोयंमि समारोवि अ, कुमरं वलिओ नरवरिंदो॥५९९॥ 🕻

श्रीपाल-चिरतम् ॥ ७७॥ अर्थ—राजा पुत्रीको सिखावन देके मेरी पुत्रीको अच्छी तरहसे रखनी इत्यादि कथन पूर्वक पुत्री कुमरको सौंपके पुत्री सहित कुमरको जहाजमें चढाके राजा पीछे चले स्वस्थान प्रति ॥ ५९९ ॥ कुमरो बहुमाणेणं, धवलंपि हु सारसारपरिवारं । नियपोयंमि निवेसइ, सेसजणे सेसपोएसु ॥ ६००॥ अर्थ—कुमर सार २ परिवार और धवलसेठको आदर सहित अपने जहाजमें बैठावे और लोगोंको दूसरे जहाजोंमें कैं होवे ॥ ६००॥ वैद्यावे ॥ ६०० ॥
पत्थाणमंगलंमी, पहयाओ दुंदुहीउ भेरीओ । सज्जीकया य पोया, चछंति महछवेगेणं ॥ ६०१ ॥
अर्थ—प्रस्थान मंगलके समयमें दुंदभी नामकी भेरिओं वजाई गई और सज्जिकए हुए जहाज बहुत वेगसें चलते हैं ॥६०१॥
अर्थ—प्रस्थान मंगलके समयमें दुंदभी नामकी भेरिओं वजाई गई और सज्जिकए हुए जहाज बहुत वेगसें चलते हैं ॥६०१॥
पोयारूढो कुमरो, जलिहोंमिव अणुहवेइ लीलाओ। जह पालयाहिरूढो, देविंदो गयणमग्गेवि ॥६०२॥
अर्थ—अथ जहाजपर बैटा हुआ कुमर समुद्रमें लीला(कीडा) अनुभवे कैसे सों कहते हैं जैसे पालक विमानमें
वैटा हुआ देवेन्द्र आकाशमार्गमें चलता हुआ लीला अनुभवे वैसा ॥ ६०२॥
दुटुण कुमरलीलं, रमणीजुयलं च रिद्धिवित्थारं । धवलोवि चलियचित्तो, एवं चितेउ माढत्तो ॥६०३॥
अर्थ—तव धवलसेट कुमरकी लीला तथा दो २ स्त्री और ऋदिका विस्तार देखके विशेष करके चलचित भया
ऐसा इस प्रकारसे विचारने लगा ॥ ६०३॥

अहह अहो जणिमत्तो, संपत्तो केरिसं सिरिं एसो । अन्नं च रमिणजुयलं, एरिसयं जस्स सो धन्नो॥६०४॥ अर्थ —अहह इति खेदे अहो इति आश्चर्ये यह श्रीपाल एकाकी मनुष्यमात्र था थोडे दिनोंमें कैसी लक्ष्मी पाई और इसके अति अद्भुत रूप सोंदर्य वाली दो स्त्रियों हैं इसलिए यह धन्य है ॥ ६०४ ॥ ता जइ एयस्स सिरी, रमिणजुयलं च होइ मह कहिव । ताऽहं होमि कयत्थो, अकयत्थो अन्नहा जम्मो ॥ अर्थ —इस कारणसे जो यह श्रीपालकी लक्ष्मी और दो स्त्रियों कोई प्रकारसे मेरे होवे तो मैं कृतार्थ होऊं अन्यथा इन्होंकी प्राप्तिविना मेरा जन्म अकृतार्थ याने निष्फल है ॥ ६०५ ॥ एवं सो धणलुद्धो, रमणीझाणेण मयणसरिविद्धो । दुज्झवसायाणुगओ, न लहेइ रइं ससलुव ॥६०६॥ अर्थ —इस प्रकारसे परद्रव्यका लोभयुक्त तथा कामके बाणोंसे ताडित इसी कारणसे दुष्ट परिणामयुक्त यह धवल सेट शाल्य सहितके जैसा रित शाता नहीं पावे ॥ ६०६॥ इकिकओवि लोहो, बलिओ सो पुण सद्प्यकंद्प्पो। जलणुव पवणसिहओ, संतावइ कस्स नो हिययं६०७ अर्थ —एकाकीभी लोभ बलवान है और दर्प, कंदर्प याने अभिमान काम सहित किस पुरुषके हृदयको नहीं संताप करे किंतु सबके हृदयको संताप करे किसके जैसा वायुसहित अग्निके जैसा जैसे वायु प्रेरित अग्नि सवकों संताप करे है ॥ ६००॥

तत्तो सो गयनिद्दो, सयणीयगओवि मज्झरयणीए। दुक्खेण टलवलंतो, दिट्टो तिम्मत्तपुरिसेहिं॥६०८॥ अर्थ—तदनंतर वह धवलसेठ गई निद्रा जिसकी ऐसा आधीरात्रिके समय शय्यापर लुठता हुआ मित्रोंने देला ६०८ पुट्टो य तेहिं को अज्ञ, तुज्झ अंगंमि बाहए वाही। जेण न लहेसि निद्दं, तो कहसु फुडं नियं दुक्खं ६०९ अर्थ—और उन मित्रोंने पूछा अहो सेठ आज तुझारे शरीरमें क्या रोग पीड़ा उत्पन्न करे हैं जिससे तुमको निद्रा नहीं आवे हैं इसलिए प्रगट तुम आपना दुःल कहो॥ ६०९॥ कह कहिव सोवि दीहं, नीससिऊणं कहेइ मह अंगं। वाही न बाहए किंतु, बाहए मं दुरंताही ॥६१०॥ अर्थ—वाद धवलसेठभी दीर्घ निश्वासा डालके बड़े कष्टसे कोई प्रकारसे बोला मेरे शरीरमें व्याधि नहीं है किंतु मेरेको आधिनाम मानसिक दुःल पीड़ा करता है॥ ६१०॥ पुट्टो पुणोवि तेहिं, का सा तुह माणसीमहापीडा?। तो सो कहेइ सवं, तं निययं चितियं दुट्टं ॥६११॥ अर्थ—तव उनमित्रोंने औरभी पूछा तुम्हारे मनमें क्या दुःख है तव धवछसेठने अपना सब दुष्ट विचार मित्रोंको

तं निसुणिऊणतेवि हु, भणंति चउरोवि मित्तवाणियगा। हहहा किमियं तुमए, भणियं कन्नाण सूलसमं॥ ६१२॥

अर्थ—वह धवल सेठका विचारा हुआ सुनके वे चारोंही मित्र वाणिया बोले अहह इति खेदे तैंने कानोंमें शूल तुल्य यह क्या कहा ॥ ६१२ ॥

अन्नस्सिवि धणहरणं, न जुज्जए उत्तमाण पुरिसाणं । जं पुण पहुणो उवयारिणो य, तं दारुणविवागं ६१३ अर्थ—उत्तम पुरुषोंको किसीकाभी धन हरना युक्त नहीं है जो फेर अपना प्रभु स्वामी और उपकारीका धन हरणकरना उसका तो भयानक फल होवे है ॥ ६१३ ॥

इयरित्थीणवि संगो, उत्तमपुरिसाण निंदिओ लोए।

जा सामिणीइ इच्छा, सा तक्खयसिरमणिसरिच्छा ॥ ६१४ ॥

अर्थ—उत्तम पुरुषोंको अन्य सामान्य लोगोंकी स्त्रियोंकाभी संयोग लोकमें निंदनीय है और अपनी स्वामिनीकी जो इच्छा है वहतो नागराजके मस्तककी मणिकी इच्छाके तुल्य है महादुःख दाई होनेसे ॥ ६१४ ॥ अन्नस्सिव कस्सिव पाण,—दोहकरणं न जुज्जए लोए । जं सामिपाणहरणं, तं नरयनिवंधणं नूणं ॥६१५॥ अर्थ—और किसीभी प्राणीका प्राण हरना लोकमें अयुक्त है और जो स्वामीका प्राण हरण करना वह तो निश्चय

नरक दुर्गतिकाही कारण है ॥ ६१५॥

ता तुमए एरिसयं, पावं कह चिंतियं निए चित्ते। जइ चिंतियं च कह, कहियं तुमए सजीहाए ॥६१६॥

अर्थ—इसिंहए तैंने अपने मनमें ऐसा पाप कैसे विचारा और जो विचारा तो तैंने अपनी जिन्हासे कैसे कहा के तेरेको लजाभी नहीं आई ॥ ६१६ ॥ सिंहतम् आसि तुमं अम्हाणं, सामि य मित्तं च इत्तियं कालं। एरिसयं चिंतंतो, संपइ पुण वेरिओ तंसि ॥६१७॥ अर्थ—इतने कालतक तें हमारा स्वामी और मित्रथा इसवक्तमें ऐसा विचारता हुआ तें हमारा वैरी है ॥ ६१७॥

पोयाण चालणं तं, तह महकालाउ मोयणं तं च, विज्ञाहराउ मोयावणं च, किं तुज्झ वीसरियं॥६१८॥ 🎉

अर्थ—जहाजोंको देवताने संभित किया था सो इस महा पुरुषने चलाया महाकाल राजाने तेरेको बांधा था सो इस कुमरने छुड़ाया और विद्याधर राजाने मारनेकी आज्ञा दिया था सोभी इसी उत्तम पुरुषने बचाया इतना उप-कार तें भूलगया ॥ ६१८॥

एवंविहोवयाराण, कारिणो जे कुणंति दोहमणं। दुज्जणजणेसु तेसिं, नूणं धुरि कीरए रेहा ॥ ६१९ ॥ ४ अर्थ—इस प्रकारके उपगारोंके करनेवाले पुरुषके उपर जो दुष्ट द्रोह युक्त मनकरे उन पुरुषोंकी दुष्ट पुरुषोंके आदिमें रेखा दी जाती है निश्चयसे ॥ ६१९ ॥

मिलिणा कुडिलगईओ, परछिद्दरया य भीसणा डसणा, पयपाणेणिव लालंतयस्स मारंति दो जीहा ६२० 💃 ॥ ७९॥ अर्थ—द्विजिब्हा सर्प और खल पुरुष किसको सुख देवे है अपि तु किसीको नहीं देवे अब दोनोंका सदृश विशे-

पणसे तुत्यपना बतलाते हैं द्विजिव्हा सर्प दूध पिलानेवालेकोभी मारता है वैसा दुष्ट पुरुषभी जो लालनेवाला उसकाही नुकसान करे दोनों कैसे मलीन, सर्प वर्णसे मलीन होवे, और दुष्ट पुरुष भावसे मलीन होता है और कुटिल, सर्प पक्षमें वक्र नेष्टा जिन्होंकी ऐसे और परिल्डोंमें रक्त दुष्टके पक्षमें दूसरोंका दोष कहनेमें रक्त सर्प पक्षमें औरोंके मूषक वगेरेहके बिलोंमें रक्त और भयानक दांत जिव्हासे दूसरोंका घात करनेवाला ॥ ६२०॥ पयिडियकुसीलयंगा, कयकडुयमुहा य अवगणियणेहा।

मलिणा कढिण सहावा, तावं न कुणंति कस्स खला ॥ ६२१ ॥

अर्थ—अब ज्वरकी उपमा करके दुर्जनका खरूप कहते हैं दुर्जनपुरुष ज्वरके जैसा किसको संताप नहीं करे अपितु सबको करे कैसे हैं दोनों प्रगट किया है कुत्सित स्वभाव शरीरमें जिन्होंने नहीं गिना है स्नेह प्रेम जिन्होंने ज्वर पक्षमें स्नेह घृतादिक खल पक्षमें स्नेह प्रेम उन्होंको नहीं गिणने वाले तथा मिलन स्वभाववाले दोनों दुर्जन भावसे मैले होवे हैं अतएव इसी कारणसे दोनोभी कठिन स्वभाववाले ज्वर पक्षमें देहको कठिन करनेवाला ॥ ६२१ ॥ विरसं भसंति सविसं उसंति, जे छन्नमिंति सुंघंता । ते कस्स लद्धिहा, दुज्जणभसणा सुहं दिंति ॥६२२॥ अर्थ—अब श्वानकी उपमा करके दुर्जनका स्वरूप दिखाते हैं वह दुर्जन भुसनेवाले स्वानके जैसे छिद्रपाके अर्थात् छलपाके किसको सुख देवे अपितु किसीको नहीं देवे कैसे वह सो कहते हैं गया रस मधुरात्मक जिन्होंसे विरल जैसा

किंतु विसेसेण तुमं, सिरिपालेणं समं कुणसु मित्तिं । जं सो वीसत्थमणो, अम्हाणं सुहहओ होई ६२७ क्षे अर्थ—किंतु तुम विशेष करके श्रीपालके साथ मैत्री करो जिससे विश्वासयुक्तमनजिसका ऐसा श्रीपाल सुबसे मारा तो धवलो तुटुमणो, भणेइ तुमं चेव मज्झवरिमत्तो । किंतु मह बंछियाणं सिद्धी होही कहं कहसु ६२८ अर्थ—तदनंतर धवल संतोषमान होके कहे तैं ही मेरा प्रधान मित्र है किंतु मेरे वांछितकी सिद्धि कैसे होगी सो सो आह जुज्झणत्थं, दोराधारेण मंडिए मंचे। कह कहिव तं चडाविय, केणवि कोऊहलमिसेण ६२९ अर्थ—वह कुमित्र बोला डोरोंके आधारसे युद्धादि करनेके लिए मंचा बांधेंगे कोई प्रकारसे कोई कौतुकके छलसे श्रीपालको उस मांचेपर चढ़ाके॥ ६२९॥ छन्नं चिय छिन्ने दोरयंमि, सो निच्छयं समुद्दंमि। पिडिही तो तुह बंच्छिय,—िसिद्धी होही निरववायं ६३० अर्थ—प्रच्छन्नही डोरा काटनेसे श्रीपाल निश्चयसे समुद्रमें पड़ेगा तदनंतर निरपवाद जैसे बने वैसा तुम्हारे वांछितकी सिद्धी होजायगी लोकोंमें अपवाद निंदाभी नहीं पाओगे॥ ६३०॥ तो संतुट्टो धवलो, कुमरसहाए करेइ केलीओ। बहुहासपेसलाओ, तहा जहा हसइ कुमरोवि॥६३१॥

अर्थ—तदनंतर धवल सेठ संतुष्टमान होके कुमरकी सभा में बहुत हास्य सहित रमणीक क्रीडा करे अर्थात् वैसा हास्य करे जिससे श्रीपाल कुमरभी थोड़ा हसे ॥ ६३१ ॥ अन्नदिणे सो उच्चे, मंचे धवलो सयं समारूढो । सिरिपालं पइ जंपइ, पिच्छह पिच्छह किमेयंति ६३२ अर्थ—अन्यदिनमें धवल सेठ आप उंचे मंचपर चढा हुआ श्रीपाल कुमरसे ऐसा कहे कि भो कुमार आप देखो २ कैसा आज आश्चर्य है पाणी दौड़ता है समुद्रमें बहुत आश्चर्य दीखता है ॥ ६३२ ॥ दीसइ समुद्दमज्झे, अदिटुपुवं मइत्ति जंपंतो । उत्तरइ सयं तत्तो, कहेइ कुमरस्स सिवसेसं ॥ ६३३ ॥ अर्थ—मैंने पहिले ऐसा कभी नहीं देखा है वाहनसे मुसाफिरी करते बहुत वर्ष होगए हैं परंतु आज समुद्रमें अपूर्व आश्चर्य है ऐसा बोलता हुआ मांचे से उतरे और विशेष करके कुमरसे कहे ॥ ६३३ ॥ कुमर अपुर्व को ऊहलंति, तुज्झिव पलोयणसिरच्छं। जंजीवियाउबहुअं, दिटुं पवरं भणइ लोओ ६३१ अर्थ—क्या कहें सो कहते हैं हे कुमार अपूर्व कुतूहल आज है इसलिए तुम्हारेभी देखने योग्य है जिस कारणसे लोग जीनेका फल बहुत देखनाही प्रधान कहते हैं ॥ ६३४ ॥ तो सहसा कुमारोऽवि हु,चिअो जा तत्थ उच्चए मंचे।ता मंचदोरच्छेओ, विहिओ य कुमंतिणा तेण ६३५

अर्थ—तदनंतर कुमरभी धवलकी प्रेरणासे अकस्मात् जितने उस ऊंचे मांचेपर चढ़ा उतने उस कुमित्रने मंचेका हारा काट दिया ॥ दरप ॥
तो सहसा मंचाओ, कुमरोवि पढंतओ नवपयाइं। झाएइ तक्खणं चिय, पिडओ मगरस्स पुट्टीए ॥६३६॥
अर्थ—उसके अनन्तर अकस्मात् शीघ्र मांचेसे पड़ता हुआ कुमरभी नवपदोंका ध्यानकरे उस ध्यानके प्रभावसे
तत् कालही मकर महामत्स विशेषकी पीठपर पड़ा ॥ ६३६॥
नवपयमाहप्पेणं, ओसहियवलेण मगरपुट्टि ठिओ, खणमित्तेणिव कुमरो, सुहेण कुंकुणतडे पत्तो ६३७
अर्थ—तदनंतर नवपदोंके महात्म्यसे और औषिके प्रभावसे मगरमच्छकी पीठपर रहा हुआ कुमर क्षणमात्रमें
सुलसे कुकणदेशके तटमें प्राप्त भया॥ ६३७॥ तत्थ य वणंमि कत्थवि, चंपयतरुवरतलंमि सो सुत्तो, जा जग्गइ तो पिच्छइ, सेवापर सुहड परिवेढं ६३८ अर्थ—वहां कुंकण तटके किनारे प्रधान चंपक वृक्षके नीचे श्रीपाल सोता निद्रा आई वाद जितने जगे उतने से-वा करनेमें तत्पर ऐसे सुभटोंसे अपना आत्मा वीटा हुआ देखे ॥ ६३८ ॥ विणओणएहिं तेहिं, भडेहिं पंजलिउडेहिं, विन्नत्तं । देव ? इह कुंकुणक्खे, देसे ठाणाभिहाणपुरे ६३९

अर्थ—विनयसे नम्र इसी कारणसे हाथ जोड़के उन सुभटोंने वीनती करी सो कहते हैं हे देव इस कोंकण देशमें स्थाना नामका प्रधान नगर है उस नगरमें ॥ ६३९ ॥ वसुपालो नाम निवो, तेणं अम्हे इमं समाइट्ठा। जलहितडे जं अचलंतच्छायतरुतले समासीणं ॥६४०॥ अर्थ—वसुपाल नामका राजा है उन्होंने हमको ऐसी आज्ञा दी है सो कहते हैं समुद्रके तीरपर अचलछाया जिसकी ऐसा वृक्षके नींचे रहा हुआ पुरुष रत्नको ॥ ६४० ॥ पिच्छेह पुरिसरयणं, अज्झिदिणे चेव, पिच्छमे जामे। तं तुरियंचिय तुरया,—रूढं काऊण आणेह ६४१ अर्थ—आजही दिनके पीछेके प्रहरमें तुमदेखो उस पुरुषरलको शीघ्रही घोड़ेपर चढ़ाके ठावो॥ ६४१॥ ता अम्हेहिं तुमंचिय, दिट्ठोसि जहुत्ततरुतलासीणो । सामिय पुत्रवसेणं, ता तुरियं तुरयमारुहह ॥६४२॥ अर्थ—यह राजाका आदेश है इसलिए हे स्वामिन् हमने यथोक्त वृक्षके नींचे रहे हुए आपको पुण्यके वशसे देखे हैं इससे शीघ्र कृपा करके घोड़ेपर सवार होओ ॥ ६४२ ॥ कुमरोवि हयारूढो, तेहिं सुहडेहिं चेव परियरिओ। खणिमत्तेणवि पत्तो, ठाणयपुरपरिसरवणिम ॥६४३॥ है अर्थ—कुमरभी घोड़ेपर सवार होके उन पुरुषोंके साथ परवरा हुआ क्षण मात्रसे अर्थात् थोड़ी वक्तसे थाना नगरके हैं पासके बनमें पहुंचा ॥ ६४३॥

तस्साभिमुहं रायावि, मंतिसामंतसंजुओ एइ । महया महेण क्रुमरं, पुरे पवेसेइ कयसोहे ॥ ६४४ ॥ 🎖 अर्थ—राजा वसुपाल्मी मंत्री सामंत सहित श्रीपालके सामने आया करीशोभाजिसकी ऐसे नगरमें महोत्सवके साथ कुमरको प्रवेश करावे ॥ ६४४ ॥ काऊण य पिडवित्तं, तस्स कुमारस्स असणवसणेहिं। पभणेइ सबहुमाणं, राया एयारिसं वयणं ६४५ अर्थ—और कुमरकी अशनपान वस्त्र वगैरहसे भक्ति करके राजा वसुपाल बहुमान सिंहत ऐसा वचन कहे ६४५ पुविं सहाइपत्तो, एगो नेमित्तिओ मए पुट्टो। को मयणमंजरीए, महपुत्तीए वरो होही॥ ६४६॥ अर्थ—कैसे वचन कहे सो कहते है पहले मेरी सभामें एक नैमित्तिया आयाथा उसको मैंने पूछा मेरी मदनमंजरी पुत्रीका कौन भर्तार होगा॥ ६४६॥ तेणुत्तं जो वइसाहसुद्ध,—दसमीइ जलहितीरवणे । अचलंतच्छायतरुतल,—िठओ हवइ सो इमीइ वरो अर्थ—ऐसे पूछनेसे उस नैमित्तिएने कहा वैशाख सुदी दशमीके दिन समुद्रके किनारे जो वन है उसमें अचल छाया जिसकी ऐसे वृक्षके नीचे जो रहा होवे वह पुरुष इस कन्याका भर्तार होगा ॥ ६४७ ॥ अर्ज चिय तंसि तहेव, पाविओ वच्छ पुण्णजोएणं। ता मयणमंजरिमिमं, मह धूयं ज्झित्त परिणेसु ६४८

श्रीपाल-चिरतम् ॥ ८३॥ एवं भिणऊण नरेसरेण, अइवित्थरेण वीवाहं। काराविऊण दिन्नं हयगयमणिकंचणाईयं॥ ६४९॥ अर्थ—इस प्रकारसे कहके राजाने अत्यन्त विस्तारसे पाणिग्रहण कराके घोड़ा, हाथी, रस स्वर्णादिक दिया॥ ६४९॥ तत्तो सिरिसिरिपालो, नरनाह समप्पियंमि, आवासे। मुंजइ सुहाइं जं पुन्नमेव मूलं हि सुक्खाणं ६५० अर्थ—तदनंतर श्रीमान् श्रीपाल कुमर राजाके दिए हुए आवासमें सुख भोगवै जिस कारणसे सुखोंका मूलकारण पुन्य है पुन्यवान जहां जावे वहां सुख पावै॥ ६५०॥ रन्नो दिंतस्सिव देसवासगामाइअहिवत्तंपि। कुमरो न छेइ इकं, थइयाइत्तं नु मग्गेइ ॥ ६५१ ॥ अर्थ—देश नगर ब्रामादिकका स्वामिपना देते हुएभी कुमर नहीं छेवे किंतु एक ताम्बूछ देनेका अधिकार मांगे ६५१ । राया तं हीणंपि हु, कम्मं दाऊण तस्स तुट्टिकए। अच्चंतमाणिणज्ञाण, तेण दावेइ तंबोछं॥६५२॥ अर्थ—राजा वसुपाछ कुमरको संतोषके छिये ताम्बूछ देनेका हीन काम है तथापि वह अधिकार देके अत्यन्त माननीय पुरुषोंको कुमरके हाथसे ताम्बूछ दिलावे॥ ६५२॥

इओ य जइया समुद्दमज्झे,पडिओ कुमरो तया धवल-सिट्ठी,तेणकुमित्तेण समं,संतुट्ठो हिययमज्झंमि ५३ अर्थ—इधरसे जब कुमर समुद्रमें गिरा तव धवल सेठ उस कुमित्रके साथ मनमें बहुत संतोष पाया॥ ६५३॥ लोयाण पच्चयत्थं, धवलो पभणेइ अहह किं जायं, जं अम्हाणं पहु सो, कुमरो पडिओ समुद्दंमि ६५४ अर्थ—लोगोंको प्रतीति उत्पन्न करनेके लिए धवल प्रकर्षपने करके कहे अहह इति खेदे यह क्या भया वहुत बुरा कार्य भया जिसकारणसे जो हमारा स्वामी कुमर समुद्रमें गिरा ॥ ६५४ ॥ हिययं पिटेइ सिरं च, कुटेइ पुकरेइ मुकसरं। धवलो मायाबहुलो, हा कत्थगओसि सामि तुमं ६५५ अर्थ—अब बहुत है माया जिसके ऐसा धवल सेठ छाती कूटे और मस्तक कूटे और ऊंचे स्वरसे जैसा होय वैसा पुकार करे कैसे सो केहते हैं हे स्वामिन् आप कहा गए हो इसप्रकारसे पुकार करे ॥ ६५५॥ तं सोऊणं मयणाओ, ताओ हाहारवं कुणंतीओ। पडियाओ मुच्छियाओ, सहसा वज्जाहयाउव ॥६५६॥ अर्थ-वह धवलका किया हुआ पुकार सुनके मदनसेना मदनमंजूषा दोनों स्त्रियों हाहारव करतीं वज्राहतके सीयलपवणेण, लद्धसंचेयणाउ ताउ पुणो । दुक्खभरपूरियाओ, विमुक्कपुक्काउ रोयंति ६५७

अर्थ—समुद्रके शीतल वायुसे पाई चेतना जिन्होंने ऐसीदोनुं स्त्रियों दुःखके भरनामपूरसे भरा है हृदय जिन्होंका इसी कारणसे ऊंचेस्वरसे रोती भई कैसी रोती भई सो कहते हैं ॥ ६५०॥ हा प्राणनाह गुणगणसणाह, हा तिजयसार उवयार। हा चंद वयण हा कमलनयण, हा रूव जियमयण६५८ अर्थ—हा इति खेदे हे प्राणनाथ हे गुणगण सनाथ गुणोंका समूह करके सिहत हा तीनजगतमें सार उपकार जिसका ऐसा हे चन्द्रसम वदन हे कमल सहश नेत्रवाला हा इति खेदे रूपसे जीता है कामको जिसने उसका सम्बोन् हा हा हीणाण अणाहयाण, दीणाण सरणरहियाण। सामियतए विमुकाण, सरणमम्हाण को होही ६५९ अर्थ—हाहा इति खेदे हे स्वामिन् आपने हमको छोड़ दी इसी कारणसे शरण रहित हमारे किसका सरणा होगा कैसी हैं हम दीन हैं हीन हैं अनाथ हैं ॥ ६५९॥ कैसी हैं हम दीन हैं हीन हैं अनाथ हैं ॥ ६५९ ॥
तो धवलो सुयणो इव, जंपइ सुयणु करेह मा खेयं । एसोहं निचंपि हु, तुम्हं दुक्खं हरिस्सामि ६६०
अर्थ—इसप्रकारसे उन्होंका रोना सुनके तदनंतर धवल सेठ स्वजनके जैसा उन्होंके पासमें आके इस प्रकारसे
बोला हे सुतनु शोभन अंगवाली स्त्रियो तुम मनमें खेद मत करो मैं तुम्हारा दुःख दूर करूंगा में तुम्हारा आज्ञा

तो सोऊणं ताओ, सविसेसं दुक्लियाउ चिंतंति । नूणमणेणं पावेण, चेव कयमेरिसमकजं ॥ ६६१ ॥ क्रिं अर्थ—तदनंतर धवलसेठका वचन सुनके वे दोनों स्त्रियो विशेष दुःखी होके विचारकरे निश्चय इसी पापी ऋरने ऐसा अकार्य किया यह जाना जाता है ॥ ६६१ ॥ इत्वंतरे उच्छिलयं जलेहिं वियंभियं उब्भडमारुएहिं। समुन्नयं घोरघणावलीहिं, कडिकयं रुद्दतिडिख्लयाहिं अर्थ—इस अवसरमें समुद्रका पानी उछ्छा तथा दुःसह वायु वजने छगा और भयानक मेघकी घटा उत्पन्न भई चौतर्फ फैल गई और विजलियों चमकनेलगी और विजलियों कड़की ॥ ६६२॥ घोरंधयारेहिं विंवड्डियं च रउइसद्देहिं समुट्टियं च। अटदृहासेहिं पयद्वियं च, सयं च उप्पायसप्हिं जायं ६३ अर्थ—और घोर अंधकार विशेष करके बढ़ा और भयानक ध्वनियां होने लगीं अटट्टहास होने लगा सैकडों उत्पात आपहीसे हुआ ॥ ६६३ ॥ तत्तो हस्लोहलिएसु तेसु पोएसु पोयलोएहिं, खलभलियं । जलजलियं, कललियं मुच्छियं च रवणं ६६४ अर्थ—तदनंतर जहाजोका लोक व्याकुल हुआ और खलवले और झल झलितभया और कल कल शब्द युक्त भए और क्षण मात्र मूर्छित होगए॥ ६६४॥ डम २ डमंतडमरुय,-सद्दो अचंतरुद्दरूवधरो । पढमं च खित्तवालो, पयडीहुओ सकरवालो ॥ ६६५ ॥

श्रीपा च १५

श्रीपाल-चरितम् अर्थ—वादमें क्या भया सो कहते हैं पहले क्षेत्रपाल प्रगट भया कैंसा है क्षेत्रपाल डम र शब्द होवे जिसमें ऐसा इमरु बजाता हुआ और अत्यन्त रौद्र रूपका धारने वाला और खड़ा है हाथमें जिसके ऐसा तलवार सिहत ॥ ६६५ ॥ सिहतम्, तो माणिपुन्नभद्दा, किवलो तह पिंगलो इमे चउरो । गुरुमुग्गरवग्गकरा, पयडीहूया सुरा वीरा ॥ ६६६ ॥ अर्थ—तदनंतर क्षेत्रपालके पीछे माणिभद्र १ पूर्णभद्र २ किपल २ पिंगल ४ यह चार वीरदेव प्रगट भए कैसे हैं ये वीरदेव बड़े मुद्ररशस्त्र विशेष हैं हाथमें जिन्होंके ऐसे ॥ ६६६ ॥ कुमुयंजणवामणपुष्फदंत,—नामेहिं दंडहत्थेहिं। पयडीहूयं च तओ, चउहिंवि पडिहारदेवेहिं॥ ६६७॥ अर्थ—और तदनंतर कुमुद १ अंजन २ वामन ३ पुष्पदंत ४ ये चार प्रतिहार देव प्रगट भए कैसे हैं ये देव दंड है हाथमें जिन्होंके ऐसे॥ ६६७॥ चकेसरी य देवी, जलंतचकदुयं भमाडंती । बहुदेवदेविसहिया, पयडीहूया भणइ एवं ॥ ६६८ ॥ अर्थ—और चक्रेश्वरी देवी प्रगट होके इस प्रकारसे कहे कैसीहैं चक्रेश्वरी देवी देदीप्यमान दोनों हाथोमें चक्रघुमा-विती और बहुत देव देवियां करके सहित ॥ ६६८ ॥ रे रे गिन्हह एयं, पढमं दुब्बुद्धिदायगं पुरिसं । जं सवाणत्थाणं, मूलं एसुच्चिय न अन्नो ॥ ६६९ ॥

For Private and Personal Use Only

अर्थ—चक्रेश्वरी देवी क्या कहे सो कहते हैं रे रे देवो तुम पहले यह दुर्बुद्धि देनेवाले पुरुषको पकड़ो जिस कारणसे सर्व अनर्थोंका मूल येही पुरुष है दूसरा नहीं ॥ ६६९ ॥ तो झित खित्तवालेण, सो नरो बंधिऊण पाएहिं,। अवलंविओ य कूवय—खंभंमि अहोमुहं काउं ६७० अर्थ—चक्रेश्वरीके वचनके अनन्तर क्षेत्रपालने शीघ उस दुर्बुद्धि देनेवाले मनुष्यको पकड़के पग बांधके नीचा मुख करके कूपस्थंभमें लगादिया अर्थात् नीचा मुख ऊपर पग करके बांध दिया॥ ६७०॥ दाऊण मुहे असुइं, खग्गेणं चिछिन्निऊण अंगाइं। सो दिसिपालाणं विलब्ब, दिन्नओ संतिकरणत्थं ६७१ अर्थ—उसके मुखमें अशुचि विष्ठा देके खद्गसे उसके अंग बाह्र वगैरह काटके दिक्पालोंको वलीके जैसा शांति करने कि लिए शरीरका दुकड़ा २ करके दशों दिशामें फेंक दिया॥ ६७१॥

तत्तो सो भयभीओं, धवलो मयणाण ताण पिट्ठिठिओ पभणेइ ममं रक्खह, रक्खह सरणागयं निययं ६७२ अर्थ—तदनंतर डराहुआ धवलसेठ मदनसेना मदनमंजूषाके पीछे जाके और इस प्रकारसे बोला कि मैं तुम्हारे सरणे आयाहूं मेरी रक्षा करो रक्षा करो ॥ ६७२ ॥

सरणे आयाहूं मेरी रक्षा करो रक्षा करो ॥ ६७२ ॥

ता चकेसरिदेवी पभणइ रे दुष्ठ धिट्ठ पाविट्ठ । एयाण सरणगमणेण, चेव मुकोसि जीवंतो ॥ ६७३ ॥

अर्थ—तदनंतर चकेश्वरी देवी कहे अरे दुष्ट अरे घेठा इन महा सितयोंके सरणे जानेसे तैं जीता हुआ रहा है ॥६७३॥

श्रीपालचरितम्
॥ ८६॥
अर्थ—विनयसे नम्र और आश्चर्य भया मनमें जिन्होंके ऐसी दोनों मदनाओंको चक्रेश्वरी देवी प्रसन्नता सहित ऐसा
वच्छा वल्लह तुम्हतणउ, गरुईरिन्धिसमेउ। मासिन्धिमतरिनिच्छइण, मिलिसइ धरहु म खेउ॥६७५॥
अर्थ—हे पुत्रियो तुम्हारा वल्लभ भर्तार वड़ी ऋद्धिसहित एक महीनेमें मिलेगा तुम्हारे खेद करना नहीं॥६७५॥
एम भणेविणु चक्कहरि, परिमलगुणेहिं विसाल। मयणह कंठिहिं पिक्खवइ, सुरतस्कुसुमह माल ॥६७६॥
अर्थ—इस प्रकारसे कहके चक्रेश्वरी देवी मदनसेना और मदन मंजूषा दोनों खियोंके कंठमें सुगंधगुण करके विशाल
कल्पवक्षके पर्पोंकी माला पहनाई॥६७६॥ कल्पवृक्षके पुष्पोंकी माला पहनाई ॥ ६७६ ॥ कल्पवृक्षके पुष्पोंकी माला पहनाई ॥ ६७६ ॥
तुम्हह दुटु न देखिसइ, मालह तणई पमाणि । एम भणेविणु चकहरि, देवि गई नियट्ठाणि ॥६७७॥
अर्थ—मालाके प्रभावसे तुमको दुष्ट पुरुष नहीं देखसकेगा ऐसा कहके चक्रको धारनेवाली चक्रेश्वरी देवी अपने स्थान गई यहां तीन दोहा छंद है ॥६७७॥
पभणंति तओ तिन्निवि, ते पुरिसा सरलबुद्धिणो धवलं । दिट्ठं कुबुद्धिदायग,—फलं तए एरिसविवागं ६७८

अर्थ —तदनंतर वे तीनों सरल बुद्धिवाले पुरुष धवलसे कहे हे धवल कुबुद्धि देनेवालेको ऐसा फल भया सो तुमने एयाणं च सईणं, सरणपभावेण जहिव जीवंतो। छुटोसि तहिव पावं, पुणो करंतो छहिसिऽणत्थं ६७९ अर्थ—और इन सितयों कें शरणे के प्रभावसे यद्यपि जो तें जीता बचा है तथापि और पापकर्ता हुआ अनर्थ पावेगा ॥६७९॥ जो पररमणीरमणि,—कळाळसो होइ रागगहगिहओ। जइ सो बुच्चइ पुरिसो, ता के खरकुक्कुरा अन्ने ६८० अर्थ—जो पुरुष पर स्त्रियों के साथ रमने में एक लालसा तृष्णाजिसकी ऐसा कामरागग्रहसे ग्रहीत नाम ग्रहण किया जिसने ऐसा मनुष्य रूपसे गर्दभ कुत्ते सटश कहा जावे ॥ ६८०॥

जिसा चुन कर्त नर्म जुन्म तर्म जुन्म तर्म जुन्म तर्म जान तर्म जुन्म तर्म जिसा है। जिस्सी कि द्वी ताण नराणं, जे परस्मणीण रूविमत्तेण । खुहिया हणित सर्व, कुलजससग्गापवग्गसुहं ॥६८१॥ अर्थ—उन मनुष्योंको धिकार होवो धिकार होवो जे पर स्त्रियोंके रूपमात्रसे चल चित्त भया सर्वकुल वंश स्वर्ग अपवर्गके सुलका विनाश करें हैं कुल उंचा गोत्र यश कीर्ति स्वर्ग सुल प्रसिद्ध है अपवर्ग सुल मोक्ष सुल ये न होवे ॥६८२॥ जलहों मि वहंताणं, पोयाणं जाव कड्वयितणाइं । जायाइं तओ पुणरिव, धवलो चितेइ हिययंमि ॥६८२॥ अर्थ—समुद्रमें जहाज चलता थकां कितनेक दिन भए तब औरभी धवलसेठ मनमें विचारे ॥ ६८२॥ अत्थि अहो मह पुन्नो,—द्यंत्ति जं सो उवद्दवो टलिओ। फलिया एसा य सिरी, सवावि सुहेण मजझेव ६८३

अर्थ—क्या विचारे सो कहते हैं अहो इति आश्चर्ये मेरे पुण्यका उदय है कि जिस कारणसे वह जिसका स्वरूप कि भाषाटीका-कहा वह उपद्रव टल गया और यह सर्वलक्ष्मी सुलसे मेरे सफल भई है अब मेरे विना इस लक्ष्मीका कौन स्वामी सहितम्-

कहा वह उपद्रव टल गया और यह सवलक्ष्मा सुलस मर सफल भई ह अब मर विना इस लक्ष्माका कान स्वामा है ॥ ६८३ ॥ जइ रमणीओ, ऐयाओ कहिव मन्नंति महकलत्तत्तं। ताऽहं होमि कयत्थो, इंदाओ वा समब्भिहिओ ६८४ अर्थ—जो ये दोनों स्त्रियों कोई प्रकारसे मेरी स्त्रियां हो जावे तो मैं कृतार्थ हो उथवा इन्द्रसे भी अधिक हो जइ रमणीओ, ऐयाओ कहांवे मन्नांते महकलत्ततं। ताऽहं होमि कयत्थो, इंदाओ वा समब्भिहेओ ६८४ अर्थ—जो ये दोनों स्त्रियों कोई प्रकारसे मेरी स्त्रियां हो जावे तो मैं कृतार्थ होउं अथवा इन्द्रसे भी अधिक हो जाऊं॥ ६८४॥ इय चिंतिऊण तेणं, जा दुईमुहेण पत्थिया ताओ। ता ताहिं कुवियाहिं, दुई निभिच्छिया वाढं ॥६८५॥ अर्थ—ऐसा विचारके धवल सेठने जितने दृतीके मुखसे उन स्त्रियोंकी प्रार्थना कराई उतने कोधातुर हुई दोनों मदना दूतीकी अत्यर्थ निर्भर्तसना करी अर्थात् तर्जना करी॥ ६८५॥ तहिवहु सो कामिपसायाहिट्ठिओ, नटु निम्मलविविओ। तेणज्झवसाएणं, खणंपि पावेइ नो सुक्खं ६८६ अर्थ—तथापि निश्चय कामरूप पिशाच दुष्टव्यन्तरसे आश्रित इसी कारणसे नष्ट भया है निर्मल विवेक जिसका ऐसा धवलसेठ उस अध्यवसायसे नहीं निवृत्त होवे और क्षणमात्रभी सुख नहीं पावे॥ ६८६॥ अन्नदिने सो नारीवेसं, काऊण कामगहगहिलो। मयणाणं आवासं, सयं पिवट्ठो सुपाविट्ठो॥ ६८७॥

अर्थ—अन्यदिनमें वह धवलसेट स्त्रीका वेष करके कामग्रहसे गहला भया आपही मदना श्रीपालकी स्त्रियोंके आवा-समें प्रवेश किया कैसा है धवल अतिशय पापिष्ठ है ॥ ६८७ ॥ जाव पलोएइ तिहें, ताव न पिच्छेइ ताओ मयणाओ । पुरिओ ठियाउ मालाइ,—सएण अद्दिस्सरूवाओ ॥ अर्थ—जितने उस आवासमें देखे उतने आगे रहीं भई दोनों स्त्रियोंको नहीं देखे केसी हैं दोनों स्त्रियों मालाके प्रभावसे अदृश्य भया है रूपजिन्होंका ॥ ६८८ ॥ प्रमावस अहरय मया ह रूपाजन्हाका ॥ ६८८ ॥ सो रागंधो अंधुव, जाव भमडेइ तत्थ पवडंतो । तो दासीहिं सुणउब्ब, कट्ठिओ कुट्टि ऊण वहिं ॥६८९॥ अर्थ—वह धवल कामरागसे आंधे पुरुषके जैसा इधर उधर गिरता हुआ जितने मदनाओं के आसपासमें फिरता है उतने मदानाओं की दासिओं ने कुत्तेके जैसा कूटके बाहिर निकाला ॥ ६८९ ॥ इत्तो ते वोहित्था, मग्गेणऽन्नेण निज्ञमाणावि । सयमेव कुंकुणतडे, पत्ता मासंमि किंचूणे ॥ ६९० ॥ अर्थ—इधरसे वे जहाज और मार्गसे लेजाता थकां आपहीसै कुछकम एक महीना होनेसे कुंकण तटमें प्राप्त हुए ॥६९०॥ पढमं उत्तरिऊणं, धवलो जा जाइ पाहुडिविहित्थो। रायकुलं ता पासइ, नरवरपासंमि सिरिपालं ॥६९१॥ अर्थ—अब धवल पहले जहाजसे उत्तरके भेटना लेके राजकुलमें गया राजाको जाके भेटना देवे उतने राजाके पासमें बैठाहुआ श्रीपाल कुमरको देखे॥ ६९१॥

श्रीपाल- चिरतम् । द्वा स्तर्थवाहस्स, तस्स दावेइ ग्रुरुयबहुमाणं । तंबोळं तेणं चिय, सिरिपाळेणं विसेसेणं ॥६९२॥ अर्थ—राजाभी उस सार्थवाहको श्रीपालके हाथसे विशेष सत्कार करनेके छिए ताम्बूल दिलावे॥ ६९२॥ सिरिपाळकुमारेणं, नाओ सिट्टी स दिट्टमित्तोवि । सिट्टी पुण सिरिपालं, दृहुणं चिंतए एवं ॥ ६९३॥ अर्थ—श्रीपाल कुमरने धवल सेठको देखनेसेही पहिचान लिया और सेठ श्रीपालको देखके इस प्रकारसे किन्नाने॥ ६९३॥ किन्नाने॥ ६९३॥ किन्नाने॥ ६९३॥ किन्नाने॥ ६९३॥ किन्नाने ॥ किन्नाने ॥ ६९३॥ किन्नाने ॥ क धि द्धी किं सो एसो, सिरिपालो धवलसिट्ठिणो कालो। किंवा तेण सरिच्छो अन्नोपुरिसो इमो कोऽवि ६९४ अर्थ—क्या विचारे सो कहते हैं धिकार होवो धिकार होवो वह यह श्रीपाल है कैसा है श्रीपाल धवलसेठके काल सहश्च है अथवा श्रीपालके तुल्य यह कोई दूसरा पुरुष है ॥ ६९४ ॥

ठाऊण खणं नरवर,—सहाइ जा उद्विओ धवलिसिट्ठी। पडिहाराओ पुच्छइ, थइयाइत्तो इमो को उ६९५ अर्थ—ऐसा विचारके धवलसेट क्षणमात्र राजाकी सभामें बैठके जितने उठा उतने बाहर आके द्वारपालसे पूछे यह ताम्बूल देनेका अधिकारी कौन पुरुष है ॥ ६९५ ॥

तान्बूल दनका आवकारा कान पुरुष है। र २२ ॥ तेणं कहिओ सबोवि तुस्स कुमरस्स चरियवुत्तंत्तो । तं सोऊणं सिट्टी, जाओ वजाहउब दुही ॥६९६॥ अर्थ—उस प्रतिहारने कुमरका सर्ववृतान्त कहा उस वृतान्तको सुनकर सेठ वज्राहतके जैसा दुःखी भया ॥ ६९६॥

चिंतेइ हिययमज्झे, ही ही विहिविलिसिएण विसमेण, जं जं करोमि कर्जं, तं तं मे होइ विवरीयं ६९७ अर्थ—तब हृदयमें सेट विचारे ही ही इति खेदे विषम विधिके विलाससे जो जो कार्य मैं करूं हूं वह सब विपरीतही

एसो सो सिरिपालो, जाओ जामाउओ निरंदस्स । ग्रुरुओ ममावराहो, किं होही तं न याणामि ६९८ अर्थ—यह श्रीपाल राजाका जमाई हुआ है मेरा अपराधतो बड़ा है अब क्या होगा सो नहीं जानू ॥ ६९८॥

तहिव नियकज्जविसए, धीरेण समुज्झमो न मुत्तब्बो । जं सम्ममुज्जमंताण, पाणिणं संकए हु विही ६९९ अर्थ—तथापि बुद्धिमानको अपने कार्यमें अच्छी तरहसे उद्यम करना अर्थात् उद्यम छोड़ना नहीं जिस कारणसे सम्यक् उद्यमवान् प्राणियोंसे निश्चय विधिः देवभी शंकता है ॥ ६९९ ॥

एवं सो चिंतंतो, जा पत्तो निययंमि उत्तारे। ता तत्थ गीयनिउणं, डुंबकुटुंबं च संपत्तं॥ ७००॥ अर्थ—बह धवल सेठ इस प्रकारसे विचारता हुआ जितने अपने उतारे पहुंचा उतने वहां गीत कलामें निपुण डुं मोंका कुटुंब आया ॥ ७०० ॥

सो ताण गायणाणं, जाव न चिंताउलो दियइ दाणं । ता डुंबेणं पुट्टो, रुट्टो किं देव अम्हुवरिं ॥७०१॥

अर्थ—वह धवल चिंतासे आकुल हुआ जितने उन गायनोंको दान नहीं देवे उतने डुंबने सेटसे कहा हेदेव हे महाप्रांत ज्वा हमारेपर नाराज भयाहो इससे दान नहीं देवो हो ॥ ७०१ ॥

एगंते डुंबं पइ सो जंपइ, देमि तुज्झ भूरिधणं। जइ इक्कं मह कर्ज, करेसि केणवि उवाएणं ॥७०२॥
अर्थ—यह डुंमका वचन सुनके सेट एकान्तमें डुंमसे कहे तेरेको बहुत धन देउं जो कोई उपाय करके एक मेरा कार्य करे ॥ ७०२ ॥
डुंबोवि भणइ पढमं, कहेह मह केरिसं तयं कर्जा। जेण मए जाणिजइ, एयं सज्झं असज्झं वा ७०३
अर्थ—यह धवलका वचन सुनके डुंब बोला पहले मेरेको वह कैसा कार्य है सो कहो जिससे जाननेमें आवे वह कार्य साध्य है अथवा असाध्य है ॥ ७०२ ॥
धवलो भणेइ जो,नरवरस्स जामाउओ इमो अत्थि। जइ तं मारेसि तुमं, तो तुह मुहमग्गियं देमि ७०४
अर्थ—तब धवल सेट कहे जो यह राजाका जमाई है जो तें राजाके जमाईको मार देवे अर्थात् प्राणरिहत करे तो में जो मांगेसो देउं ॥ ७०४ ॥
इंबो भणेइ तं मारणंमि, इक्कुत्थि एरिसोवाओ। जं अन्नायकुलं तं, पयडिस्सं एस इंबुत्ति ॥ ७०५ ॥

For Private and Personal Use Only

अर्थ—डुंब कहे उस राजाके जमाईको मारनेमें एक ऐसा उपाय है जिस कारणसे राजाके जमाईका कुल याने वंश किसीने जाना नहीं है में उस राजाक जमाइका डाम करक अगद करूमा माउन मा निर्मात किसीने जाना नहीं है में उस राजाक जमाइका डाम करक अगद करूमा माउन मा निर्मात किसी विश्व वि मंतेण तेण तुट्टो, धवलो अप्पेइ कोडिमुह्लंपि । नियकरमुद्दारयणं, वेगेणं तस्स पाणस्स ॥ ६०७ ॥ अर्थ—उस विचारसे संतुष्टमान भया धवल कोड़ कीमतकी अपने हाथकी मूदड़ी डोंमको शीघ्र देवे ॥ ७०७ ॥ तुट्टो सोवि हु डुंबो सकुडुंबो जाइ निवगवक्खस्स। हिट्टिममहीइ चिट्टइ, गायंतो गीयमइमहुरं॥ ७०८॥ अर्थ—वह डोंमभी मूदड़ी पाके बहुत खुशी भया कुटुंब सहित राजभवनके द्वार जावे अत्यन्त मधुर गीत गाता हुआ राजाके गोखड़ेकी नीचेकी भूमिमें रहे॥ ७०८॥ ताणं कोमलकंद्धुब्भवेण, गीएण हरियमणकरणो। राया भणेइ भो भो, जं मग्गह देिम तं तुज्झ ॥७०९॥ अर्थ—उन डोंमोंका कोमल कंटसे उत्पन्न भए गीतसे हरण भया मन और श्रोत्रइन्द्रिय जिसका ऐसा राजा वसु-पाल बोले अहो गायनो जो तुम मांगो सो मैं तुमको देउं॥ ७०९॥

श्रीपाल चिरतम् ॥ ९०॥ अर्थ—तव डॉम कहे हे स्वामिन् में सर्वत्र बहुत दान पाताहूं किंतु मान सत्कार कहांभी नहीं मिले है इस लिए हे अर्थ—तव डॉम कहे हे स्वामिन् में सर्वत्र बहुत दान पाताहूं किंतु मान सत्कार कहांभी नहीं मिले है इस लिए हे महाराज जो आप संतुष्टमान भए हो तो मेरेको मान देवो॥ ७१०॥ राया भणेइ माणं, जस्साहं देमि तस्स तंबोलं। दावेमिमिणा जामाउएण, पाणिप्पणावि॥७११॥ अर्थ—राजा कहेहै जिसको में मान देवं हुं उसको यह पाणोंसेभी प्यारा जमाईके हाथसे तांवृल दिलाताहूं॥७११॥ अर्थ—राजा कहेहै जिसको में मान देवं हुं उसको यह पाणोंसेभी प्यारा जमाईके हाथसे तांवृल दिलाताहूं॥७११॥ अर्थ—तव कुटुंवसहित डॉम राजाको नमस्कार करके बोला हे महाराज हमारेपर महाप्रसाद याने वेसी प्रसन्नता करो तव राजाकी आज्ञासे कुमर श्रीपाल जितने तांवृल देवे॥ ७१२॥ ताव सहसत्ति एगा, बुड्डी डुंबी कुमारकंटोमि। लगेइ धाविऊण, पुत्तय पुत्तय कओ तंसि॥ ७१३॥ अर्थ—उतने अकस्मात तत्काल एक वृद्धी डॉमनी दौडके कुमरके कंटमें लगी हे पुत्र हे पुत्र तें यहां कहां से है कहां से आया है ऐसा वचन बोलती॥ ७१३॥ कंट विलग्गा प्रभणइ,हा वच्छय कित्तियाउ कालाओ। मिलिओऽसि तुमं अम्हं,करथ य भिमओसि देसंमि

अर्थ—और कंटमें लगी भई कहनेलगी हा इतिखेदे हे वत्स कितने कालसे तें हमको मिला है और किस २ देशमें किरा है ॥ ७१४ ॥

सुणिओसि हंसदीवे, पत्तो कुसलेण पवहणारूढो । तत्तो इह संपत्तो, कहं कहं पुत्तय कहेसु ॥७१५॥ अर्थ—हे पुत्र तें जहाजपर वैठके कुशलसे हंसद्वीप पहुंचा ऐसा हमने सुनाथा वहांसे किस प्रकारसे यहां आया सो हमसे कह ॥ ७१५ ॥

एगा भणेइ भित्तज्ञओसि, अन्ना भणेइ भायासि। अवरा कहेइ महदेवरोसि, पुन्नेण मिलिओसि ७१६ अर्थ—एक डोमनी कहे मेरा भतीजा है भाईका पुत्र है और डोमनी कहे मेरा भाई है और कहे मेरा देवर है पुण्यसे मिला है।। ७१६।। इंबो भणेइ सामिय, मह लहुभाया इमो गओ आसि। संपइ तुम्ह समीवे ठिओविनो लिक्खओ सम्मं।। अर्थ—अब डोम राजाके सामने देखके बोला हे स्वामिन् यह मेरा छोटाभाई कहांभी चला गयाथा इस वक्त में आपके पासमें बैठा हुआ अच्छी तरहसे पहिचाना नहीं।। ७१७॥

पुष्ण कारणेणं, माणिससेणं अणािवओ पासे। उवलिखओ य सममं बहुलक्खणलिखओ एसो ७१८

श्रीपाल-चिरतम् ॥ ९१॥ श्रीपाल-चिरतम् ॥ ९१॥ श्रीपाल-चिरतम् ॥ ९१॥ श्रीपाल-चिरतम् ।। ९१॥ श्रीपाल-चिर्मत् व्यक्तं क्ष्मणं करके युक्त है हे महाराज हम तो डोम हैं हमको कोई मान देवे तो हम क्या बडे हो जावें डोम तो डोमही रहे परंतु इसको पहिचाननेके लिए यह प्रपंच किया सो क्षमा करें ॥ ७१८॥ राया चिंतेइ मणे, ही ही विद्यालियं कुलं मज्झ । एएणं पावेणं, तो एसो झत्ति हंतवो ॥ ७१९॥ अर्थ-यह डोमका बचन सुनके राजा मनमें विचारे हीही इति खेदे इस पापी दुष्टने मेरे कुलको विटालिदया दोष सहित किया इस कारणसे यह पापीकों शीघ्र मारना योग्य है॥ ७१९॥ सहित किया इस कारणसे यह पापीको श्रीघ्र मारना याग्य ह ॥ ७४५ ॥
नेमित्तिओ य बंधाविऊण, आणाविओ नरवरेणं । भणिओ रे दुट्ट इमो, मायंगो कीस नो कहिओ ७२० अर्थ—और नेमित्तिएको राजाने बंधवाके बुलवाया और कहा अरे दुष्ट यह मातंग डोम कैसे नहीं कहा ॥ ७२० ॥ नेमित्तिओवि पभणइ, नरवर एसो न होइ मायंगो । किंतु महामायंगा, —हिवई होही न संदेहो ७२१ अर्थ—नेमित्तियाभी बोला हे महाराज यह मातंग चांडाल नहीं है किंतु महामातंग नाम महागजोंका अधिपति स्वामी होगा इस अर्थमें संदेह नही है ॥ ७२१ ॥ अर्थ अडिट्रा, निययाणं जाव सुहडाणं ॥ ७२२ ॥ स्वामी होगा इस अर्थमें संदेह नही है ॥ ७२१ ॥ गाढ्यरं रुट्टेणं, रन्ना नेमित्तिओ कुमारो य । हणणत्थं आइट्टा, निययाणं जाव सुहडाणं ॥ ७२२ ॥

अर्थ—तदनंतर अत्यन्त कोधातुर हुए राजाने नेमित्तिया और कुमरको मारनेके छिए अपने सुभटोंको आज्ञा दिया॥७२२॥ किम्यणमंजरीबि हु, सुणिऊण समागया तिहं ज्झत्ति। पभणेइ ताय किमियं, अवियारियकज्जकरणंति॥

र्भ — किम्पण माजाके पासमें आई आके कहनेछगी पिताजी यह

अर्थ—उतने मदनमंजरी राजकन्यामी यह वार्ता सुनके शीघ्र राजाके पासमें आई आके कहनेलगी पिताजी यह विना विचारा कार्य क्या करते हैं ॥ ७२३ ॥

आयारेणवि नज्झइ, कुलंति लोएवि गिजाए ताय। लोओत्तरआयारो, किं एसो होइ मायंगो ॥७२४॥

अर्थ—और क्या कहे सो कहते हैं हे तात आचारसेंभी कुलजाना जावे हैं ऐसा लोकमें कहते हैं आचारः कुलमा-ख्याति इस बचनसे सबलोगोके उपरिवर्ति प्रधान आचार वर्ताव जिसका ऐसा यह कुमर क्या चंडाल होवे अपित

तो पुछइ नरनाहो, कुमरं भो नियकुलं पयासेसु। ईसि हसिऊण कुमरो, भणइ अहो तुज्झ च्छेयत्तं ७२५ अर्थ—तदनंतर राजा कुमरको पूछे अहो कुमार अपना कुल कहो तब कुमर थोड़ा हंसके कहे अहो आप बहुत विचक्षण हैं जिस कारणसे पहले अपनी पुत्री देके पीछे कुल पूछते हैं॥ ७२५॥ अहवा नरवर! तुमए, एयं अक्खाणयं कयं सच्चं। पाऊण पाणियंकिर, पच्छा पुच्छिज्जए गेहं॥७२६॥

अर्थ—अथवा हे राजन् आपने यह आख्यानक ठौकिक कथन सत्य किया कि पहले पानीपीके पीछे घर पूछना अर्थात कोई ब्राह्मण वगैरह मारवाड देशमें चला जाताथा बहुत तृषालगी वादमें किसीसे कहा भाई पानी पिलाओ उसने पानी पिलाओ उसने पानी पिलाया बाद स्थाल हुआ और पूछा घर किसका है उसने कहा ढेड़का है हत्यादि ॥ ७२६ ॥ अर्थ—जो मेरा कुल अवणकी इच्छा होवे तो यह करिए कि अपनी सेना तथ्यार करो जिससे मेरा हाथ कुल कहेगा अपनी जिन्हासे कुल कहना यहतो लजाकारी है ॥ ७२७ ॥ अहवा पवहणमज्झ,—ठियाओ जा संति दुन्निनारीओ। आणाविऊण ताओ, पुच्छेह कुलंपि जइ कर्जं ७२८ अर्थ—अथवा जहाजमें दो स्त्रियों हैं उन स्त्रियोंको यहां बुलाके जो आपके कार्य होवे तो कूल पूछो ॥ ७२८ ॥ अर्थ—अथवा जहाजमें दो स्त्रियों हैं उन स्त्रियोंको यहां बुलाके जो आपके कार्य होवे तो कूल पूछो ॥ ७२८ ॥ अर्थ—तदनंतर राजा आश्चर्ययुक्त भया घवल सार्यवाहको बुलाके पूछे अहो सेठ कहो जहाजमें क्या दो स्त्रियों हैं ॥७२९॥ अर्थ—वह राजाका बचन सुनके धवलसेट जितने स्थाममुख होगया उतने राजाने उन स्त्रियोंको बुलानेके वाले अपने प्रधान पुरुषोंको आज्ञा दिया ॥ ७३०॥ अपने प्रधान पुरुषोंको आज्ञा दिया ॥ ७३० ॥

तेहिं गंतूण तओ तिहं, भिणयाओ नरविरंद्ध्याओ। पइणो कुलकहणत्थं, वच्छा आगच्छह दुयंति ७३१
अर्थ—वह प्रधान पुरुष वहां जाहाजोंमें जाके उन राजपुत्रियोंको इस प्रकारसे कहा हे वत्से पुत्रियो तुम अपने पितका कुल कहनेके लिये शीघ्र आओ॥ ७३१॥
तं सोऊणं ताओ, मयणाओ हरिसियाओ चित्तंमि। तेण मणवछहेणं, नूणं आणाविया अम्हे ॥७३२॥
अर्थ—वह प्रधान पुरुषोंका वचन सुनके दोनों मदना मनमें हिंपत भई और विचारतीं भई अपने भर्तारने अपनेको बुलाई हैं ऐसा विचारके हिंपत भई॥ ७३२॥
सिवियाए चित्रयाओ, संपत्ता नरविरंद्धभवणंमि। दृद्धण पाणनाहं, जाया हरिसेण पिडहत्था॥७३३॥
अर्थ—तदनंतर पालकीमें बैठके दोनों खियों राजा वसुपालके भवनमें प्राप्त भई और वहां अपने प्राणनाथ भर्तारको

अथ—तद्गतर पालकाम बठक दाना ।स्त्रपा राजा वसुपालक नवनम आत नइ जार वहा अपन आणनाथ मतारका देसके आनंद ब्याप्त भई अर्थात् परिपूर्ण आनंद पाया ॥ ७३३ ॥
रन्नावि पुच्छियाओ, वच्छा भंजेह अम्हसंदेहं । को एसो वुत्तंतो, कहेह आमूलचूलंति ॥ ७३४ ॥
अर्थ—राजानेभी इस प्रकारसे पूछा हे वत्से हे पुत्रियो तुम हमारा संदेह दूरकरो यह क्या वृतान्त है यह क्यावात है मूलसे लेके चूल पर्यंत कहो ॥ ७३४ ॥

श्रीपाल-चरितम् ॥ ९३॥ ॥ ९३॥ श्रीपाल-वाह्याहरधूया, कहेइ सबंपि कुमरचरियं जा। ताव निवो साणंदो, भणइ इमो भइणिपुत्तो मे ७३५ अर्थ—तदनंतर विद्याधरराजाकी पुत्री मदनमंजूषाने सर्व कुमरका चरित कहा कुमर समुद्रमें पड़ा वहां तक उतने वसुपाल राजा आनंदसहित बोले यहकुमर मेरी विहनका पुत्र भानजा है ॥ ७३५॥ गाढपरं संतुट्टो, राया कुमरस्स देई बहुमाणं। ढुंबं सकुडंबंपि हु, ताडावइ गरूयरोसेण ॥ ७३६॥ अर्थ—तदनंतर अत्यन्त संतुष्टमान भया राजा कुमरका बहुत सत्कार करे और बहुत क्रोधसे कुटुंबसिहत डोमको कुप्ते सेवकोंके पास पिटवावे॥ ७३६॥ डुंबो कहेड़ सचं, सामिय कारावियं इमं सवं। एएण सत्थवाहेण, देव दाऊण मज्झ धणं ॥ ७३७॥ अर्थ—तब डोम सत्य कहे हे स्वामिन् हे देव हे महाराज इस सार्यवाणिएने मेरेको धन देके यह सर्व अकार्य कराया सर्व अनर्थका मूल यह सार्थवानिया है॥ ७३७॥ कराया सर्व अनर्थका मूल यह सार्थवानिया है ॥ ७३७ ॥ तो राया धवलंपि हु, बंधावेऊण निविडबंधेहिं । अप्पेइ मारणत्थं, चंडाणं दंडपासीणं ॥ ७३८ ॥ अर्थ—तदनंतर राजा धवल सार्थवाहको मजबूत बंधनोंसे बंधवाके अत्यन्त दुष्ट कोटवाल पुरुषोंको मारनेके वास्ते

कुमरो निरुवमकरुणारस, –वसओ नरवराउ कहकहि । मोयावइ तं धवलं, डुंबं च कुडुंबसंजुत्तं ३९ कि अर्थ – कुमार श्रीपाल उपमा रहित जो करुणारस उसके वशसे धवलसेठको कोईप्रकारसे राजाके पास छुडवावे और कुडुंबसिहत डोमकोभी छुडवावे ॥ ७३९ ॥

मायंगाहिवइत्तं, पुट्टो नेमित्तिओ कहइ एवं । मायंगा नाम गया, तेसिं एसो अहिवइत्ति ॥ ७४०॥ अर्थ—वादमें राजाने नेमित्तिएको मातंगाधिपतिका अर्थ पूछा तव नेमित्तिया कहे हे महाराज महामातंग नाम हाथी उन्होंका अधिपति नाम स्वामी ॥ ७४०॥

संपूइ जण राया, सम्मं नेमित्तियं विसज्जेइ । भयणीसुयंति धूया, वरंति कुमरं च खामेइ ॥ ७४१ ॥ अर्थ—राजा वसुपाल नेमित्तिएका वस्त्राभरणीदिकसे सत्कार करके विसर्जन करे और कुमर बहिनका पुत्र है और पुत्रीका वर है इस कारणसे विशेष करके खमावे ॥ ७४१ ॥

राया भणेइ पिच्छह अहह अहो उत्तमाण नीयाणं । केरिसमंतरमेयं, अमियविसाणंव संजायं ७४२ अर्थ—राजा कहे अहह इति खेदे अहो इति आश्चर्ये अहो लोको तुम देखो देखो उत्तम पुरुष और नीच पुरुषोंमें यह कितना अंतर है अमृत और जहरके जैसा अंतर है ॥ ७४२ ॥

श्रीपाल-चिरतम् ॥ ९४॥ श्रीपाल-चिरतम् ॥ ९४॥ श्रीपाल-धवलो करेइ एरिस,—मणत्थमुवगारिणोवि कुमरस्स । कुमरो एयस्स अणत्थ—कारिणो कुणइ उवयारं अर्थ—धवलसेट उपकारी कुमरपर ऐसा अनर्थ करे है कुमर अनर्थ करनेवाला धवलसेटका उपकार करे है ॥ ७४३॥ जह जह कुमरस्स जसं धवलं, लोयंमि वित्थरइ एवं। तह तह सो धवलोवि हु, खणे खणे होइ कालमुहो ४४ अर्थ—जैसे २ कुमरका उन्वल यश लोकमें कथित प्रकारसे विस्तार पावे वैसा २ निश्चयकरके धवलसेटभी क्षण २ तहि कुमारेणं सो, आणीओ नियगिहं सबहुमाणं। भुंजाविओ य विस्सामिओ य, नियचंदसालाए ४५ अर्थ—तथापि कुमरने बहुमान सिहत अपने घर जैसे बने वैसा बुलाया नाना प्रकारका भोजन कराया बाद चन्द्र शाला अपने घरके ऊपरकी भूमिमें रक्खा॥ ७४५॥ शाला अपने घरके उपरकी भूमिमें रक्खा ॥ ७४५ ॥
तत्थ द्विओ सो चिंतइ, अहह अहो केरिसो बिही वंको। जमहं करेमि कज्जं, तं तं मे निएफलं होइ ७४६
अर्थ—वहां चन्द्रशालामें रहा हुआ वह धवलसेट विचारे क्या विचारे सो कहते हैं अहह इति खेदे अहो इति
आश्चर्ये विधि, देव मेरेपर कैसा वक है मैं जो २ कार्य कर्ता हूं वह २ मेरे निष्फल होवे है ॥ ७४६ ॥
एवं ठिएवि, अज्जवि, मारिज्जइ जइ इमो मए कहिव । ता एयाओ सिरीओ, सवाओ हुंति महचेव ७४७

अर्थ—ऐसे रहतेभी जो इस कुमरको मैं अबीभी कोई प्रकारसे मारूं अर्थात् प्राण रहित करूं तो यह छक्ष्मी मेरेही होवे ॥ ७४७ ॥

होवे ॥ ७४७ ॥
अन्नं च इत्थ सत्तम,—भूमीए सुत्तओ इमो इको । ता हिणऊणं एयं, रमणीवि बलावि माणेमि ७४८
अर्थ—औरभी यहां सातवीं भूमिपर कुमर इकेला सोता है इस लिए इस कुमरको मारके इसकी तीनों स्त्रियोंको जबरदस्तीसे में भोगवूं ॥ ७४८ ॥
इय चिंतिऊण हिट्टो, धिट्टो दुट्टो निकिट्टपाविट्टो । असिवेणुं गहिऊणं, पहाविओ कुमरवहणत्थं ॥७४९॥
अर्थ—ऐसा विचारके वह धवल हिष्ति होके छुरी लेके कुमरको मारनेके लिए चला कैसा है धवल धेठा है और दुष्ट

जबरदस्तीसे में भोगवूं ॥ ७४८ ॥
इय चिंतिऊण हिट्टो, धिट्टो दुट्टो निकिट्टपाविट्टो । असिवेणुं गहिऊणं, पहाविओ कुमरवहणत्थं ॥७४९॥
अर्थ—ऐसा विचारके वह धवल हिंत होके छुरी लेके कुमरको मारनेके लिए चला कैसा है धवल धेठा है और दुष्ट है इसी कारणसे निकृष्ट नाम अधम है और अतिशय पापी है ॥ ७४९ ॥
उम्मग्गमुक्कपाओ, पिंडओं सो सत्तमाओं भूमीओं । छुरियाइ उरे विद्धो, मुको पाणेहिं पावुत्ति ७५० अर्थ—भय और उतावलके वशसे उन्मार्गमें चढ़ते पग डिगगया सातवीं भूमिसे गिरा अपने हाथमें रही भई छुरी यह पापी है ऐसा करके मानो पेटमें प्रवेश करगई अर्थात् प्राणोंसे रहित भया ॥ ७५० ॥
सो सत्तमभूमीओ, पिंडओं पत्तो य सत्तिमं भूमिं । नरयस्स तारिसाणं, समित्थ ठाणं किमन्नत्थ ॥७५१॥

अर्थ—वह धवल सातवीं भूमिसे गिरा और सातवीं नरक पृथ्वी याने सातमी नरक गया यह अर्थयुक्त है जिसकारशिष्म ।। १५ ॥

अर्थ—वह धवल सातवीं भूमिसे गिरा और सातवीं नरक पृथ्वी याने सातमी नरक गया यह अर्थयुक्त है जिसकारशिक्ष से से हुष्टोंको सातमी नरकसे और कौन ठिकाना है अपि तु कोई नहीं ॥ ७५२ ॥

तं दहूण पभाए, लोओ चिंतेइ इमाइ चिट्ठाए । कुमरहणणत्थमेसो, नज्जइ आहाविओ नूणं ॥७५२॥

अर्थ—प्रभातमें लोक अपने हाथकी छुरीसे मराहुआ धवलको देखके विचारे निश्चय इस चेष्टासे धवल कुमरको

मारनेके लिए उपर चढा है और गिरके मरगया ॥ ७५२ ॥

अहह अहो अहमत्तं, एयस्स कुनेरसिट्ठिणो नूणं । जो उवयारिकपरे, कुमरेवि करेइ वहबुद्धि ॥ ७५३॥

अर्थ—और क्या विचारे सो कहते हैं अहह इति खेदे अहो इति आश्चर्ये इस कुनेरसेठका अधमत्व आश्चर्यकारी है

कैसे सो कहते हैं निश्चय उपकार करनेमें तत्पर ऐसे कुमरपर यह दुष्ट मारनेकी बुद्धि करता है ॥ ७५३॥

एएणं पावेणं, जो दोहो चिंतिओ कुमारस्स । सो एयस्सिव पिंडिओ, अहो महप्पाण माहप्पं ७५४

अर्थ—इस पापी कूर धवलने जो कुमरका द्रोह विचारा वह इसीहीपर पड़ा और महापुरुषोंका माहात्म्य आश्चर्यकारी है ॥ ७५४॥

अर्थ—इस पापी कूर धवलने जो कुमरका द्रोह विचारा वह इसीहीपर पड़ा और महापुरुषोंका माहात्म्य आश्चर्यकारी है ॥ ९५॥

कुमरोवि हु तचरियं, चिंतंतो सोइऊण खणमिकं । काऊण पेयकिचं, दावेइ जलंजलिं तस्स ॥७५५॥

अर्थ—कुमरभी धवछसेठका चरित आचार विचारता हुआ क्षणमात्र सोच करके उसका मृतककार्थ अग्निसंस्का-रादि करके उसको जलांजलि दिलावे ॥ ७५५ ॥ वरबुद्धिदाइणो जे, मित्ता धवलस्स आसि तिन्नेव । ते सवाइ सिरीए, क्रमरेणहिगारिणो ठविया ॥७५६॥ 💲 अर्थ—प्रधानबुद्धिके देनेवाले धवलके तीनमित्रोंको कुमरने धवल सम्बन्धी सर्व लक्ष्मीका अधिकारीकिया ॥ ७५६ ॥ 🕏 मयणातिगेण सहिओ, कुमरो तत्थ ट्विओ समाहीए। केवलसुहाइ मुंजइ, मुणिब्ब गुत्तितयसमेओ ५७ हैं अर्थ—तीन मदनासहित कुमर उस नगरमें समाधिसे रहा हुआ केवल सुख भोगवे किसके जैसा तीनगुप्ति मन, वचन, कायगुप्तिसहित जैसे मुनि सर्व सुख भोगवे वैसा यहभी॥ ७५७॥ अन्नदिणे सो कुमरो, रयवाडीए गओ सपरिवारो। पिच्छइ एगं सत्थं, उत्तरियं नयरउजाणे ॥७५८॥ अर्थ—अन्य दिनमें परिवारसिंहत कुमर राजवाड़ी गया हुआ नगरके उद्यानमें एक सथवाड़ा उतरा हुआ देखे ७५८ हैं जो तत्थ सत्थवाहो, सोवि हु कुमरं समागयं दहुं। घित्तूण भिटणाइ, पणमइ पाए कुमारस्स ७५९ हैं अर्थ—जो वहां सार्थवाह है वह कुमरको आया भया देखके भेटना छेके कुमरको नमस्कार किया यानें भेट

कुमरेण पुच्छिओ सो, सत्थाहिव!आगओ तुमं कत्तो। पुरओवि कत्थ गच्छिसि, किं कत्थिवि दिट्टमच्छिरियं किं भाषाटीका-अर्थ—कुमरने सार्थवाहसे पूछा हे सार्थपते तैं कहांसे आया है आगे कहां जाता है कहांभी कोई आश्चर्य जो देखाहो तो कहो॥ ७६०॥

तो भणइ सत्थवाहो, कंतीनयरीओ आगओ अहयं। गच्छामि कंबुदीवं, निसुणसु अच्छेरयं एयं ७६१ अर्थ—तव सार्थवाह कहे में कंती नगरीसे आया हूं कंबुद्धीप जाता हूं मार्गमें आश्चर्य देखा सो सुनो ॥ ७६१ ॥ इत्तो य जोयणसए, कुंडलनयरं समित्थि विक्खायं। तत्थित्थि गुरुपयावो, राया सिरिमगरकेउत्ति ७६२ अर्थ—इस नगरसे सो योजन दूर प्रसिद्ध कुंडलपुर नामका नगर है वहां महाप्रताप जिसका ऐसाश्री मकरकेतु नामका राजा है ॥ ७६२ ॥

तस्स कप्पूरितलया देवी कप्पूरिवमलसीलगुणा, । तकुच्छिभवा सुंदर,-पुरंदरक्खा दुवे पुत्ता ॥७६३॥ क्रि अर्थ—उस राजाके कर्पूरितलका नामकी रानी है कैसी है कपूरके जैसा निर्मल सीलगुण जिसका उसकी कुक्षिमें करपत्ति जिन्होंकी ऐसें सुंदर पुरंदर नामके दो पुत्र है ॥ ७६३॥ ताण उविर च एगा, पुत्ती गुणसुंद्रिति नामेणं । जा रूवेणं रंभा, बंभी य कला कलावेणं ॥७६४॥

अर्थ-उन पुत्रोंके उपर एक गुणसुंदरी नामकी पुत्री है रूपलावण्य सौंदर्य करके वह कन्या रंभा देवाङ्गनाके तुल्य है और कलाके समूहसे ब्राह्मी सरस्वतीके तुल्य है ॥ ७६४ ॥ तीए कया पड्झा, जो मं वीणाकलाइ निज्जिणइ । सो चेव मज्झभत्ता, अन्नेहिं न किंपि मह कर्जं ७६५ अर्थ-उन कन्याने प्रतिज्ञा करी है जो पुरुष वीणा बजानेकी कलामें मेरेको जीते उसीको भर्तार करना और पुरुषसे तं सोऊणं पत्ता, तत्थ निरंदाण नंदणाणेगे । वीणाए अब्भासं, कुणमाणा संति पइदिवसं ॥ ७६६ ॥ अर्थ—वह प्रतिज्ञा सुनके उस नगरमें बहुत राजपुत्र आए है निरंतर वीणाका अभ्यास करें हैं ॥ ७६६ ॥ मासे मासे तेसिं, होइ परिकखा परं न केणावि । सा वीणाए जिप्पइ, पच्चक्खसरस्सईतुछा ॥७६७॥ अर्थ—महीने २ में उन राजकुमरोंकी परीक्षा होवे है परन्तु किसी राजपुत्रने उसकन्याको वीणा वजानेमें नहीं जीती कैसी है कन्या साक्षात् सरस्वतीके तुल्य है ॥ ७६७ ॥ एगपरिक्खादिवसे, दिट्ठा सा तत्थ देव अम्हेहिं। रमणीण सिरोरयणं, सा पुरिसाणं तुमं देव ७६८ क्ष्रिं अर्थ-एक परीक्षाके दिनमें वह राजपुत्री हमनेभी देखी परन्तु हम ऐसा जाने हैं हे देव हे महाराज सब स्त्रियोंके शिरो रत्न आप हो॥ ७६८॥

श्रीपाल-चरितम् ॥ ९७॥ श्रीपाल-चरितम् ॥ ९७॥ श्रीपाल-अर्थ—यद्यपि नहीं संभवे है तुम्हारे दोनोंका सम्बन्ध तथापि कोई प्रकारसे सम्बन्ध होवे तव हे महाराज प्रजापित विधाताका तुम दोनोंके रूप रचनेका प्रयास सफल होवे॥ ७६९॥ तं सोऊणं कुमरो, सत्थाहिवइं पसत्थवत्थेहिं। पहिराविऊण संझा,-समए पत्तो नियावासं॥७७०॥ अर्थ—वह पूर्वोक्त सुनके कुमर सार्थ पितको प्रशस्त वस्त्र पहराके संध्या समय अपने आवास आए॥ ७७०॥ चिंतेइ तओ कुमरो, कह पिक्खिस्सं क्रुऊहलं एयं। अहवा नवपयझाणं, इत्थ पमाणं किमन्नेणं ॥७७१॥ अर्थ—तदनंतर कुमर विचारे यह कौतुक कैसे देखूंगा अथवा इस कार्यमें अर्हदादि नवपदोंका ध्यानही प्रधान है और विचारसे क्या प्रयोजन है।। ७७१॥ इय चिंतिऊण सम्मं, नवपयझाणं मणंमि ठावित्ता । तह झाइउं पवत्तो, क्रमरो जह तक्खणा चेव ७७२ अर्थ—ऐसा विचारके सम्यक् नवपदोंका ध्यान मनमें स्थापके कुमर श्रीपाल उस प्रकारसे ध्यान करना सुरू किया जिससे तत्कालही ॥ ७७२ ॥

सोहम्मकप्पवासी, देवो विमलेसरो समणुपत्तो । करकलिउत्तमहारो, कुमरं पइ जंपइ एवं ॥७७३॥

अर्थ—सौधर्मदेवलोकमें रहनेवाला विमलेश्वर नामका देव वहां आया हुआ कुमरसे इस प्रकारसे कहे कैसा है देव

इच्छाकृतिव्योंमगतिः कलासु, प्रौढिर्जयः सर्वविषापहारः । कंठस्थिते यत्र भवत्यवद्यं, कुमार! हारं तममुं ब्रहाण ॥ ७७४ ॥

अर्थ— हे कुमर तुम इस हारको ग्रहणकरो यह हार कंठमें रहनेसे यह पांच कार्य निश्चयसे होवे है वही कहते हैं कैं जैसी इच्छा करे वैसा रूप बनाबे १ और आकाशमें गतिनाम गमन २ सर्वकलामें निपुणपना २ शत्रुओंको जीतना ४

एवं वदन्नेव स सिद्धचका,-धिष्टायकः श्रीविमलेशदेवः। क्रमारकंठे विनिवेश्य हारं जगाम धामाद्भतमात्मधाम ॥ ७७५ ॥

अद्भुत ऐसा खर्ग गया ॥ ७७५ ॥ तं लद्भूण कुमारो, निर्चितो सुत्तओ अह पभाए । उट्टंतोवि हु कुंडल,-पुर गमणं नियमणे कुणइ ७७६ अर्थ-वह श्रीसिद्धचक्रका अधिष्ठायक श्रीविमलेश्वर नामका देव कुमरके कंठमें हारपहराके अपना धाम तेजसे

श्रीपाल-चिरतम् ॥ ९८॥ १ अर्थ—हारके प्रभावसे किया है वामनरूप जिसने ऐसा कुमर उस नगरमें गया हुआ वीणा है हाथमें जिन्होंके ऐसे ह्यंगार्सहित राजकुम्रोंको देखे॥ ७७७॥ कुमरो वामणरूवो, राया कुमारे हिं सहगओ तत्थ । जत्थितथ उवज्झाओ, वीणासत्थाइं पाढंतो ७७८ अर्थ—कुमर वामनेका रूप किया हुआ और राजकुमारोंके साथ जहां वीणाशास्त्र पढ़ानेवाला उपाध्याय है वहां जह जह उवज्झायं पइ, वामणओ कहइ मंपि पाढेह । तह तह रायकुमारा, हसंति सबे हडहडित ৩৩९ अर्थ—जैसे २ वामन उपाध्यायसे कहे मेरेकोभी पढ़ावो अर्थात् वीणा वजाना सिखावो वैसा २ सर्व राजकुमर हड २ शब्द करके हसें ॥ ७७९ ॥ द्ढुं अपाढयंतं, उवज्झायं झत्ति तस्स वामणओ । अप्पेइ हत्थखग्गं, हेलाए अइ महग्वंपि ॥ ७८० ॥ अर्थ—तब वामन उपाध्यायको नहीं पढ़ाता हुआ देखके बहुत कीमतका अपने हाथका खन्न लीलासे शीघ्र उपा-ध्यायको देवे ॥ ७८० ॥

तो उवज्झाओ तं आयरेण, पुरओ निवेसइत्ताणं । अप्पेइ सिक्खणत्थं, नियवीणं तस्स हत्थंमि ७८१ क्षे अर्थ—तदनंतर उपाध्याय उस वामनेको आदरसे आगे बैठाके सिखानेके वास्ते अपनी वीणा उस वामनेके हाथमें क्षे देवे ॥ ७८१ ॥ वामणओ तं वीणं, विवरीयत्तेण पाणिणा छिंतो । तंतिं वा तोडंतो फोडंतो तुंबयं वावि ॥ ७८२ ॥ अर्थ—वामना उस वीणाको हाथसे विपरीतपने छेता हुआ तांत तोड़ता भया तूंबेको फोड़ता हुआ ॥ ७८२ ॥ सबेसिं कुमराणं, हासरसं चेव वट्टयंतोवि । केवलदाणबलेणं, अग्घइ उवज्झायपासंमि ॥ ७८३ ॥ अर्थ—सर्व राजकुमरोंके हास्य रस बढ़ाताहुआभी केवल दानके बलसे उपाध्यायके पास आदर योग्य होवे ॥७८३॥ सोवि परिक्खासमए, रिक्खजंतोवि तेहिं सबेहिं। कुंडलदाणवसेणं, कुमरिसहाए गओ झित ॥७८४॥ अर्थ—वह वामनाभी परीक्षा समयमें सबलोगोंके साथ अंदर प्रवेश करताथा द्वारपालने मने किया तब कुंडलदेके शीघ कुमरीकी सभामें गया ॥ ७८४॥ शीघ कुमरीकी सभामें गया ॥ ७८४ ॥
तं कयइच्छारूवं, कुमरी पासेइ निरुवमसरूवं । अन्ने वामणरूवं, पासंति निवाइणो सबे ॥ ७८५ ॥
अर्थ—िकया है इच्छासे रूपिजसने ऐसा कुमरको कुमरी राजकन्या निरुपम उपमा रहित रूप जिसका ऐसा देखें
और राजादिक सवलोक वामनेका रूप देखे ॥ ७८५ ॥

For Private and Personal Use Only

श्रीपाल-चरितम् ॥ ९९॥ जइ पुण मजझ पइझा, इमिणावि न पूरिया अहलाए। ताहं विहियपइझा, सवैरिणी चेव संजाया ७८७ अर्थ—और जो इस पुरुषनेभी मेरी प्रतिज्ञा नहीं पूर्णकरी तो अधन्या अकृत पुण्या मैंने करी प्रतिज्ञा वाही मेरी वैरिणी भई अर्थात् मेंही मेरी वैरिणी भई हूं॥ ७८७॥ वैरिणी भई अर्थात् मैंही मेरी वैरिणी भई हूं ॥ ७८७ ॥

उवझायाएसेणं, तेहिं कुमारेहिं दंसियं जाव । वीणाए कुसलत्तं, ताव कुमारीवि दंसेइ ॥ ७८८ ॥

अर्थ—तदनंतर उपाध्यायकी आज्ञासे राजकुमरोंने वीणा बजानेकी कला दिखाई अर्थात् वीणा बजाई उतने कुमरी नेभी अपनी वीणा बजानेका कुशलपना बताया ॥ ७८८ ॥

तीए कुमरिकलाए, संकुडियं सयलरायकुमराणं । वीणाए कुसलत्तं, चंदकलाइव कमलवणं ॥७८९॥

अर्थ—उस कुमरीकी कलासे सब राजकुमरोंकी वीणा बजानेकी कला मुद्रित होगई जैसे चन्द्रमाकी कलासे कमलका वन मुद्रित होवे है वैसा ॥ ७८९ ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra

तं च कुमारीइ कलं, सयलोवि जणो पसंसए जाव। ताव कुमारो वामण,—रूवधरो वज्जरइ एवं ७९० अर्थ—जितने उस कुमरीकी कलाकी सबलोक प्रशंसाकरे उतने वामनरूप धारनेवाला कुमर श्रीपाल इस प्रकारसे कह ॥ ७९० ॥
अहो सुजाणो कुंडल,—पुरलोओ केरिसो इमो सवो। तो संकिया कुमारी, उवहिसयं मन्नए अप्पं ७९१
अर्थ — कैसे कहे सो कहते हैं अहो इति आश्चर्य झूंठी प्रशंसा करनेमें यह सव कुंडलपुरका लोग कैसे विचक्षण है अर्थात् अज्ञानवान है वाद ऐसा कुमरका बचन सुनके कुमरी शंकित भई कुमरने मेरा हास्य किया ऐसा मानती भई ॥७९२॥ अर्थ — तव राजकन्याभी उस कुमरको अपनी वीणा वजानेको देवे कुमरभी उस वीणाको सारके अग्रुद्ध कहे ॥७९२॥ तंती सगडभरूवा, गलगहियं तुंवयं च एयाए। दंडोवि अग्गिदट्टो, तेण असुद्धा मए कहिया ७९३ अर्थ — कैसे सो कहते हैं इस वीणाकी तंत्री सगर्भरूप जिसका ऐसी फटी भई है और तूंवा गलेमें लगा हुआ है और इसका दंड अग्निसे जला हुआ है इस लिये इस वीणाको मैंने अग्रुद्ध कही ॥ ७९३॥ ते दंसिऊण सम्मं, आसारेऊण वायए जाव। ताव पसुत्तुव जणो, सवोवि अचेयणो जाओ ॥७९॥।

अर्थ—तन्त्री वगैरह दोषोंको दिखाके अच्छी तरहसे स्वरावट मिलाके जितने कुमर वीणा वजावे उतने सव लोक सित्ते होंवें वैसा अचेतन भया ॥ ७९४ ॥

कस्सिव मुद्दारयणं, कस्सिव कडयं च कुंडलं मउडं । कस्सािव उत्तरीयं, गिहऊण कओ य उकरडो ७९५ अर्थ—तब कुमरने किसीका मुद्रारल किसीका कुंडल किसीका तुप्रत लेके ऊंचा दिगला किया ॥७९५॥ अह जिग्गियंमि लोए, अच्छिरियं पासिऊण सा कुमरी । धन्ना पुन्नपङ्गा, वरङ् कुमारं तिजयसारं ७९६ अर्थ—उसके अनन्तर लोकोंके जागनेसे कुमरी वह आश्चर्य देखके तीन जगतमें सार ऐसे श्रीपाल कुमरको वरे कैसी है कुमरी धन्य है और पूर्ण भई है प्रतिज्ञा जिसकी ॥ ७९६॥ रायाईओ य जणो, जा चिंतइ वामणो हहा वरिओ । ताव कुमारो दंसइ, सहावरूवं नियं झित ७९७ अर्थ—राजादिक लोक मनमें विचारे अहह इति खेदे वामनेको वरा उतने कुमर शीघ अपना मूलरूप दिखावे ७९७ आणंदिओ य राया, परिणावेऊण तेण नियध्यं । दावेइ हयगयाई, धणकंचणपूरियं भवणं ॥ ७९८॥ अर्थ—तब राजा हिंत भया उस कुमरको अपनी पुत्रीका पाणिग्रहण करावे और घोड़ा हाथी वगैरह देवे धन सोने वगैरहसे भरा हुआ घर देवे ॥ ७९८॥

तत्थ ट्रिओ सिरिपालो, पुन्नविसालो महाभुयालोय। गुणसुंदरीसमेओ, निचंपि करेइ लीलाओ ॥७९९॥ अर्थ—उस भवनमें रहा भया श्रीपालकुमार गुणसुंदरी अपनी स्त्रीसिहत निरंतर लीलाकीडाकरे कैसा है श्रीपाल पुण्य है विशाल नाम विस्तीर्ण जिसके और प्रचंड है भुजदंड जिसका ॥ ७९९ ॥ अन्नदिणे नयराओ, रयवाडीए गएण कुमरेण । दिट्ठो एगो पहिओ, विसेसवत्तं च सो पुट्ठो ॥ ८००॥ अर्थ—अन्यदिनमें कुमर नगरके बाहर राजवाड़ीमें गया वहां एक पथिक याने काशीदको देखा और विशेषवार्ता

सो भणइ देव कुंडिण,-पुराओ पट्टावणीइ पट्टविओ । नयरंमि पइट्टाणे, इब्भेण घणावहेणाहं ॥८०१॥ अर्थ—तब वह पथिक कहे हे देव घनाट्य घनावह नामके सेठने मेरेको कुंडनपुर नगरसे प्रतिष्ठानपुर नगर दिनके नियमसे भेजा है ॥ ८०१॥

आगच्छंतेण मए, कंचणपुरनामयंमि नयरंमि । जं अच्छरियं दिट्टं, पुरिसुत्तम! तं निसामेह ॥८०२॥ अर्थ—आते भए मैंने कांचनपुर नगरमें हे पुरुषोत्तम जो आश्चर्य देखा वह तुम सुनो ॥ ८०२ ॥ तत्थित्थि कंचणपुरे, राया सिरि वज्जसेणनामुत्ति तस्सित्थि पद्ददेवी कंचणमालत्ति विक्खाया ॥ ८०३ ॥

अर्थ—उस कांचनपुर नगरमें श्रीवज्रसेन नामके राजा हैं उन्होंके प्रसिद्ध कंचनमाला नामकी पटरानी है ॥ ८०३ ॥ भाषाटीका-तीए कुक्खिसमुब्भव, पुत्ता—चत्तारि संति सोंडीरा। जसधवल जसोहर, वयरसिंह गंधव नामाणो ८०४ सिंहतम्. अर्थ—कांचनमाला रानीकी कुक्षिसे उत्पत्ति जिन्होंकी ऐसे चार पुत्र हैं कैसे हैं ? पुत्रपराक्रमवंत हैं यशोधवल १ यशोधर २ वज्रसिंह ३ गंधर्व ४ यह नामके हैं ॥ ८०४ ॥ अर्थ—काचनमाला रानीकी कुक्षिस उत्पात्त जिन्होंकी एस चार पुत्र है कसे हैं ? पुत्रपराक्रमवंत हैं यशिषवल १ यशोधर २ वज्रसिंह ३ गंधर्व ४ यह नामके हैं ॥ ८०४ ॥ ताण उविरं च एगा,—पुत्ती तियल्लकसुंदरी अत्थि । तियलोएवि न अन्ना, जीए पडिछंदए कन्ना ५ अर्थ—उन पुत्रोंके ऊपर एक त्रैलोक्यसुंदरी नामकी पुत्री है जिस कन्या सरीखी तीन लोकमें कन्या नहीं है ॥८०५॥ तीए अणुरूववरं, अलहंतेणं च तेण नरवइणा । पारस्रो अत्थि तिहं, सयंवरामंडवो देव ॥ ८०६ ॥ अर्थ—उस कन्याके योग्य वर नहीं पाता हुआ राजाने हे देव उस नगरमें स्वयंवरा मंडप प्रारंभ किया है ॥ ८०६ ॥ तत्थि सुविच्छिन्नो उत्तुंगो मूलमंडवो रम्मो । मणिकंचणथंमद्विय, पुत्तिलया-खोहियजणोहो ८०७ अर्थ—उस स्वयंवरा मंडपमें अतिशय विसीर्ण ऊंचा रमणीक मूलमंडप है और कैसा है रत्न सोनेमई संभोमें पुतिलियोंने क्षोमित किया है लोकोंका समूह जिसमें ऐसा ॥ ८०७ ॥ तत्ती चउपासेसुं, रइया कोऊहलेहिं परिकलिया । मंचाइमंचसेणी, सग्गविमाणाविल सरित्छा ८०८

अर्थ—उस मंडपसे चारों तरफ रची भई कौतुक सहित मंचातिमंच श्रेणी है अर्थात् सिंहासनोंकिश्रेणी रची है जैसे देव लोकमें विमानोंकी श्रेणी होवे वैसी ॥ ८०८॥ जे संति निमंतियनरवराण, पडिवत्तिगउरवनिमित्तं । तत्थ कणतिणसमृहा, ते गरुया गिरिवरेहिंतो ८०९ अर्थ—उस प्रदेशमें बुलाए भए राजाओंकी भक्तिके निमित्त अन्न और तृणसमृहका ढिगला पर्वतोसेभी बड़ा किया आसाढ पढमपक्खे, वीयाए अस्थि तस्थ सुमुहुत्तो । कछे सा पुण वीया, मग्गो पुण जोयणे तीसं ८१० अर्थ—आषाढ़ वदी दूजका उस नगरमें विवाहका मुहूर्त है वह द्वितीया कछ है और मार्ग यहांसे तीस योजन हैं ॥८१०॥ के तं सोऊणं कुमरेण, तस्स पहियस्स दावियं झत्ति । नियतुरयकंठकंदल,—भूसणसोवन्नसंकलयं ॥८११॥ क्षे वह पश्चिक्त वस्त स्वते समारे स्व विवाहको के विवाहको के विवाहको कि विवाहक कि अर्थ—वह पथिकका वचन सुनके कुमरने उस पथिकको शीघ अपने घोड़ेके कंठका सोनेका कंदोला दिया ॥८११॥ कुमरो य नियावासं, पत्तो चिंतेइ पच्छिमनिसाए । काऊण खुज्जरूवं, तं पि हु गंतूण पिच्छामि ॥८१२॥ मरो य नियावासं, पत्तो चिंतेइ पच्छिमनिसाए । काऊण खुज्जरूवं, तं पि हु गंतूण पिच्छामि ॥ ८१२ ॥ 🌋 अर्थ—और कुमर अपने आवासमें आया और रात्रिके पश्चिम प्रहरमें विचारे कूबड़ेका रूपकरके वह स्वयंवर मंडप

श्रीपाल है हारस्स प्रभावेणं, संपत्तो तत्थ खुज्जरूवेणं । पिच्छेइ रायचकं, उविविद्धं उद्यमंचेसु ॥ ८१३ ॥ अर्थ—तदनंतर कुमर हारके प्रभावसे उस नगरके पासवित स्वयंवर मंडपमें कुब्जरूप करके पहुंचा ऊंचे सिंहासनों पर बैठे हुए राज समूहको देखे ॥ ८१३ ॥ कुमरोवि खुज्जरूवो, सयंवरामंडवंिम, पविसंतो । पिडहारेण निसिद्धो, देई तओ तस्स करकड्यं ८१४ अर्थ—कुमरभी कूबड़ेके रूपवाला स्वयंवर मंडपमें प्रवेश करताथा तब द्वारपालने मना किया तदनंतर उस द्वार पालको कडा दिया और अंदर प्रवेश किया ॥ ८१४ ॥ पत्तो य मूळमंडवथंभिटटयपुत्तळीण पासंमि । चिट्टेइ सुहं निसन्नो, क्रमरो कयकित्तिमकुरूवो ॥ ८१५॥ अर्थ—और मूळ मंडपके थंभोमें रही भई पूतिलयोंके पासमें जाके सुखसे बैठा कैसा है कुमर किया है कृत्रिम कुरूप जिसने॥ ८१५॥ तं उच्चिपिट्टिदेसं, संकुडियउरं च चिविडनासउडं । रासहदंतं तह उद्दृहुद्वयं, कविलकेसिसं ॥ ८१६ ॥ क्रिं अर्थ—अब विशेष करके कृत्रिम रूपका वर्णन करते हैं उस कूबर्ड़को देखके यहां सम्बन्ध है कैसा है कूबड़ा उंचा है पिछेका भाग जिसका और संकुचित हृदय जिसका चीपडी नासिका गधेके जैसा दांत जिसका ऊंटके जैसा होट जिसका ॥ १०२॥ पीला केश मस्तकमें जिसके ॥ ८१६॥

पिंगलनयणं च पलोइऊण, लोया भणंति भो खुज्ज। कज्जेण केण पत्तो, तुमंति ? तत्तो भणइ सोऽवि ८१७ 🕏 अर्थ—और पीले नेत्र जिसके ऐसे उस कूबड़ेको देखके लोक कहे अहो कुब्ज तैं किस कार्यके लिए यहां आया है तब कुबड़ा कहे क्या कहे सो कहते हैं ॥ ८१७ ॥ जेण कज्जेण तुब्भे, सबे अच्छेह आगया इत्थ। तेणं चिय कज्जेणं, अहयंपि समागओ एसो ॥ ८१८ अर्थ—जिस कार्यके लिए तुम यहां आके रहे हो उसी प्रयोजनके वास्ते मैं भी आया हुं ॥ ८१८ ॥ हडहड हसंति सबे, अहो इमो एरिसो सरूवोवि। जइ न वरिस्सइ नरवर,-ध्या तो सा कहं होही ॥८१९॥ अर्थ—यह कुज्जका वचन सुनके सब राजकुमरादिक हड २ शब्द करके हसे और इस प्रकारसें बोलेकि ऐसा स्वरूप वाला तें है जो राजपुत्री तेरेको नहीं वरेगी तो कैसा होगा ॥ ८१९ ॥ इत्थंतरंमि नरवरधूया, वरनरविमाणमारूढा । खीरोदगवरवत्था, मुत्ताहलिनम्मलाहरणा ॥ ८२०॥ अर्थ—इस अवसरमें उज्ज्वल रवीरोदक प्रधान वस्त्र पहरे हैं जिसने मोतियोंके निर्मल हारादिआभरण पहरे हुए है जिसने ऐसी राजकुमारी पालकीमें बैठके ॥ ८२० ॥ करकलियविमलमाला समागया मूलमंडवे जाव । ता सहसच्चिय क्रमरं, सहावरूवं पलोएइ ॥८२१

श्रीपा च १८

अर्थ—और हांथमें निर्मल वरमाला है जिसके ऐसी जितने मूलमंडपमें आई उतने अकस्मात्ही शीघ्र कुमरका सिहतम्. स्वाभाविक मूलरूप देखे ॥ ८२१ ॥ तं दट्टूण पमुइयचित्ता, चिंतेइ सा निवइध्या । रे मण ! आनंदेणं, वट्टसु एयस्स लाभेणं (लंभेणं) ८२२ अर्थ—तव राजकन्या स्वाभाविक सुंदररूप है जिसका ऐसे श्रीपालकुमरको देखके हर्षित चित्त जिसका ऐसी विचारे रे मन तैं इस वरके लाभसे आनंदमें वर्त अर्थात् आनंद युक्त रह ॥ ८२२ ॥ धन्ना कयपुन्नाऽहं, महंतभागोदओऽवि मह अत्थि। मह मणजलिहिचंदो, जं एस समागओ कोऽविट२३ अर्थ—मैं धन्य हूं और किया है पुण्य जिसने ऐसी कृतपुण्य हूं मेरा भाग्योदयभी बड़ा है जिस कारणसे मेरा मन रूप समुद्रको उल्लास करनेमें चन्द्रसदृश यह कोई पुरुष आया है॥ ८२३॥ क्ष समुद्रका उल्लास करनम चन्द्रसद्देश यह काइ पुरुष जाया हूँ ॥ ८२२ ॥ कुमरोवि तीइ दिट्ठिं, द्रहूणं साणुराग सकडवखं । दंसेइ खुडझयंपि हु अप्पाणं अंतरंतिरयं ॥ ८२४ ॥ अर्थ—कुमरभी उस कन्याकी दृष्टि अनुराग सिंहत और कटाक्षयुक्त देखके वीचवीचमें अपना कूबड़ेका रूप दिखावे २४ इत्तोवि हु पिंडहारी, जं जं वन्नेइ नरवरं तं तं । विक्खोडेइ कुमारी, रूववओदेसदोसेहिं ॥ ८२५ ॥ अर्थ—इधरसे प्रतिहारीणि स्त्री जिस २ राजाका वर्णन करे उस २ राजाको कुमरी रूप, उमर, देशके दोषोंसे दूषितकरे इस राजाका रूप ठीक नहीं है इस राजाकी वय ठीक नहीं है इसका देश रमणीय नहीं है इत्यादि ॥ ८२५ ॥

जो जइया वित्रज्जइ,सो तइया होइ सरयसिवयणो।जो जइया हीिलज्जइ,सो तइया होइ साममुहो ८२६ क्ष्मि—जिसवक्त जिस राजाका वर्णन होवे तव उसराजाका शरदऋतुके चन्द्रमा जैसा मुख होवे और जब राज-कुमरी जिस राजाकी रूपादिकसे हीलना करे तब वह राजा स्थाममुख होवे अर्थात् उदास मुख होंजाय॥ ८२६॥ जा पिंडहारी थका, सयलं निवमंडलंपि वित्रत्ता।ताव कुमारी सिप्पियं, खुजं पासेइ सविलक्त्वा॥८२७॥ अर्थ—जितने प्रतिहारी सर्व राजमंडलका वर्णन करके मौन धारके रही उतने कुमरी स्विपय कुज्जको देखे कुज्जको देखके कैसी भई जिसका मुख उदास भया ॥ ८२७॥ इत्थंतरंमि थंमट्टियाइ, वरपुत्तलीइ वयणंमि । होऊण हारहिट्टायग, देवो एरिसं भणइ ॥ ८२८ ॥ अर्थ—इस अवसरमें थंभे में रही भई पूतलीके मुखमें प्रवेश करके हारका अधिष्ठायक देव ऐसा कहने लगा॥८२८॥ यदि धन्यासि विज्ञासि, जानासि च गुणांतरं । तदैनं कुज्जकाकारं, वृणु वत्से नरोत्तमं ॥ ८२९ ॥ अर्थ—हे वत्से हे पुत्री जो तें धन्य है वह विशेष जानने वाली हैं और गुणोंका अंतरभेद जाने है तो इस कूबडेका आकारवाला इस पुरषोत्तमको वर पणें अर्थात् भर्तार पणें अंगीकारकर ॥ ८२९॥ तं सोऊण कुमारी, वरेइ तं झत्ति कुज्जरूवंपि । कुमरो पुण सविसेसं, दंसेइ कुरूवमप्पाणं ॥ ८३०॥

श्रीपाल-चिरतम् ॥ १०४॥ अर्थ—वह सुनके कुमरी शीघ्र कूबड़ेका रूप जिसका ऐसे कुमरको वरे और कुमर अपना विशेष करके लोकोंको कुरूप दिखावे॥ ८३०॥ इत्थंतरंमि सबे, रायाणो अविखवंति तं खुज्ञं। रे रे मुंचसु एयं, वरमालं अप्पणो कालं॥ ८३१॥ अर्थ—इस अवसरमें सब राजा उस कूबड़ेपर आक्षेप करे कैसे सो कहते हैं रेरे कुब्ज इस वरमालाको छोड़ कैसी है

जइ किरि मुद्धा एसा, न मुणइ गुणागुणंपि पुरिसाणं। तहिव हु एरिस कन्नारयणं, खुज्जस्स न सहामो ८३२ 🐉

ता झित्त चयसु मालं, नो वा अम्हं करालकरवालो । एसो तुह गलनालं, छुणिही नूनं सवरमालं ॥८३३॥ अर्थ—इस कारणसे शीघ्र मालाको छोड़ जो नहीं छोड़ेगा तो हमारी तलवार वरमाला सिंहत तेरा मस्तक छेदेगी अर्थात् वरमाला सिंहत तेरा मस्तक छेदेगी ॥८३३॥ हिसऊण भणइ खुज्जो, जइ किरि तुब्भे इमीइ नो वरिया। दोहग्गदट्टदेहा, कीस न रूसेह ता विहिणो८३४ अर्थ—तव कूबड़ा हसके कहे जो इस कन्याने तुमको नहीं वरा कैसे हो तुम दुर्भाग्यसे दूषित है शरीर जिन्होंका

ऐसे तुम हो तो अपने भाग्यपर कैसे नाराज नहीं होतेहो जिस दुर्भाग्यने तुमको दूषित किया मेरेपर नाराज क्यों होते

इन्हिं पुण तुम्हाणं, परित्थिअहिलासविहियपावाणं। सोहणखमं इमं मे, असिधारा तित्थमेविश्य ॥८३५॥ अर्थ—इस वक्तमें परस्त्रीकी अभिलाषासे किया हैं पाप जिन्होंने ऐसे तुमहो तुझारे पापकी शुद्धि करनेमें समर्थ यह मेरे खड़की धारा रूप तीर्थही हैं ॥ ८३५॥

इय भणिऊणं तेसिं, खुज्जेणं दंसिया तहा हत्था। जह ते भीइविहत्था, सबेवि दिसोदिसिं नट्टा॥८३६॥ अर्थ—ऐसा कहके कूबड़ेने उन राजाओंको वैसा हाथ दिखाया कि वह तव राजा भयसे व्याकुल भए दिशो दिश भाग गए॥ ८३६॥

खुज्जेण तेण तह कहित, दंसिओ विकमो रणे तत्थ। जह रंजियचित्तेहिं, सरेहिं मुका कुसमवुट्ठी ॥८३७॥ अर्थ—उस कूबडेने वहां संग्राममें उस प्रकारसे ऐसा पराक्रम दिखाया कि जिससे प्रसन्नभया मनजिन्होंका ऐसे देवोंने कूबड़ेपर पुष्पोंका वर्सात् किया॥ ८३७॥ तं दृहूणं सिरिवज्जसेण,—रायावि रंजिओ भणइ। जह पयडियं बलं तह, रूकंपयडेसु वच्छ नियं॥८३८॥

अर्थ—वह कूबडेका पराक्रम देखके श्रीवज्रसेन राजा रंजित भया कहे हे वत्स जैसा तुमने अपना वल प्रगट किया वैसा अपना रूप प्रगट करो ॥ ८३८॥
तकालं च कुमारं, सहावरूवं पलोइऊण निवो । परिणाविय नियध्यं, साणंदो देइ आवासं ॥८३९॥
अर्थ—तब राजा तत्काल मूल रूपयुक्त कुमरको देखके अपनी पुत्रीको परणाके आनंद सहित रहनेके वास्ते प्रधान प्रासाद देवे ॥ ८३९॥
तत्थ द्विओ सिरिपालो, कुमरो तिलुकसुंदरी सहितो। पावइ परमाणंदं, जीवो जह भावणासहिओ ८४०
अर्थ—वहां रहा हुआ त्रैलोक्यसुंदरी सहित श्रीपालकुमर परम आनंद पावे भावना सद्अध्यवसाय सहित जीव परमानंद पावे वैसा ॥ ८४०॥
अन्नदिणे कोइ चरो, रायसहाए समागओ भणइ। देवदलपहणंमी, अत्थि नरिंदो धरापालो ॥ ८४१॥
अर्थ—अन्यदिनमें कोई चर खबरदेनेवाला पुरुष राजसभामें आया कहे देवदल नाम पत्तनमें धरापाल नाम राजा है ॥ ८४१॥

तस्सुत्तमरायाणं, पुत्तीओ राणियाउ चुलसीई । ताण मज्झंमि पढमा, गुणमाला अस्थि सविवेया ॥८४२॥ 🥻

अर्थ—उस राजाके उत्तमराजाओंकी पुत्रियो ८४ चौरासी रानी हैं उन्हों में पहिली गुणमाला नामकी विशेष विवेक्षवती रानी है ॥ ८४२ ॥
तीए य पंचपुत्ता, हिरणणगब्भो य नेहलो जोहो । विजियारीय सुकन्नो, ताणुविर पुत्तिया चेगा ॥८४३॥ अर्थ—उसरानीके पांच पुत्र हैं उन्होंका नाम कहते हैं हिरण्यगर्भ १ स्नेहल २ योध ३ विजितारी ४ सुकर्ण ५ इन पांच पुत्रोंके ऊपर एक पुत्री है ॥ ८४३ ॥ सा नामेणं सिंगार,-सुंद्रि सिंगारिणी तिलुकत्स । रूवकलागुणपुत्ना, तारुन्नालंकियसरीरा ॥ ८४४ ॥ अर्थ—उसका नाम श्रंगारसुंदरी हैं कैसीहैं तीनलोकमे श्रंगारशोभाकरनेवाली हैं और रूप कला गुणों करके पूर्ण है यौवन अवस्थासे अलंकृत है शरीर जिसका ऐसी ॥ ८४४ ॥ तीए जिणधम्मरयाइ,पंडिया तह वियवस्वणा पउणा। निउणा दक्खित्त सहीण,पंचगं अत्थि जिणभत्तं ८४५ अर्थ—जिन धर्ममें रक्त उस कन्याके पांच सखी है उन्होंका नाम कहते है पंडिता १ विचक्षणा २ प्रगुणा ३ निपुणा ४ दक्षा ५ कैसा है सखी पंचक तीर्थंकरका भक्त है ॥ ८४५ ॥ ताणं पुरो कुमारी, भणेइ अह्माणजिणमयरयाणं। जइकोइ होइ जिणमय—, विऊ वरो तो वरं होई ॥८४६॥

श्रीपालश्रीपालश्रीपालश्रीपालश्रीपालश्रीरतम्
॥ १०६॥
जोणं वरो विराम सलियोंके आगे कहे जिनशासनमें रक्त अपने जो कोई जैनधर्मका जाननेवाला वर होवे तो अच्छा होवे॥ ८४६॥
जोणं वरो विराम सहितम्, अर्थ—जिस कारणसे कन्या मनमें सुलके वास्ते भर्तार वरे है वह मानसिक सुल भर्तार और स्त्रीके धर्ममें विरोध होनेसे कहांसे होवे प्रायः नहीं होवे हैं॥ ८४७॥
तह्मा अह्मोहिं परिक्खिऊण, सम्मं जिणिंद्धम्मंमि, जो होइ निचलमणो, सो चेव वरो वरेयवो ८४८
अर्थ—इस कारणसे अपने अच्छी तरहसे परीक्षा करके जो पुरुष जिनधमंमें निश्चल मनवालाहोवे वहही भार्तार अंगीकार करना॥ ८४८॥ भणियं च पंडियाए, सामिणि जुत्तं तए इमं वुत्तं। िकंतु निरुत्तो भावो, परस्स नज्जइ कवित्तेण ॥८४९॥ क्षि —तव पंडिता नामकी सखीबोली हे स्वामिनी आपने यह ठीक कहा परंतु और पुरपका निरुक्त अप्रकाशितभाव अभिप्राय कवित्वसे जाना जाय है जैसा मनमें होवे वैसा कवित्वसे प्रगट होवे॥ ८४९॥ ता काऊण समस्सा,-पयाइं सिहिट्टिपूरिणिज्जाइं। अप्पेह जेहिं नज्जइ, सुहासुहो धम्मपरिणामो॥ ८५०॥

अर्थ—तिस कारणसे सम्यक्दृष्टि पूर्ण करनेको समर्थ होवे ऐसे समस्या पद बनाके देओ जिन्होंको पूर्ण करनेसे हुँ ग्रुभाग्रुभ धर्मका परिणाम जाना जाय ॥ ८५० ॥ शुभाशुभ धर्मका परिणाम जाना जाय ॥ ८५० ॥
तो तीइ कुमारीए, अस्थि पइन्ना कया इमा जो उ । चित्तगयसमस्साओ पूरिस्सइ सो वरेयवो ॥८५१॥ अर्थ—तदनंतर उनकुमरीने यह प्रतिज्ञा करी है कि जो मनोगत समस्या पूर्ण करेगा वह पुरष हमारे वरना ॥८५१॥ सोऊण तं पिसिद्धिं, समागयाणेगपंडिया पुरिसा । पूरंति समस्साओ, परं न तीए मणगयाओ ॥८५२॥ अर्थ—उस प्रसिद्धिको सुनके अनेक पंडितपुरष आए भए समस्या पूर्ण करे है परंतु उस कन्याकी मनोंगत समस्या कोई पूर्ण करनेको नहीं समर्थ भया है ॥ ८५२॥ एवं सा निवधूया, सुपंडियाईहिं पंचिहं सहीहिं। सिहया चित्तपरिवखं, कुणमाणा वटइ जणाणं ॥८५३॥ अर्थ—इस प्रकारसे वह राजपुत्री सुंदर विचक्षणा पंडितादि पांच सिखयो सिहत लोकोंके चित्तकी परीक्षा करती भई रहे है ॥ ८५३॥ एवं सा निवध्या, सुपंडियाई हिं पंचिहं सही हिं। सिहया चित्तपरिक्खं, कुणमाणा वहइ जणाणं ॥८५३॥ अर्थ—इस प्रकारसे वह राजपुत्री सुंदर विचक्षणा पंडितादि पांच सिखयो सिहत हो कों के चित्तकी परीक्षा करती भई रहे है।। ८५३॥ तं सोऊणं सिवा, सहाजणो भणइ केरिसं चुजं। पूरिजंति समस्सा, किं केणिव परमणगयाओ ॥८५४॥ अर्थ—वह वचन सुनके सब सभाके होग कहें अहो कैसा आश्चर्य है दूसरेके मनोगत समस्या क्या कोई पूर्ण कर सके है।। ८५४॥

विरातम् ।। १०७॥ विरातम् अर्थ—वह वचन सुनके अत्यन्त मनमें चमत्कार भया ऐसा कुमर अपने आवास गया रात्रि व्यतिकान्त करके प्रभातमें विचारे क्या विचारे सो कहते हैं ॥ ८५५ ॥ हारस्स पभावेणं, मह गमणं होउ पष्टणे तत्थ । जत्थित्थ रायकन्ना, विहियपङ्चा समस्साहिं ॥८५६॥ अर्थ—हारके प्रभावसे वहां देवदलपतन में मेरा गमन होवो जिस नगरमें राजकन्याने समस्यापूर्णकी प्रतिज्ञाकी है ॥ ८५६ ॥ पत्तो य तक्खणं चिय, सहावरूवेण मंडवे तत्थ । जत्थित्थ रायपुत्ती, संयुत्ता पंचिहं सहीहिं ॥ ८५७ ॥ अर्थ—बाद कुमर तत्कालही स्वाभाविक रूपसे उस मंडपमें प्राप्त हुआ जिस मंडपमें ५ सखी सहित राजपुत्री है ॥८५७ ॥ अर्थ—कामके जैसी उपमा जिसको ऐसा रूप जिसका इसी कारणसे अनुत्य लावण्य जिसका ऐसे कुमरको देखके राजपुत्रीभी क्षणमात्र आश्चर्य युक्त चित्त जिसका ऐसी विचारे क्या विचारे सो कहते हैं ॥ ८५८ ॥ जङ्ग कहिव हु एस मणोगयाउ, पूरेङ् मह समस्साओ। ताहं तिन्नपङ्चा, हवेमि धन्ना सुकयपुन्ना ॥८५९॥

अर्थ—निश्चय यह पुरुष जो कोई प्रकारसे मेरी मनोगत समस्या पूर्ण करे तब मैं पारपाया प्रतिज्ञाका जिसने ऐसी न्य कृतपुण्य होऊं॥ ८५९॥ धन्य कृतपुण्य होऊं॥ ८५९॥

पुच्छइ तओ कुमारो, कहह समस्सापयाइं निययाइं। तो कुमरिसंन्निया, पंडियावि पढमं पयं पढइ ८६०

. अर्थ-तदनंतर कुमर पूछे तुम अपना समस्या पद कहो तब कुमरीने संज्ञा किया ऐसी पंडितासखी एक समस्या

मणुवंच्छिय फलहोइ, एसा सहीमुहेणं, जं कहइ समस्सापयं तयं मएणावि, पूरेयवं केणवि, पुत्तलयमुहेण हेलाण ॥ ८६१ ॥

अर्थ—कौनसा समस्या पदसो कहते हैं मणुवंच्छिय फलहोइ यह पहला समस्या पद है यह समस्यापद सखीके मुहसे सुनके कुमर विचारे यह राजकन्या सखी के मुखसे समस्या पद कहवाती है वह मैं कोई पूतलेके मुखसे समस्या पद पूर्ण करावुं ॥ ८६१ ॥

इय चिंतिऊण पासट्टियस्स, थंभस्स, पुत्तलयसीसे, कुमरेण करो दिन्नो, ता पुत्तलओ भणइ एवं ॥८६२॥ 🖇 अर्थ—ऐसा विचारके कुमरने पासके थंभे में रहा हुआ पूतला उसके मस्तकपर हाथ रक्खा तब पूतला ऐसा बोला ॥८६२॥ 🖇

अरिहंताईनवपय, नियमणु धरइ जु कोइ। निच्छइ तसु नरसेहरह, मणुवंच्छियफलहोई ॥ ८६३॥ अर्थ—अर्हदादि नवपदोंको जो कोई अपने मनमें धारण करे निश्चय उस नरशेखरके मनो वांछित फल होवे ॥८६३॥ सहितम् तओ वियक्खणा पढेइ, अवर म झंखहु आल, तओ कुमरकरपवित्तो, पुत्रलओ पूरेइ। अरहंतदेव सुसाधु ग्रुरु, धम्म तु दयाविसाल, मंतुत्तमनवकारपर, अवर म झंखहु आल ॥ ८६४॥

अर्थ—तब विचक्षणा नामकी दूसरी सखी कहे अवरम झंख हु आल यह दूसरा समस्या पद तब कुमरके हाथसे पवित्र भया पूतला समस्या पूर्ण करे सो कहते हैं अरिहंत देव सुसाधु गुरु दयासे विशाल धर्म मंत्रोमें उत्तम नवकार मंत्र यह देवगुरुधर्ममंत्र प्रधान है इस कारणसे इन्होंको सेवो और सर्व अनर्थक वस्तु अंगीकार मत करो ॥ ८६४ ॥ तओ पउणा पढेइ, करि सफलउं अप्पाणु, पुत्तलओ पूरेइ, आराहिय धुरि देवग्रुरु, देहि सुपत्तिहिं दाणु, तवसंजमउवयार करि, करि सफलउं अप्पाणु ॥ ८६५ ॥

अर्थ—तव प्रगुणा तीसरी सखी कहे करि सफल अप्पाणु यह तीसरा समस्या पद तब पूतला पूर्ण करे धुरि नाम आदिमें देव वीतराग गुरू सुसाधु इन्होंकी सेवा करके सुपात्रको दानदेवो और तप संयम उपकार करके आत्माको

तओ निउणा पढेई, जित्तउं लिहिउं बिलाडि, पुत्तलओ भणेइ, अरि मन अप्पिउं खंचि धरि,— चिंता जालि म पाडि, फल्ल तित्तिउं परिपामीयइ, जित्तउं लिहिउं निलाडि ॥ ८६६ ॥

अर्थ—तब निपुणा चौथी सखी कहे (जित्तड लिहिओ लिलाडि) यह चौथा समस्या पद पूतला कहे अरे मन तें अल्लाको खींचके धार चिंता जालमें मतिगरा फलतो उतनाही मिलेगा जितना कर्मरूप लिलाटमें लिखा हुआहै ॥८६६॥ तओ दक्खा पढेइ, तसु तिहुयण जण दासु, तओ पुत्तलओ भणेई, अत्थि भवंतरसंचिउं। पुन्न समग्गलजासु, तसु बल तसु मइ तसु सिरिय, तसु तिहुअणजण दासु॥ ८६७॥

अर्थ—तब दक्षा नामकी पांचमी सखी कहे (तसु तिहु अणजण दासु) यह पांचवां समस्या पद तव पूतला कहे जिस पुरषके भवान्तरमें संचित जादा पुण्य हैं उस पुण्यके बल्रें पराक्रम और बुद्धि लक्ष्मी और शोभा होवे है और तीन भुवनका लोक दास होवे है ॥ ८६७॥

दट्टूण तं समस्सा,-पूरणमइविद्विया कुमारीवि । आणंदपुल्रइअंगी, वरइ कुमारं तिजयसारं ॥ ८६८ ॥ १५०० अर्थ—वह समस्या पूर्ण भई देखके कुमरी अत्यंत आश्चर्य पाई इसीकारणसे आणंद हर्षकेवससे रोमोद्रमयुक्त अंग १५०० किसका ऐसी कुमरको वरे कैसा है कुमर तीन जगतमें सारभूत है ॥ ८६८ ॥

शयपमुहोवि लोओ, भणइ अहो चुज्जमेगमेयंति। जं पूरिजंति मणोगयाउ, एवं समस्साओ ॥ ८६९॥ भाषाटीका-अर्थ—राजा प्रमुख लोक इस प्रकारसे कहे अहो यह एक बड़ा आश्चर्य है कि औरोंकी मनोगत समस्या इस प्रका-रसे पूर्ण करे॥ ८६९॥ जं च इमं सकरेणं, पुत्तलयमुहेण पूरणं ताणं। तं लोउत्तरचरियं, कुमरस्स करेइ अच्छरियं ॥८७०॥ हैं अर्थ—जो अपने हाथके स्पर्शसे पूतलेके मुखसे समस्याका पूर्ण कराना वह कुमरका लोकोत्तर चरित है सर्व लोकोंसे पूर्ण प्रधान चरित आश्चर्य उत्पन्न करे है ॥ ८७० ॥ राया नियधूयाए, तीए पंचिहं सहीहिं सहियाए । कारेइ वित्थेरण, पाणिग्गहणं कुमारेणं ॥ ८७१ ॥ अर्थ—राजा पांच सिलयों सिहत अपनी पुत्रीका विस्तारविधिसे पाणि ग्रहण करावे॥ ८७१ ॥ इत्थंतरंिम एगो भट्टो, दहूण कुमरमाहप्पं, पभणेइ उच्चसदं, भो भो निसुणेह मह वयणं ॥ ८७२ ॥ अर्थ—इस अवसरमें एक भट्ट कुमरका माहात्म्य देखके ऊंचे शब्दसे कहे कि अहो २ लोको मेरा वचन सुनो ॥८७२॥ कुछागपुरे नयरे, अत्थि निरंदो पुरंदरो नाम । तस्सित्थि पट्टदेवी, विजयानामेण सुपिसद्धा ॥ ८७३ ॥ ४०९॥ अर्थ—कुछागपुर नगरमें पुरंदर नामका राजा है उस राजाके विजयानामकी अतिशय प्रसिद्ध पटरानी है ॥८७३॥

हरिविकमनरिवकम, हिरिसिरिसेणाइसत्तपुत्ताणं, उविरिमि अत्थि एगा, पुत्ती जयसुंद्रीनामा ॥८७४॥ अर्थ—हरिविकम १ नरिवकम २ हरिसेण ३ सिरिसेणादि ४ सातपुत्रोंके ऊपर एक जयसुंदरीनाम की कन्या है ॥८७४॥ तीए कलाकलावं, रूवं सोहग्गलडहलावन्नं। दट्टूण भणइ राया, को णु इमीए वरो जुग्गो॥ ८७५॥ अर्थ—उस कन्याका कलाका समूह और रूप आकृति सौभाग्यसे सुंदर लावण्य देखके राजा कहे इस कन्याके योग्य भर्तार कौन होगा॥ ८७५॥

तो तीए उवज्झाओ भणइ महाराय तुज्झ पुत्तीए । सयलकलासत्थाइ, अवगाहंतीइ एयाए ॥८७६॥ अर्थ—्तब उस क्न्याका उपाध्याय राजासे कहे हे महाराज सर्व कला शास्त्रका अभ्यास करती इस आपकी पुत्रीने

शस्त्र कलाके प्रस्तावसे ॥ ८७६ ॥

सत्थप्पत्थावपत्तं, राहावेयस्स साहणसरूवं । विणएण अहं पुट्टो, कहियं च तयं मए एवं ॥ ८७७ ॥

अर्थ—शस्त्र कलाके अधिकारसे प्राप्त भया राधावेधसाधनका खरूप विनयसे मेरेसे पूछा मैंने राधा वेधसाधनका स्वरूप इस प्रकारसे कहा ॥ ८७७ ॥

मंडिजंते थंभद्दियद्व,-चकाइं जंतजोगेणं । सिद्विविसिद्विकमेणं, एगंतरियं भमंताइं ॥ ८७८ ॥

अर्थ—थंभेमें रहे हुए आठचक रचे जावें यन्त्रके जोगसे सृष्टि विसृष्टि क्रमसे एकके अंतरसे भ्रमणकरे एकसीधा फिरे दूसरा उलटा फिरे ॥ ८७८ ॥ चकारयविवरोवरि, राहानामेण कट्टपुत्तिलया। ठिवया हवेइ तीए, वामच्छी किज्जए लक्खं॥ ८७९॥ अर्थ—चक्रोंका अरोंमें जो छिद्र है उन्होंके ऊपर राधानामकी एक पूतली थापी होवे है उसका डावा नेत्रका लक्ष

हिट्टिट्टियतिस्ठकडाहयंमि, पडिविंबस्रद्धस्रक्षेणं, उड्डसरेण नरेणं, तीए वेहो विहेयवो ॥ ८८० ॥ अर्थ—नीचे रक्खा हुआ जो तेस्रका कडाव उसमें पड़ा हुआ जो राधाका प्रतिविंब उससे पाया रुक्षका वेध जो मनुष्य बाणकों ऊंचा खांचके राधाके डावे नेत्रका वेध करे वह राधावेध कहा जावे ॥ ८८० ॥

सो पुण केणवि विरलेण, चेव विन्नाय धणुहवेएण । उत्तमनरेण किज्जइं, जं गिज्जइ एरिसं लोए ॥८८१॥ 🖔

अर्थ-और वह राधावेध कोई विरला उत्तम पुरुष करे है जिसने धनुर्वेद अच्छी तरहसे जाना होवे वही राधावेध साध सके है। जिस कारणसे लोकमें ऐसा कहा जावे है।। ८८१॥

विणयंता चेव गुणा, संतंतरसा किया उ भावंता । कबं च नाडयंतं, राहावेहंतमीसत्थं ॥ ८८२ ॥ अर्थ—विनय अंतमें जिन्होंके ऐसे गुण हैं सर्व गुणोंमें विनयहीका प्राधान्य है तथा रसोंमें श्रान्तरस प्राधान्य है

और देव दर्शनादि क्रियायोंमें भावशुद्ध अध्यवसायही प्रधान है काव्यमें नाटकही प्रधान है इसी तरह शस्त्र कलामें रि राधावेधही प्रधान है ॥ ८८२ ॥ राधावेधही प्रधान है ॥ ८८२ ॥ तं सोऊणिममीए, नरवर ! तुह नंदणाइ सहसत्ति । बहुलोयाण समक्खं, इमा पइन्ना कया अत्थि ॥ ८८३ ॥ अर्थ—वह राधावेधका स्वरूप सुनके हे महाराज इस आपकी पुत्रीने अकस्मात बहुत लोकोंके सामने यह प्रतिज्ञा

किया है सो कहते हैं ॥ ८८३ ॥

जो किर महिंदुरीए, राहावेहं करिस्सए कोवि । तं चेव निच्छएणं, अहं वरिस्सामि नररयणं ॥ ८८४ ॥ अर्थ—जो कोई पुरुष मेरी दृष्टिके सामने राधावेध करेगा उसी नररत्नको मैं भर्तार पने अंगीकार करूंगी ॥ ८८४ ॥

एयाइ पइन्नाए, नजाइ पुरिसोत्तमस्स कस्सावि । नूणं इमा भविस्सइ, पत्ती धन्ना सुकयपुन्ना ॥ ८८५॥ अर्थ—इस प्रतिज्ञा करके जाना जावे है यह आपकी पुत्री कोई पुरषोत्तम उत्तम पुरुषकी स्त्री होगी कैसी है यह धन्य है कृत पुण्य है ॥ ८८५॥

ता तुब्भेवि नरेसर !, एवं चिंतं चएवि वेगेण । कारेह वित्थरेणं, राहावेयस्स सामिंगं ॥ ८८६ ॥ क्रिं अर्थ—इस कारणसे हे नरेश्वर यह पूर्वोक्त चिंताको छोड़के शीघ्र राधावेधकी सामग्री विस्तारसे करावो ॥ ८८६ ॥ क्रिं तं च तहा मंडाविय, रन्नावि निमंतिया नरिंदाय । परिमकेणवि केणवि, राहावेहो न सो विहिओ ॥८८७॥ क्रि

अर्थ—वह राधावेधकी सामग्री उसी प्रकारसे करवाके राजानेभी और राजाओंको बुलाया है और बहुत राजा आए हैं परन्तु एकनेभी राधावेध नहीं किया है ॥ ८८७ ॥ सो विहु जइ होइ अणेण, चेव कुमरेण गुरुपभावेण। नो अन्नेणं केणवि, होही सो निच्छओ एसो ॥८८८॥ अर्थ—निश्चय जो वह राधावेधभी होवे तो इसी कुमरसे होवे बड़ा है प्रभाव जिसका ऐसा यह कुमर है और कोई पुरुससे नहीं होगा ऐसा निश्चय है ॥ ८८८ ॥

एवं किहऊण नियद्दियस्स, भद्दस्य कुंडलं दाउं। कुमरो वि सपरिवारो, निवदत्तावासमणुपत्तो॥ ८८९॥ अर्थ—इस प्रकारसे कहके निवृत्त हुआ भद्दको कुंडल देके कुमरभी स्यादि परिवार सहित राजाका दिया हुआ

तत्थ ट्विओ तं रयणिं, रमणीगणरमणरंगरसवसओ । पच्चूसे पुण पत्तो, कुछागपुरे तहचेव ॥ ८९० ॥ अर्थ—स्त्रियोंका जो समूह उसके साथजो कीड़ा करना उसमें जो राग वह ही रसकास्वाद उसके वश सबरात्रि वहां रहा प्रभातमें उसी प्रकारसे हारके प्रभावसे कुछागपुर पहुंचा ॥ ८९० ॥ उविद्वेय निरंदे, मिलिए लोए कुमरिदिद्वीए । कुमरेण कओ राहा,—वेहो हारप्पभावेणं ॥ ८९१ ॥

अर्थ—राजा लोक बैठे हैं और सबलोक जहां मिले हैं जिस मंडपमें वहां कुमरश्रीपालने कुमरीके सामने हारके प्रभावसे राधावेध किया ॥ ८९१ ॥ वरिओ तीए जइसुंद्रीवि, कुमरो पमोयपुन्नाए। नरनाहोवि हु महया,—महेण कारेइ वीवाहं ॥८९२॥ अर्थ—आनन्दसे पूर्णभई ऐसी जयसुंदरी कन्याने कुमरको वरा राजाभी बहुत उत्सवसे विवाह कराया॥ ८९२॥ नरवइदिन्नावासे, सुक्खिनवासे रहेइ जा कुमरो।ता माउलिनवपुरिसा, तस्साणयणत्थमणुपत्ता॥ ८९३॥ अर्थ—सुस्तकारी निवास जिसमें ऐसा राजाके दिए हुए प्रासादमें जितने कुमर रहे उतने मामा राजा वसुपालका पुरुष सेवक कुमरको बुलानेके वास्ते आया॥ ८९३॥ कुमरो नियरमणीणं, आणयणत्थं च पेसए पुरीसे। ताओवि सुंद्रीओ, सबन्धुसहियाउ पत्ताओ ॥ ८९४॥ अर्थ—कुमर अपनी स्त्रियोंको बुलानेके वास्ते पुरुषोंको भेजे वह स्त्रियोंभी अपने २ भाईयोके साथ वहां आई ८९४ मिलियं च तत्थ सिन्नं, हयगयरहसुहडसंकुलं गरुयं। तेण समेओ कुमरो, पत्तो ठाणाभिहाणपुरं॥८९५॥ अर्थ—और वहां बहुत सेना इकट्ठी भई घोड़ा हाथी रथ प्यादलोंसे व्याष्ठ उस सेनासहित कुमर थाणा नगर आणंदिओय माउल,–राया तस्सुत्तमं सिरिदड्ढं। सुंदरि चउक्कसिहयं, दहूण पइं च मयणाओ ॥ ८९६॥ 🥻 श्रीपाल-चरितम्

बा ११२॥

अर्थ—और मातुल (मामा) राजा वसुपाल कुमरकी उत्तमलक्ष्मी देखके आनन्द प्राप्त भया और मदनसेनादि कुम-रकी तीन स्त्रीयों चार सुंदरी सहित अपने भर्तारको देखके आनन्द सहित भई ॥ ८९६ ॥ तत्तो माउलयनिवो, अणेगनरनाहसंजुओ कुमरं। सिरिसिरिपालं थप्पइ, रज्जे अभिसेयविहिपुवं ॥८९७॥ अर्थ—तदनंतर मामा वसुपालराजा अनेक राजाओं करके सहित श्री श्रीपाल कुमरको अभिषेकविधि पूर्वक राज्यमें सीहासणे निविट्ठो, वरहारिकरीडकुंडलाहरणो। वरचमरछत्तपमुहेहिं, राय–चिन्हेहिं कयसोहो॥ ८९८॥ अर्थ—राज्याभिषेकके अनन्तर जैसा राजा भया सो कहेते हैं सिंहासनपर बैठा भया प्रधान हार मुकट कुंडल वगैरहः पहरनेको जिसके और प्रधान चामर छत्र प्रमुख राजचिन्हों करके करी शोभा जीसकी ऐसा ॥ ८९८ ॥ सिरिसिरिपालो राया, नरवरसामंतमंतिपमुहेहिं। पणिमज्जइ बहु हयगय,–मणिमुत्तियपाहुडकरेहिं ८९९ अर्थ—श्रीपालराजाको राजा 'सामंत' मंत्री प्रमुख आके नमस्कार करें कैसे राजा वगैरह घोड़ा हाथी मणि वैडूर्यादि रत्न मुक्ताफल वगैरह भेटना है हाथमें जिन्होके ऐसे ॥ ८९९॥ पवहणसिरिसमेओ, असंखचउरंगसिन्नपरिकरिओ। चल्रइ सिरिपालनिवो, नियजणणीपायनमणत्थं ॥ ९०० ॥

भाषाटीका-सहितम्.

11 222 41

अर्थ—जहाजोंकी लक्ष्मी करके सहित नहीं विद्यमान संख्या जिसकी ऐसा असंख्य जो चतुरंग हाथी, घोड़ा रथ प्यादल रूप सैन्य करके सहित श्रीपालराजा अपनी माताके चरणोंमें नमस्कार करनेके लिए चल्ले ॥ ९०० ॥

सो विहु आगच्छंतो, ठाणे ठाणे निरंद्विंदेहिं। बहुविहिभट्टणएहिं, भिट्टिजइ लद्धमाणेहिं॥ ९०१॥ क्रिजिट अर्थ-श्रीपालराजा मार्गमें चलता हुआ ठिकाने २ नृपसमूह करके अनेक प्रकारके भेटनों से भेटा जावे कैसे राज-समूह पाया है सन्मान जिन्होंने ॥ ९०१ ॥

सोपारयंमि नयरे, संपत्तो तत्थ परिसरमहीए । आवासिओ ससिन्नो, सो सिरिपालो महीपालो ॥९०२॥

अर्थ-ऐसे प्रयाण करते हुए क्रमसे सोपारक नाम नगर प्राप्त भया वहां नगरके पासकी भूमीमें श्रीपालराजा सेना-

पुच्छइ पहाणपुरिसे, जं सोपारयनिवो न दंसेइ । भत्तिं वा सित्तं वा, तं नाऊणं कहह तुरियं ॥९०३॥

अर्थ—तदनंतर श्रीपालराजा प्रधान पुरुषोंसे पूछे सो पारक नगरका राजा भक्ति प्रसन्नता अथवा सक्तिसामर्थ्य कैसे नहीं दिखावे है वह जानके शीघ्र कहो ॥ ९०३ ॥ अर्थ—तदनंतर श्रीपालराजा प्रधान पुरुषोंसे पूछे सो पारक नगरका राजा भक्ति प्रसन्नता अथवा सक्तिसामर्थ्य केसे नहीं दिखावे है वह जानके शीघ्र कहो ॥ ९०३॥ नाऊण तेहिं कहियं, नरनाहो नाम इत्थ अत्थि महसेणो। ताराय तस्स देवी, तक्कुच्छिसमुब्भवा एगा९०४

॥ ११३॥

अर्थ—उन प्रधान पुरुषोंने वह स्वरूप जानके राजाके आगे कहा हे महाराज इस नगरमें महासेन नामका राजा है उस राजाके तारा नामकी रानी है और उन्होंके तिलक सुंदरी नामकी पुत्री है ॥ ९०४ ॥ तिजयसिरितिलयभूया, धूया सिरितिलयसुंदरीनामा। अज्जेव कहिव दुट्टेण, दीहिपट्टेण सा दट्टा॥९०५॥ अर्थ—कैसी है तिलकसुंदरी तीन लोककी लक्ष्मीके ललाटमें तिलक सदश ऐसी तिलकसुंदरी कन्याको आजही कोई प्रकारसे दुष्ट सर्पने उसी है ॥ ९०५ ॥ विहिया वहुप्पयारा, उवयारामंतओसिह मणीहिं। तहिव न तीए सामिय?, कोवि हु जाओ गुणविसेसो ९०६ अर्थ—मंत्र औषधी मणियों करके बहुत उपचार किया तथापि हे स्वामिन उस कन्याके निश्चय कोई गुण विशेष तेण महादुक्खेणं पीडियहियओ नरेसरो सोउ। नो आगओित्य इत्थं, अपसाओ नेव कायबो ९०७ । अर्थ—उस महादुःखसें पीडित हृदय जिसका ऐसा वह राजा नहीं आया है यहां अप्रसन्नता नहीं करनी ॥ ९०७ ॥ राया भणेइ सा कत्थ, अत्थि दंसेह मज्झ झित्त तयं। जेणं किज्जइ कोवि हु, उवयारो तीइ कन्नाए ९०८ अर्थ—तब राजा श्रीपाल कहे कन्या कहां है शीघ्र मेरेको दिखाओ जिससे उस कन्याका उपाय जहर दूर करनेका किया जाय ॥ ९०८ ॥

एवं चेव भणंतो, नरनाहो तुरयरयणमारुहिउं। जा जाइ पुराभिमुहं, ता दिट्ठो बहुजणसमूहो ॥९०९॥ अर्थ—इस प्रकारसे कहता हुआ राजा श्रीपाल घोड़ेपर सवार होके जितने नगरके सामने जावे उतने नगरके बाहर बहुत लोकोंका समूह देखा ॥ ९०९ ॥ नायं च नरवरेणं, नूणं सा आणिया मसाणंमि। तहिव हु पिच्छामि तयं, मा हु जियंती कहिव हुजा॥९१०॥ अर्थ—और राजाने जाना निश्चय वह कन्या इमसानमें लाई भई दीखे है तथापि उस कन्याको देखं कदाचित

नायं च नरवरेणं, नूणं सा आणिया मसाणंमि। तहवि हु पिच्छामि तयं, मा हु जियंती कहवि हुजा॥९१०॥ अर्थ—और राजाने जाना निश्चय वह कन्या इमसानमें लाई भई दीखे है तथापि उस कन्याको देखं कदाचित् जीवती न होवे ॥ ९१० ॥

एवं च चिंतयंतो, पत्तो सहसत्ति तत्थ नरनाहो। पभणेइ इक्कवारं, मह दंसह झत्ति तं दट्टं ॥ ९११॥ अर्थ—इस प्रकारसे विचारता हुआ राजा अकस्मात शीघ्र वहां प्राप्त भया हुआ कहे अहों लोको सर्पकी डसी भई कन्याको एक वक्त शीघ दिखाओ ॥ ९११ ॥

भणियं च तेहिं नरवर ?, किं दंसिज्जइ मयाइ बालाए। अम्हाणं सवस्सं, अवहरियं अज्ज हयविहिणा ९१२ अर्थ—उन लोकोंने कहा हे महाराज मरी भई कन्याको क्या दिखावें हत इति खेदे आज विधि देवने हमारा सर-वस्व हरण कर लिया ॥ ९१२ ॥

राया भणेइ भोभो, अहिदट्टा मुच्छिया मयसरिच्छा। दीसंति तह्दि तेसिं, जहा तहा दिजइ न दाहो ९१३ 🦠

श्रीपाल-चरित्नम्

अर्थ—राजा कहे अहो लोको सर्पके डसे हुए। पुरुष मूर्च्छित होके मरे हुए सददा दीखते हैं तथापि उन सर्पके डसे तो तेहिं दंसिया सा, चियासमीवंमि महियले मुका । कंठट्टियहारेणं, रन्ना करवारिणा सित्ता ॥ ९१४ ॥ अर्थ—तदनंतर उन पुरुषोंने चिताकेपासकी भूमिपर रक्खी भई कन्याको दिखाई तव कंठस्थित हारके प्रभावसे राजा श्रीपालने हाथमें जल लेकर छांटा ॥ ९१४ ॥ तक्कालं सा वाला, सुत्तविबुद्धव उद्विया झत्ति । विम्हियमणाय जंपइ, ताय किमेसो जणसमूहो ९१५ क्षे अर्थ—तत्काल वह कन्या सोती भई जगे वैसी तत्काल उठी और आश्चर्य युक्तमन जिसका ऐसी शीघवोली हे पिताजी इन लोकोंका समूह क्यों इकट्ठा भया हैं॥ ९१५॥ महसेणो साणंदो, पर्भणइ वच्छे तुमं कओ आसि । जइ एस महाराओ नागच्छिजा कयपसाओ ९१६ अर्थ—तब महसेन राजा आनंद सहित कहे हे पुत्रि जो यह महाराज यहां नहीं आते तो तैं कहां थी कैसे हैं यह महाराज किया है अनुग्रह जिन्होंने ॥ ९१६॥ एएणं चिय दिन्ना, तुहपाणा अज्ञ परमपुरिसेण। जेण चियाओ उत्तारिऊण, उट्टावियासि तुमं ९१७ 🎢 अर्थ—इसी परम पुरुषने आज तेरेको प्राण दिया जिसने चितासे उतारकर तेरेको उठाई॥ ९१७॥

भाषाटीका-सहितम्

ા ૧૧૪ ા

तो तीए साणंदं, दिट्टो सो समणसायरससंको । सिरिपालो भूतालो, सिणद्रमुद्धेहिं नयणेहिं ॥९१८॥ अर्थ—तदनंतर उस राजकन्याने आनन्द हर्ष सहित श्रीपाल राजाको क्षिग्ध मुग्ध स्नेह सहित रमणीक नेत्रोंसे देखा कैसा है श्रीपालराजा अपने मनरूप समुद्रके उल्लास करनेमें चन्द्रके जैसा जैसे चन्द्रोदयसे समुद्र उल्लास पावे है वैसा ॥९१८॥ महसेणो भणइ निवं, अम्हं तुम्होहिं जीवियं दिन्नं । तो जीवयाओ अहियं, एयं गिन्हेह तुज्झेवि ९१९ अर्थ—बाद महसेनराजा श्रीपाल राजासे कहे आपने हमको जीवित दिया है तिस कारणसे हमारे प्राणोंसेभी अधिक प्यारी इस मेरी पुत्रीको ग्रहणकरो ॥ ९१९ ॥ इय भणिऊणं रन्ना, नियकन्ना तस्स रायरायस्स । दिन्ना सा तेणावि हु, परिणीया झत्ति तत्थेव ९२० अर्थ—ऐसा कहके महसेन राजाने श्रीपाल महाराजको अपनी कन्यादी श्रीपाल महाराजनेभी श्रीघ उसी ठिकाने उस कन्याका पाणिग्रहण किया ॥ ९२० ॥

तीए य तिलयसुंद्री,-सहियाओ ताओ अट्टमिलियाओ।सिरिपालस्स पियाओ,मणोहराओ परं तहिव ९२१ अर्थ—तिलक सुंदरी सहित मनोहर सब लोगोंका मनहरनेवाली श्रीपालराजाकों आठरानी मिली तथापि श्रीपाल राजा नवमी प्रिया मदनसुंदरीको याद करे॥ ९२१॥

जह अट्टिदिसाहिं अलंकिओवि, मेरू सरेइ उदयसिरिं। जह बंछइ जिणभत्तिं, अडग्गमहिसीजुओवि हरी॥
अर्थ—कौन किसके जैसा आठ पूर्वादि दिशा करके अलंकृतशोभित मेरु स्थोंदय लक्ष्मीको याद करे है और जैसे
आठ इन्द्रानियों सहितभी इन्द्र नवमी जिन भिक्ति वांछा करे हैं॥ ९२२॥
अवि अट्टिदिट्टिसहिओ, जहा सुदिट्टी समीहए विरइं। साहू जहटुपवयण, माइजुओवि हु सरइ समयं ९२३
अर्थ—और जैसे आठ दृष्टि मित्रा १ तारा २ वला ३ प्रदीपा ४ स्थिरा ५ कान्ता ६ प्रभा ७ परा ८ सहितभी सम्यक्
इष्टि आत्मा विरित सावद्ययोग त्याग रूपकी इच्छा करे है आठ दृष्टिका स्वरूप योगदृष्टि समुचय प्रथसे जानना और
जैसे आठ प्रवचन माता समिति ५ गृप्ति ३ सहितभी साधु निश्चय समता समभावरूपका स्मरण करे॥ ९२३॥
जह जोई अटुमहासिद्धि, समिद्धोवि ईहए मुत्तिं। तह झायइ पढमिपयं, सो अटुपियाइं सहिओवि ९२४

अर्थ-और जैसे योगी ज्ञान, दर्शन चारित्रात्मक योगयुक्त पुरुष आठ महा सिद्धि अणिमादिक करके समृद्धभी हैं। नवमी मुक्तिकी इच्छा करे है उसी प्रकारसे श्रीपालराजा आठ स्त्रियों सहितभी पहली स्त्री मदनसुंदरीका निरंतर हृद-

है तो तीए उक्कंठियचित्तो, जणणीइ नमणपवणो य । सो सिरिपालो राया, पयाणढकाओ दावेइ ॥९२५॥

For Private and Personal Use Only

अर्थ—तदनंतर मदनसुन्दरीके साथ मिलनेमें उत्कंठित मन जिसका और माताके चरणोंमें नमस्कार करनेमें तत्पर श्रीपालराजा सोपारक पत्तनसे प्रयाण भेरी दिलावे ॥ ९२५ ॥ मग्गे हयगयरहभड,-कन्नामणिरयणसत्थवत्थेहिं, । भिट्टिज्जइ स्रो राया, पए पए नरविरदेहिं ॥९२६॥ क्रि अर्थ—वह श्रीपालराजा मार्गमें ठिकाने २ राजाओं करके भेटनोंसे भेटा जाबे है हाथी घोड़ा रथ प्यादल कन्या मणि चन्द्रकान्तादि रत्नमाणिकादि शस्त्र, वस्त्र वगैरहः भेटना राजालोक लाके देते हैं ॥ ९२६ ॥ एवं ठाणे ठाणे, सो बहुसेणाविवड्डियबलोहो । महिवीढे नइवड्डिय,-नीरो उयहिव वितथरइ ॥ ९२७॥ अर्थ—इस प्रकारसे श्रीपालराजा ठिकाने २ बहुत सेना करके वढाहै सैन्य समूह जिसके ऐसा पृथ्वीपीठपर विस्तार पावे जैसा नदियों करके बढ़ा हुआ समुद्रका जल वैसा श्रीपालराजाका कटक पृथ्वीपर विस्तार पाया ॥ ९२७ ॥ मरहृद्वय सोरद्र्य, सलांडमेवाडपमुहभूवाले । साहंतो सिरिपालो, मालवदेसं समणुपत्तो ॥ ९२८ ॥ अर्थ-महाराष्ट्र सोरठलाट देशहित मेदपाट प्रमुखदेश विशेषके राजाओंको स्वाधीन करता हुआ मालवदेशमें पहुंचा ९२८ तं परचकागमणं, सोऊणं चरमुहाओ अइगरुयं। सहसत्ति मालविंदो, भयभीओ होइ गढसजो ॥९२९॥ अर्थ—माठव देशका राजा प्रजापाठ चर पुरुषके मुखसे बहुत बड़ा परसैन्यका आगमन सुनके अकस्मात भयभीत हुआ गढ तय्यार करके रहा ॥ ९२९ ॥

कप्पड चुप्पडकणितण,—जलइंधण संगहाय किजंति । सिजजंतिय जंता, तह सिजजंति वरसुहडा ९३० अर्थ—तथा वस्त्र और घृतादि धान्य घास जल इन्धनवगैरहका संग्रहः किया जावे है और यन्त्र शतभी वगैरह सिहतम्. तथार किए जावें प्रधान सुभटोंकी प्रशंसा करी जावे ॥ ९३० ॥ एवं सा उज्जेणी, नयरी बहुजणगणेहिं संकिन्ना,। परिवेढिया समंता, तेणं सिरिपालसिन्नेणं ॥ ९३१॥ अर्थ—इस प्रकारसे वह उज्जैनी नगरी बहुत लोकोंके समूहसे सांकरी भई और श्रीपालकी सेनासे चौतर्फ वीटी गई अर्थात् श्रीपालकी सेना नगरीके बाहर चौतर्फ वीटके उतरी ॥ ९३१॥ आवासिएय सिन्ने, रयणीए पढमजामसमयंमि। हारपभावेण सयं, राया जणणीगिहं पत्तो ॥९३२॥ अर्थ—सेनाका उतारा कियोंके बाद रात्रिके पहले प्रहरमें श्रीपालराजा हारके प्रभावसे माताके घर गया ॥ ९३२ ॥ आवासदुवारि ठिओ, सिरिपालनरेसरो सुणइ ताव,। कमलप्पभा पर्यपइ, बहुयं पइ एरिसं वयणं ॥९३३॥ अर्थ—श्रीपालराजा माताके घरके दरवज्जेके बाहर खड़ा हुआ जितने सुने उतने कमल प्रभा माता मदनसुंदरी बहूसे ऐसा वचन कहे ॥ ९३३ ॥ वच्छे परचकेणं, नयरी परिवेढिया समंतेणं । हस्लोहिलओ लोओ, किं किं होही न याणामि ॥९३४॥ 🕻

अर्थ—कैसा वचन कहे सो कहते है हे वत्से परसेनासे नगरी चौतर्फ वीटी भई है सवलोक ब्याकुल भए हैं अब क्या वच्छस्स तस्स देसंतरंमि, पत्तस्स वच्छरं जायं। वच्छे कावि न लब्भइ, अज्जवि सुद्धी तुह पियस्स ॥९३५॥ अर्थ—वह मेरा पुत्र देशान्तर गयाहै उसको एक वर्ष भया है हे पुत्री अवतक तेरे भर्तारकी सुद्धीभी नही मिली अर्थात् विव्कुल समाचार नहीं आया है ॥ ९३५ ॥

पभणेइ तओ मयणा, मा मा मा माइ किंपि कुणसु भयं। नवपयझाणंमि मणे, ठियंमि जं हुंति न भयाइं॥ अर्थ—तदनंतर मदनसुंदरी प्रकर्षपनेकहे हे माताजी मनमें कुछ भय करो मत जिस कारणसे नवपदोंका ध्यान मनमें रहनेसे भय नहीं होवे है ॥ ९३६॥

जं अज्ञंचिय संज्ञ्ञा,—समए मह जिणवरिंद्पिडमाओ । पूर्यतीए जाओ, कोइ अपुवो सुहो भावो ९३७ अर्थ—और आजही संध्या समयमें तीर्थंकरकी पूजा करते मेरे जो कोई अपूर्व ग्रुभभाव अध्यवसाय उत्पन्न भयो ३७ तेणं चिय अज्जवि मह मणंमि, नो माइ माइ आणंदो । निक्कारणं सरीरे, खणे खणे होइ रोमंचो ॥९३८॥

अर्थ—तिस कारणसेही हे माताजी अवतकभी मेरे मनमें आनन्द हर्ष नहीं मावे है तथा क्षण २ में शरीरमें विना-कारणही रोमोद्गम होवे है अर्थात् रोमराजी विकस्वरमान होवे है ॥ ९३८ ॥

अन्नं च मज्झ वामं, नयणं वामो पओहरो चेव। तह फंदइ जह मन्ने, अज्जेव मिलेइ तुह पुत्तो ॥९३९॥ हैं अर्थ—औरभी मेरा डावा नेत्र और डावा स्तन वैसा फरके हैं जैसे आजही आपका पुत्र मिलैगें ऐसा मानती हूं ॥९३९॥ ม ११७॥ 🔏 तं सोउणं कमलप्पभावि, आणंदिया भणइ जाव । वच्छे सुलक्खणा तुह,—जीहा एयं हवउ एवं ॥९४०॥ अर्थ-वह वचन सुनके कमलप्रभामाता आणंदसहित चित्त जिसका ऐसी जितने कहे हे वत्से तेरी जिव्हा सुल-क्षणी है यह इसी तरह होवो ॥ ९४० ॥ ताव सिरिपालराया, पियाइ धम्मंमि निच्चलमणाए । नाऊण सच्चवयणं, बारं बारंति जंपेइ ॥ ९४१॥ अर्थ—उतने श्रीपालराजा धर्ममें निश्चल मन जिसका ऐसी अपनी स्त्रीका सत्यवचन जानके द्वारं २ दरवज्जा खोलो

दरवज्जा खोलो ऐसा कहे ॥ ९४१ ॥

कल्रमप्पभा पर्यपइ, नूणिमणं मज्झ पुत्तवयणंति। मयणावि भणइ जिणमय,-वयणाइं किमन्नहा हुंति॥ अर्थ—तब कमलप्रभा राजाकी माता कहे निश्चय यह मेरे पुत्रके वचन हैं तब मदनसुंदरीभी कहे जैनधर्मकी सेवा करनेवालोंका वचन क्या झूंठा होवे है अपितु नहीं होवे है॥ ९४२॥

उग्घाडियं दुवारं, सिरिपालो नमइ जणिण पयजुयलं। दइयं च विणयपउणं, संभासइपरमपिम्मेणं ९४३

अर्थ—तदनंतर दरवज्जा उघाड़ा श्रीपालराजा माताके चरणोंमें नमस्कार करे और विनय करनेमें तत्पर प्रिया मदन सुंदरीके साथ परमप्रेमसे भाषणकरे ॥ ९४३॥ अरोविज्ञण खंधे, जणिं दइयं च लेवि हत्थेण । हारप्पभावउच्चिय, पत्तो नियगुहुरावासं ॥ ९४४ ॥ अर्थ—तदनंतर श्रीपालराजा माताको कांधेपर बैठाके स्त्रीको हाथमें लेके हारके प्रभावसे अपने तंबूमें आए ॥९४४॥ तत्थय जणिं पणिमत्तु, नरवरो भद्दासणे सुहनिसन्नं। पभणेइ माय तुह,—पयपसायजणियं फलं एयं ९४५ अर्थ—वहां तंबूमें राजा श्रीपाल भद्रासनपर बैठी हुई माताको नमस्कार करके कहे हे माताजी तुम्हारे चरणोंके प्रसादसे उत्पन्न भया यह फल है ॥ ९४५ ॥ पणमंति तओ ताओ, अट्ठ ण्हुहाओ ससासुयाइ पए। अवि मयणसुंद्रीए, जिट्ठाए निययभइणीए॥ अर्थ—तदनंतर आठ पुत्रकी याने श्रीपालराजाकी रानियों सासुके चरणोंमें नमस्कार करें तथा बड़ी बहिन मदन सुंदरीके चरणों में नमस्कार करें ॥ ९४६ ॥ अभिणंदियाओ ताओ, ताहिं आणंदपूरियमणाहिं। सद्वोवि हु वुत्तंतो मयणमंजूसाइ कहिओ य॥९४७॥ अर्थ—उन सासु और मदनसुंदरीने आशीर्वाद देके आनंदसहित करीं कैसी है श्रीपालकी माता कमलप्रभा और मदनसुंदरी आनंदसे पूरित है मन जिन्होंका ऐसी और मदनमंजूसा विद्याधर राजाकी पुत्रीने सर्ववृत्तान्त कहा ॥ ९४७ ॥

श्रीपालचरितम्
॥ ११८॥

पुट्ठा जिट्ठा मयणा, तुह जणयंपि हु कहं अणावेमि। तीए वृत्तं सो एउ, कंठपीठट्टिय कुहाडो ॥९४९॥

अर्थ—तब राजा बड़ी रानी मदन सुंदरीसे पूछा तुम्हारे पिताको किस प्रकारसे बुलाऊं तब मदनसुंदरी बोली हे स्वामिन् वह मेरे पिता कंठपर कुहाड़ा जिसके ऐसे होके आओ॥ ९४९॥

तं च तहा दूयमुहेण, तस्स रन्नो कहावियं जाव। ताव कुविओ य मालवराया मंतीहिं भणिओ य॥९५०॥

अर्थ—वह वचन उसी प्रकारसे दूतके मुखसे प्रजापाल राजाको जितने कहवाया उतने मालवराजा कोधातुर हुआ

वह संवियोंने कहा॥ ९५०॥

सामिय असमाणेणं, समं विरोहो न किज्जए कहिव। ता तुरियं चिय किज्जओ, वयणं दूयस्स भणियमिणं॥
अर्थ—हे स्वामिन अपनेसे अधिकके साथ बिरोध नहीं करना कोई प्रकारसे इसलिए शीघ्र यह दूतका कहा हुआ वचन करो॥ ९५१॥

काऊणं च क्रहाडं, कंठे राया पभायसमयंमि । मंतिसामंतसहिओ, जा पत्तो गुदुरदुवारे ॥ ९५२ ॥ अर्थ—तदनंतर प्रभात समयमें कांधेपर क्रहाड़ा रखके मंत्री सामंतों सिहत राजा जितने तंबूके दरवाजे आया ॥९५२॥ ताव सिरिपालरन्ना, मोयावेऊण तं गलकुहाडं । पहिराविऊण वत्था,-लंकारे सारपरिवारो ॥ ९५३ ॥ अर्थ—उतने श्रीपाल राजाने कांधेका कुहाडा दूर करवाके प्रधानवस्त्र आभूषण पहराके सारपरिवार सहित ॥९५३॥ आणाविओ य मज्झे, दिस्ने य वरासणंमि उविविद्वो, सो पयपालो राया, मयणाए एरिसं भणिओ ९५४ अर्थ—तंबूमें बुलाया प्रधान आसन बैठनेको दिया तब सिंहासनपर बैठा हुआ प्रजापाल राजाको मदनसुंदरीने ऐसा ताय तए जो तइया,मह कम्मसमप्पिओ वरो कहिओ। तेणज्ञ तुह गलाओ, कुहाडओ फेडिओ एसो ९५५ हैं अर्थ—क्या कहा सो कहते हैं पिताजी आपने मेरे पाणिग्रहणके समयमें मेरा कर्मलाया ऐसा वर कहाथा उस मेरे भर्तारने आज आपके कांधेसे कुहाड़ा दूर कराया अर्थात् मालवका राज्य आपको दिया ॥ ९५५ ॥ तो विह्मिओ य मालवराया, जामाउयंपि पणमेई। पभणेइ अ सामि तुमं, महप्पभावोवि नो नाओ ९५६

अर्थ—तब आश्चर्य पाया हुआ मालवराजा प्रजापाल जमाई श्रीपालको नमस्कार करे और कहे हे स्वामिन महा प्रभाव जिसका ऐसा मैंने आपको नहीं जानाथा ॥ ९५६ ॥ सिरिपालोवि निरिंदो, पभणइ न हु एस मह प्पभावोत्ति । किंतु गुरुवइट्टाणं, एस पसाओ नवपयाणं ९५७ अर्थ—श्रीपालराजा कहे यह मेरा प्रभाव नहीं है किंतु गुरुके कहे हुए नवपदोंका यह प्रभाव है ॥ ९५७ ॥ सोऊण तमच्छरियं, तत्थेव समागओ समग्गोवि । सोहग्गसुंदरी-रुप्पसुंदरीपमुहपरिवारो ॥ ९५८ ॥ अर्थ—वह आश्चर्य सुनके सौभाग्यसुंदरी रूपसुंदरी प्रमुख सर्व परिवार वहांही पर मंडपमें आया ॥ ९५८ ॥ मिलिए य सयणवग्गे आणंद्भरेय वदमाणे य । सिरिपालेणं रन्ना, नाडयकरणं समाइहं ॥ ९५९ ॥ अर्थ—अथ स्वजन सम्बन्धियोंका समूह मिलनेसे अधिक आनंद होनेसे श्रीपाल राजाने नाटक करनेकी आज्ञादी ॥९५९॥ हैं इसि पढमनाडय, पेडयमाणंदियं समुद्रेइ । परिमका मूलनडी, बहंपि भणिया न उट्टेइ ॥९६०॥ हैं तो झित्त पढमनाडय, पेडयमाणंदियं समुद्वेइ । परिमका मूलनडी, बहुंपि भणिया न उट्टेइ ॥९६०॥ अर्थ—तदनंतर शीघ प्रथम नाटकके पेड़ेका वृन्द याने समूह वाला हिर्षित चित्त जिन्होंका ऐसे उठे परन्तु एक मूल नटवी बहुत कहा तौभी नहीं उठी ॥९६०॥ कह कहिव पेरिऊणं, जाव समुद्वाविया निरुच्छाहा। तो तीए सविसायं, दूहयमेगं इमं पढियं ॥९६१॥ क्र

अर्थ गया है उत्साह जिसका ऐसी निरुत्साह मूल नटवीको कोई प्रकारसे प्रेरणा करके जितने उठाई उतने उस मूल नटवीने दुःखसहित यह एक दोहा नामका छंद कहा ॥ ९६१॥ कहिं मालव किं संखउरि, किं बबरु किं नहु। सुरसुंदरि नचावियइ दइविहिं दलवि मरहु॥ ९६२॥ हैं अर्थ—कहां मालव नामका देश जहां जन्म भया कहां शंखपुरी नगरी जहां परणाई कहां वबर देश जहां विकीता-नाम वेची कहां छोकोंके सामने नाटक करना देवने गर्भको चूर्ण करके सुरसुंदरीके पास नाटक करावे है ॥ ९६२ ॥ तं वयणं सोऊण, जणणीजणयाइसयलपरिवारो । चिंतेइ विह्यियमणो, एसा सुरसुंदरी कत्तो ॥९६३॥ 🛠 अर्थ—वह बचन सुनके माता पिता वगैरहः सर्व परिवार आश्चर्य पाया विचारे यहां सुरसुंदरी कहांसे आई॥ ९६३॥ 🛠 उवलक्षियाय जणणी, कंठंमि बिलग्गिऊण रोयंती, जणएणं सा भिणया, को बुत्तंतो इमो वच्छे॥९६४॥ 🧗 अर्थ—बाद पहिचानी सबोंने जानी तब माताके कंठमें लगके रोती भई सुरसुंदरीको पिताने पूछा हे वत्से यह क्या भणियं च तओ तीए, ताय तया तारिसीइ रिखीए। सहिया निएण पइणा, संखपुरिपरिसरं पत्ता॥९६५॥ क्षे—तदनंतर सुरसंदरीने कहा है पिताजी उस अवसरमें में अपने पतिसहित आपकी दी हुई ऋद्वियुक्त शंखपुरी किंगरीके पासमें पहुंची ॥ ९६५॥

श्रीपाल- क्षुमुहूत्तकए बाहिं, ठिओ य जामाउओ स तुह्याणं । सुहडाणं परिवारो, बहुओ य गओ सगेहेसु॥९६६॥ भाषाटीका-चरितम् अर्थ—वह आपका जमाई ग्रुभ मुहूर्तके लिए नगरीके बाहिर रहा सुभटोंका परिवार बहुतसा नगरीमें अपने २ घर

रयणीए पुरवाहिं, ठियाण अह्माण निब्भयमणाणं। हिण मारित्ति करिंती, पिडिया एगा महाधाडी ॥९६०॥ अर्थ—रात्रिमें नगरके बाहिर रहे हुए निर्भय मन जिन्होंका ऐसा हमारे पर मार मार ध्वनि करती भई एक बड़ी धाड़ पड़ी अर्थात् छटने वाले आए॥ ९६०॥ तो सहसा सो नट्टो, तुह्मं जामाउओ ममं मुत्तुं। धाडीभडेहिं ताए, सिरीइ सिहया अहं गहिया ९६८ अर्थ—तदनंतर वह आपका जमाई मेरेको छोडके अकस्मात भागगया मेरेको आपकी दीभई छक्ष्मी सिहत धाडके सुभटोंने पकडी॥ ९६८॥

नीया य तेहिं नेपाल, मंडले विकिया य मुल्लेणं। गहिया य सत्थवइणा, एगेणं रिद्धिमंतेणं॥ ९६९॥ क्षे अर्थ आर उन धाडके सुभटोंने नेपाल देशमें ले जाके कीमतसे वेची एक ऋद्धिवान सार्थ वाणीएने ब्रहण करी ॥९६९॥ क्षे तेणावि ससत्थेणं, नेऊणं सह बब्बरंमि कूलंमि। महकालरायनयरे, हट्टे धरिऊण विक्रिणया॥ ९७०॥

अर्थ—उस सार्थ पतिनेभी अपने सार्थके साथ बब्बरकूल महाकाल राजाके नगरमें ले जाके दुकानमें खडी रखके

एगाए गणियाए, गहिऊणं नदृगीयनिउणाए। तह सिक्खिवया य अहं, जह जाया निट्या निउणा ९७१ अर्थ—नृत्य गीतमें निपुण एक वेश्याने खरीदी उसने मेरेको उस प्रकारसे सिखाई जिससे में निपुण नर्तकी भई ॥९७१॥ महकालनामएणं, बब्बरकूलस्स सामिणा तत्तो, नडपेडएण सिहया, गहियाऽहं नाडयिपएणं ॥९७२॥ अर्थ—तदनंतर महाकाल नामका बर्ब्वरकूलके राजाने नटसमूहसहित नवनाटक इकट्ठा किया उसमें मेरेकूभी प्रहणकरी कैसा महाकालराजा नाटक है प्यारा जिसको ऐसा ॥ ९७२॥

नाणाविहनद्देहिं, तेण नच्चाविऊण धूयाए । मयणसेणाइ पइणो, दिन्ना नवनाडयसमेया ॥ ९७३ ॥ अर्थ—उस राजाने बहुत प्रकारका नाटक करवाके मदनसेना नामकी अपनी पुत्रीके भर्तारको नव नाटकके साथ

मेरेकोभीदी ॥ ९७३ ॥ तस्स य पुरओ नच्चंतियाइ, जायाइं इत्तिय दिणाइं। परमहुणा सकुडुंबं, दट्टूणं दुक्खमुछिसयं ॥९७४॥ अर्थ—उस मदनसेनाके भर्तारके आगे नाटककर्ता मेरे इतने दिन, भए परंतु इस वक्तः अपने कुटुंबको देखके मेरेको दुःख भया ॥ ९७४ ॥

श्रीपा.च.२१

तइया नियगरुयत्तं, मयणाइ विडवणं च दट्टूणं। जो य मए मुद्धाए, अखब्बगब्बो कओ आसि॥९७५॥
अर्थ—तब पाणिग्रहणके अवसरमें अपना महत्त्व और मदनसुंदरीकी विडंबना देखके में मूर्खनीने अखर्व गर्वनाम महान् अहंकार किया था॥ ९७५॥
तं भंजिऊण मयणा, पइणो नरनाहनमियचलणस्स । जेणाहं दासत्तं, कराविया तं जयइ कम्मं॥९७६॥
अर्थ—वह गर्बका चूर्ण करके नरेन्द्रों करके नमस्कार किया है चरण कमलोंमें जिसके वह मदनसुंदरीके भर्तारका दासपना जिस कर्मने मेरे पास कराया वह कर्म जयित सर्वोत्कृष्ट वर्ते है॥ ९७६॥ इकचिय मह भइणी, मयणा धन्नाण धुरि लहइ लीहं, जीए निम्मलसीलं, फलियं एयारिसफलेहिं ९७७ 🧩 अर्थ—धन्य स्त्रियोंके आदिमें एक मेरी बहन मदनसुंदरीही रेखा पावे है जिसका निर्मलशील ऐसे फलोंसे फला ॥९७७॥ 💃 कयपावाण जियाणं, मज्झे पढमा अहं न संदेहो । कुलसीलवज्जियाए, चरियं एयारिसं जीए ॥९७८॥ अर्थ—िकया पाप जिन्होंने ऐसे जीवोमें पहली मैं हूं जहां पापियोंकी गिनती होवे है वहां पहिली रेखा मैं पाऊं हूं हूं इसमें सन्देह नहीं है कैसे सो कहते हैं कुलसीलवर्जित उत्तम कुलाचाररहितका ऐसा चरित वर्ते है ॥ ९७८ ॥ मयणाए जिणधम्मो, फलिओ कप्पहुमुव सुफलेहिं। मह पुण मिच्छाधम्मो, जाओ विसपायवसरिच्छो॥

अर्थ—मदनसुंदरीके जिनधर्म कल्पवृक्षके जैसा शोभन फलोंकरके फला और मेरे मिथ्याधर्म विषवृक्षके जैसा भया दुष्ट फल देनेवाला होनेसे॥ ९७९॥

मयणा नियकुलउज्जालिणक,-माणिकदीवियातुल्ला। अहयं तु चीडउम्माडियब्ब, घणजणियमालिन्ना॥

अर्थ—मदनसुंदरी अपने कुलको उज्ज्वल करनेमें १ अद्वितीया माणिकके दीपिका सरीखी है मैं तो अपने कुलको मैला करनेके लिए स्यामकाचकी मणिके तुल्य भई॥ ९८०॥

मयणं दट्टूण जणा, जएह सम्मत्तसत्तसीलेसु । मं दट्टूणं मिच्छत्त,—दप्पकंदप्पभावेसु ॥ ९८१ ॥ अर्थ—सुरसंदरी कहती है अहो लोको मदनसंदरीको देखके सम्यक्त्व सत्व सीलमें यत्न करो और मेरेको देखके मिथ्यात्व १ दर्प २ कंदर्प ३ इन्होंमें यत्न करो ॥ ९८१ ॥

इचाइ भणंतीए, तीए सुरसुंदरीइ लोयाणं। उप्पाइओ पमोओ, जो सो न हु नाडएहिं पुरा॥९८२॥ अर्थ—इत्यादि पूर्वोक्त कहती सुरसुंदरीने लोकोंको जो हर्ष उत्पन्न किया वैसा हर्ष पहले नाटकमें कभी उत्पन्न नहीं

सिरिपालेणं रन्ना, वेगेणाणाविओ य अरिदमणो। सुरसुंदरी य दिन्ना, बहुरिद्धिसमन्निया तस्स॥९८३॥ 🕻

श्रीपाल-चरितम् ॥ १२२ ॥

अर्थ—तदनंतर श्रीपालराजा शीघं अरिदमनकुमरको बुलाके सुरसुंदरीको बहुत ऋद्धिसहित अरिदमनकुमरको रिसहिएणं, अरिद्मणेणावि सुद्धसमत्तं । सिरिपालरायमयणा,–पसायओ चेव संपत्तं ॥९८४॥ —सुरसुंदरीसहित अरिदमन कुमरने श्रीपाल राजा और मदनसुंदरीके प्रसादसे सुद्ध सम्यक्त्व पाया ॥ ९८४॥ जे ते कुट्टियपुरिसा, सत्तसया आसि तेवि मयणाए। वयणेण विहियधम्मा, संजाया संति नीरोगा॥९८५॥ अर्थ—जो ७०० कोढ़ी पुरषथा वह मदनसुंदरीके बचनसे किया धर्म जिन्होंने ऐसे निरोग भए हैं॥ ९८५॥ तेवि ह सिरिसिरिपालं, भूवालं पणमयंति भत्तीए। रायावि कयपसाओ, ते सबे राणए कुणइ॥९८६॥ अर्थ—वह ७०० पुरुष श्रीयुक्त श्रीपाल राजाको भक्तिसे नमस्कार करें राजा श्रीपालभी किया प्रसाद जिसने ऐसा उन सर्वोंको राणा ऐसा पद छोटा राजा विशेष देवे अर्थात् राणा किया ॥ ९८६ ॥ मइसागरोवि मंती, आगत्णं नमेइ निवपाए। सोवि पुर्वव रन्ना, कओ अमचो सुकयिकचो ॥९८७॥ अर्थ—मितसागर मंत्रीभी आके राजा श्रीपालके चरणोंमें नमस्कार करे राजा श्रीपालभी पहलेके जैसा मितसागर-को मंत्री किया कैसा है मंत्री श्रोभन कार्य है जिसका ऐसा ॥९८७॥ ससुराण सालयाणं, माउलपमुहाण नरवराणं च। अन्नेसिंपि भडाणं, बहुमाणं देइ सोराया॥९८८॥

भाषाटीका-सहित**म्**.

11 222 11

अर्थ—वह श्रीपालराजा सुसरा और साला और मामा प्रमुख राजाओंको औरभी सुभटोंको बहुमान सत्कार देवे ९८८ ते सबेवि हु बहुभत्ति, संजुया भालमिलियकरकमला। सेवंति सया कालं, तंचिय सिरिपालभूवालं॥ अर्थ—वे सर्व राजा बहुत भक्तिसहित इसी कारणसे लिलाटमे मिला हैं करकमल जिन्होंका ऐसे सर्वकालमें श्रीपाल राजाकी सेवा करे ॥ ९८९ ॥

अह अन्नदिणे मइसायरेण, सामंतमंतिकििएणं। विन्नत्तो नरनाहो, भूमंडलिमिलियभालेणं॥९९०॥ १००॥ अर्थ—उसके अनंतर अन्य दिनमें सामंत मंत्रीसिहत मितसागर मंत्रीने श्रीपाल राजाको वीनती करी कैसा मितिसागर भूमंडलमें लगा है लिलाट जिसका ऐसा॥९९०॥

देव ! तुमं बालोवि हु पियपट्टे ठाविओवि दुट्टेणं । उट्टाविओसि जेणं, सो तुह सत्तू न संदेहो ॥९९१॥ अर्थ—कैसे विनती किया सो कहते हैं हे देव हे महाराज आप बालक थे पिताके पट्टपर स्थापित किये थे जिस दूर हु हुने उठाया वह आपका शत्रु है इसमें सन्देह नही है ॥ ९९१॥

संतिवि हु सामत्थे, जो पियरज्जंपि सत्तूणा गहियं। नो मोयावइ सिग्घं, सो लोए होइ हसणिज्जो ९९२ अर्थ—सामर्थरहते भी निश्चय जो पुरुष शत्रुने ग्रहण किया अपने पिताका राज्य शीघ्र पीछानहीं लेवे वह लोकोमें हसने योग्य होवे है ॥ ९९२ ॥

श्रीपाल-चिरतम् ॥ १२३॥ ॥ १२३॥ श्रीपाल-चरितम् ॥ १२३॥ श्रीपाल-चरितम् ॥ १२३॥ श्रीपाल-चरितम् । १२३॥ श्रीपाल-चरितम् श्रीपाल-अर्थ—हे स्वामिन् आपका सर्व यह ऋदि और सेनाका विस्तार क्या फल पाया अर्थात् निष्फल है जो वह अपना राज्य नहीं लिया जावे अपना राज्य ग्रहण करनेसेही यह सर्व सफल होवे है॥ ९९३॥ ता काऊण पसायं, सामिय गिन्हेह तं नियं रज्जं। जं पियपट्टनिविट्टे, पइं दिट्टे मे सुहं होही ॥ ९९४॥ अर्थ—इसलिए हे स्वामिन् ग्रसन्न होके आप अपना राज्य ग्रहण करो जिस कारणसे आपके पिताके पट्टपर

तो पभणइ नरनाहो, अमच ? सच्चं तए इमं भणियं। किं तु उवायचउक, कमेण किजंति कजाइं ९९५ अर्थ—तदनंतर राजा श्रीपाल कहे हे मंत्रिन् तुमने यह सत्य कहा किंतु साम १ दान २ भेद ३ दंड ४ यह चार उपायोंसे कार्य क्रमसे करना ॥ ९९५ ॥

जइ सामेण सिउझइ, कर्जं ता किं विहिज्जए दंडो। जइ समइ सकराए, पित्तं ता किं पटोलाए॥९९६॥
अर्थ—जो साम मधुर वचनसे कार्य सिद्ध होवे तो किस वास्ते दंड किया जावे इसी अर्थको दृष्टान्तसे याने अर्थान्तरन्याससे दृढ करते हैं पित्त रोगविशेष जो शितोपला मिश्रीसे झान्ती होवे तब कोशातकी किरायतो कटुक नीम
गिलोय वगैरह किसवास्ते दिया जावे॥ ९९६॥

🕅 नरवर तए तया जो, सिरिपालो भायनंदणो बालो। भूवालपयपइट्ठो, दिट्ठो भूभार असमस्थो ॥१००१॥ 🖔

तत्तो मंती पभणइ, अहो पहो ते वओहिया बुद्धी। गंभीरया समुद्दाहिया, महीओऽहिया खंती॥९९७॥ 🧗 अर्थ—तदनंतर मंत्री कहे अहो इति आश्चर्ये हे प्रभो आपकी बुद्धि उमरसे अधिक वर्ते है आपकी गंभीरता समुद्रसे अधिक है और आपकी क्षमा पृथ्वीसेभी अधिक है ॥ ९९७ ॥ ता पेसिज्जउ एसो, चउरमुहो नाम दियवरो दूओ।जो दूयग्रणसमेओ अत्थि जए इत्थ विक्खाओ॥९९८॥ अर्थ—तिस कारणसे यह चतुर्मुख नामक द्विज ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ दूत भेजो जो चतुर्मुख दूतके गुण वाचाल वगैरहसे युक्त हे और जगतमें प्रसिद्ध है॥ ९९८॥ सो ओयतेयमइबलकलिओ, सम्माणिऊण भूवइणा । संपेसिओ तुरंतो, पत्तो चंपाइ नयरीए ॥ ९९९ ॥ अर्थ—ओज मानसबल तेज शरीरकाप्रताप मति बुद्धिबल पराक्रम इन्हों करके युक्त ऐसा वह दूतका श्रीपाल महाराजाने सत्कार करके भेजा वह दूत शीघ्र चलता हुआ चंपानगरी पहुंचा ॥ ९९९ ॥ तत्थाजियसेणनरेसरस्स, पुरओ पसन्नवयणेहिं। सो दूओ चउरमुहो, एवं भणिउं समाहत्तो ॥ १०००॥ १ अर्थ—वहां चंपानगरीमें वह चतुर्मुख दूत अजितसेन राजाके सामने प्रसन्नवचनोसें अर्थात् मधुरवचनोंसें इस प्रकारसे कहना प्रारंभ किया॥ १०००॥

सो सयलकलाकुसलो, अतुलबलो सयलरायनय। चलणो, चउरंगबलजुओ तुह लहुयत्तकए इमो एइ ॥ अर्थ—वह श्रीपाल सर्व कलामें कुशल और सर्वोत्कृष्ट बल सैन्य जिसके और सर्व राजाओं जिसके चरणोंमें नम-स्कार किया है ऐसा और चतुरंग जो बल सैन्य उस करके युक्त यह आपको हल्का करनेके वास्ते आवे है ॥ १००३॥ किया जुज्जइ तुझवि तंमि, रज्जभारावयारणं काउं, जं जुन्नथंभभारो, लोएवि ठविजाइ नवेसु ॥ १००४॥

अर्थ—हे महाराज आपने उस वक्तमें जो भाईका पुत्र श्रीपाल बालक राज्यमें स्थापा हुआ बालक होनेसे पृथ्वीका मार उठानेमें याने सम्भालनेमें असमर्थ देखा ॥ १००१ ॥ तो तं भारं आरोविऊण, निययंमि चेव खंधंमि। सयलकलासिक्खणत्थं, जो य तए पेसिओ आसि १००२ अर्थ—तदनंतर वह राज्यके भार आपने अपने कंघेपर स्थापके और श्रीपालको सर्वकला सीखनेके वास्ते आपने

अर्थ—ितस कारणसे आपकोभी उस श्रीपालमें राज्यका भार अवतरण करना युक्त है जिस कारणसे लोकमेंभी जीर्ण स्तंभोका भार नवीन स्तंभोंपर थापा जाय है ॥ १००४ ॥ अन्नं च तस्स रन्नो, पयपंकयसेवणत्थमन्नेवि । वहवेवि हु नरनाहा, समागया संति भत्तीए ॥ १००५ ॥

मी सुनिए श्रीपालराजाके चरणकमलोंकी सेवाके वास्ते औरभी बहुतसे <mark>राजा भक्तिके वास्ते</mark> आए

जं तुब्भे निययावि हु, नो पत्ता तस्स मिल्रणकजेवि । सोवि हु तिकजइ दुज्जणेहिं, नूणं कुलविरोहो ॥ अर्थ—जो आप श्रीपाल राजाके निजकेहों और मिल्रनेके वास्तेभी नहीं आए सो वहमी घरमें विरोध जैसा मालूम हुआ वह कुल विरोध निश्चय शत्रु बांछते हैं ॥ १००६ ॥

जो पुण कुले विरोहो, सो रिउगेहेसु कप्परुक्खसमो। तेण न जुज्जइ तुम्हं, परुप्परं मच्छरो कोवि॥१००७॥ अर्थ—और जो कुलमें विरोध है वह शत्रुवोंके घरमें कल्पवृक्षके सरीखा होवे है याने कुलमें विरोध होनेसे शत्रुवोंका

सोवि हु किज्जउ जइ, किर नज्जइ अहमिह इत्थ सुसमत्थो। कत्थ तुमं खजोओ, कत्थ य सो चंडमत्तंडो।।
अर्थ—वह विरोधभी करो जो निश्चय में इस विरोधमें अतिशय समर्थ हूं ऐसा जाना जावे तब तो करनाही वाजवी
है परन्तु कहां तुम खद्योत (आगिए)के जैसा और कहां श्रीपाल प्रचंड सूर्यके सहश आप दोनोंके खद्योत और सूर्य
के जैसा बहुत अंतर है।। १००८।।

कत्थ तुमं सरसरसव,-ससय समाणोसि देव हीणबलो। कत्थ य सो रयणायर,-मेरुमयंदेहिं सारित्थो

अर्थ — और हे देव हे राजन् कहां आप और कहां श्रीपाल कैसे सो कहते हैं आप सरोवर जैसे हैं और श्रीपाल सबुझ सहस है और आप सरसों जैसे हैं और श्रीपाल मेर जैसा है और आप शशक नाम खरगोस जैसे हैं और श्रीपाल सिंहके जैसा है इसी कारणसे आपहीन वली हैं इसवास्ते आप दोनोंमें बहुत अंतर है ॥ १००९ ॥ जइ तं रुट्टोसि न जीवियस्स, ता झित्त भित्तसंजुत्तो। सिरिसिरिपालनरेसरपाए, अणुसरसु सुपसाए १०१० अर्थ—जो नुम अपने जीवितव्यापर नहीं नाराज हुआ हो तो शीम भिक्तसहित श्रीश्रीपालराजाके चरणोंकी सेवा करों कैसे हैं श्रीपाल राजाके चरण शोभन है प्रसाद जिन्होंका ॥ १०१० ॥ जइ कहिव गवपवय,—मारूढो नो करेसि तस्साणं। तो होहि जुज्झसजो, कज्जपयं इत्तियं चेव ॥१०११॥ अर्थ—जो कोइ प्रकारसे अहंकाररूप पर्वतपर चढेहुए श्रीपाल राजाकी आज्ञा नहीं करों हो तो युद्धके वास्ते तव्यार ते सोऊणं सो अजियसेण, रायावि एरिसं भणइ। दूओ य दिओ य तुमं, नज्जिस एएण वयणेणं॥१०१२॥ अर्थ—यह दूतका बचन सुनके अजितसेनराजाभी ऐसा वचन कहे अरे तें इस बचनसे दूत और ब्राह्मण जाना जाता है ॥ १०१२॥ पढमं महरं मज्झंमि, अंविलं कडुयितत्तयं अंते। वुनुं सुनुं च तुमं, जाणंतो होसि चडरमुहो॥१०१३॥

पढमं महुरं मज्झंमि, अंबिलं कडुयतित्तयं अंते । वुत्तुं भुत्तुं च तुमं, जाणंतो होसि चउरमुहो ॥१०१३॥ 🖔

अर्थ—पहेले तैने मधुर बचन कहा मध्यमें खट्टा अंतमें कडुवा और तीखा ऐसा वचन कहनेके लिए ऐसा भोजन

नियया न केवि अम्हे, तस्स न सो कोवि अम्ह नियओत्ति। सो अम्हाणं सत्तु, अम्हेविय सत्तुणो तस्स१०१४ अर्थ—हम तेरे स्वामीके घरके नहीं हैं और वह तेरा स्वामी हमारा नहीं है किंतु वह तेरा स्वामी हमारा शत्रु है हमभी तेरे स्वामीके शत्रु हैं ॥ १०१४ ॥

हमभा तर स्वामाक शत्रु ह ॥ २०२४ ॥
जंजीवंतो मुको, सो तइया बालओत्ति करुणाए। तेण अम्हे हीणवला, सो बलिओ बन्निओ तुमए १०१५
अर्थ—तेरा स्वामीको उस अवसरमें बालक है ऐसा जानके हमने दयासे जीता हुआ छोड़ा तिस कारणसे तैने हमको हीनवली वर्णन किया और उस अपने स्वामीको बलवान वर्णन किया ॥ १०१५ ॥
नियजीवियस्स नाहं, रुट्टो रुट्टो हु तस्स जमराया। जेणाहं निर्चितो, सुत्तो सीहुव जग्गविओ ॥ १०१६॥
अर्थ—अरे में अपने जीवितव्यपर नहीं नाराज हुआ हुं किंतु निश्चय तेरे स्वामीके जपर यमराजा नाराज हुआ है
जिससे तेरे स्वामीने सोते सिंहके जैसा मेरेको जगाया॥ १०१६॥
जं तं दूओसि दिओसि, तेण मुकोसि गच्छ जीवंतो। तुह सामियहणणत्थं, एसोहं आगओ सिग्धं १०१७

श्रीपाल-चिरतम् ॥ १२६॥ श्री — त्रो तें दूत है और ब्राह्मण है इसकारणसे छोड़ा है तें जीताहुआ चलाजा तेरे स्वामीको मारनेके वास्ते में सहितम्, सहितम्, श्रीव दुयं गंतुं, सबं नियसामिणो निवेषइ। तत्तो सो सिरिपालो, भूवालो चिल्लेओ सबलो ॥१०१८॥ अर्थ — तदनंतर दूतभी शीघ्र जाके सर्ववृतान्त अपने स्वामीसे कहे तदनंतर श्रीपालराजा सबल सैन्यसहित चला॥ १०१८॥ चला॥ १०१८॥
चंपाए सीमाए, गंतूणावासियं समग्गंपि। सिरिपालरायसिन्नं, तिंडणीतडउच्चभूमीए॥ १०१९॥
अर्थ—चंपानगरीकी सीमामें जाकर सम्पूर्ण श्रीपाल राजाका सैन्य कटक गंगानदीके तटपर निवेश किया॥१०१९॥
सो अजियसेण रायावि, सम्मुहो आविऊण तत्थेव। आवासिओ य अभिमुह,—महीइ सिन्नेण संजुत्तो॥
अर्थ—वह अजितसेन राजाभी सामने आके उसी गंगानदीके तटपर सन्मुखभूमिमें अपनी सेनासहित उतरा १०२०
सोहिज्जइ रणभूमी, किज्जइ पूयाय सयलसत्थाणं। सुहडाणं च पसंसा, किज्जइ भट्टेहिं उच्चसरं॥१०२९॥
अर्थ—तदनंतर संग्रामकी भूमि पत्थर कांटा वगैरह दूर करके शुद्ध करी जावे और सम्पूर्ण शस्त्रोंकी पूजा करे और भट्ट लोक जंचे स्वरसे योद्धारोंकी प्रशंसा करे॥ १०२१॥
किज्जंति भूहरीओ, सुहडाणं चारु चंदणरसेण। पूरिज्ञंति य सिहरा, चंपयकुसुमेहिं पवरेहिं॥१०२२॥

अर्थ—तथा सुभटोंके सुंदर चंदनके रससे आड़ा तिलक विशेष करा जावे और प्रधान चंपेके पुष्पोंकरके सुभटोंके मस्तकों पर सेहरा पूरा जावे ॥ १०२२ ॥

वामपयतोडरेहिं, दाहिणकरचारुवीरबलएहिं। वारणयचामरेहिं, नर्जात फुडं महासुहडा ॥ १०२३ ॥ अर्थ—डावे पगमें तोडर मालविशेष तथा जीवने हाथमें मनोहर वीरविलयां वीरत्वसूचक कड़ा विशेषों करके और छत्र चामरों करके प्रगट महासुभट जाने जावे॥ १०२३॥

गयगज्जियं कुणंता सुहडगणा तत्थ सीहनायं च । मुचंता नचंता, कुणंति वरवीरवरणीओ ॥ १०२४ ॥ अर्थ—वहां दोनों सेनामें सुभटोंका समूह हाथीके जैसा गर्जारव कर्ती हुआ सिंहनाद करतेहुए नांचतेहुए प्रधानबीर वर्णी नाम प्रस्पर शस्त्रोंके प्रहारकी याचना करे ॥ १०२४ ॥

जणयपुरओवि तयणं, कावि हु जणणी भणेइ वच्छ तए ! तह कहिव जुिन्झियवं, जह तुह ताओ न संकेइ॥
अर्थ—कोईक माता पिताके आगे पुत्रसे कहे हे वत्स तेरेको उस प्रकारसे युद्ध करना कि जिससे तेरे पिताको शंका
न होवे अर्थात् लोक ऐसा न कहे कि अमुकका पुत्र शूर नहीं है॥ १०२५॥
अन्नाभणेइ वच्छाहं, वीरसुया पियाय वीरस्स । तह तुमए जइअवं, होमि जहा वीरजणणीवि ॥१०२६॥

अर्थ—अन्य कोई स्त्री पुत्रसे कहे हे वत्स में शूरवीरकी पुत्री हूं और शूरवीरकी स्त्री हूं अब तेरेको वैसा युद्ध करना कि जिससे में शूरवीरकी माता हो जावुं ॥ १०२६ ॥ धन्ना सच्चियनारी, जीए जणओ पईय पुत्तो य । वीरा—वयाय पयवी, समन्निया हुंति तिन्नि वि ॥१०२७॥ अर्थ—वही स्त्री धन्य है जिसका पिता १ और पित २ और पुत्र ३ यह तीनोंभी वीर पदवी सहित होवें ॥१०२७॥ कावि पइं पइ जंपइ, महमोहो नाह नेव कायवो। जीवंतस्स मयस्स व, जंतुह पुट्टिं न मुंचिस्सं ॥१०२८॥ अर्थ—कोईक स्त्री अपने भर्तारसे कहे हे नाथ मेरा मोह नहीं करना जिस कारणसे मैं तुह्नारे जीते हुए और मरे हुएभी साथहीमें रहूंगी अर्थात् मरनेसे सती होंगी ॥ १०२८ ॥ कावि हु हसेइ रमणं,मह नयणहओवि होसि भयभीओ,नाह तुमं विज्जुज्जल,-भक्षयधाए कहं सहिस १०२९ अर्थ—कोई स्त्री अपने भर्तारको ्हंसे हे नाथ तुम मेरे नेत्रोंसे ताड़े हुए भयभीत होवोहो तब वीजलीके जैसा

उज्ज्वल भाला खङ्गादिकका प्रहार कैसे सहोगे ॥ १०२९ ॥

इत्थंतरंमि उब्भड,-सुहडकयाडंबरं व असहंतो । सूरो फुरंततेओ, संजाओ पुवदिसिभाए ॥ १०३०॥ अर्थ--इस अवसरमें उद्धत सुभटोंने किया आडंबर नहीं सहता होवे वैसा सूर्य पूर्वदिशिमें उदय हुआ कैसा सूर्य बहुत है तेज जिसका चलता हुआ ऐसा सूर्य उदय भया ॥ १०३०॥

मिलिऊण तक्खणं चिय, अग्गिमसेणाइ उब्भडा सुहुडा । मग्गणमसिक्खियंपि हु कुणंति पढमासिघायाणं ॥ १०३१ ॥

अर्थ—तब आगेकी सेनाका सुभट उद्भट तत्कालही परस्पर मिलके पहले खद्ग प्रहारोंकी मांगना नहीं सीखे हैं तौभी याचना करें ॥ १०३१ ॥

खग्गाखग्गि सरासरि, कुंताकुंतिप्पयंडदंडं च । झुझंता ते सुहडा, संजाया एगमेगं च ॥ १०३२॥

अर्थ—खड़वाले खड़वालोंसे युद्धकरें बाणवाले बाणवालोंसे युद्धकरें भालावाले भालावालोंसे युद्धकरें दंडवाले दंडवालोंसे युद्धकरें ऐसे युद्ध करते २ सुभट दोनों सेनाके इकट्ठे होगए ॥ १०३२ ॥

कस्सवि भडस्स सीसं, खग्गच्छिन्नं च वालविकरालं। रविणोवि राहुसंकं, करेइ गयणंमि उच्छलियं १०३३

अर्थ—किसी सुभटका मस्तक शत्रुने खड़से काटा वालोंसे विकराल आकाशमें उछला हुआ सूर्यकोभी राहु ग्रहकी शंका उत्पन्न करे अर्थात् जैसा ग्रहण होगया हो वैसा मालूम होवे ॥ १०३३ ॥

कोवि भडो सिक्षेणं, गयणे उछालिओ महस्रेणं । दीसइ सुरंगणाहिं, सग्गमियंतो सदेहुव ॥१०३४॥ अर्थ—कोईक सुभट वर्छी शस्त्रसे आकाशमें उछालागया ऐसा देवाङ्गनाओं सहित शरीर जिसका ऐसा स्वर्गसे आता होवे वैसा देखनेमें आवे ॥ १०३४ ॥

को वि हु भड़ो भिड़ंतो, च्छिन्नसिरो खग्गखेडयकरो य, गयसरुणसीसभारो, पणच्चए जायहरिसुव १०३५ अर्थ—कोई सुभट युद्धकरता बैरीने मस्तक काटिंदया जिसका ऐसा ढाल तलवार जिसके हाथमें है ऐसा ऋणा जिसका गया होवे ऐसा मस्तकका भार गया वैसा मानता हुआ इसीकारणसे भया है हर्ष जिसको ऐसा सहर्षके जैसा रणाङ्गण नाटक करता है ॥ १०३५॥

तत्थय पप्पडभंगं, भजंति रहाय कोहलयभेयं। भिजंति गया तुरया चिब्भडच्छेयं च छिजंति ॥१०३६॥ अर्थ—उस संयाममें रथोंका भंग पापड़के जैसा होवे हैं और हाथी कुष्मांडके जैसा विदारण किए जावे हैं और घोड़ा काकड़ीके जैसा काटे जावे हैं ॥ १०३६॥

तओ सत्थत्थिरिया, बहुमुंडमंडियाधउडिया भड । धडेहिं, अंतेहिं निरंतरया, भिरया मयहयगयसएहिं अर्थ—तदनंतर वह संग्रामभूमि क्षणेकमें ऐसी भई यह दूसरी गाथाके अंतपदमें अव्रण है कैसी भई सो कहते हैं शस्त्रोंसे आस्तृत भई बहुत मस्तकोंसे भूषित भई और वीरोंके कलेवरोंसे ऊंचीनींची भई आंतर शरीरके अवयव विशेषसे व्याप्त भई और मरेहुए सैकड़ों हाथी घोड़ोंसे भरीगई॥ १०३७॥ हिरोहजणियकइम,मज्झविमदिज्जमाणमडयाणं।कडयडसहरउद्दा, खणेण सा रणमहीजाया॥१०३८॥

अर्थ—तथा लोहूका प्रवाह उससे उत्पन्न भया जो कर्दम उसमें चलते हुएके पगोंसे मर्दन होवे मृतकोंके शरीर उन्होंका जो कड़ २ शब्द उसकरके भयंकर ऐसी संग्रामभूमि भई॥ १०३८॥
युग्मं सिरिपालबलभडेहिं, भग्गं दहूण नियवलं सयलं, उट्टइ अजियसेणो, नियनामाओ व लजंतो॥
अर्थ—श्रीपाल राजाको जो वल उसमें जो सुभट उन्हों करके भागाहुआ सम्पूर्ण अपने सैन्यको देखके अजितसेन राजा अपने नामसे लज्जित हुआ होवे ऐसा उद्यतवान होवे किसीने नहीं जीती है सेना जिसकी ऐसी व्युत्पत्ती

जा सो परबलसुहडे, कुवियकयंतुव संहरइ ताव। सत्तसयराणएहिं, समंतओ वेढिओ झत्ति ॥१०४०॥ अर्थ—वह अजितसेन राजा कोधातुर हुआ यमराजके जैसा जितने शत्रुसेनके सुभटोंका संहार करे उतने ७०० संख्यावाले राणा लघुराजा विशेष श्रीपाल राजाके सेवकोंने शीघ्र चौतर्फसे बीटा अर्थात् घेरा दिया॥ १०४०॥ पच्चारिओ य तेहिं, नरवर अज्जवि चएसु अभिमाणं। सिरिपालरायपाए, पणमसु मा मरसु मुहियाए १०४१

पद्मारिओ य तेहिं, नरवर अज्ञवि चएसु अभिमाणं। सिरिपालरायपाए, पणमसु मा मरसु मुहियाए १०४१ अर्थ—और उन्होंने बतलाया नाम कहा हे महाराज अबीभी अहंकारको छोड़ो श्रीपाल राजाके चरणोंमें नमस्कार करो व्यर्थ क्यों मरते हो अर्थात् व्यर्थ मत मरो॥ १०४१॥ तहिव हु जाव न थकइ, झुझंतो ताव तेहिं सुहडेहिं। सो पाडिऊण बद्धो, जीवंतो चेव लीलाए॥१०४२॥

श्रापाल-चरितम् 11 १२९ 11 अर्थ—ऐसे कहने परभी जितने युद्धसे नहीं निवृत्त होवे उतने उन श्रीपाल राजाके सुभटोंने अजितसेन राजाको नीचा गिराफे लीलासे बांध लिया ॥ १०४२ ॥ सिरिपालरायपासे, आणीओ जाव सो तहा बद्धो । ताव तेणं च रन्ना, सोविहु मोयाविओ ज्झत्ति १०४३ अर्थ—श्रीपाल राजाके पासमें जितने अजितसेन राजाको बांधके लाए उतने श्रीपाल राजाने अजितसेन राजाको ज्ञीन्न बंधनसे छुड़ाया ॥ १०४३ ॥ भणिओय ताय मा किंपि, नियमणे संकिलेसलेसंपि। चिंतेसु किं तु पुद्वंव, नियभुवं भुंजसु सुहेणं १०४४ अर्थ—और कहा हे तात अपने मनमें कोई प्रकारसे संक्षेशका लेशभी मत विचारो किंतु पहलेके जैसा अपना राज सुखसे करो ॥ १०४४ ॥

§ 8

11 856 11

तो अजियसेण राया, चित्ते चितेइ ही मए किमियं। अविमंसियं कयं जं, दूयस्स न मिन्नयं वयणं ॥१०४५॥ अर्थ—बाद श्रीपाल राजाका बचन सुनोंके अनन्तर अजितसेन राजा मनमें बिचारे हि दूतिखेदे मैंने क्या यह विना बिचारा कार्य किया कि जो दूतका बचन नहीं माना ॥ १०४५ ॥ कत्थाहं बुद्धोवि हु, परदोहपरायणो महापावो। कस्थ इमो बालोवि हु, परोवयारिक अन्मपरो ॥ १०४६॥

अर्थ निश्चय में वृद्ध हूं तोभी परद्रोह करनेमें तत्पर महापापी हूं यह श्रीपाल बालक हैं तथापि परोपकारही एव धर्म वही प्रधान जिसके ऐसा है कहां यह कहां में ॥ १०४६ ॥

धम वहा प्रधान जिसके ऐसा है कहा पह कहा ने गारिकर गा गुत्तदोहेण कित्ती, नासई नीईय रायदोहेण । वालदोहेण सुगई हहा मए तं तिगंपि कयं ॥१०४७ ॥ अर्थ—और विचार करे गोत्रद्रोहसे कीर्ति नष्ट होवे है और राजद्रोहसे नीति न्याय मार्ग नष्ट होवे है तथा बाल द्रोहसे सुगति देव गत्यादिक नष्ट होवे है ह इति खेदे मैंने यह तीनों किया ॥ १०४० ॥ कत्थित्थि मझठाणं, नरयं मूत्तूण पावचरियस्स । ता पावघायणत्थं, पव्वजं संपविज्ञामि ॥ १०४८ ॥

अर्थ-ऐसा पाप आचरण करनेवाला मेरेको नरक सिवाय और कौनसा ठिकाना है इसलिए इस पापका विनाश करनेके वास्ते जैनी दीक्षा अंगीकार करूं ॥ १०४८ ॥

एवं च तस्स चिंतंतयस्स, सुहभाव-भावियमणस्स। पावरासीहिं भिन्नं, दिन्नं विवरं च कम्मेहिं १०४९

अर्थ-अनन्तरोक्त प्रकारसे विचारता इसी कारणसे शुभ परिणामसे भावित मन जिसका ऐसा अजितसेन राजाका पापसमृह बिदीर्ण हुआ और कर्मराजने विवर दिया ॥ १०४९ ॥

तो सरियपुवजम्मेण, तेण सिरिअजियसेणभूवइणा, पडिवन्नं चारित्तं, सुदेवयादत्तवेसेणं ॥१०५०॥ 🖔 अर्थ—तदनंतर अजितसेन राजाको जातिसरण ज्ञान उत्पन्न भया अर्थात् पूर्व भवजाना ऐसा अजितसेन राजाने 🦃

For Private and Personal Use Only

सर्ववृत्तिरूप चारित्र अंगीकार किया कैसा अजितसेन राजा सम्यक् दृष्टि देवताने दिया रजोहरणादि साधुका वेष किसको ऐसा ॥ १०५० ॥
तं च पडिवन्नचिर्त्तं, दृहुं सिरिपालनरवरो झित्त । पणमेइ सपरिवारो, भत्तीइ थुणेइ एवं च ॥ १०५१ ॥
अर्थ—अंगीकार किया चारित्र जिसने ऐसे अजितसेन राजिषको देखके श्रीपाल राजा शीघ्र परिवार सिहत नमस्कार करे और भिक्तसे इस प्रकारसे स्तुति करे सो कहते हैं ॥ १०५१ ॥

कार कर और भक्ति इस प्रकारसं स्तुति कर सा कहत ह ॥ १०५१ ॥
जिणेस कोहजोहो हिणिओ, हेलाइ खंतिखग्गेणं। समयासियधारेणं, तस्स महामुणिवइ नमो ते ॥१०५२॥
अर्थ—जिसने यह कोधरूप योध क्षमारूप खद्गसे लीलासे हन दिया ऐसे आप महामुनि पतिको नमस्कार होवे कैसा क्षमारूप खद्ग समताही है तीक्षण धाराजिसकी ऐसा ॥ १०५२ ॥
माणागिरिगरुयमयसिहर,—अट्टयं महविक्कवज्जेणं। जेण हिणऊण भग्गं, तस्स महामुणि-वइ नमो ते ॥
अर्थ—और जिस मुनिने मान अभिमानही पर्वत उसपर बड़े २ लाभ ऐश्वर्यादिक आठ मद रूप शिखर उन्होंको मार्दव रूप एक अद्वितीय बज्ज करके तोड़ा उस आप महामुनिको नमस्कार होवे ॥ १०५३ ॥
मायामयविसवल्ली, जेणज्जवसारसरलकीलेणं। उक्खिणया मूलाओ, तस्स महामुणिवइ नमो ते १०५४

अर्थ—और माया स्वरूप जिसका ऐसी मायारूप विषकी बेठको जिसमुनिने आर्जव सरठताही श्रेष्ठ सरठकीला शंकु उस करके मूलसे उलाड़दी उस महामुनिको नमस्कार होवो ॥ १०५४ ॥ जेणिच्छामुच्छावेलसंकुलो, लोहसागरो गरुओ। तरिओ मुत्तितरिए, तस्स महामुणिवइ नमो ते १०५५

अर्थ—जिस मुनिने बड़ा लोभसमुद्रको मुक्तिनाम निर्लोभतारूप जहाजसे तिरा अर्थात् पार उतरे उस महामुनिको मस्कार होवो कैसा लोभ समुद्र इच्छा मूर्च्छा बेलासे संकुल व्याप्त इच्छा सामान्य प्रकारसे बांधा मूर्छा विशेष तृष्णा कि यक्त मर्काही बेला जल वृद्धि करके व्याकल ॥ १०५५ ॥ नमस्कार होवो कैसा लोभ समुद्र इच्छा मूर्च्छा वेलासे संकुल व्याप्त इच्छा सामान्य प्रकारसे वांधा मूर्छा विशेष तृष्णा इच्छा युक्त मूर्छाही वेला जल वृद्धि करके व्याकुल ॥ १०५५ ॥

जेण कंदप्पसप्पो, विवेयसंवेय—जिणय जंतेण। गयदप्पुचिय विहिओ, तस्स महामुणिवइ नमो ते १०५६ अर्थ—जिस मुनिने विवेक समवेगसे उत्पन्न किया जो यंत्र उस करके कंदर्परूप सर्पको गत दर्प किया अर्थात् गया अभिमान जिसका ऐसा किया उस महामुनिको नमस्कार होवे॥ १०५६॥

जेण नियमण-पडाओ, कोसुंभ-पयं-गमंगसमरागो।

तिविहोवि हु निद्धओ, तस्स महामुणिवइ नमो ते ॥ १०५७ ॥ अर्थ—जिस मुनिने अपने मनरूप वस्त्रसे कुसुम्भ १ पतंग २ मंग ३ सदद्य कामणा १ स्नेहणा २ दृष्टि एग ३ यह तीन प्रकारका राग दूर किया उस महामुनिको नमस्कार होवो वहां कसूमल रंग सरीखा कामणा और पतंग रंग

सरीखा स्नेहणा और मंगणां सरीखा दृष्टिणा मंग रंजन द्रव्य विशेष उसका राग दुस्यज होते हैं ॥ १०५७ ॥ दोसो दुट्ट-गइंदो, वसीकओ जेण ठीठिमित्तेणं। उवसमितिणि निउणेणं, तस्स महामुणिवह नमो ते १०५८ अर्थ—और जिस मुनिने ठीछा मात्रसे द्वेषक्ष दृष्ट हाथीको बसकिया उस महामुनिको नमस्कार होवो कैसा है वह महामुनि उपशमक्ष्य अंकुशके प्रयोगमें निपुणा जाननेवाछा ॥ १०५८ ॥ मोहो महस्ल-मह्योवि, पीडिओ ताडिऊण जेणेसो, वेरग्ग-मुग्ग-रेणं, तस्स महामुणिवइ नमो ते १०५९ अर्थ—जिस मुनिने यह मोहरूप महा महकोभी बैराग्य मुहरसे ताड़के पीडित किया उस महामुनिकों नम-

एए अंतर-रिउणो, दुज्जेया स्थलसुरविंदेहिं। जेण जिया लीलाए, तस्स महामुणिवइ नमो ते १०६० अर्थ—सम्पूर्ण देवेन्द्रो करके दुर्जेय ये क्रोधादिक अंतर शत्रु जिस महामुनिने लीलामात्रसे जीता उस महामुनिको नमस्कार होवो ॥ १०६०॥

पुर्विप तुमं पुज्जो, आसि ममं जेण तायभायासि । संपड् पुणो मुणीसर,-जाओ-पुज्जो तिस्कृकस्स १०६१ क्रिं अर्थ-पहलेभी आप मेरे पूज्य थे जिसकारणसे मेरे पिताके आप भाई हैं इस वक्तमें मुनीश्वर होनेसे तीन जग-

तके पूज्य भए हो ॥ १०६१ ॥

एवं थोऊण नमंसिऊण, तं अजियसेणमुणिनाहं । सिरिपालनिवो ठावइ, तप्पुत्तं तस्स ठाणंमि ॥१०६२॥ अर्थ—इस प्रकारसे उस अजितसेन मुनिराजकी स्तुति करके और नमस्कार करके श्रीपाल राजा अजितसेन राजाके पुत्रको उसके स्थानमें वैठावे ॥ १०६२ ॥ कयसोहाए चंपापुरीइ, समहुसवं सुमुहत्ते । पविसइ सिरिसिरिपालो, अमरपुरीए सुरिंदुव ॥ १०६३ ॥ अर्थ—करी है शोभा जिसकी ऐसी चंपानगरीमें श्रीपाल राजा अच्छे मुहूर्तमें उत्सव सहित प्रवेश करें किसमें किसके जैसा अमरपुरी देवनगरीमें इन्द्रके जैसा ॥ १०६३ ॥

तत्थय सयलेहिं, नरेसरेहिं, मिलिऊण हरिसियमणेहिं।

वियपहांमि निवेसिय, पुणोमिसेओ कओ तस्स ॥ १०६४ ॥

अर्थ—वहां चंपानगरीमें हर्षित मन जिन्होंका ऐसे सर्व राजा मिलके पिताके पट्टमें स्थापके श्रीपाल राजाका और भी राज्याभिषेक किया ॥ १०६४ ॥

मूलपद्याभिसेओ, कओ तिह मयणसुंद्रि-एवि। सेसाणं अट्टन्हं, कओ अ लहु-पद्टअभिसेओ १०६५ अर्थ-वहां मदन सुंदरीका मूल पद्यामिषेक किया अर्थात् मूल पट्टरानीपदमें स्थापित करी और आठ रानियोंको छोटी पट्टरानी की॥ १०६५॥

मइसागरो य इक्को, तिन्नेव य धवलिसिट्टिणो मित्ता। एए चउरोवि तया, रन्ना नियमंतिणो ठविया १०६६ अर्थ—उस वक्तमें एक मितसागर और तीन धवल सेठका मित्र यहचार श्रीपाल राजाने अपने मंत्री स्थापें १०६६ कोसंबीनयरीओ, आणाविओ धवलनंदणो विमलो। सो कणयपद्दपुब्वं, सिट्टी संठाविओ रन्ना १०६७ अर्थ—तथा कौशम्बी नगरीसे विमल नामका धवल सेठके पुत्रको बुलाके श्रीपाल राजाने सोनेका सिरपेच बंधाने अट्ठाहियाओ चेईहरेसु, काराविऊण विहिपुर्व । सिरिसिद्धचक्कपूर्य, च कारए परमभत्तीए ॥ १०६८ ॥ 🖟 अर्थ—तथा श्रीपाल राजा जिनमंदिरोंमें अडाईका महोत्सव कराके विधिपूर्वक परम भक्तिसे सिद्धचक्रकी पूजा ठाणे ठाणे चेइयहराइं, कारेइ तुंगसिहराइं। घोसावेइ अमारिं दाणं दीणाण दावेइ ॥ १०६९ ॥
अर्थ—ठिकाने २ ऊंचा है शिखर जिन्होंका ऐसे चैल यह जिनमंदिर करवावे तथा अमारी उद्घोषणा करवावे सर्व
जीवोंको अभय दान दिवावे और दीनोंको दान दिवावे इस प्रकारसे पुण्य कृत करे ॥ १०६९ ॥
नायमग्गेण रज्जं, पालंतो पिययमाहिं संजुत्तो। सिरिसिरिपालनिरंदो, इंदुव करेइ लीलाओ ॥ १०७० ॥
अर्थ—न्यायमार्गसे राज्य पालता हुआ स्त्रियोंसहित श्रीपाल राजा इन्द्रके जैसी लीला कीडा करे ॥ १०७० ॥

अह अजियसेणनामा, रायरिसी सो विसुद्धचारितो। उप्पन्नावहिनाणो, समागओ तत्थ नयरीए १०७१ अर्थ—अथ अजितसेननामराजर्षि चंपानगरीके उद्यानमें आके समवसरे कैसे हैं अजितसेनराजर्षि निर्मल चारित्र जिन्होंका इसी कारणसे उत्पन्न भया है अविध ज्ञान जिन्होंको ऐसे ॥ १०७१ ॥ तस्सागमणं सोऊण, नरवरो पुलइओ पमोएणं। माइपियाहिं समेओ, संपत्तो वंदणनिमित्तं ॥१०७२॥ अर्थ—उस राजर्षिका आगमन सुनके श्रीपाल राजा हर्षसे रोमोद्गमयुक्त माता और रानियोंसहित मुनिको बांदनेको गया ॥ १०७२ ॥

तिपयाहिणित्तु सम्मं, तं मुणिनाहं निमत्तु नरनाहो। पुरओ य संनिविद्वो, सपरिवारो य विणयपरो १०७३ अर्थ—राजा सिरिपाल अजितसेन राजिषको तीन प्रदक्षिणा देके अच्छी तरहसे नमस्कार करके आगे बैठा कैसा सिरिपाल राजा परिवार सिहत और विनयमें तत्पर ॥ १०७३ ॥ सोवि सिरिअजियसेणो, मुणिराओ रायरोसपरिमुक्को। करुणिक्कपरो परमं, धम्मसरूवं कहइ एवं १०७४ अर्थ—वह श्रीअजितसेन मुनिराज रागद्वेषसे सर्वप्रकारसे रिहत और करुणाही प्रधान जिन्होंके ऐसे वश्यमाण प्रकार करके प्रधान धर्मका स्वरूप कहे ॥ १०७४ ॥ भो भवा भवोहंमि, दुल्लहो माणुसो भवो। चुल्लगाईहिं नाएहिं, आगमंभि वियाहिओ ॥१०७५॥

अर्थ—अहो भव्यो भवोघनाम संसारमें मनुष्य सम्बन्धी भवसिद्धान्तमें चुहुग पासगधन्ने इत्यादि दश दृष्टांतों प्रमाषाटीका-करके दुर्छभ कहा है ॥ १०७५ ॥ लक्ष दुलम कहा हु । १००६ ।। लद्धंमि माणुसे जम्मे, दुछहं खित्तमारियं । जं दीसंति इहाणेगे, मिच्छाभिछापुलिंदया ॥ १०७६ ॥ अर्थ—कदाचित मनुष्य भव पानेसे आर्य क्षेत्र पाना दुर्लभ है जिस कारणसे इस भरतक्षेत्रमें अनार्य देशोंमें बहुतसे म्लेच्छ, भील पुलिन्दादिक रहते हैं वे धर्म क्या जानें ॥ १०७६ ॥ आरिएसु य खित्तेसु, दुह्नहं कुलमुत्तमं । जं बाह्सुणियाईणं, कुले जायाण को गुणो ॥ १०७७ ॥ अर्थ—आर्य क्षेत्र पानेसेमी उत्तम कुलपाना दुर्लभ है जिस कारणसे आर्य क्षेत्रमेंमी व्याध कसाइ वगेरेह; के कुलमें उत्पन्न होनेसे क्या गुण होवे अपितु कोई गुण न होवे ॥ १०७७ ॥ कुले लच्चे वि दुर्छमं, रूवमारुग्गमाउयं । विगला वाहियाऽकाल,-मया दीसंति जं जणा ॥ १०७८ ॥ अर्थ—उत्तम कुल पानेसेभी रूप पांच इन्द्रिय परिपूर्ण तथा आरोग्य निरोगता और बड़ा आयुष ये तीन बात पानी दुर्लभ हैं जिस कारणसे उत्तम कुलमेंभी उत्पन्न भए बहुत लोक बिकलेन्द्रिय रोगी और अकालमेंही मरते हुए तेसु सबेसु लखेसु, दुछहो गुरुसंगमो । जं सया सबिखत्तेसु, पाविजाति न साहुणो ॥ १०७९ ॥

अर्थ—वह रूपादिक सर्व पानेसेभी सद्धुरुका संयोग दुर्गम है जिस कारणसे सर्व क्षेत्रोंमें सदा साधु नहीं रहतेहैं १०७९ महंतेणं च पुन्नेणं, जाए—वि गुरुसंगमे । आलस्साईहिं रुद्धाणं, दुछहं गुरुदंसणं ॥ १०८० ॥ अर्थ—कदा महान् पुण्योदयसे सद्धुरुका संयोग होनेसेभी आलस्यादिक त्रयोदश तस्करोंने रोके हुए प्राणियोंको जय—कदा महाने पुण्यादेवस सद्धुरुका स्वांग हानसमा जाउँग्यादेश प्रमाप्त स्वारा हुए माजनामा गुरूका दर्शन होना दुर्लभ है वह तेरे काठिया यह है आलस्स मोह वन्नाथं भाकोहा पमाय किवणत्ता भयसोगा अन्ताणा वक्खे वक्रु तुहलार आलस १ मोह २ वर्ण ३ मान ४ कोध ५ प्रमाद ६ कृपणपना ७ भय ८ शोक ९ अज्ञान १० व्याक्षेप ११ कृतूहल १२ कीड़ा १३ ये १३ काठिया गुरूका दर्शन नहीं करने देवे ॥ १०८० ॥ कहं कहंपि जीवाणं, जाएवि गुरुदंसणे । वुग्गाहियाण धुत्तेहिं, दुछहं पज्जु—वासणं ॥ १०८१ ॥ अर्थ-जीवोंके कोई प्रकारसे गुरूका दर्शन होनेसेभी धूर्तोंने चित्तमें भ्रांति करदी होवे ऐसे जीवोंसे गुरुकी सेवा करनी दुर्लभ होवे है।। १०८१।। ग्रुरुपासेवि पत्ताणं, दुछहा आगमस्सुई । जं निद्दाविगहाओय, दुज्जयाओ सयाइवि ॥ १०८२ ॥ अर्थ—गुरूके पासमें जानेसेमी सिद्धान्तका सुनना दुर्लभ है जिस कारणसे निद्रा विकथा सदा दुर्जय है इसिएए

संपत्ताए सुईएवि, तत्तबुद्धी सुदुछहा। जं सिंगारकहाईसु, सावहाणमणो जणो॥ १०८३॥

अर्थ—सिद्धान्त सुननेसेभी तत्व परबुद्धि अतिशय दुर्लभ है जिसकारण लोक शृंगारहास्यादिककी कथा सावधान होके एकाय चित्तसे सुनते हुए बहुतसे दीखते हैं ॥ १०८३ ॥ उवइट्ठेवि तत्तंमि, सद्धा अचंतदुछहा । जं तत्तरुइणो जीवा, दीसंति विरला जए ॥ १०८४ ॥ अर्थ—गुरूने तत्व कहां थकां आस्तिक्य श्रद्धा अत्यन्त दुर्लभ है जिस कारणसे तीर्थंकरके कहे हुए पदार्थोंपर रुचि है जिन्होंकी ऐसे तत्व रुचि जीव विरला दीखते हैं ॥ १०८४ ॥

जायाए तत्तसद्धाए, तत्तवोहो सुदुछहो। जं आसन्नसिवा केई, तत्तं वुज्झंति जंतुणो॥ १०८५॥

अर्थ—तत्व प्रतीति होनेसेभी तत्वका बोध होना दुर्छभ है जिस कारणसे जिन्होंके नजदीक मोक्ष जाना है ऐसे जीवोंको तत्वका बोध होवे है औरोंको नहीं ॥ १०८५ ॥

तत्तं दसिवहो धम्मो, खंती मद्दवमज्जवं । मुत्तीतवो द्यासचं, सोयं बंभमिकंचणं ॥ १०८६ ॥

अर्थ—तत्व क्या है सो कहते हैं तत्व दश प्रकारका यतिधर्म सो कहते है क्षमा १ मार्दव २ आर्जव ३ मुक्ति ४ तप ५ दया ६ सत्य ७ शौच ८ ब्रह्मचर्य ९ अकिंचन १०॥ १०८६॥

खंतीनाममकोहत्तं, मद्दवं माणवज्जणं । अज्जवं सरलो भावो, मुत्ती निग्गंथया दुहा ॥ १०८७ ॥

अर्थ—अब इन्होंका अर्थ कहते हैं क्षमा नाम क्रोघका अभाव १ मार्दव मानका त्याग २ आर्जव सरलभाव ३ मुक्ति निर्लोभता दो प्रकारकी द्रव्यभावसे परिग्रह रहितपना निग्रंथता और निर्लोभता ४ ॥ १०८७ ॥ तवो इच्छानिरोहो य, द्या जीवाणपालणं । सच्चं वक्तमसावज्ञं, सोयं निम्मलचित्तया ॥ १०८८ ॥ अर्थ—इ्च्छाका रोकना तप कहा जावे ५ जीवोंका रक्षण दया ६ निर्दोषवचन बोलना सो सत्य कहा जावे ७ निर्मल चित्तपना शौच कहा जावे ८ ॥ १०८८ ॥ बंभमट्ठारभेयस्स, मेहुणस्स विवज्जणं । अंकिंचणं न मे कज्जं, केणावित्थित्तिऽणीहया ॥ १०८९ ॥ अर्थ—अठारह प्रकारके मैथुनका त्याग ब्रह्मचर्य कहा जावे वहां औदारिक वैकिय भेदसे दो प्रकारका मैथुन वह एक २ भी मन बचन कायासे करना कराना अनुमोदन भेदसे ९ प्रकारका होवे है दोनोंके मिलानेसे १८ भेद होवे है ९॥ किसी बस्तुसे मेरे प्रयोजन नहीं है ऐसी निस्पृहता अकिंचन कहा जावे १०॥ १०८९॥ पसो दसबिद्वदेसो, धम्मोकप्पद्दमोवमो । जीवाणं पुण्णपुण्णाणं, सबसुक्खण दायगो ॥ १०९० ॥ अर्थ-यह दश भेद जिसका ऐसा यह धर्म कल्पवृक्षके सदश पूर्ण पुण्यजीवोंको सर्व सुलका देनेवाला है कल्पवृक्षभी दश प्रकारका है इससे धर्मको कल्पवृक्षकी उपमा करी ॥ १०९० ॥ धम्मो चिंतामणी रम्भो, चिंतियत्थाण दायगो। निम्मलो केवलालोय, लच्छिबिच्छिड्डिकारओ॥१०९१॥

अर्थ—धर्म चिंतामणि सदद्या मनोज्ञ वांछित अर्थका देनेवाला है कैसा है धर्म निर्मल, निर्दोष केवलज्ञानरूप लक्ष्मीका विस्तारके करनेवाला ॥ १०९२ ॥ कछाणिक्रमओ वित्त,—रूवे मेरुवमो इमो । सुमणाणं मणो तुर्हि, देइ धम्मो महोदओ ॥ १०९२ ॥ अर्थ—धर्म कल्याण मंगलके करनेवाला मेरुपर्वतके सरीखा मेरु पक्षमें कल्याण नाम स्वर्णमय मेरु है और प्रसिद्ध है और मेरु पक्षमें वर्तुल मेरु है और बहुत ऊंचा है धर्मभी ऐसाही है धर्मकाभी बड़ा उदय है और शोभन स्वरूप है और यह धर्म शुद्ध मनवालोंको अर्थात् निर्दोष मनवालोंको संतोष देवे है मेरु पक्षमें देवोंके मनमें संतोष होवे है ॥ १०९२ ॥ सुगुत्तसत्तिखित्तीए, सवस्सव य सोहिओ । धम्मो जयइ संवित्तो, जंबुद्दीवोवमो इमो ॥ १०९३ ॥

अर्थ—सर्व घरके सारसदृश अच्छी तरहसे रक्षा करी गई सात क्षेत्र जिनभवन १ जिनप्रतिमा २ पुस्तक ३ साधु ४ साध्वी ५ श्रावक ६ श्राविका ७ इन्होंकी जिसमें और सम्यक् आचार जिसमें ऐसा धर्म जम्बूद्वीपके जैसा सर्वोत्कृष्ट बतों जम्बूद्वीपमेंभी भरतादिक सात क्षेत्र हैं और गोल आकार है इस वास्ते जम्बूद्वीपकी उपमा करी ॥ १०९३॥

एसो य जेहिं पन्नतो, तेवि तत्तं जिणुत्तमा । एयस्स फलभूया य, सिद्धा तत्तं न संसओ ॥ १०९४॥ अर्थ—यह धर्म जिन्होंने कहा है ऐसे तीर्थंकरदेवभी तत्व कहे जावें हैं धर्मका फलभूत सिद्ध तत्व है इसमें सन्देह नहीं है ॥ १०९४॥

दंसंता एयमायारं, तत्तमायरियावि हु । सिक्खायंता इमं सीसे, तत्तमुझावयावि य ॥ १०९५ ॥ अर्थ—इस धर्मरूप आचारको पालते हुए और उपदेश देते हुए आचार्यभी तत्व है तथा शिष्योंको यह धर्म सिखाते हुए उपाध्यायभी तत्व कहे जावें हैं॥ १०९५॥

साहयंता इमं सम्मं, तत्तरूवा सुसाहुणो । एयस्स सद्दहाणेणं, सुतत्तं दंसणंपि हु ॥ १०९६ ॥ अर्थ—इस धर्मको सम्यक् प्रकारसे साधता हुआ सुसाधु तत्वरूप है इस धर्मके श्रद्धानसे जो सम्यक् दर्शन है वहभी

एयस्सेवावबोहेणं, तत्तं नाणंपि निच्छयं । एयस्साराहणारूवं, तत्तं चारित्तमेव य ॥ १०९७ ॥ अर्थ—इस धर्मका अवबोध सम्यक्ज्ञान वस्तु निर्णयात्मक ज्ञानभी तत्व कहा जावे और इस धर्मका आराधनारूप चारित्रभी तत्व है ॥ १०९७ ॥

इत्तो जा निजारातीए, रूवं तत्तं तवोवि य । एवमेयाइं सवाइं, पयाइं तत्तमुत्तमं ॥ १०९८ ॥ अर्थ—इस चारित्रसे जो कर्मोंकी निर्जरा वह सरूप जिसका ऐसा तपभी तत्व है इस प्रकारसे यह नवपद उत्तम सर्वोत्कृष्ट तत्व हैं ॥ १०९८ ॥

क्षा सवात्कृष्ट तत्व ह ॥ १०५८ ॥ ह तत्तो नवपई एसा, तत्तभृया विसेसओ । सबेहिं भवसत्तेहिं, नेया झेया य निचसो ॥ १०९९ ॥

अर्थ—इस कारणसे अनन्तरोक्त नवपदोंका समाहार नवपदी कहा जावे उसको सर्व भव्य प्राणियोंको तत्वभूत समझना और ध्यान करना ॥ १०९९ ॥
एयं नवपयं भवा, झायंता सुद्धमाणसा । अप्पणो बेव अप्पंमि, सक्खं पिक्खंति अप्पयं ॥ ११०० ॥
अर्थ—ए नवपदीको जानके छुद्ध मनसे ध्याते हुए मनुष्य अपने आत्माको साक्षात् नवपदमई देखते हैं ॥ ११०० ॥
अप्पंमि पिक्खिए जं च, क्खणे खिज्जइ कम्मयं । न तं तवेण तिवेण, जम्मकोडीहिं खिज्जए ॥११०१॥
अर्थ—आत्मा नवपदमई देखनेसे क्षणमात्रसे जो कर्म क्षय होवे वह कर्म तीव्रतपसे करोड़ जन्मसेभी नहीं क्षय होवे ११०१॥
अर्थ—आत्मा नवपदमई देखनेसे क्षणमात्रसे जो कर्म क्षय होवे वह कर्म तीव्रतपसे करोड़ जन्मसेभी नहीं क्षय होवे ११०१॥
अर्थ—तिस कारणसे अहो महाभाग्यवंतो आप यह उत्तम तत्व जानके अच्छी तरहसे जैसा बने वैसा ध्यावो जिस
कारणसे शीघ्र आनंद सम्पदा परम आल्हादरूप पावो ॥ ११०२॥ एवं सो मुणिराओ, काऊणं देसणं ठिओ जाव, ताव सिरिपालराया, विणयपरो जंपए एवं ॥११०३॥ अर्थ—वह अजितसेन मुनिराज इस प्रकारसे देशना देके जितने रहे उतने श्रीपालराजा विनयमें तत्पर होकर इस प्रकारसे कहे ॥११०३॥ नाणमहोयहि भयवं, केण कुकम्मेण तारिसो रोगो। बालते मह जाओ केण सुकम्मेण समिओ य॥११०४॥ 🕻

अर्थ हे ज्ञानसमुद्र हे भगवान किस कुकर्मसे मेरे बाल्य अवस्थामें वैसा रोग भया और किस सुकर्मसे शांत केणं च कम्मणाहं, ठाणे ठाणे य एरिसे रिद्धिं। संपत्तो तह केणं, कुकम्मणा सायरे पडिओ ॥ ११०५॥ अर्थ—किस कर्मसे मैने ठिकाने २ ऐसी ऋद्धि पाई और किस कुकर्मसे मैं समुद्रमें पड़ा ॥ ११०५॥ तह केण नीयकम्मेण, चेव डुंबत्तणं महाघोरं। पत्तोहं तं सबं, कहेह काऊण सुपसायं॥ ११०६॥ अर्थ—तथा किस नीच कर्मके उदयसे मैंने महाभयंकर डोमपना पाया वह सर्व कृपा करके कहो ॥ ११०६॥ तो भणइ मुणिवरिंदो, नरवर जीवाण इत्थ संसारे। पुवकयकम्मवसओ हवंति सुक्खाइं दुक्खाइं ॥११०७॥ अर्थ—तदनंतर मुनिवरीन्द्र कहे हे राजन इस संसारमें जीवोंके पूर्वकृतकर्मके उदयसे सुख दुःख होवे है सो इत्थेव भरहवासे, हिरन्नपुरनामयंमि वरनयरे । सिरिकंतो नाम निवो, पावड्डिपसत्तओ अस्थि ॥११०८॥ अर्थ—इसी भरतक्षेत्रमें हिररायपुर नामका प्रधान नगरमें आखेटकमें आशक्त ऐसा श्रीकान्त नामका राजा था ॥११०८॥ तस्सस्थिसिरिसमाणा, सरीरसोहाइ सिरिमई देवी। जिणधम्मनिउणबुद्धी, विसुद्धसंमत्तसीलजुआ ११०९

अर्थ—जस राजाके शरीरकी शोभा करके उक्ष्मीसमान श्रीमती नामकी पटरानी है कैसी है श्रीमती देवी जिनधर्ममें निपुण बुद्धि जिसकी और निर्मन्न और ब्रह्मचर्य करके सिहत ऐसी ॥ ११०९ ॥ तीए य नरविरंदो, भिणओ, तुहनाह जुज्जइ न एवं। पाविद्धमहावसणं, निबंधणं नरयदुक्खाणं ॥१११०॥ अर्थ—जस श्रीमतीने राजासे कहा हे स्वामिन् यह पापिई महाव्यसन तुमको युक्त नहीं है यह व्यसन नरकके दुःखका कारण है ॥ १११० ॥ भीसणसत्थकरेहिं, तुरयारूढेहिं जं हणिजंति। नासंतावि हु ससया, सो किर को खिचयायारो ॥११११॥ अर्थ—भयंकर शस्त्र है हाथोंमें जिन्होंके ऐसे घोड़ोंपर सवार भए मनुष्य जो भागते हुए मृगादि जीवोंको मारे वह क्या क्षत्रियोंका आचार है अपितु नहीं है ॥ ११११॥

जत्थ अकयावराहा, मया वराहाइणोवि निन्नाहा। मारिज्ञंति बराया, सा सामिय केरिसी नीई ॥१११२॥ अर्थ—जहां नीतिमार्गमें अपराधीको शिक्षा देनी ऐसा कहा है परन्तु जिन्होंने अपराध नहीं किया ऐसे मृग वराहा-दिक दुर्बल जीव मारे जावे हे स्वामिन् यह कैसी नीति है॥ १११२॥ हंतूण परप्पाणं, अप्पाणं जे कुणंति सप्पाणं। अप्पाणं दिवसाणं, कए य नासंति अप्पाणं॥ १११३॥

अर्थ—पर जीवोंको मारके उन्होंके मांस करके अपने प्राणोंको बलवान करते हैं वह दुष्ट थोड़े दिनोंके लिए अपने आत्माका नाश करते हैं ॥ १११३ ॥

इचाइ जिणिंदागमउवएससएहिं बोहियंतीए।तीए न सकिओ सो, निवारिओ पाववसणाओ ॥१११४॥ अर्थ—इत्यादि जिनागम सम्बन्धी सैकड़ों उपदेश देनेकर समझाया तौभी राजा पाप व्यसनसे नहीं निवृत्त भया॥१११४॥ अन्नदिणे सो सत्तिहं, सएहिं उहुंठदुंटुवंठेहिं। मिययासत्तो पत्तो, कत्थिव एगंमि वणगहणौ ॥१११५॥

अर्थ—अन्य दिनमें वह श्रीकान्त राजा ७०० उछंठ वंठ पुरुषोंके साथमें मृगयामें आसक्त भया कोई गहन बनमें प्राप्त भया ॥ १११५ ॥

द्ट्रुण तत्थ एगं, धम्मझयसंजुयं मुणिवरिंदं । राया भणेइ एसो, चमरकरो क्रुट्टिओ कोवि ॥१११६॥ अर्थ—उस वनमें एक रजोहरून सहित मुनिवरिंदको देखके राजा बोछे यह मक्लियों उड़ाने वास्ते चामर हाथमें जिसके ऐसा कोई कोढ़ी दिखता है ॥ १११६॥

तं चेव भणंतेहिं, तेहिं वंठेहिं दुट्टचित्तेहिं । उवसग्गिओ मुणिंदो, खमापरो लिहुलट्टीहिं ॥ १११७ ॥ अर्थ—ऐसा राजाके कहे हुए बचन बोलते हुए दुष्ट चित्तवाले वंठ पुरुषोंने मुनीन्द्रको पाषाण लकड़ियोसे उपसर्ग किया कैसा है मुनिवरीन्द्र क्षमा है प्रधान जिसके ऐसा ॥ १११७ ॥

राजांक पीछे लगे हुए अपने नगरम आए॥ १११९॥
अन्नदिणे सो पुणरिव, राया मिगयागओ नियं सिन्नं। मुत्तूण हरिण-पट्टीइ, धाविओ इकगो चेव ॥११२०॥ अर्थ—अन्यदिनमें राजा मृगयागयाभया अपने सैन्यको पीछे छोड़के अकेला हरिणके पीछे घोड़को दौड़ाया ११२० नइतडवणे निल्लको, सो हरिणो नरवरो तओ चुको। जा पिच्छइ ता पासइ, नइउवकंठे ठियं साहुं ११२१ अर्थ—वह हरिण नदीके तटपर जो बन वहां सघन वृक्षों करके आच्छादित होनेसे उस बनमें नहीं देखनेमें आया तब राजा मृगसे चूका हुआ जितने इधर उधर देखता है उतने नदीके किनारेपर काउसग्गमें खड़ा हुआ एक मुनीको देखा॥ ११२१॥

तं दट्टणं पावेण, तह पिछिओ मुणि-वरिंदो । सहसत्ति जहा पडिओ, नईजले तो पुणो तेण ॥ ११२२ ॥

अर्थ—उस साधुको देखके उस कूर राजाने वैसी हाथोंसे प्रेरणा करी कि जिससे मुनीन्द्र अकस्मात नदीके पानीमें

गिरा तदनंतर औरभी उस राजाने ॥ ११२२ ॥
संजायिकंपि करुणा,-भावेणं किंद्विज्ञण सो मुको । को जाणइ जीवाणं, भावपरावत्तामइ-विसमं ॥११२३॥ अर्थ—उत्पन्न भया कुछ दयाका परिणाम ऐसे राजाने उस मुनीन्द्रको उसी वक्त जलसे निकालके नदीके तटपर रक्ता यह कैसे भया सो कहते हैं जीवोंके भाव परावर्तन अति विषम है कौन जाने अतिशय ज्ञानी विना कोई जानसके नहीं पहले गिरानेका भाव हुआ पीछे निकालनेका परिणाम भया ॥ ११२३॥
गिहमागएण तेणं, नियावयाओ निवेइओ सहसा।सिरिमइदेवी पुरओ, तीए य निवो इमं भणिओ ११२४ अर्थ—घर आके राजाने शीघही श्रीमती रानीके आगे अपना निर्मल भाव कहा याने मैंने आज एक मुनिको नदीसे बाहर निकाला बाद श्रीमतीने राजासे यह कहा ॥ ११२४॥ अन्नेसिंपि जियाणं, पीडा-करणं हवेइ कडुय-फलं। जंपुण मुणिजणपीडा,-करणं तं दारुणविवागं ॥११२५॥ अर्थ—औरभी जीवोंको पीड़ाका करना उसका कड़वा फल है और जो मुनिजनको पीड़ाका करना वह भयंकर विवाक फल देनेवाला है ॥ ११२५॥

कि विषाक फल दनवाला है ॥ ११२५ ॥ अओ साहृणं हीलाए, हाणी हासेण रोयणं होइ । निंदाइ वहो बंधो, ताडणया वाहिमरणाई ॥११२६॥

अर्थ—जिस कारणसे शास्त्रमें कहा है साधूकी हीलना करनेसे घरमें हानि है होवे साधुओंका हास्य करनेसे रोना होवे हैं भाषाटीकाहै साधुओंकी निंदा करनेसे वध बंधन होवे हैं साधुओंकी ताड़ना करनेसे रोग और प्राणवियोगादि होवे हैं ॥ ११२६॥
मुणिमारणेण जीवाण,-णंत संसारियाण बोही वि। दुलहा चिय होइ धुवं, भणियमिणं आगमेवि जओ२७
अर्थ—मुनिके मारनेसे अनंत संसार बधे है और उन जीवोंको जिनधर्मकी प्राप्तिभी निश्चय दुर्लभ होवे है जिस कार-णसे सिद्धान्तमें भी कहा है ॥ ११२७ ॥ णस सिद्धान्तममा कहा ह ॥ ११२७ ॥
चेइयद्विवणासे, इसिघाए पवयणस्स उड्डाहे । संजइ चउत्थमंगे, मूलग्गी बोहिलाभस्स ॥ ११२८ ॥
अर्थ—जिनमंदिरके द्रव्यका बिनाश करे अर्थात् भक्षण उपेक्षणादिकसे मूलसे विध्वंस करे तथा साधुका घात करनेसे और प्रवचन चतुरविध संघका उद्खाह कलंक वगैरह देनेकर अपवाद करनेमें तथा साध्वीका चौथा व्रत ब्रह्मचर्यके भंग करनेमें इतने कामोंमें हरकोई काम करनेवाला बोधिलाभ अर्हत् धर्मकी प्राप्तिके मूलमें अग्नि दिया इस कहनेसे यह अनन्तरोक्त करनेसे जन्मांतरमें धर्मकी प्राप्ति दुर्लभ है यह आवश्यक निर्युक्तिमें कहा है ॥ ११२८ ॥
तं सोऊण निर्दे , किंपि समुछस्तिय धम्मपरिणामो । पभणेइ अहं पुणरिव, न करिस्सं एरिसमकजं ॥११२९ अर्थ—वह रानीका वचन सुनके राजाका धर्ममें परिणाम भया और बोला में अब ऐसा अकार्य नहीं करूंगा ११२९ कइवयदिणेसु पुणरिव, तेण गवक्खिटुएण कोवि मुणी। दिट्ठो मलमिलिणतणू, गोयरचरियं परिभमंतो ३०

अर्थ—कितने दिनके बाद औरभी गोखड़ेमें बैठे हुए राजाने कोई मुनिको देखा कैसा मुनि पसीनेसे आला भया है शरीरमें मैल जिसके उसीसे मैला है शरीर जिसका ऐसा और गोचरी फिरता हुआ॥ ११३०॥ तत्तो सहसा वीसारिऊण, तं सिरमईइ सिक्खंपि। सोराया दुटुमणो, नियवंठे एवमाइसइ॥ १९३१॥ अर्थ—मुनि देख्यों के अनन्तर दुष्टमन जिसका ऐसा राजा अकस्मात श्रीमतीकी दी भई सिखावनको भूलके अपने वंठ पुरुषोंको ऐसी आज्ञा देवे॥ ११३१॥

रे रे एयं डुंबं, नयरं विद्यालयंतमम्हाणं । कंठे घित्तृण दुयं, निस्सारहनयरमज्झाओ ॥ ११३२ ॥ अर्थ—अरे २ सेवको हमारा नगर विटालता हुआ अर्थात् अग्रज्ज करता हुआ इस डोमको गल हत्था देके शीघ

तेहिं नरेहिं तहच्चिय, कड्डिजंतो पुराउ सो साहू। निययगवक्खिठयाए, दिट्टो तीए सिरिमईए ॥ ११३३॥ अर्थ—इस प्रकारसे राजाने कह्यों के बाद उन वंठ पुरुषोंने नगरसे निकालता हुआ उन साधुको अपने गवाक्षमें वैठी भई श्रीमतीने देखा ॥ ११३३॥

तो कुवियाए तीए, राया निब्भच्छिओ कडुगिराए। तो सो विलिज्जओ भणइ, देवि मे खमसु अवराहं ३४ 🧗

अर्थ—तदनंतर कोधानुर भई रानीने कडुक वाणीसे राजाकी निर्भत्सेना करी तब राजा छज्जित होके बोला हे देवी मेरा अपराध क्षमा करो और ऐसा नहीं करूना ॥ ११३४ ॥ सो मुणिनाहो रन्ना, तत्तो आणाविओ नियावासं। निमओ य पूइओ खािमओ य, तं निययमवराहं ११३५ अर्थ—तदनंतर राजाने उस मुनिनाथको अपने घर बुलाया और नमस्कार किया वस्त्रादिकसे पूजा और अपना अपराध क्षमा कराया ॥ ११३५ ॥ अर्थ—श्रीमतीने पूछा हे भगवन् राजाने अज्ञान भावसे साधुओंको बहुत उपसर्ग करके महापावं ॥ ११३६ ॥ अर्थ—अमतीने पूछा हे भगवन् राजाने अज्ञान भावसे साधुओंको बहुत उपसर्ग करके महापावं ॥ ११३६ ॥ अर्थ—उस पापका विनाश करनेके लिए प्रसन्न होके कोई उपाय कहो जिस उपाय करनेसे यह राजा पापसे छूटे ॥ अर्थ—उस पापका विनाश करनेके लिए प्रसन्न होके कोई उपाय कहो जिस उपाय करनेसे यह राजा पापसे छूटे ॥ अर्थ—तब मुनिवरीन्द्र कहे हे भद्रे इस राजाने बहुत पाप किया है जिस कारणसे गुणवान पुरुषका विनाश करनेके से सब गुणोंका उपधात होने है ॥ ११३८ ॥ तहिव कयदुकयाणिव, जियाण जइ होइ भावउछासो।ता होइ दुकयाणं, नासो सवाणिव खणेणं ११३९ ॥

अर्थ—तथापि किया है पाप जिन्होंने ऐसे प्राणियोंके जो भावका उछास ग्रुभ परिणामकी वृद्धि होवे तो सब पापका क्षणेकमें नाश होवे ॥ ११३९ ॥

भावस्सुह्णासकए, अरिहाइपसिद्धसिद्धचक्कस्स । आराहणं मुणीहिं, उवइट्टं भवजीवाणं ॥ ११४० ॥ अर्थ—भावके उहास करनेके छिए अर्हदादि पदों करके प्रसिद्ध सिद्धचक्रका आराधन भव्य जीवोंके वास्ते मुनि-योंने कहा है ॥ ११४० ॥

ता जड़ करेड़ सम्मं, एयस्साराहणां नरवरोवि । ता छुट्टइ सयलाणं, पावाणं नित्थ संदेहो ॥११४१॥ अर्थ—तिस कारणसे राजाभी जो अच्छीतरहसे सिद्धचक्रका आराधन करे तो सर्व पापोंसे छूटे इसमें सन्देह नहीं

तो सिक्खिऊण पूया, तवोविहाणाइयं विहिं राया । भत्तीइ सिद्धचकं, आराहइ सिरिमइसमेओ १९४२ अर्थ—तदनंतर राजा पूजा और तपका जो करना इत्यादि विधि सीखके श्रीमतीरानी सहित भक्तिसे सिद्धचकका आराधन करे ॥ ११४२ ॥

पुन्ने अ तवोकम्मे, रन्ना मंडाविए य उज्जमणै। सिरिमइसहीहिं अट्टहिं, विहिया अणुमोयणा तस्स १९४३ 💃

श्रीपाल-चरितम् अर्थ—और तप किया पूरण होनेसे राजाने उज्जवणा मांड़ा तव आठ श्रीमतीरानीकी सिखयोंने उज्जवणा सिहत कि तपकी अनुमोदना प्रशंसा करी ॥ ११४३ ॥ सत्तिहें सिएहिं तेहिं, सेवयपुरिसेहिं तस्स नरवइणो । दृटुणं धम्मकरणं, पसंसियं किंपि खणमित्तं ११४४ अर्थ—सातसै ७०० सेवक पुरुषोंने राजाको धर्मकार्य कर्ताहुआ देखके क्षणमात्र कुछ प्रशंसा करी आजकरु तो अपना स्वामी सम्यक कार्य करे है इत्यादि प्रशंसा करते भए ॥ ११४४ ॥ ते अन्नदिणे राया,-एसेणं सीहनामनरवइणो । हणिऊण गामिमक्कं, जा विळया गोधणं गहिउं १९४५ अर्थ—अन्यदिनमें वह ७०० पुरुष राजाकी आज्ञासे सिंहनामके राजाका एक गाम छूटके गायां वगैरह छेके जित-ता पुट्टि पत्तो सीहो, बहुबलकलिओ पयंडभुयदंडो। तेण कुविएण सबे, धाडय पुरिसा हया तत्थ ११४६ अर्थ—उतने बहुत सैन्ययुक्त और प्रचंड भुजदंड जिसके ऐसा सिंहराजा पीछे आया क्रोधातुर भया ऐसा सिंह राजाने उस प्रदेशमें सर्व धाड़के पुरगोंको मारे॥ ११४६॥ तेवि मरिऊण-खत्तिय, पुत्ता होऊण तरुणभावेवि। साहूवसग्गपाव,-प्पसायओ कुहिणो जाया ॥११४७॥

For Private and Personal Use Only

अर्थ—वह सातसै ७०० राजाके सेवक मरके क्षत्रियोंके पुत्र होके यौवनअवस्थामेंभी साधुवोंको किया उपसर्ग उस पापके प्रसादसे कोढ़ी भए ॥ ११४७ ॥

जो सिरिकंतो राया, पुत्रपभावेण सो तुमं जाओ। सिरिमइजीवो मयणा,-सुंदरि एसा मुणियतत्ता १९४८

अर्थ—जो सिरिकान्त राजा था वह पुण्यके प्रभावसे तें भया श्रीमतीरानीका जीव यह मदनसुंदरी भई कैसी है यह मदनसुंदरी जाना है तत्व जिसने ऐसी ॥ ११४८ ॥

जं पुर्विपि हु धम्मुज्जमपरा, तुहिहियिकति छिच्छा। आसि इमा तं जाया, एसा तुह मूळ पट्टीमे ॥११४९॥ अर्थ—निश्चय जिस कारणसे पूर्वभवमें भी धर्ममें उद्यम करनेमें तत्परथी और तेरे हितकरनेकी इच्छा जिसकी ऐसीथी तिस कारणसे यह तेरी मूळ पटरानी हुई ॥ ११४९॥

तुमए जहा मुणीणं, विहिया आसायणा तहाचेव । क्रुट्टित्तं जलमज्जण,—मवि डुंबत्तं च संपत्तं ॥११५०॥

अर्थ—तैने जिस २ प्रकारसे मुनियोंकी आशातना विराधना करी उस २ प्रकारसे तैंने इस भवमें कोढ़ीपना समुद्रमें गिरना और डूमपना पाया ॥ ११५० ॥

जं च तए तीए सिरिमईइ, वयणेण सिद्धचक्कस्स । आराहणा कया तं, मयणावयणा सुहं पत्तो ॥११५१॥ 🖔

श्रीपाल-चरितम्

॥ १४२ ।

अर्थ-और जो तैंने उस श्रीमतीके वचनसे सिद्धचककी आराधना करी इस कारणसे यहां मदनसुंदरीके वचनसे सुल पाया ॥ ११५१ ॥ जो एसो वित्थारो, रिद्धिविसेसस्स तुज्झ संजाओ । सो सयलोवि पसाओ, नायबो सिद्धचकस्स ॥११५२॥ अर्थ—वह यह तेरे रिद्धिविशेषका विस्तार भया सो सर्व श्रीसिद्धचकका प्रसाद अनुग्रह जानना ॥ ११५२॥ सिरिमईसहिहिं जाहिं, विहिया अणुमोयणा तया तुम्हं। ताओ इमाओ जायाओ, तुज्झ लहुपट्टदेवीओ५३ अर्थ—जिन श्रीमतीकी सिवयोंने तुम्हारी अनुमोदना करी थी वह तेरी यह छोटी पटरानियों भई॥ ११५३॥ एयासु अट्टमीए, ससवित्तीसंमुहं कहियमासि । खज्जसु सप्पेण तुमंति, तेण कम्मेण सा दट्टा ११५४ अर्थ इन आठोंमें आठवीं रानीने पूर्वभवमें अपनी शोकके सन्मुख कहा था तेरेको सर्प खावो इसी कर्मसे इस भवमें सर्पने डसी ॥ ११५४ ॥ धम्मपसंसाकरणेण, तत्थ सत्ति सिएहिं सुहकम्मं। जं विहियं तेण इमे, गयरोगा राणया जाया १९५५ किं अर्थ—धर्मकी प्रशंसा करने कर पूर्व भवमें ७०० सेवक पुरषोंने जो शुभकर्म किया उस शुभ कर्मसे गया रोग जिन्होंका ऐसे ये राना भए॥ ११५५॥ सीहो य घायविहुरो, पालित्ता मासमणसणं दिक्खं। जाओहमजियसेणो, बालते तुज्झ रज्जहरो १९५६

भाषाटीका-सहितम्.

11 999 11

अर्थ—सिंह नामका राजा प्रहारोंसे पीड़ित भया एक महीनेकी अनशन सहित दीक्षा पालके मैं अजितसेन राजा भया कैसा मैं हूं बाल्यअवस्थामें तेरा राज्य लेनेवाला ऐसा ॥ ११५६ ॥ तेणंचिय वेरेणं, बद्धोहं राणएहिं एएहिं । पुवकयब्भासेणं, जाओ मे चरणपरिमाणो ॥ ११५७ ॥ अर्थ—उसी वैरसे इन राणाओंने मेरेकू बांघा पूर्वभवमें जो कीना दीक्षाका अभ्यास उससे मेरा चारित्रका परिणाम

सुहपरिणामेण मए, जाइं सरिऊण संजमो गहिओ। सोहं उपन्नावहि,-नाणो नरनाह ? इह पत्तो १९५८ अर्थ—मैंने ग्रुभपरिणामसे जातिस्मरण पाके संयम य्रहण किया हे नरनाथ उत्पन्न भया है अवधिज्ञान जिसको ऐसा मैं यहां आया हूं ॥ ११५८ ॥

एवं जं जेण जहा, जारिसकम्मं कयं सुहं असुहं । तं तस्स तहा तारिस,-मुवट्टियं मुणसु इत्थ भवे ॥११५९॥ अर्थ—इस प्रकारसे जिस प्राणीने जो ग्रभ अग्रभ जैसा कर्म किया उस प्राणीके वह वैसा कर्म इस भवमें उसी प्रकारसे समीपमें रहा हुआ जानो ॥ ११५९॥

तं सोऊणं सिरिपाल,-नरवरो चिंतए सचित्तंमि । अहह अहो केरिसयं, एयं भवनाडयसरूवं ॥११६०॥ 🥳

अर्थ—श्रीपालराजा वह मुनिका बचन सुनके अपने मनमें विचारे अहह इति खेदे अहो इति आश्चर्ये यह भवनाट- किका स्वरूप कैसा अति विषम वर्ते है ॥ ११६० ॥
पभणेइ य मे भवयं, संपइ चरणस्स नित्थ सामत्थं । तो काऊण पसायं, मह उचियं दिसह करणिजं १९६१ अर्थ—और राजा श्रीपाल कहे हे भगवन इस वक्तमें मेरा चारित्र ग्रहण करनेका सामर्थ्य नहीं है इसलिए प्रसन्न होके मेरेयोग्य धर्मकर्तव्य आज्ञा करो ॥ ११६१ ॥
तो भणइ मुणिवरिं—दो, नरवर जाणेसु निच्छयं एयं। भोगफलकम्मवसओ, इत्थभवे नित्थ तुह चरणं ६२
अर्थ—तदनंतर मुनिवरीन्द्र कहे हे नरवर यह निश्चय जानो भोगफलकर्मके वद्यसे इस भवमें तेरे चारित्र नहीं

है ॥ ११६२ ॥
किं तु तुमं एयाइं, अरिहंताई नवावि सुपयाइं । आराहंतो सम्मं, नवमं सग्गंपि पाविहिसि ॥११६३॥ क्रिं
अर्थ—किंतु तैं यह अर्हदादि नव शोभन पदोंको अच्छीतरहसे आराधन कर्ता हुआ नवमा आनतनामका देवलोक

तत्तोवि उत्तरतर,-नरसुरसुक्खाइं अणुहवंतो य । नवमे भवंमि मुक्खं, सासयसुखं धुवं छहसि ॥११६४॥ 🕵

नवपदोंकी पूजा करो ॥ ११६८ ॥

अर्थ—और उस नवमे देवलोकसेभी अधिक २ मनुष्य देवका सुख भोगवता हुआ नवमे भवमें निश्चय शाश्वत सुख है जहां ऐसा मोक्ष पावेगा ॥ ११६४ ॥ तं सोऊणं राया, साणंदो नियगिहंमि संपत्तो । मुणिनाहोवि हु तत्तो, पत्तो अन्नत्थ विहरंतो ॥ ११६५॥ है अर्थ—वह मुनिका वचन सुनके राजा श्रीपाल आनंदसहित होके अपने घर गया तदनंतर मुनीन्द्रभी विहार करके और नगरादिकमें गए॥ ११६५॥ सिरिपांलोवि हु राया, भत्तीए पिययमाहिं संजुत्तो । पुब्बुत्तविहाणेणं, आरहइ सिद्धवरचक्कं ॥ ११६६ ॥ अर्थ—श्रीपालराजामी नवरानियों सहित भक्तिकरके पूर्वोक्त विधिसे सिद्धचक्रका आराधन करे ॥ ११६६ ॥ अह मयणसुंदरी भणइ, नाह ? जइया तए कया पुविं । सिरिसिद्धचक्रपूर्या, तइया नो आसि भूरिधणं ६७ अर्थ-अथ मदनसुंदरी राजासे कहे हे नाथ जब आपने पहले श्रीसिद्धचक्रकी पूजा करी थी तब बहुत धन नहीं इन्हिं च तुम्ह एसा, रज्जिसरी अत्थि वित्थरसमेया। ता कुणह वित्थरेणं, नवपय पूर्यं जिहच्छाए ११६८ कि अर्थ—इस वक्तमें आपके यह राज्यलक्ष्मी विस्तार सहित है इस कारणसे आप अपनी इच्छासे विस्तार विधिसे श्रीपाल-चरितम् तं सोऊणं अइग्रुरुयं, भित्तसत्तीहिं संजुओ राया। अरिहंताइपयाणं, करेइ आराहणं एवं ॥ ११६९ ॥ अर्थ—वह मदन सुंदरीका बचन सुनके अत्यन्त भिक्त शिक्त राजा वश्यमाण प्रकारसे अर्हदादि पदोंका आरा-धन करे ॥ ११६९ ॥ नव चेईहर पडिमा, जिल्लुद्धाराइ विहिविहाणेणं। नाणाविहपूर्याहिं, अरिहंताराहणं कुणइ ॥ ११७० ॥ अर्थ—सो कहते हैं नवजिनमंदिर नवप्रतिमा नवजीणोंद्धार इत्यादिक विधिसे करवाके अनेकप्रकारकी पूजा करके अर्हत पदकी आराधना करे॥ ११७०॥ सिद्धाणिव पडिमाणं, कारावणपूर्यणापणामे हिं। तग्गयमणझाणेणं, सिद्धपर्याराहणं कुणइ ॥ ११७१ ॥ अर्थ—सिद्धोंकी प्रतिमाका कराना और पूजा करना नमस्कार करना और सिद्धोंमें मन जिसका ऐसा ध्यान करने-कर सिद्धंपदका आराधन करे ॥ ११७१ ॥ भत्तिबहुमाणवंद्ण,—वेयावचाइकज्जमुज्जुत्तो । सुस्सूसणविहिनिउणो, आयरियाराहणं कुणइ ॥११७२॥ अर्थ—भक्ति मनमें निर्भरप्रीति वहुमान बाह्यप्रतिपत्ति वंदना वेयावच इत्यादि कार्योंमें उद्यमवान तथा सेवाकर-नेका विधिमें निपुण ऐसा राजा आचार्थपदकी आराधना करे ॥ ११७२ ॥ ठाणासणवसणाई, पढंतपाढंतयाण पूरंतो । दुविहभत्तिं कुणंतो, उवझायाराहणं कुणइ ॥ ११७३ ॥

भाषाटीका-सहितमः

ા ૧૪૪ ા

Acharva Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अर्थ—पढ़ता हुआ पढाता हुआ साधु वगैरहको रहनेको स्थान और भोजन वस्त्रादि पूर्ण करताहुआ द्रव्य भावसे 🖔 भक्ति करता हुआ उपाध्याय पदकी आराधना करे ॥ ११७३ ॥

अभिगमणवंदणनमंसणेहिं, असणाइवसहिदाणेहिं। वेयावचाईहिं य, साहुपयाराहणं कुणइ ॥ ११७४॥ अर्थ—सामने जाना स्तुति करना नमस्कार करना और आहार वगैरह और उपाश्रय देने करके इत्यादि वेयावच करने करके साधु पदका आराधन करे॥ ११७४॥

रहजत्ताकरणेणं, सतित्थजत्ताहिं संघपूयाहिं । सासणपभावणाहिं, सुदंसणाराहणं कुणइ ॥ ११७५ ॥ अर्थ—रथयात्रा करनेकर तीर्थयात्रा और संघपूजा करनेकर शासनकी प्रभावना करनेसे सम्यक्दर्शन पदका आराधन करे ॥ ११७५ ॥

सिद्धंतसत्थपुत्थय,—कारावणरक्खणच्चणाईहिं। सज्झायभावणाहिं, नाणपयाराहणं कुणइ ॥ ११७६ ॥ अर्थ—सिद्धान्तका पुस्तक लिखाने करके और यत्नसे रक्षा करनेकर और धूप चंदन वस्त्रादिकसे पूजना और स्वाध्याय वाचनादि पांच प्रकारका करनेसे तथा भावना ज्ञानका स्वरूप विचारने रूप करके ज्ञानपदकी आराधना करे॥ वयनियमपालणेणं, विरइक्कपराण भत्तिकरणेणं। जइधम्मणुरागेणं, चारित्ताराहणं कुणइ ॥ ११७७॥

श्रीपास-चरितम् ॥ १४५॥ अर्थ—व्रत अणुव्रत और नियम अभियहादिक पालने करके तथा विरित सावचन्यापारिनवृत्तिही एक उत्कृष्ट जिन्होंके ऐसे साध्वादिकोंकी भक्ति करनेकर दशप्रकारका यतिधर्मपर प्रीति रखनेकर चारित्रपदका आराधन करे॥ ७७॥ असंसाइविरिहयं, बाहिरमिभ्भितरं तवोकम्मं। जहसत्तीइ कुणंतो, सुद्धतवाराहणं कुणइ ॥ ११७८॥ अर्थ—आसंसा इसभव परभवके सुखकी वांछाकरके रहित ६ बाह्य उपवासादि ६ अभ्यंतर प्रायश्चित्तादि यह बारह प्रकारका तप यथाशक्ति अपनी शक्तिके अनुसार करता हुआ निर्मल तपकरने करके तपपदका आराधन करे॥११७८॥ एवमेयाइं उत्तमपयाइं, सो द्वभावभत्तीए । आराहंतो सिरिसिख,-चक्कमचेइ निचंपि ॥ ११७९ ॥ अर्थ-इस प्रकारसे राजा श्रीपाल यह उत्तमपद द्रव्यभावभक्तिसे आराधता हुआ निरंतर श्रीसिद्धचक्रकी पूजा करे ७९ एवं सिरिपालनिवस्स, सिद्धचक्कचणं कुणंतस्स । अद्धपंचमविरसेहिं, जा पुन्नं तं तवो कम्मं ॥ ११८० ॥ अर्थ—इस प्रकारसे श्रीसिद्धचक्रकी पूजा करते श्रीपालराजाको साढाचार वर्ष भए उतने वह तप सम्पूर्ण भया॥८०॥ तत्तो रस्ना नियरज्जलच्छि,—वित्थारगरुयसत्तीए । ग्रुरुभत्तीए कारिउ,—मारद्धं तस्स उज्जमणं ॥११८१॥ १००० अर्थ—तदनंतर राजाश्रीपालने अपनी राज्यलक्ष्मीका जो विस्तार उस करके और बड़ी शक्ति और भक्ति सहित उस तपका उज्जवना करना प्रारंभ किया ॥ ११८१॥

भाषाटीका[.] सहितम्-

॥ १४५॥

कत्थिव विछिन्ने जिणहरंमि, काउं तिवेइयं पीढं। वित्थिण्णं वरकुद्दिम,—धवलं नवरंगकयचित्तं ॥११८२॥ अर्थ—कहांभी बीस्तीर्ण जिनमंदिरमें तीनवेदी विस्तीर्ण प्रधान भूमि करके उज्वल नवीन रंजक द्रव्योंसे किया है किया विन्न जिसमें ऐसा पीठ करवाके ॥ ११८२ ॥ सालिपमुहेहिं धन्नेहिं, पंचवन्नेहिं मंतपूर्एहिं । रइऊण सिद्धचक्कं, संपुन्नं चित्तचुज्जकरं ॥ ११८३ ॥ अर्थ—सालि प्रमुख पांचवर्णोंके धान्यों करके चित्तको आश्चर्य करनेवाली सिद्धचक्रकी रचना कराके ॥ ११८३ ॥ तत्थय अरिहंताइसु, नवसु पएसु ससप्पिखंडाइं । नालियरगोलयाइं, सामन्नेणं ठविजंति ॥११८४॥ अर्थ—वहां सिद्धचक्रके अर्हदादि नवपदोंमें सामान्य प्रकारसे घी खांड़से भराहुआ नारियलका गोला स्थापे ११८४ हैं तेण पुणो नरवहणा, मयणासहिएण वरविवेएण । ताइंपि गोलयाइं, विसेससहियाइं ठवियाइं ११८५ अर्थ—और मदनसुंदरी सहित श्रीपालराजाने वह गोला विशेषवस्तुसहित चढ़ाया कैसा राजा विवेकसहित वर्ते एसा । कस सा कहत है ॥ ११८५ ॥ जहा अरिहंतपए धवले, चंदणकप्पूरलेवसियवन्नं । अडककेयणचउतीस,—हीरयं गोलयं ठवियं ॥११८६॥ अर्थ---धवल वर्ण करके ब्यवस्थापित अर्हतपदमें चंदन कपूरका विलेपन करनेसे श्वेतवर्ण जिसका ऐसा और आठ

करकेतन श्वेतरत्न विशेष और चौंतीस हीरा सिहत गोला चढाया आठ प्रातिहार्यकी अपेक्षा आठकरकेतनरत्न और चौंतीस अतिशयकी अपेक्षा चौंतीस हीरा चढाया ॥ ११८६ ॥

सिद्धपए पुण रत्ते इगतीसपवालमटुमाणिकं । नवरंगघुसिणविहियप्पलेवग्रुरुगोलयं ठिवयं ॥ ११८७॥

अर्थ-लालवर्ण करके व्यवस्थापित सिद्धपदमें इकतीस मूंगिया और आठ माणिक सिहत नवीन रक्तवयुक्त केसर-

का विलेपन किया जिसमें ऐसा गोला चढावे ॥ आठकर्मके क्षय होनेसे उत्पन्न हुआ आठ गुण उन्होंकी अपेक्षा आठ माणिक चढाए इकतीस गुणकी अपेक्षा इकतीस प्रवाला चढाया ॥ ११८७ ॥

कणयाभे सूरिपए, गोलं गोमेयपंचरयणजुयं । छत्तीसकणयकुसुमं, चंदणघुसिणंकियं ठवियं ॥११८८॥ अर्थ—सोनेके जैसा वर्ण ऐसे आचार्यपदमें पांचगोमेदरत्न और छत्तीस सोनेके पुष्पसहित चंदनकेसरका विले-पन सहित गोला चढाया ज्ञानादि पांच आचारयुक्त होनेसे पांच गोमेद रत्न और छत्तीसगुणयुक्त होनेसे छत्तीस सोनेके पुष्प चढाए ॥ ११८८ ॥

उज्झायपए नीले, अहिलयदलनीलगोलयं ठिवयं । चउरिंदनीलकलियं, मरगयपणवीसपयगजुयं ११८९ 🖔 ॥ १४६॥ अर्थ—नीलवर्णसे व्यवस्थापित उपाध्याय पदमें नागरवेलके पत्रोंसे वीटा हुआ गोला चढाया ४ इन्द्रनील नीलमणि

युक्त २५ पन्नेकी मणिसहित चारअनुयोगकी अपेक्षा चारइन्द्रनीलमणि पच्चीसगुणकी अपेक्षा पच्चीसमरकतमणि सहित

साहुपए पुण सामे, समयमयं पंचरायपद्दकं । सगवीसरिट्टमणिं, भत्तीए गोलयं ठवियं ॥ ११९० ॥

अर्थ—श्यामवर्णसे व्यवस्थापित साधुपदमें कस्तूरीका विलेपन सहित पांचराजपट्ट वेराट रत्नो करके शोभा जिसकी अथवा पांच राजपट्ट उत्संगमें अर्थात् मध्यमें जिसके और सत्ताईस नीलम रत्न विशेष जिसमें ऐसा गोला भक्तिसे चढाया पांच महात्रतकी अपेक्षा पांच राजपट्ट और सत्ताईस गुणकी अपेक्षा उतनेही नीलम चढावे ॥ ११९० ॥ सेसेसु सियपएसु, चंदणसियगोलए ठवइ राया । सगसट्टिगवन्नसयरि,—पन्नमुत्ताहलसमेए ॥११९१॥

अर्थ—अवशेष दर्शनादि चारपदोंमें श्रीपालराजाने चंदनका विलेपनसहित धवला गोला चढ़ाया कैसा गोला ६७ सडसठ, ५१ इक्कावन ७० सित्तर ५० पचास मोतियों करके सहित यहां यह भावहै दर्शन पदमें-४ श्रद्धान ३ लिङ्ग इत्यादि ६७ सडसठ भेद है ज्ञानपदका स्पर्शनइन्द्रियव्यंजनावग्रहादि ५१ इक्कावन भेद है चारित्रका व्रत ५ श्रमणधर्म १० संयम १७ इत्यादि ७० भेद है तप पदका इत्वरअनशनादि ५० भेद है इतनाही मोती चढ़ावे॥ ११९१॥ अन्नं च नवपयाणं, उद्देसेणं नरेसरे तत्थ। तत्तवन्नाइं सुमेरु, मालाचीराइं मंडेइं॥ ११९२॥

अर्थ—और राजा श्रीपाल नवपदोंको उद्देश करके उस पीठपर उस वर्णका सुमेरु माला, वस्त्र वगैरह चढावे ॥११९२॥ 🌾

श्रीपालचरितम्
॥ १४७॥
श्रीपालचरितम्
चर्मा सोलह अनाहतोंमें सोलह रार्कराका ढिगला करे नानाप्रकारके मिणरलों करके विचित्र ऐसे मंडावे ११९३
इगिसोलसपंचसु सीइ, दोसु चउसिटु सरसदक्खाओ । कणयकचोलियाहिं, मंडावइ अट्टवग्गेसु ११९४
अर्थ-आठ वर्गोंमें पहले अवर्गमें सोलह सरसदाल पांच वर्गोंमें एक २ में सोलह २ चढानेसे ८० दाल और दोवर्ग
यवर्ग शर्वामें बत्तीस २ दाल चढानेसे ६४ यह दाल सोनेकी कटोरियोंमें चढावे ॥ ११९४ ॥
मिणिकणगिनिम्मयाइं, नरनाहो अट्टवीयपूराइं । वग्गंतरगयपढमे, परमेट्टिपयंमि ठावेइ ॥ ११९५ ॥
अर्थ-राजा श्रीपाल मिणरल और सोनेसे रचे हुए आठ विजोरेके फल वर्गोंके अंतरमें रहा हुआ प्रथम परमेष्ठी
पद नमो अरिहन्ताणं इसमें स्थापे ॥ ११९५ ॥ पद नमो अरिहन्ताणं इसमें स्थापे ॥ ११९५ ॥ खारिकपुंजयाइं ठावइ, अडयाललिद्धठाणेसु । ग्रुह्मपाउयासु अट्टसु, नाणाविहदाडिमफलाइं ॥ ११९६ ॥ अर्थ—अड़तालीस ४८ लिद्ध पदोमें स्वारिकका ढिगला करे और आठ गुरुपादुकामें नानाप्रकारके दार्डिमके फल

नारिंगाइफलाइं, जयाइठाणेसु अटुसु ठवेइ । चत्तारि उ कोहलए, चक्काहिट्टायगपएसु ॥ ११९७ ॥

अर्थ—तथा आठ ८ जयादि स्थानोमें नारंगी वगैरहके फल चढावे और सिद्धचक्रके अधिष्ठायक विमलेश्वर १ चके-श्वरी २ क्षेत्रपालांदि ४ पदोमें ४ कूष्माण्डके फल चढावे ॥ ११९७॥

आसन्नसेवयाणं देवीणं, वारस य वयंगाइं । विज्झसुरिजक्खजिक्खणि, चउसिट्टिपएसु पूगाइं ॥११९८॥ अर्थ—तथा निकट सेवा करनेवाली १२ बारहदेवी उन्होंको वयंग फल विशेष चढावे चौथा अधिष्ठायक और बारह देवियोंका नाम वैसा सम्प्रदाय न होनेसे नहीं जाना जाय है तथा १६ सोलह विद्यादेवी २४ यक्ष शासनदेव २४ चौबीस शासनदेवी यह चौसठपदोंमें सुपारी चढ़ावे ॥ ११९८ ॥

पीयवलीकूडाइं, चत्तारि दुवारपालगपएसु । कसिणबलीकूडाइं, चउवीरपएसु ठवियाइं ॥ ११९९ ॥ अर्थ—चार द्वारपाल कुमुदादिपदोंमें चार पीतवर्ण पकान्नादिकके पुंज स्थापे तथा चार ४ मणिभद्रादि वीरपदोंमें

काले वर्णका पकान्नादिकका ढिगला स्थापा ॥ ११९९॥

नवनिहिषएसु कंचण,—कलसाइं विचित्तरयणपुन्नाइ। गहदिसिवालपएसु य, फलफुछाइं सवन्नाइं १२०० 🕏

अर्थ—नव निधानोंमें नाना प्रकारके रह्योंसे भरेहुए सोनेके कलश स्थापे तथा नवप्रह और दश दिक्पाल पदोंमें अपने २ वर्णके फल पुष्पादि चढ़ाए ॥ १२०० ॥

इच्चाइगरुयवित्थर,—सहियं मंडाविऊणमुज्जमणं । ण्हवणूसवं नरिंदो, कारावइ वित्थरविहीए ॥१२०१॥ 🧏

अर्थ—इत्यादि बहुत विस्तार सहित उज्जवणा मंड़वाके राजा श्रीपाल विस्तार विधिसे स्नात्रमहोत्सव करे करावे ॥१॥ भाषाटीका-विहियाए प्रयाए, अटुपयाराइ मंगलावसरे । संघेण तिलयमाला, मंगलकरणं कयं रन्नो ॥ १२०२ ॥ कितम्. अर्थ—अष्ट प्रकारी पूजाकरी बाद मंगलके अवसरमें संघने राजा श्रीपालके तिलक किया माला पहराई यह मंगल किया तदनंतर आरती करके और चैत्यवंदन करे सो कहते हैं॥ १२०२॥ तओ, जो धुरि सिरिअरिहंतमूलदढपीढपइट्डिओ, सिद्धसूरिउवज्झायसाहु चउसाहगरिट्डिओ, दंस-णनाणचरित्ततविहं पडिसाहिहं सुंदरु । तत्तक्खरसरवग्गलिख ग्रुरुपयदलडंबरु, दिसिवालजक्खज-क्खिणिपमुह, सुरकुसुमेहिं अलंकिओ।सो सिद्धचक्कगुरुकप्पतरु, अम्हह मणवंछिअ दिअओ ॥१२०३॥ अर्थ-श्रीसिद्धचकरूप महान कल्पवृक्ष आदिमे अरहंतही जो मूल हढपीठ उसमें प्रतिष्ठित और सिद्ध १ आचार्य २ उपाध्याय २ साधु ४ इन चार शालाओं करके बहुत बड़ा और दर्शन १ ज्ञान २ चारित्र २ तप ४ रूप प्रतिशाला करके सुंदर और तत्वाक्षर ओंकारादिक स्वरअवर्णादिक वर्ग अवर्गादिक ४८ अड़तालीस लिब्धपद अर्हत् पादुका गुरु पादुका यही है पत्रोंका आडंवर जिसके और दिक्पाल यक्ष यक्षिणी प्रमुख देव पुष्पोंसे शोभित श्री सिद्धचकरूप महान् कल्पवृक्ष हमको मनोवांछित देवो ॥ १२०३ ॥

www.kobatirth.org

इचाइ नमोक्कारे, भणिऊण नरेसरो गहीरसरं । सकक्ष्ययं भणित्ता, नवपयथवणं कुणइ एवं ॥१२०४॥ क्रि अर्थ—इत्यादि नमस्कार कहके राजा श्रीपाल गंभीरस्वरसे शकस्तव कहके वक्ष्यमाण प्रकारसे नव ९ पदोंकी स्तुति करे ॥ १२०४ ॥ उप्पन्नसन्नाणमहोमयाणं, सपाडिहेरासणसंठियाणं । सद्देसणाणंदियसज्जणाणं, नमो नमो होउ सया अर्थ—उत्पन्न भया है सद्ज्ञान केवलज्ञान वोही तेजस्वरूप जिन्होका और प्रातिहार्य छत्र चामरादि करके सहित वर्ते ऐसा जो सिंहासन उसपर बैठे हुए और शोभन धर्मोपदेशसे आनन्दउत्पन्न किया है सत्पुरुषोंको जिन्होंने ऐसे जिनेन्द्र अरहन्तोंको निरंतर नमस्कार होवो ॥ १२०५ ॥ सिद्धाणमाणंदरमालयाणं, नमो नमोऽणंतचउक्कयाणं । सूरीण दूरीकयकुग्गहाणं, नमो नमो सूरसम-अर्थ—परमानन्द रुक्ष्मीका निवास और अनन्तचतुष्क ज्ञान १ दर्शन २ सम्यक्त्व ३ अकर्णवीर्य ४ है जिन्होंके ऐसे सिद्धोंको नमस्कार होवो तथा दूर किया है कुत्सित अभिनिवेश जिन्होंने ऐसे और सूर्यके समान प्रभाज्योति जिन्होंकी ऐसे आचार्योंको नमस्कार होवे ॥ १२०६ ॥

सुत्तत्थिवित्थारणतप्पराणं, नमो २ वायगकुंजराणं । साहूण संसाहियसंजमाणं, नमो नमो सुद्धदयादमाणं प्रिक्तिम् अर्थ—सूत्रार्थका विस्तार करनेमें तत्पर उपाध्याय कुंजर हाथीके सहद्या गच्छकी शोभा करनेवाला होनेसे और समर्थ होनेसे ऐसे उपाध्यायोंको नमस्कार होवो तथा सम्यक् प्रकारसे साधा है संयम जिन्होंने ऐसे शुद्ध दया दम जिन्होंके ऐसे सर्व साधुओंको नमस्कार होवो ॥ १२०७॥

www.kobatirth.org

जिणुत्ततत्ते रुइलक्खणस्स, नमो नमो निम्मलदंसणस्स । अन्नाणसंमोहतमोहरस्स, नमो नमो नाणदिवायरस्स ॥ १२०८ ॥

अर्थ—तीर्थंकरके कहे हुए तत्वोंपर जो रुचि वह रुक्षण जिसका ऐसे निर्मेरु दर्शनको नमस्कार होवो अज्ञानसे जो संमोह मतिश्चम वही अंधकार उसको दूरकरे ऐसा ज्ञान सूर्यको नमस्कार होवो ॥ १२०८ ॥

आराहियाऽखंडियसिकयस्स, नमो नमो संजमवीरियस्स। कम्मद्रमुम्मूलणकुंजरस्स, नमो नमो तिवतवोभरस्स ॥ १२०९ ॥

अर्थ—तथा संयम विषयमें पराक्रम उसको नमस्कार होवो कैसा संयम वीर्य आराधन किया है अखंडित सत्क्रिया र्रे ॥ १४९॥ साध्वाचार रूप जिससे ऐसा । कर्मवृक्षोंको उखाड़नेमें हाथीके सदृश तीव्र तप समृहको नमस्कार होवो ॥ १२०९॥

इय नवपयसिद्धं लिद्धिविज्ञासिमद्धं, पयडियसरवग्गं द्वीँतीरेहासमग्गं। दिसिवइसुरसारं खोणिपीढावयारं, तिजयविजयचक्कं सिद्धचक्कं नमामि ॥ १२१० ॥

ादालवञ्चल्यस्तार खालियादावयार, तिजयावजयचक त्तिष्ठचक नमामि ॥ १२१० ॥
अर्थ—इस प्रकारसे नवपदों करके सिद्ध निष्पन्न और लिब्धपद और विद्या देवियों करके समृद्ध और प्रगट किया है
स्वरवर्ग जिसमें और हीं ऐसा अक्षरक्रपर जिसके उसकी ईकारकी रेखासे चारोंतरफ वीटा हुआ सम्पूर्ण, और दिगपाल
वगैरहः सम्पूर्ण देवोंसे सेवित प्रधान पृथ्वीपीठपर अवतरण जिसका तीन जगत्के विजयार्थ चक्रके जैसा चक्र ऐसे
सिद्ध चक्रको में नमस्कार करों ॥ १२१० ॥ इति सिद्धचक्रस्तवः

वर्जंतएहिं मंगलतूरेहिं, सासणं पभावंतो । साहम्मियवच्छह्नं, करेइ वरसंघपूयं च ॥ १२११ ॥

अर्थ-मंगल वादित्र वाजते जैनधर्मकी प्रभावना करता हुआ राजा श्रीपाल साधर्मी वात्सल्य करे और प्रधान संघ

प्वं सो नरनाहो, सहिओ ताहिं च पट्टदेवीहिं । अन्नेहिंवि बहुएहिं, आराहइ सिद्धवरचकं ॥ १२१२ ॥ क्रिं अर्थ—इस प्रकारसे महाराजा श्रीपाल उन पटरानियोंसहित औरभी बहुत लोगों सहित सिद्धचकका आराधन करे १२१२ क्रिं अह तस्स मयणसुंद्रि,-पमुहाहिं राणियाहिं संजाया। नव निरुवमगुणजुत्ता, तिहुयणपालाइणो पुत्ता १३

अर्थ—उसके अनन्तर श्रीपाल राजाके मदनसुंदरी प्रमुख नव रानियोंके निरुपम गुणयुक्त त्रिभुवनपालादि नव प्रत्र श्रीपालचरितम्
॥ १५०॥
॥ १५०॥
अर्थ—उस श्रीपाल राजाके नव हजार ९००० हाथी और नव हजार ९००० रथ और नव लाख ९०००००
जातिवान अच्छे लक्षणवाले घोड़े और नव करोड ९०००००० प्यादल सेनाके सिपाही इतनी सेना थी ॥ १२१४॥
एवं नव नव लीलाहिं, चेव सुक्खाइं अणुहवंतो सो । धम्मनिईए पालइ, रजं निकंटयं निचं ॥१२१५॥
अर्थ—इस प्रकार नव २ क्रीड़ा करके सुख भोगवता हुआ वह श्रीपाल राजा धर्मनीतिसे निरंतर निष्कंटक राज

रजं च तस्स पालंतयस्स, सिरिपालनरविरंदस्स । जायाई जाव सम्मं, नव वाससयाई पुन्नाई ॥१२१६॥ अर्थ—राज्य पालते उस श्रीपाल राजाको जितने ९०० नवसे वर्ष अच्छी तरहसे पूर्ण भए॥ १२१६॥ ताव निवो तं तिहुयणपालं, रजंमि ठावइत्ताणं। सिरिसिद्धचक्कनवपयलीणमणो संथुणइ एवं॥ १२१७॥ अर्थ—उतने राजा श्रीपाल वह पूर्वोक्त त्रिभुवनपाल अपने बड़े पुत्रको राज्यमें स्थापके श्रीसिद्धचक्रमें जे नवपद उन्होंमें लगाहै मन जिसका ऐसा वक्ष्यमाण प्रकारसे स्तुति करे॥ १२१७॥

सेसितिभवेहिं मणुएहिं, जेहिं विहियारिहाइ ठाणेहिं। अजिजइ जिणगुत्तं, ते अरिहंते पणिवयामि ॥१२१८॥ क्ष्रिं—बाकी रहे हैं तीनभवजिन्होंके ऐसे मनुष्यभवमें रहे हुए सेवा है अर्हदादि वीसथानिक जिन्होंने ऐसे तीर्थं-करनाम कर्म उपार्जन करते हैं उन अरिहंतो को मैं नमस्कार करूं ॥ १२१८ ॥ करनाम कर्म उपार्जन करते हैं उन अरिहंतो को मैं नमस्कार करूँ ॥ १२१८ ॥ जो एगभवंतिया रायकुले उत्तमे अवयरंति । महसुमिणसूइयगुणा, ते अरिहंते पणिवयामि ॥१२१९॥ अर्थ—जिके एक भवके अंतरमें उत्तम राजकुलमें अवतरे हैं अर्थात् तीर्थंकरके भवमें १४ महा स्वमों करके सूचित किया है गुण जिन्होंने ऐसे उन अरिहंतोंको मैं नमस्कार करूँ ॥ १२१९ ॥ जोसिं जम्मिम महिमं, दिसाकुमारीओ सुरविरंदाय। कुवंति पिहटुमणा, ते अरिहंते पणिवयामि ॥१२२०॥ अर्थ—जिन्होंका जन्म होनेसे महिमा ५६ दिग् कुमारियों आके स्तिकर्म करे हैं और हिर्गतचित्त जिन्होंका ऐसे ६४ देवेन्द्र मेरुशिखरपर लेजाके जन्ममहोत्सव करें हैं उन अरिहन्तोंको मैं नमस्कार करूँ हूं ॥ १२२०॥ आजम्मंपि हु जेसिं, देहे चत्तारि अइसया हुंति। लोगच्छेरयभूया, ते अरिहंते पणिवयामि ॥ १२२१॥ अर्थ—निश्चय जिन्होंके शरीरमें जन्मसे लेके आश्चर्यभूत चार अतिशय होवे है अद्धतरूप सुगन्धयुक्त निश्वास-वायु अहार निहार अहश्य और श्वेतमांस रुधिर जिन्होंका ऐसे अरिहंतोंको मैं नमस्कार करूं ॥ १२२१॥ जो तिहुनाणसमग्गा, खीणं नाऊण भोगफलकम्मं। पिडवर्जाति चिरत्तं, ते अरिहंते पिणवयामि ॥१२२२॥ जो तिहुनाणसमग्गा, खीणं नाऊण भोगफलकम्मं। पिडवर्जाति चिरत्तं, ते अरिहंते पिणवयामि ॥१२२२॥

श्रीपा.च.२६

श्रीपाल-चरितम् ॥ १५१ ॥

अर्थ—जिके तीनज्ञान मित श्रुत अवधिकरके सम्पूर्ण भोगफल कर्मको क्षीण जानके चारित्र अंगीकार करे है उन अरिहंतोको मैं नमस्कार करूं ॥ १२२२ ॥ उवउत्ता अपमत्ता, सियझाणा खवगसीण हयमोहा । पावंति केवलं जे, ते अरिहंते पणिवयामि ॥१२२२॥ अर्थ—जिके उपयोगयुक्त और प्रमाद् रहित शुक्कध्यान ध्याया जिन्होंने इसी कारणसे क्षपकश्रेणीकरके क्षयिकया है मोहका जिन्होंने ऐसे केवलज्ञान पावे है उन अरिहंतोंको मैं नमस्कार करूं ॥ १२२३॥ कम्मक्खइया तह सुरकया य, जेसिं च अइसया हुंति। एगारसुगुणवीसं, ते अरिहंते पणिवयामि ॥१२२४॥ अर्थ—और जिन्होंके कर्मक्षयसे उत्पन्न भया ११ अतिशय होवे है तथा देवोंका किया हुआ १९ अतिशय होवे है और ४ अतिशय जन्मसे एवं ३४ अतिशयसहित उन अरिहंतोंको में नमस्कार करूं ॥ १२२४॥ आर ४ आतश्य जन्मस एवं २४ आतश्यसाहत उन आरहताका न गनत्यार कल । २०२० । जे अटुपाडिहारेहिं, सोहिया सेविया सुरिंदेहिं । विहरंति सया कालं, ते अरिहंते पणिवयामि ॥१२२५॥ अर्थ—जिके अशोकवृक्षादि आठ ८ प्रातिहार्यों करके शोभित (अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्टिर्दिव्यध्वनिः चामरमासनं च । भामंडलं दुंदुभिरातपत्रं सत् प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणां ॥१॥) अशोकवृक्षः १ पुष्पवृष्टिः २ दिव्यध्वनिः ३ सिंहा-सन ४ चामर ५ भामंडल ६ दुंदुभिः ७ छत्र ३ ॥८ देवेन्द्रो करके सेवित नित्य विहार करे है उन अरिहंतोंको में नमस्कार करूं हूं ॥ १२२५ ॥

भाषाटीका -सहितम्-

॥ १५१॥

पुवपओग असंगा, बंधणच्छेया सहावओ वावि । जेसिं उड्डा हु गई, ते सिद्धा दिंतु मे सिद्धि ॥१२३०॥ 🥳

पणतीसग्रुणगिराए, जे य विवोहं कुणंति भवाणं । महिपीढे विहरंता, ते अरिहंते पणिवयामि ॥१२२६॥ क्रि अर्थ—पेंतीसग्रुण जिसमें ऐसी वाणी करके भन्योंको बोध देते है ऐसे पृथ्वीपर विचरते हुए अरिहंतोंको मैं नमस्कार क्रि करूं ॥ १२२६ ॥ अरिहंता वा सामन्नकेवला, अकयकयसमुग्घाया । सेलेसीकरणेणं, होऊणमजोगिकेवलिणो ॥१२२७॥ अर्थ—तीर्थंकर अथवा सामान्य केवली नहीं किया अथवा किया केवली समुद्धात जिन्होंने ऐसे योगीन्द्र शैलेसी करण करके आत्मप्रदेशोंका घन किया जिन्होंने ऐसे अयोगी केवली होके ॥ १२२७ ॥ जे दुचरमंमि समए, दुसयरिपयडीओ तेरस य चरमे। खिवऊण सिवं पत्ता, ते सिद्धा दिंतु मे सिद्धिं १२२८ अर्थ—दो चरम समय आयुक्षयके पहले समयमें बहत्तर ७२ प्रकृति अघाती कर्मोंकी उत्तरप्रकृति क्षय करके और चरम समयमें तेरह १३ प्रकृति खपाके मोक्ष प्राप्त भया वह सिद्ध मेरेको सिद्धि देओ ॥ १२२८ ॥ चरमंगतिभागेणा,-वगाहणा जे य एगसमयंमि । संपत्ता लोगग्गं, ते सिद्धा दिंतु मे सिर्छि ॥ १२२९ ॥ अर्थ—त्रिभागऊन चर्मश्ररीरकी अवगाहना जिन्होंकी ऐसे एकसमयमें लोकाग्र प्राप्त भया वह सिद्ध मेरेको सिद्धि ।

अर्थ—पूर्व प्रयोगसे धनुषसे फेंका वाणके जैसा निसंगताकर कर्ममलके जानेसे तूंवेके सददा तथा बन्धन छेदसे माषाटीका-कर्मबन्धन का छेद होनेसे एरंडफलके जैसा तथा स्वभावसे धूमसददा जिन्होंकी ऊर्ध्वगति प्रवर्ते है वह सिद्ध मेरेको ईसीपब्भाराए, उवरिं खल्ल जोयणंमि लोगंते । जेसिं ठिई पसिद्धा ते सिद्धा दिंतु मे सिद्धिं ॥१२३१॥ क्रिं अर्थ—ईषत् प्राग्भारा नाम सिद्धशिलाके ऊपर एक योजन लोकान्त है वहां स्थितिजिन्होंकी ऐसे सिद्ध मेरेको जे य अणंता अपुणब्भवा य, असरीरया अणाबाहा। दंसणनाणुवउत्ता, ते सिद्धा दिंतु मे सिद्धि ॥१२३२॥ अर्थ—और अनन्ता अपुनर्भव जिन्होंका और शरीर रहित पीड़ा रहित और ज्ञान दर्शन का उपयोग युक्त जिन्होंके पहले समयमें ज्ञानका उपयोग होवे है और दूसरे समयमें दर्शन का उपयोग होवे है ऐसे सिद्ध मेरेको सिद्धि देओ ३२ किंऽणंतगुणा विग्रुणा, इगतीसगुणा य अहवअट्टगुणा। सिद्धाणंतचउका, ते सिद्धा दिंतु मे सिद्धि १२३३ अर्थ—जे सिद्ध अनन्तज्ञानादि गुण जिन्होंमें तथा वर्णादि जानेसे इकतीस ३१ गुण सहित और आठकर्मके क्षय होनेसे आठ गुण भया है जिन्होंमें तथा निष्पन्नहुआ है अनन्तज्ञानादि चतुष्क जिन्होंके ऐसे सिद्ध मेरेको सिद्धि

जह नगरगुणे मिच्छो, जाणंतोवि हु कहेउमसमत्थो। तह जेसिं गुणे नाणी, ते सिद्धा दिंतु मे सिद्धिं १२३४ क्षिं—जैसे म्लेच्छ नगरके गुण प्रासादमें निवास मधुररसभोजनादि जानता हुआभी और म्लेच्छोंके आगे कहने को नहीं समर्थ होवे वैसा भवस्थकेवली सिद्धोंका गुण जानते हुए भी कहनेको नहीं समर्थ होवे ऐसे सिद्ध मेरेको

ति अ अणंतमणुत्तर,-मणोवमं सासयं सयाणंदं। सिद्धिसुहं संपत्ता, ते सिद्धा दिंतु मे सिद्धि ॥१२३५॥ अर्थ—जे सिद्धिस्वप्राप्त हुआ वह सिद्ध मेरेको सिद्धि देओ कैसा है सिद्धिसुख नहीं विद्यमान अंत जिसका ऐसा अनंत और नहीं विद्यमान उत्कृष्ट जिससे और अनुपम शाश्वता सदा आनन्द है जिन्होंके ऐसे ॥ १२३५ ॥ जे पंचिवहायारं, आयरमाणा सया पयासंति । लोयाणणुग्गहत्थं, ते आयरिए नमंसामि ॥ १२३६ ॥ अर्थ—जिके ज्ञानादि पांच प्रकारका आचार आचरण करता लोकोंके अनुप्रह के लिए निरंतर प्रगट करे हैं उन

आचार्योंको मैं नमस्कार करूं हूं॥ १२३६॥

आचार्योंको में नमस्कार करूं हूं ॥ १२३६ ॥ देसकुलजाइरूवाइएहिं, बहुगुणगणेहिं संजत्ता । जे हुंति जुगे पवरा, ते आयरिए नमंसामि ॥१२३७॥ अर्थ—जे देश कुल जाति रूपादिक बहुत गुणोंके समूह करके संयुक्त सहित भए युगमें प्रधान मुख्य होवे हैं उन आचार्योंको मैं नमस्कार करूं हूं ॥ १२३७॥

For Private and Personal Use Only

जो निच्चमप्पमत्ता, विगहविरत्ता कसायपरिचत्ता । धम्मोवएससत्ता, ते आयरिए नमंसामि ॥१२३८॥ अर्थ—जे गुरु निरंतर प्रमाद रहित राजकथादिक विकथाओं से विरक्त को धादि कपायों का त्याग किया जिन्हों ने और धर्मोपदेश देने में समर्थ ऐसे आचार्यों को में नमस्कार करूं हूं ॥ १२३८ ॥ जो सारणवारणचोयणाहिं, पिंडचोयणाहिं निच्चंपि। सारंति नियं गच्छं, ते आवरिए नमंसामि ॥१२३९॥ अर्थ—जे आचार्य सारणा वारणा चोयना पिंडचोयना करके निरंतर अपने गच्छ की सम्भालकरे भूछे हुए को याद कराना सो सारना १ अशुद्ध पढ़ते हुए को मना करना सो वारणा २ अध्ययनके छिए प्रेरणा करना सो चोयना ३ कठोर वचनों से प्रेरणा करना सो पिंडचोयना इन ४ प्रकारसे अपने गच्छ का रक्षण करे हैं उन आचार्यों को में नमस्कार जे मुणियसुत्तसारा, परोवयारिकतप्परा दिंति । तत्तोवएसदाणं, ते आयरिए नमंसामि ॥ १२४० ॥
अर्थ—जाना है सूत्रोंका सार जिन्होंने इसी कारणसे परोपकार करनेमें तत्पर भए जे गुरु तत्त्वोपदेश हैं रूप दान देते हैं उन आचार्योंको में नमस्कार करूं हूं ॥ १२४० ॥
अत्थिमिए जिणसूरे, केविलचंदेवि जे पईवुव, । पयडंति इह पयत्थे, ते आयरिए नमंसामि ॥१२४१॥

जे वारसंगसझाय,-पारगा धारगा तयत्थाणं । तदुभयवित्थाररया, ते ऽहं झाएमि उज्झाए ॥ १२४५ ॥ 🎉

अर्थ—तीर्थंकर रूप सूर्य अस्त होनेसे और सामान्यकेवलीरूप चन्द्रके भी अस्त होनेसे जे गुरू दीपकके जैसा इस लोकमें पदार्थों को प्रगट करें हैं उन आचार्योंको मैं नमस्कार करूं हूं ॥ १२४१ ॥ जे पावभरकंते, निवडंते भवमहंधकूवंमि । नित्थारयंति जीवे, ते आयरिए नमंसामि ॥ १२४२ ॥ अर्थ-पापका समूह उस करके आक्रांत ऐसा संसार रूप महान् अंधकूप उसमें पड़ते हुए जीवोंको जे गुरू तारै उन आचार्योंको में नमस्कार करूं ॥ १२४२ ॥ जे मायतायबंधवपमुहेहिंतोवि इत्थ जीवाणं। साहंति हियं कर्जा, ते आयरिए नमंसामि॥ १२४३॥ अर्थ—इस संसार में जिके आचार्य जीवोंके माता पिता भाई वगैरह से जादा कार्य सिद्ध करे है उन आचार्योंको नमस्कार करूं हूं ॥ १२४३ ॥ जे बहुलिद्धिसमिद्धा, साइसया सासणं पभावंति । रायसमा निर्चिता, ते आयरिए नमंसामि १२४४ ु अर्थ—बहुत लब्धियों करके समृद्धिवान इसीसे अतिदायों सहित जिनशासन की प्रभावना करे हैं कैसे गुरू राजाके समान और गई है चिंता जिन्होंसें ऐसे निश्चिंत आचार्योंको में नमस्कार करूं ॥ १२४४ ॥

अर्थ—जे द्वादशाङ्गी के स्वाध्याय का पारंगामी और द्वादशाङ्गीके अर्थको धारनेवाला और तदुभय नाम सूत्र और अर्थके विस्तार करनेमें रिसक ऐसे उन उपाध्यायोंको में ध्याऊं ॥ १२४५ ॥ पाहणसमाणेवि हु, कुणंति जे सुत्तधारया सीसे । सयलजणपूर्यणिजे, ते ऽहं झाएमि उज्झाए १२४६ अर्थ—जे गुरु निश्चय पाषाण के समान शिष्योंको सूत्रहरूप तीक्ष्ण शस्त्रधारासे देवकी मूर्तिके जैसा सब लोकोंके पूजने योग्य करते हैं उन उपाध्यायोंको में ध्याऊं ॥ १२४६ ॥ मोहाहिद टुनटुप्पनाण, जीवाण चेयणं दिंति । जे केवि निर्देदाइव, ते ऽहं झाएमि उझाए ॥ १२४७ ॥ अर्थ—मोहरूप सर्पसे उसे हुए इसीसे नष्ट होगया है आत्मज्ञान जिन्होंका ऐसे जीवोंको जे गुरू विषवैद्यके जैसे वैतन्य देवे है उन उपाध्यायोंको में ध्याऊं ॥ १२४७ ॥ अर्था—अज्ञानरूप रोगसे पीड़ित प्राणियोंको प्रधान शास्त्रहूप रसायन महारोग मिटानेवाला औपघ महा वैद्यके जैसा जे गुरू देवे है उन उपाध्यायोंको में ध्याऊं ॥ १२४८ ॥ गुणवणभंजणमय,—गयदमणंकुससरिसनाणदाणं जे,। दिंति सया भवियाणं, ते ऽहं झाएमि उझाए१२४९९ ॥ १४४॥

अर्थ—गुणरूप वनके विनाश करनेवाले जातिमदादि आठ मदरूप हाथियोंके वश करनेमें अंकुशसदृश जे गुरू ज्ञान दान भन्योंको देवे है ऐसे उपाध्यायोंको मैं ध्याऊं ॥ १२४९ ॥ दिणमासजीवयंताइं, सेसदाणाइं मुणिउं जे नाणं । मुत्तिंत्तं दिंति सया, ते ऽहं झाएमि उझाए १२५० अर्थ—और दान दिन मास जीविततक जानके जे गुरू मुक्ति पर्यंत फल जिसका ऐसा ज्ञानदान देवे है ऐसे उन उपाध्यायोंको मैं ध्याऊं ॥ १२५० ॥ अन्नाणंधे लोयाण, लोयेणे जे पसत्थसत्थमुहा । उग्घाडयंति सम्मं, ते ऽहं झाएमि उझाए ॥१२५१॥ अर्थ—जे गुरु अज्ञानसे आंधे लोगोंके नेत्र शास्त्ररूप प्रशस्त शस्त्रसे उघाड़ते हैं उन उपाध्यायोंको में ध्याऊं १२५१ वावन्नवन्नचंदणरसेण, जे लोयपावतावाइं । उवसामयंति सहसा, ते ऽहं झाएमि उझाए ॥ १२५२ ॥ अर्थ—बावनाचंदन का जैसा रस उसके जैसी शीतलवाणी करके जे गुरू अकस्मात् लोकोंका पापरूप तापको उप- श्रमावे है उन उपाध्यायोंको में ध्याऊं ॥ १२५२ ॥ जे रायकुमरतुल्ला, गणतित्तिपरा य सूरिपयजुग्गा । वायंती सीसवग्गं ते ऽहं झाएमि उझाए ॥१२५३॥ अर्थ—जे राज कुमार तुल्य गच्छ की तृप्ति और समाधान करनेमें तत्पर तथा आचार्य पदके योग्य शिष्यवर्गको वाचना देवे है उन उपाध्यायोंको मैं ध्याऊं ॥१२५३॥

श्रीपाल-चरितम् ॥ १७७ ॥ जे दंसणनाणचरित्त,—रूवरयणत्तएण इक्केण । साहंति मुक्खमग्गं, ते सबे साहुणो वंदे ॥ १२५४ ॥ अर्थ—जे दर्शन, ज्ञान, चारित्र रूप तीनरत्त्रसे मोक्षमार्ग साधे कैसा दर्शनादि तीन एकीभाव प्राप्तभया अर्थात मिला हुआ तीनोंके एकत्व विना मोक्ष मार्ग नहीं सिद्ध होता है उन सर्व साधुवोंको में नमस्कार करूं ॥ १२५४ ॥ गयदुविहदुदुझाणा, जे झाइय धम्मसुकझाणा य । सिक्खंति दुविह सिक्खं, ते सबे साहुणो वंदे १२५५ अर्थ—गया आर्त रौद्र दो प्रकारका दुष्टध्यान जिन्होंसे और धर्मध्यान शुक्रध्यान ध्याया जिन्होंने ऐसे दो प्रकारकी शिक्षा ग्रहण आसेवना रूप सीखे उन सर्व साधुओंको नमस्कार होवे ॥ १२५५ ॥ ग्रुत्तित्तएण ग्रुत्ता, तिसछरिहया तिगारविमुक्का । जे पाल्रयंति तिपइं, ते सर्वे साहुणो वंदे ॥ १२५६ ॥ अर्थ—तीन गुप्ति मन, वचन, काय गुप्ति लक्षण करके गुप्त अर्थात् गुप्तिवंत और मायाशस्य १ नियाणाशस्य २ मिथ्यादर्शनशस्य ३ इन्हों करके रहित ऋदि १ रस २ शाता ३ इन तीन गौरवोंसे रहित होके त्रिपदी ज्ञान दर्शन चारित्ररूप पाल्रते हैं उन सर्व साधुओंको में नमस्कार करूं ॥ १२५६ ॥ चउविह्नविगहविरत्ता, जे चउविह्नकसायपरिचत्ता। चउहा दिसंति धम्मं, ते सवे साहुणो वंदे ॥१२५७॥ र्हु अर्थ—चार प्रकारकी विकथा राजकथा १ देशकथा २ स्त्रीकथा ३ भोजनकथा ४ इन्होंसे रहित और अनन्तानुः

भाषाटीका-सहितम्•

वन्धादि चारकषाय क्रोधादिक का त्याग किया जिन्होंने ऐसे दान शील तप भाव चार प्रकारके धर्मका उपदेश करें उन सर्व साधुओंको मैं नमस्कार करूं ॥ १२५७ ॥

उझियपंचपमाया निज्जियपंचिदिया य पालेंति, पंचेव य सिमईओ, ते सबे साहुणो वंदे ॥ १२५८ ॥ 🖔

अर्थ—पांच प्रमाद मद्यादिकोंका त्याग किया जिन्होंने मद १ विषय २ कषाय ३ निद्रा ४ विकथा ५ और पांच हिन्द्रयों के जीतनेवाले ऐसे पांच समिति पालते हैं इरिया १ भाशा २ एषणा ३ निक्षेपणा ४ पारिठावणिया ५ उन सर्व साधुओंको मैं नमस्कार करूं ॥ १२५८ ॥

च्छजीवकायरक्खण,—निउणा हासाइ छक्क मुक्का जे। धारंति य वयछक्कं, ते सबे साहुणो वंदे ॥१२५९॥ अर्थ—पृथ्वी १ अप २ तेजो ३ वायु ४ वनस्पति ५ त्रशकाय इन छै जीव कायकी रक्षा करनेमें निपुण हास्यादि ६ से रहित ऐसे प्राणातिपातविरमणादि रात्रिभोजनविरमण पर्यंत ६ त्रतोंको धारे उन सर्व साधुओंको मैं नम-

जे जियसत्तभया गय,—अट्टमया नवावि बंभगुत्तीओ । पालंति अप्पमत्ता, ते सबे साहुणो वंदे ॥१२६०॥ अर्थ—जीता है इहलोक भयादि सातभय जिन्होंने और गया जातिमदादि ८ आठ मद जिन्होंसे और प्रमादरहित भए नव प्रकारकी ब्रह्मगुप्ति को पालते हैं उन सर्व साधुओंको मैं नमस्कार करूं ॥ १२६० ॥

श्रीपाल-चिरतम् अर्थ—और दशप्रकारका क्षमाआदि श्रमणधर्म धारते हैं बारह साधु सम्बन्धी प्रतिमा अभिग्रह विशेष धारते हैं सिहतम्-और अनशनादि बारह १२ प्रकारका तप करते हैं उन सर्व साधुओं को मैं नमस्कार करूं ॥ १२६१ ॥ जे सतरसंजमंगा, उबूढाठारसहससीलंगा । विहरंति कम्मभूमिसु, ते सबे साहुणो वंदे ॥ १२६२ ॥ अर्थ—सतरह प्रकारका संयम शरीर से धारनेवाले और उत्कर्षकरके धारण किया है अठारहहजार शीलांगरथ जिन्होंने ऐसे ५ भरत ५ एरवत ५ महाविदेह इन पनरह कर्म भूमिमें विचरते हैं उन सर्व साधुओं को मैं नमस्कार जं सुद्धदेवग्रुरुधम्म,-तत्तसंपत्तिसदृहणरूवं । विश्वज्जइ समत्तं तं सम्मदंसणं निममो ॥ १२६३ ॥ अर्थ-शुद्ध निदोंष देव गुरु धर्मही तत्व सम्पदा का श्रद्धान रूप खरूप जिसका ऐसा सम्यक्तव सूत्रमें वर्णन किया जावे उन सम्यक् दर्शनको मैं नमस्कार करूं ॥ १२६३ ॥ जावेगकोडाकोडी,-सागरसेसा न होइ कम्मिठिई। ताव न जं पाविज्ञइ, तं सम्महंसणं निममो ॥१२६४॥ अर्थ-जितने एक क्रोड़ा क्रोड़ सागरोपम कर्मोंकी स्थिति बाकी न रहे तबतक वह नहीं पावे है उन सम्यक् दर्शनको में नमस्कार करूं॥ १२६४॥

भवाणमाद्रपुग्गल, परियद्दवसेसभविनवासाणं। जं होइ गंठिभेए, तं सम्मदंसणं निममो॥१२६५॥
अर्थ—भव्यों के आधापुद्गलपरावर्तप्रमाणे संसारमें रहना जब होवे तब यह सम्यक्त्व धनरागद्वेषका परिणाम रूप ग्रंथिक मेद होनेसे होवे है उन सम्यक्दर्शनको में नमस्कार करूं॥१२६५॥
जं च तिहा उवसिमयं, खउवसिमयं च खाइयं चेव।भिणयं जिणिंदसमए, तं सम्मदंसणं निममो १२६६
अर्थ—जो सम्यक्दर्शन तीर्थंकरों के सिद्धांतमं तीनप्रकारका कहा है औपश्चिमक अंतरमुद्धर्तकी स्थितिवाला १ स्थायोपश्चिमक कुछअधिक ६६ सागरकी स्थितिवाला २ और क्षायिक ३३ सागरकी स्थितिवाला २ इन्होंमें क्षायोपश्चिमक पौद्गलिक है और २ अपौद्गलिक है उस सम्यक्दर्शनको में नमस्कार करूं॥१२६६॥
पण वारा उवसिमयं, खओवसिमयं असंखसो होइ। जं खाइयं च इक्किस, तं सम्मदंसणं निममो॥१२६०॥
अर्थ—औपश्चिमकसम्यक्त्व एक जीवके संसारमें पांचवेर होवे है और स्थायोपसिमकसम्यक्त्व असंख्यातिवेर होवे है और स्थायिकसम्यक्त्व एकवार होवे है उस सम्यक्दर्शनको हम नमस्कार करें॥१२६०॥
जं धम्मदुममूलं, भाविज्ञइ धम्मपुरपवेसं च।धम्मभवणपीढं वा तं सम्मदंसणं निममो॥१२६०॥
अर्थ—जो सम्यक् दर्शन धर्मरूपृत्वसं च।धम्मभवणपीढं वा तं सम्मदंसणं निममो॥१२६०॥
इत्रे जैसा और धर्मरूपृत्रसका मूलके जैसा मूल सहश विचारा जावे और धर्मरूपगरमें प्रवेशकरनेका द्वार जैसा और धर्मरूपगासादका पीठ जैसा है उस सम्यक्दर्शनको में नमस्कार करें॥१२६८॥

श्रीपाल-चिरतम् ॥ १५७॥ श्रीपाल-चिरतम् ॥ १५७॥ श्रीपाल-चिरतम् ॥ १५७॥ श्रीपाल-चिरतम् अर्थ—तथा जो सम्यक्त्व धर्मरूपजगत्के आधार के जैसा आधार है और सम्यक्त्व उपशमरूपरसका भाजन सहितम्. जेण विणा नाणंवि हु, अपमाणं निष्फलंच चारित्तं। मुक्खोवि नेव लब्भइ, तं सम्मदंसणं निम्मो॥१२७०॥ अर्थ—जिस सम्यक्त्व विना ज्ञानभी अप्रमाण होवे है और चारित्रभी निष्फल कहा जावे है और मोक्षभी नहीं ही पावे उस सम्यक्त्वर्शनको हम नमस्कार करें ॥ १२७०॥ जं सद्दहणलक्खण,-भूसणपमुहेहिं बहुयभेएहिं। विन्निज्जइ समयंमी, तं सम्मदंसणं निममो ॥ १२७१॥ अर्थ—जिस सम्यक्त्वका परमार्थसंस्तवादि चारश्रद्धान समसमवेगादिक लक्षणपांच जिनशासनमें कौशल्यादि भूषणपांच इत्यादि बहुतभेद सिद्धांतमें वर्णन किया जावे उस सम्यक्त्वको में नमस्कार करूं ॥ १२७१॥ सबन्नु-पणीयागम, भणियाण जहिंदुयाण तत्ताणं। जो सुद्धो अवबोहो, तं सन्नाणं मह पमाणं ॥१२७२॥ व्री अर्थ—सर्वज्ञोंने कहा सिद्धांत उन्होंमें कहा जो सद्भूततत्त्व जीवादिपदार्थ उन्होंका जो ज्ञान वह सद्ज्ञान मेरे प्रमाण है ॥ १२७२ ॥ जेणं भक्खाभक्खं, पिजापिजं अगम्ममवि गम्मं, किच्चाकिचं नज्जइ, तं सन्नाणं मह पमाणं ॥१२७३॥ 🥻

अर्थ—जिस ज्ञानकरके भक्षाभक्ष, भक्ष अन्नादि अभक्ष मांसादि पेय बस्त्रसे छाना हुआ पानीआदि अपेय मदिरादि 🦠 गम्य स्वस्त्र्यादि अगम्य परस्त्री भगिन्यादि कृत्य अहिंसादि अकृत्य हिंसादिक जाना जावे है वह सद्ज्ञान मेरे प्रमाण

सयलकिरियाणमूलं, सद्धा लोयंमि तीइ सद्धाए। जंकिर हवेइ मूलं, तं सन्नाणं मह पमाणं ॥१२७४॥ 🖔 अर्थ—लोकमें सर्विक्रया सर्वशुभअनुष्ठानका मूल श्रद्धा है श्रद्धाका मूल ज्ञान होवे है वह सर्ज्ञान मेरे प्रमाण

जं मइसुयओहिमयं, मणपज्जवरूवकेवलमयं च । पंचिवहं सुपसिद्धं, तं सन्नाणं मह पमाणं ॥१२७५॥ अर्थ-जो ज्ञान पांचप्रकारका सुप्रसिद्ध मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान २ अवधिज्ञान ३ मनपर्यवज्ञान ४ केवलज्ञान ५ स्वरूप जिसका वह सदुज्ञान मेरे प्रमाण है ॥ १२७५ ॥

केवलमणोहिणं पि हु, वयणं लोयाण कुणइ उवयारं। जं सुयमइरूवेणं तं सन्नाणं मह पमाणं॥ १२७६॥ अर्थ—केवल १ मनपर्यव २ अवधि ३ इन तीनज्ञानधारनेवालोंका वचन भव्यजीवोंके मति श्रुतज्ञान रूपसे

उपकार करे है वह सद्ज्ञान मेरे प्रमाण है ॥ १२७६ ॥

सुयनाणं चेव दुवालसंग,-रूवं परूवियं जत्थ । लोयाणुवयारकरं, तं सन्नाणं मह पमाणं ॥ १२७७ ॥

अर्थ—होकोंके उपकार करनेवाहा आचारादि द्वादशाङ्की रूप श्रुतज्ञान ही जो कहा वह मेरे प्रमाण है ॥ १२७७ ॥ तनुच्चिय जं भवा, पढंति पाढंति दिंति निसुणंति। पूर्यंति छिहावंति य, तं सन्नाणं मह पमाणं ॥१२७८॥ अर्थ—इस कारणसे भव्य जिस श्रुतज्ञान को पढ़े है पढ़ावे है सुने है सुनावे है देवे है और पूजते है और हिखाते हैं वह सद्ज्ञान मेरे प्रमाण है ॥ १२७८ ॥ तस्स बलेणं अज्ञवि, नज्जइ तियलोयगोयरिवयारो। करगिहयामलयंपि व, तं सन्नाणं मह पमाणं १२७९ अर्थ—जिस श्रुतज्ञान केवलसे आजभी तीनलोकके पदार्थ हाथमें आमले के जैसा जानते हैं वह सद्ज्ञान मेरे प्रमाण है ॥ १२७९ ॥ जस्स पसाएण जणा, हवंति लोयंमि पुच्छिणिज्ञा य। पूज्ञा य वन्नणिज्ञा, तंसन्नाणं मह पमाणं॥१२८०॥ अर्थ—जिस श्रुतज्ञान के प्रसादसे लोकोंमें पूछने योग्य और पूजने योग्य वर्णन करने योग्य होते हैं वह सद्ज्ञान मेरे प्रमाण है॥ १२८०॥ जं देसिवरइरूवं, सबविरइरूवयं च अणुकमसो। होइ गिहीण जईणं, तं चारित्तं जए जयइ॥१२८१॥ अर्थ—जो देशिवरती रूप गृहस्थों के होवे है और सर्वविरतीरूप चारित्र साधुओं के होवे है वह चारित्र जगत् में जैवन्ता होवो॥ १२८१॥

नाणंपि दंसणंपिय, संपुन्ना फलं फलंति जीवाणं। जेणंचिय परिकरिया, तं चारित्तं जए जयइ॥१२८२॥ अर्थ—ज्ञान और दर्शन जिस चारित्रसे सहित ही जीवोंको संपूर्ण फल देते हैं वह चारित्र जगत् में जैवन्ता होवो॥१२८२॥ होवो ॥ १२८२ ॥
जं च जईण जहुत्तर,-फलं सुसामाइयाइ पंचिवहं। सुपिसद्धं जिणसमए, तं चारित्तं जए जयइ ॥१२८३॥
अर्थ—और जो चारित्र जैन सिद्धान्तमें साधुओं के शोभन सामायकादि पांच प्रकारका यथोत्तर उत्तर २ अधिक
फल जिसका ऐसा वर्ते है वह चारित्र जगत् में जैवन्ता होवो ॥ १२८३ ॥
जं पिडवन्नं पिरिपालियं च, सम्मं परूवियं दिन्नं। अन्नेसिं च जिणेहिवि, तं चारित्तं जए जयइ ॥१२८४॥
अर्थ—तीर्थंकरोंने जिस चारित्रको अंगीकार किया और पाला और सम्यक् प्ररूपणा करी उपदेश किया औरोंको
दिया वह चारित्र जगत्में जयवन्तो होवो ॥ १२८४॥ छक्खंडाणमडखं, रज्जिसिरिं चइय चकवद्दीहिं। जं सम्मं पडिवन्नं, तं चारित्तं जए जयइ ॥ १२८५ ॥ अर्थ—चक्रवर्तियोंने अखंड छ खंडकी राज्य लक्ष्मीका त्याग करके जो चारित्र अच्छी तरहसे अंगीकार किया वह

जं पडिवन्ना दमगाइणो वि, जीवा हवंति तियलोए । सयलजणपूर्यणिजा, तं चारित्तं जए जयइ ॥१२८६॥ 🥻

अर्थ—जिस चारित्रको अंगीकार करके रांक वगैरहभी जीव तीनलोकके सवलोकोंके पूजनीय होते हैं वह चारित्र जगतमें जयवंता वर्तो ॥ १२८६ ॥ जं पालंताण मुणीसराण, पाए नमंति साणंदा । देविंददाणविंदा, तं चारित्तं जए जयइ ॥ १२८० ॥ अर्थ—जिस चारित्रको पालता हुआ मुनिश्वरोंके चरणोमें देवेन्द्र दानवेन्द्र हर्ष सहित नमस्कार करें है वह चारित्र जगतमें जयवन्तो होवो ॥ १२८० ॥ जं चाणंतगुणंपि हु, विन्नजइ सत्तरभेय दसभेयं । समयंमि मुणिवरेहिं, तं चारित्तं जए जयइ ॥१२८८॥ अर्थ—और जो चारित्र अनन्तगुण जिसमें ऐसा निश्चय सिद्धान्तमें मुनिवरोंने पांच आश्रवसे विरमण और पांच वादी दृशमेद जिसके ऐसा प्रसिद्ध चारित्र जगतमें जयवन्तो होवो ॥ १२८८ ॥ समिईओ गुत्तीए, खंतीएमुहाओ मित्तियाइओ । साहंति जस्स सिद्धिं, तं चारित्तं जए जयइ ॥१२८९॥ अर्थ—इरियासमित्यादि समिति ५ मनोगुस्यादि गृप्ति ३ क्षमाप्रमुख दशप्रकारका यतिधर्म मैत्री १ प्रमोद २ कुरुणा ३ मध्यस्था ४ भावना सर्व प्राणियोंमें मैत्री १ गुणवानमें प्रमोद २ दुखियोंमें दया दुष्टोंमें माध्यस्थ यह पदार्थ जिस चारित्रकी सिद्धिनाम निष्पत्तिको साधे है वह चारित्र जगत्में जयवन्ता होवो ॥ १२८९॥

बाहिरमर्डिंभतरयं, बारसभेयं जहुत्तरगुणं जं। वन्निज्जइ जिणसमए, तं तवपयमेस वंदामि ॥१२९०॥ क्ष्री—जो तप जैनसिद्धान्तमें ६ वाह्य ६ अभ्यन्तर बारह भेद वर्णन किया जावे है यथोत्तर अधिक २ गुण हैं किसमें ऐसे तप पदको मैं नमस्कार करूं ॥ १२९०॥ तब्भवसिद्धिं जाणंतएहिं, सिरिरिसहनाहपमुहेहिं। तित्थयरेहिं कयं जं, तं तवपयमेस वंदामि ॥१२९१॥ 🖔 अर्थ—श्रीऋषभदेव स्वामीप्रमुख तीर्थंकरोंने उसी भवमें अपनी मुक्ति जानते हुए भी जो तप अंगीकार किया उस तप पदको मैं नमस्कार करूं॥ १२९१॥ जेण खमासिहएणं कएण, कम्माणमिव निकायाणं। जायइ खओ खणेणं, तं तवपयमेस वंदामि ॥१२९२॥ अर्थ—क्षमा सिहत जिस तपके करनेसे निकाचित कर्मोका क्षणेकमें क्षय होवे है उस तपपदको मैं नमस्कार क्रू जेणंचिय जलणेणव, जीवसुवन्नाओ कम्मिकिट्टाइं। फिटंति तक्खणं चिय, तं तवपयमेस वंदािम ॥१२९३॥ अर्थ—अग्निके जैसा जिस तपसे जीवरूपसोनेसे कर्मरूप कीटा कठिनतर मैल तत् कालही दूर होवे है उस तप पदको मैं नमस्कार करूं ॥ १२९३॥ जस्स पसाएण धुवं, हवंति नाणाविहाउ लद्धीओ।आमोसिह पमुहाओ तं तवपयमेस वंदािम ॥ १२९४॥

अर्थ—जिस तपके प्रसादसे आमर्पऔषधिप्रमुख अनेक प्रकारकी छिद्धयां होवें हैं उस तपपदकों में नमस्कार करूं ॥ १२९४ ॥ कप्पतरुस्स व जस्सेरिसाउ, सुरनरवराण रिद्धीओ। कुसुमाइं फलं च सिवं, तं तवपयमेस वंदामि॥१२९५॥ अर्थ—कल्प वृक्षके सहश जिस तपका देवेन्द्र और राजाओंकी सम्पदा पुष्प है और मोक्षसुख फलवतें है उस तपपदको में नमस्कार करूं ॥ १२९६ ॥ अर्थ—अल्पन्त साधनेको अश्चन्य सर्वलौकिककार्य जिस तपके प्रभावसे लीलासे सिद्ध होवे है उस तपपदकों में नमस्कार करूं ॥ १२९६ ॥ उर्विद्वियाइमंगल, पयत्थसत्थंमि मंगलं पढमं। जं विद्वाज्ञ लोए, तं तवपयमेसवंदामि ॥ १२९७॥ अर्थ—लोकमें दही दुर्विदिक मंगल पदार्थोंके समृहमें जो तप पहला मंगल वर्णन किया जावे है भावमंगल रूप होनेसे उस तप पदकों में नमस्कार करूं ॥ १२९७॥ एवं च संथुणंतो, सो जाओ नवपएसु लीणमणो। तह कहिव जहा पिक्खइ, अप्पाणं तंमयं चेव ॥१२९८॥ ॥ १६०॥

अर्थ—इस प्रकारसे सम्यक् स्तुति करता हुआ श्रीपाल राजा कोई प्रकारसे नाम वड़े प्रयत्नसे नवपदोंमें लीन मन

एयंमि समयकाले, सहसा पुत्रं च आउयं तस्स । मरिऊण सिरिपालो, नवमे कप्पंमि संपत्तो ॥१२९९॥ 🧗

अर्थ—श्रीपाल राजा नवपद मई अपने आत्माको देखे तिस समय रूप कालमे अकस्मात् श्रीपाल राजाका आयुः पूर्ण भया तब श्रीपाल राजा काल धर्म पाके नवमे आनत देवलोकमें देव हुआ ॥ १२९९ ॥

माया य मयणसुंदरिपमुहाओ राणियाओ समयंमि । सुहझाणा मरिऊणं, तत्थेव य सुरवरा जाया ॥१३००॥ अर्थ—माता कमलप्रभा और मदनसुंदरी प्रमुख रानियों अपने आयुः के अंतसमयमें ग्रभ अध्यवसायसे मरण पाके उसी नवमे देवलोकमें प्रधान देव भए ॥ १३०० ॥

तत्तो चिवऊण इमे, मणुयभवं पाविऊण कयधम्मा । होहिंति पुणो देवा, एवं चत्तारि वाराओ ॥ १३०१ ॥

अर्थ—तदनंतर नवमे देवलोकसे च्यवके सर्व श्रीपालादि जीव मनुष्यभव पाके धर्म करके और देव होवेगा इस प्रकारसे चार वार मनुष्यका भव और ४ देवका भव होगा ॥ १३०१ ॥

सिरिपालभवाउ नवमेभवंमि, संपाविऊणमणुयत्तं। खविऊण कम्मरासिं, संपाविस्संति परमपयं १३०२ 🦹

श्रीपाल-चरितम् अर्थ-श्रीपालके भवसे नवमे भवमें मनुष्यभव पाके कर्म समूहका क्षय करके मोक्ष जावेगा ॥ १३०२ ॥ एवं भोमगहेसर, किहयं सिरिपालनरवरचिरत्तं । सिरिसिद्धचक्कमाहप्प, संजुयं चित्तचुज्जकरं॥ १३०३ ॥ अर्थ-श्रीगौतम स्वामी श्रेणिक राजासे कहे है हे मगधेश्वर इस प्रकारसे श्रीपाल राजाका चरित्र कहा कैसा चरित्र सिद्धचक्रके माहात्म्यसिह्त और लोकोंके चित्तमें आश्चर्य करनेवाला ॥ १३०३ ॥ तं सोऊणं सेणियराओ, नवपयसमुछिसियभावो।पभणेइ अहह केरिस,-मेयाण पयाणमाहप्पं ॥१३०४॥ अर्थ—उन श्रीपालके चरित्रको सुनके श्रेणिक राजा नवपदोंमें उछास पाया है मन जिसका ऐसा प्रकर्षपनेकर कहे अहह इति आश्चर्ये इन नवपदोंका कैसा अचिंत्य माहात्म्य वर्ते है ॥ १३०४ ॥ तो भणइ गणी नरवर, पत्तं अरिहंतपयपसाएणं । देवपालेण रज्जं, सकत्तं कत्तिएणावि ॥ १३०५ ॥ अर्थ—तदनंतर गणधर श्रीगौतमस्वामी कहे हे राजन् अरहंत पदके प्रसादसे देवपाल नाम सेठके सेवकने राज्य पाया और कार्तिक सेठनेभी इन्द्रपना पाया इन्होंकी कथा कहनी ॥ १३०५ ॥ सिद्धपयं झायंता, के के सिवसंपयं न संपत्ता । सिरिपुंडरीयपंडव,-पउममुणिंदाइणो लोए ॥ १३०६ ॥ अर्थ—सिद्ध पदको ध्याते हुए लोकमें श्रीपुण्डरीक पाण्डव और रामचन्द्रादिक कौन २ शिवसम्पदा मुक्ति समृद्धि की नहीं पार्थी किंतु बहुतोंने पाई है ॥ १३०६ ॥

भाषाटीका-सहितम्

เมอธอก

नाहियवायसमज्जिय,-पावभरोवि हु पएसिनरनाहो। जं पावइ सुररिद्धि, आयरियपयप्पसाओ सो १३०७ हैं अर्थ—नास्तिक बादसे संचय किया पाप समूहका जिसने ऐसा परदेशी राजा उसने जो देव ऋद्धिः पाई वह आचार्य-पदका प्रसाद ह ॥ १३०७ ॥
लहुयंपि ग्रुरुवइट्ठं, आराहंतेहिं वयरमुवझायं। पत्तो सुसाहुवाओ, सीसेहिं सीहगिरिग्रुरुणो ॥ १३०८ ॥
अर्थ—सिंहगिरि गुरूने कहा छोटी उमरकाभी बज्र नामका उपाध्यायकी आराधना करते हुए सिंहगिरि गुरूके शिष्योंने सुसाधुवाद नाम अच्छे बिनीत शिष्य है ऐसी प्रसिद्धि पाई॥ १३०८ ॥
साहुपयिवराहणया, आराहणया य दुक्खसुक्खाइं। रुप्पिणिरोहिणीजीवेहिं, किं न हु पत्ताइं ग्रुरुयाइं १३०९
अर्थ—साधुपदकी बिराधना और आराधना करके क्रमसे रुक्मिणी रोहिणीके जीवोंने बहुत दुःख और सुख क्या नहीं पाए अपि तु पाए हैं॥ १३०९ ॥ पदका प्रसाद है ॥ १३०७ ॥ दंसणपयं विसुद्धं, परिपालंतीइ निच्चलमणाए। नारीइवि सुलसाए, जिणराओ कुणइ सुपसंसं ॥१३१०॥ अर्थ—विशुद्धनिर्मल सम्यक् दर्शनपद सर्वप्रकारसे पालती भई और निश्चल मन जिसका ऐसी सुलसा नामकी नाग सारिथकी स्त्रीकी प्रशंसा श्रीमहाबीर स्वामीने करी ॥ १३१० ॥ नाणपयस्स विराहण, फलंमि नाओ हवेइ मासतुसो। आराहणा फलंमी, आरहणं होइ सीलमई ॥ १३११॥

अर्थ—ज्ञानपदकी विराधनाके फलमें मापतुष साधुका दृष्टांत है आराधनाके फलमें शीलवती सतीका उदाहरण सिहतम् सहितम् चारित्तपयं तह भावओवि, आराहियं सिवभवंमि । जे णं जंबुकुमारो, जाओ कयजणचमुकारो ॥१३१२॥ अर्थ—शिवकुमारके भवमें भावसे चारित्र पाला था उस आराधनसे जम्बूकुमर भया कैसा जम्बूकुमर लोकोंको किया है आश्चर्य जिसने ऐसा ॥ १३१२॥ वीरमइए तह कहिव, तवपयमाराहियं सुरतरूव । जह दमयंतीइ भवे फिलियं तं तारिसफलेहिं ॥ १३१३॥ क्रिं — वीरमती नामकी राजाकी रानीने कोई प्रकारसे तपपदका आराधन किया तिलक तपस्या करके अष्टापद क्रिं तीर्थपर चौबीस तीर्थंकरोंको तिलक चढ़ाया इसके प्रभावसे दमयंती नलराजाकी पटरानीके भवमें वह तप कल्पवृक्षके सहज्ञ फलास फला ॥ १२९२ ॥ किं बहुणा मगहेसर, एयाणपयाणभित्तभावेणं। तं आगमेसि होहिसि, तित्थयरो नित्थ संदेहो ॥१३१४॥ किं अर्थ—हे मगधेश्वर जादा कहने करके क्या इन नवपदोंका भिक्तभाव करके तैं आगामि भवमें तीर्थंकर होगा किं मंदेर नहीं है ॥ १३१४॥ तम्हा एयाइं पयाइं, चेव जिणसासणस्स सबस्सं । नाऊणं भो भविया, आरहह सुद्धभावेण॥ १३१५ ॥

अर्थ—तिस कारणसे इन नवपदोंको जिनशासनका सरवस्व याने सर्व सार जानके अहो भव्यो शुद्धभावसे आराधन करो ॥ १३१५ ॥

एयाई च पयाई, आराहंताण भवसत्ताणं । हुंतु सयावि हु मंगल, कछाणसिमिखिविखीओ ॥१३१६॥ अर्थ—यह नवपदोंका आराधन करता भन्यजीवोंके निरंतर निश्चय मंगल कल्याणसमृद्धियोंकी वृद्धि होवे॥ मंगल उपद्रव ज्ञांति कल्याण सम्पदाका उत्कर्षरूप समृद्धि वृद्धि परिवारादि वृद्धिरूप होवे॥ १३१६॥

एवं तिकालगोयर,-नाणे सिरिगोयमंमि गणनाहे। कहिऊण ठिए सेणियराओ, जा नमवि मुणिणाहं १७

अर्थ—इस प्रकारसे त्रिकाल विषयी ज्ञान जिन्होंका ऐसे श्री गौतमस्वामी गणधर कहके रहे तब श्रेणिक राजा गौतमस्वामीको नमस्कार करके जितने ॥ १३१७॥

उट्टेइ तओ हरिसिय, चित्तो ता तत्थ कोवि नरनाहं। विन्नवइ देव वद्घाविज्ञसि, वीरागमेण तुमं ॥१३१८॥

अर्थ—जितने वहांसे उठे उतने हिंपत चित्त जिसका ऐसा कोई पुरुष वहां आके राजासे कहे हे देव हे महाराज के भगवान् श्रीमहाबीरस्वामीका यहां आगमन होनेसे में आपको वधाई देता हूं ॥ १३१८ ॥ के ते सोऊणं सेणिय, नरनाहो पमुइओ सचित्तांमि । रोमंचकवचियतण्र, वद्धावणियं च से देई ॥१३१९॥ के

श्रीपाल-चिरतम् ॥ १६३॥ श्रथ—इस अवसरमें त्रिभुवनभानु तीन लोकके सूर्य श्रीवर्धमानस्वामी प्रातिहार्यादिअतिशय लक्ष्मी सहित उस उद्यानमें आए॥ १३२०॥

देवेहिं समवसरणं, रइयं अचंतसुंद्रं सारं । सिरिवद्धमाणसामी, उविवद्घो तत्थ तिजयपहू ॥१३२१॥ क्रिं अर्थ—देवोने अत्यन्त सुंदर प्रधान समवसरण रचा उस समवसरणमें तीनजगत् के प्रभु श्रीवर्धमान स्वामी बैठे १३२१ क्रिं गोयमपमुहेसु गणीसरेसु, सकाइएसु देवेसु । सेणियपमुहिनवेसुय, तिहं निविद्वेसु सबेसु ॥ १३२२ ॥ अर्थ-श्रीगौतमस्वामी प्रमुख गणधर सौधर्मादि इन्द्र और श्रेणिक प्रमुख राजा यह सब उस समवसरणमें बैठनेसे २२ सेणियमुद्दिस्स पहू, पभणेइ नरनाह? तुझ चित्तंमि । नवपयमाहप्पमिणं, अइगुरुयं कुणइ अच्छरियं २३ कि अर्थ-श्रेणिक राजाका नाम उच्चारण करके प्रभु श्रीवर्धमानस्वामी बोले हे नरनाथ यह नवपदोंका माहात्म्य कि तुम्हारे चित्तमें बहुत आश्चर्य करे है ॥ १३२३॥

तं च इमेसिं पयाणं, कित्तियमित्तं इमं तए नायं। जं सवाणसुहाणं, मूळं आराहणिममेसिं॥ १३२४॥ अर्थ—यह नवपदोंका माहात्म्य तुमने कितना जाना है अर्थात् थोड़ाही जाना है इस कारणसे इन पदोंका आरा-धन सव सुखाका मूल वत ह ॥ २२२०॥
एयाराहण मूलं च, पाणिणं केवलो सुहोभावो । सो होइ धुवं जीवाण, निम्मलप्पाण नन्नेसिं १३२५
अर्थ—यह नवपदोंके आराधनका मूल कारण प्राणियोंके केवल एक शुभभाव है जो शुभभाव निश्चय निर्मल
आत्मा जिन्होंका उन जीवोंके होवे है अशुद्ध आत्मा जिन्होंका ऐसे जीवोंके न होवे ॥ १३२५ ॥
जेविय संकप्पवियप्प,-विज्ञया हुंति निम्मलप्पाणो । ते चेव नवपयाइं, नवसु पएसुं च ते चेव ॥१३२६॥
अर्थ—जिकेभी संकल्प विकल्प वर्जित छोड़ा है संसारिक शुभ अशुभ विचार जिन्होंने ऐसे निर्मल है आत्मा

अथ—ाजकमा सकल्य विकल्य याजत छाड़ा है जिलाहर के जिलाहर के जिल्होंका ऐसे जीव नवपदों में हैं ॥ १३२६ ॥ जं झाया झायंतो, अरिहंतं रूवसुपयपिंडत्थं । अरिहंतपयमयंचिय, अप्पं पिक्खेइ पच्चक्वं ॥ १३२७ ॥ अर्थ—कहे हुए अर्थकोही दृढ़ करते हैं जिस कारणसे ध्यान करनेवाला ध्याता पुरुष रूपस्थ १ पदस्थ २ पिण्डस्थ ३ अरहन्त परमात्माको ध्याता हुआ प्रत्यक्ष अर्दत पद मई अर्द्दत पद स्वरूप आत्माको देखे वहां रूपस्थ सर्वअतिश्चय-

श्रीपाल-चिरतम् ॥ १६४॥ १६४॥ रहे पण्डस्थ पीछे पदस्थ पीछे रूपस्थ ध्याना यह कम है ॥ १३२७॥ रहे पण्डस्थ पीछे पदस्थ पीछे रूपस्थ ध्याना यह कम है ॥ १३२७॥ रहे पण्डस्थ पीछे पदस्थ पीछे रूपस्थ ध्याना यह कम है ॥ १३२७॥ रहे पण्डस्थ पीछे पदस्थ पीछे रूपस्थ ध्याना यह कम है ॥ १३२०॥ रहे पण्डस्थ पिण्डस्थ पीछे पदस्थ पीछे रूपस्थ ध्याना यह कम है ॥ १३२०॥ रहे पण्डस्थ पिण्डस्थ पीछे पदस्थ पीछे रूपस्थ ध्याना यह कम है ॥ १३२०॥ रहे पण्डस्थ पिण्डस्थ पिण्य पिण्डस्थ प

जिन्होंके ऐसे परमात्मा सिद्धात्मा कहे जावें इसमें सन्देह नहीं है ॥ १३२८ ॥

पंचप्पत्थाणमयायरिय,-महामंतझाणलीणमणो । पंचविहायारमओ, आयच्चिय होइ आयरिओ १३२९

अर्थ—पांच प्रस्थान मई जो आचार्यसम्बन्धी महामन्त्रके ध्यानमे लीनमन जिन्होंका और पांच प्रकारका 🕏 आचार प्रधान जिसके सो आत्माही आचार्य होवे है पांच प्रस्थानके नाम विद्यापीठ १ सौभाग्यपीठ २ लक्ष्मीपीठ 🛪 ३ मंत्रयोगराजपीठ ४ सुमेरुपीठ ५ इन्होंका अर्थ सूरीमंत्र कल्पसे जानना भावध्यान माला प्रकरणमें तो अभय-प्रस्थान १ अकरणप्र० २ अहमिन्द्रप्र० ३ तुल्यप्र० ४ कल्पप्र० ५ इन्होंका स्वामी पंचपरमेष्ठी कहा है ॥ १३२९ ॥

अर्थ—महाप्राणायाम ध्यानविशेषसे विचारा है द्वादशाङ्गी सूत्रार्थका रहस्य जिसने वह तथा वाचनादि पांच प्रकारके स्वाध्यायमें तत्पर आत्मा जिसका ऐसा आत्मा ही उपाध्याय होवे हैं॥ १३३०॥

इच्छानिरोहओ, सुद्धसंवरो परिणओ य समयाए । कम्माइं निजरंतो, तवोमओ चेव एसप्पा ॥१३३५॥

रयणत्तएण सिवपह,-संसाहणसावहाणजोगतिगो, साहू हवेइ एसो, अप्पुच्चिय निच्चमपमत्तो १३३१ है अर्थ—रत्नत्रयज्ञान, दर्शनचारित्ररूप मोक्षमार्गके साधनेमें सावधान मन, वचन कायारूप तीनयोग जिसका ऐसा है और निरंतर प्रमादरहित यह आत्मा ही साधु होवे है ॥ १३३१॥ मोहस्सखओवसमा, समसंवेगाइ लक्खणं परमं। सुहपरिणाममयं, नियमप्पाणं दंसणं मुणह ॥१३३२॥ अर्थ-मोहका क्षयोपशमसे उत्कृष्ट शुभ परिणाम मई अपने आत्माको सम्यक्त्व जानो कैसा सम्यक्त्व सम समवे-गादि लक्षण है जिसके ऐसा ॥ १३३२ ॥ नाणावरणस्स खओ,-वसमेण जहट्टियाण तत्ताणं । सुद्धावबोहरूवो, अप्पुच्चिय वृच्चए नाणं ॥ १३३३ ॥ अर्थू—ज्ञानावरणी क्रमेंके क्षय उपशमसे जो यथावस्थित सद्भूत जीवादितत्वोंका शुद्धज्ञान स्वरूप जिसका ऐसा आत्माही ज्ञान कहा जावे ॥ १३३३ ॥ सोलसकसायनवनोकसाय,-रहियं विसुद्धलेसागं । ससहाविष्टयं अप्पाण,-मेव जाणेह चारित्तं ॥१३३४॥ अर्थ—कोधादिक सोलह १६ कपाय हास्यादिक नव नोकषाय इन्होंसे रहित इसी कारणसे निर्मल लेक्या जिनकी ऐसा स्वभावमें रहाहुआ आत्मा चारित्र जानो ॥ १३३४॥

श्रीपाल-चरितम् ॥ १६५॥ जर्थ—इच्छाके रोकनेसे ग्रुद्ध सम्बर जिसके और समभावसे परणित कर्मोकी निर्जरा करता हुआ यह आत्माही तपस्वरूप तप मई है ॥ १३३५॥ एवं च ठिए अप्पाणमेव, नवपयमयं वियाणित्ता। अप्पंमि चेव निद्यं, लीणमणा होह भो भविया १३३६ अर्थ—इस प्रकारसे होनेसे आत्माहीको नवपद मई जानके अहो भव्यो आत्मस्वरूपमेंही लीनमन जिन्होंका ऐसे

तं सोऊणं सिरिवीरभासियं सेणिओ नरविरंदो । साणंदो संपत्तो, निययावासं सुहावासं ॥ १३३७ ॥ अर्थ—यह श्रीमहावीरस्वामीका कहाहुआ वचन सुनके श्रेणिकराजा भगवान्को बन्दना करके आनन्दसहित सुस्रका स्थान ऐसे अपने घर गया ॥ १३३७ ॥

सिरिवीरिजणोवि हु, दिणयरुवकुग्गहपहं निवारितो। भवियकमलपिडवोहं, कुणमाणो विहरइ महीए ३८ हैं सिरिवीरिजणोवि हु, दिणयरुवकुग्गहपहं निवारितो। भवियकमलपिडवोहं, कुणमाणो विहरइ महीए ३८ हैं अर्थ—श्रीमहावीरस्वामीभी सूर्यके सदद्य कुग्रहपथको अर्थात् कुमार्गका निवारण करता भव्य कमलोंको प्रतिबोध विकास करता पृथ्वीपर विहार करे ॥ १३३८ ॥ एसा नवपयमाहप्पसार,-सिरिपालनरवरिद्कहा। निसुणंतकहंताणं, भवियाणं कुणइ कल्लाणं॥ ३९॥

अर्थ—नव पदोंका माहात्म्य श्रेष्ठ है जिसमें ऐसी यह श्रीपारु राजाकी कथा ग्रुद्धभावसे सुनते हुए और कहते हुए 🔎 भव्योंके कल्याण करो ॥ १३३९ ॥

सिरिवज्ञसेणगणहर,-पद्टप्पहू हेमतिलयसूरीणं। सीसोहिं रयणसेहर,-सूरीहिं इमा हु संकलिया॥१३४०॥ अर्थ—श्रीवज्रसेन आचार्यके पदमें हुए श्रीहेमतिलकसूरि उन्होंके शिष्य श्रीरत्नशेखरसूरिने यह श्रीपालकी कथा रची प्राचीन कथाको देखके॥ १३४०॥

तस्सीसहेमचंदेण, साहुणा विक्रमस्सवरसंमि।चउदसअट्टावीसे, लिहिया ग्रुरुभत्तिकलिएणं॥ १३४१॥ अर्थ—उन्होंके शिष्य हेमचन्द्र साधुने विक्रम सम्वत् १४२८ में चौदहसे अट्टाईसमें लिखीं कैसा हेमचन्द्र गुरूकी

सायर मेरू जा महियलंमि, जा नहलंमि ससि सूरा, वहंति तावनंदओ, वाइजंता कहा एसा १३४२ अर्थ—जबतक पृथ्वीपर समुद्र और सुमेरु पर्वत यह दोनों वर्ते है और आकाशमें जबतक चंद्रमा सूर्य है तवतक यह श्रीपाल राजाकी कथा वाच्यमाना समृद्धि पाओ ॥ १३४२ ॥ यह श्रीपाल नरेंद्र प्राकृत कथाकी संस्कृत टीका अनुसार भाषाटीका बृहत् खरतर गच्छीय भ० श्रीजिन कृपाचंद्रसूरिने लिखि वि० सं० १९८० स्वपरअनुग्रहके लियें श्रीरस्तु ॥ इति श्रीपालनरेंद्रकथा श्रीसिद्धचक्रमाहात्म्ययुता समाप्ता ॥

